राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

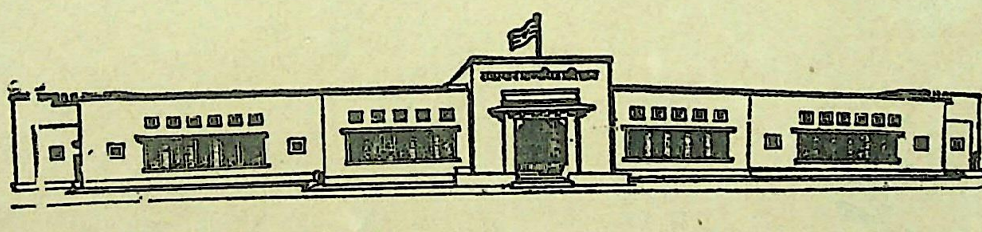
प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ८७

सचित्र मधुमालती कथा

(चतुर्भुजदासकृत)



प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ८७

सचित्र मधुमालती कथा

(चतुर्भुजदासकृत)

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

ग्रन्थाङ्क ८७

सचित्र मधुमालती कथा

(चतुर्भुजदासकृत)

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

सचित्र मधुमालती कथा

(शोधपूर्णभूमिकासहित)

भूमिकालेखक

फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्य संस्थापित

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२४ | भारतराष्ट्रिय शकाब्द | खिस्ताब्द १९६७
प्रथमावृत्ति १००० | १८८९ | मूल्य १८.७५

मुद्रक – वसन्त प्रिन्टिङ्ग प्रेस, अहमदाबाद तथा श्रीहरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

शुद्धि - पत्र

भूमिका—

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ-पंक्ति
०निःशल्थं	०निःशल्यं	४–१३
समस्याएं मीमांसा-साहित्य	समस्याओं की मीमांसा, साहित्य (विशेषतः प्रेमाख्यान)	५–३
(प्रेम) में ही दिया	(प्रेम) में हो दिव्य	६–२७
जो रूपाश्रित	जो रूपाश्रित काम	११–१३
है इसीलिये	है । इसीलिये	११–२२
शकुन्तला-प्रत्याख्या न	शकुन्तला-प्रत्याख्यान	११–२३
गया है वह	गया है । वह	१२–१

मधु-मालती-कथा—

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ-पंक्ति
माप (साइज)+	माप (साइज) ×	सभी पत्रों में
चित्र संख्या-५; सूचीपत्राङ्क १२६	चित्रसंख्या-५; सूचीपत्राङ्क १२५.	१२५ वें पत्र पर लगे चित्र में

सचित्र मधु-मालती-कथा

विषयानुक्रम

		पृष्ठ
१.	संकलित मधुमालती-कथानुक्रम	६
२.	प्रतिकथागत-प्रसङ्गवर्णनसूची	१–३
३.	लिपिकारादि-सूची	४
४.	चित्रसूची	१–४
५.	सञ्चालकीय	१–२
६.	भूमिका	१–३०
७.	मधु-मालती-कथा	१–२४२

संकलित मधु-मालती-कथानुक्रम

क्रमाङ्क	परिग्रहणाङ्क	पृष्ठाङ्क
१.	१५७८(२)	१ – १४
२.	५०७८	१५ – ४५
३.	५०७९	४६ – ५९
४.	५०८०	६० – ८५
५.	५४५७	८६ – ९५
६.	९२७२	९६ – १०५
७.	१०२५८	१०६ – ११६
८.	१०४७७	११७ – १२०
९.	१०७००	१२१ – १३१
१०.	१०८३५	१३२ – १४१
११.	११६०८	१४२ – १५२
१२.	११६३३	१५३ – १९४
१३.	१२२३०	१९५ – २१०
१४.	१२३०१	२११ – २३२
१५.	१७४६१	२३३ – २३८
१६.	११५९४	२३९ – २४०
१७.	११५९५	२४१ – ४४२

मधुमालतीकथान्तर्गत प्रतिक्रमाङ्कानुसार

प्रसङ्गवर्णन-सूची

प्रसङ्ग	जिन जिन प्रतियों में उल्लिखित प्रसङ्ग वर्णित हैं, उन प्रतियों के क्रमाङ्क
१. लीलावती-राजलोक-वर्णन	१, २, ४, ६, ७, ९, १२, १३, १५।
२. मधु-मालती-परिचय	१, २, ३, ४, ६, ७, ९, १२, १३, १५।
३. रामसरोवरवर्णन	१, २, ३, ४, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
४. मधु-मालती का गुरुगृह में अध्ययन एवं प्रणयसंवाद	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
५. मृग-सिंहिनी का प्रेमाख्यान	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
६. वनचर-व्याघ्र-संवाद	१, ४, १२, १४, १५।
७. काक-उलूक-संवाद	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
८. टिट्टिभ-टिट्टिभी (टीटोड़ा-टीटोड़ी)-संवाद	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
९. काक द्वारा सर्पमारण	१, २, ४, ७, १२, १४।
१०. शशक-सिंह-कथा	१, ४, १२, १४।
११. श्रीकृष्ण-चन्द्रावली प्रसङ्ग	१, ५, १४।
१२. करण-पद्मावती-प्रसङ्ग	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
१३. विरहिणी मालती का भृंगी एवं चकवी के साथ वार्त्तालाप	१, २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
१४. मालती-जैतमाल का वार्त्तालाप	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
१५. जैतमाल के सोलह शृंगारों का वर्णन	१, २, ४, ५, ६, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
१६. जैतमाल-मधु-वार्त्तालाप	१, २, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।
१७. काम-दहन	१, २, ३, ४, ५, ६, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५।

१८. जैत द्वारा मधु को पूर्वभवस्मारण	१; २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
१९. मुगल तथा तैलण का आख्यान	१, ५ ।
२०. जैतमाल-मालती-मधु-संवाद	१, २, ४, ६, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
२१. लोरक (लालन) साह की पत्नी मैना के सतीत्व का आख्यान	१, २, ३, ६, ८, ११, १२, १४, १५ ।
२२. मालती एवं जैतमाल के साथ मधु का वार्त्तालाप	१, २, ६, ७, ९, १०, १२, १४, १५ ।
२३. शुक-पिकी (कोयल) का प्रेमाख्यान	१, २, ३, ५, ६, १२ ।
२४. पारधी (व्याध) का प्रसङ्ग	१, २, ३, ८, ११ ।
२५. मधु-मालती का गान्धर्व-विवाह	१, २, ३, ४, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
२६. राजकुमार चन्द्र एवं रूपरेखा की प्रणयकथा	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
२७. मधु तथा भ्रमरों का राजसेना के साथ युद्ध	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
२८. मधु तथा राजदूत का वार्त्तालाप	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४ ।
२९. जैतमाल द्वारा मालती को धैर्यबंधन	१, २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३ ।
३०. मालती द्वारा श्रीकृष्णस्तुति	१, २, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
३१. भारण्डपक्षी आदि वन्यजन्तुओं का राजसेना के साथ युद्ध	१, २, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
३२. चन्द्रसेन की निजमन्त्रियों से मन्त्रणा	१, २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
३३. भीम एवं हिडिम्बा का आख्यान	१, ५, १४, १५ ।
३४. भीम का सर्पराज वासुकि से युद्ध	१, ५, १४ ।
३५. राजा चन्द्रसेन की मंत्री तारणसाह से मंत्रणा	१, २, ४, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
३६. तारणसाह द्वारा युद्धविराम	१, २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
३७. उरगाना पथिक एवं सर्प का आख्यान	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
३८. मलयपुराधीश हरिदत्त के उदरस्थ एवं वनबम्बीस्थ सर्प का संवाद	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १० ११, १२, १३, १४, १५ ।
३९. राजा चन्द्रसेन की कनकमाल रानी से मंत्रणा	१, २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२ १३, १४, १५ ।

४०. श्रीरामचन्द्र-अञ्जनी का संवाद	१, २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
४१. मधु-मालती-विवाह	१, २, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
४२. मधुकथित कामनिवास	१, २, ४, ५, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ।
४३. कविकुलवर्णन	१, २, ४, ५, ७, ९, १०, १२, १३, १४ ।
४४. कथोपसंहार	१, २, ४, ५, ७, ९, १०, १२, १३, १४, १५
४५. इन्द्रायणलुब्ध शुकदृष्टान्त	१, ७, ९, ११, १२, १३, १५ ।
४६. हंस-वधिक-दृष्टान्त	२, ७, १२, १४ ।
४७. भारण्डपक्षिदृष्टान्त	३,
४८. टालोड़ी (गिलहरी)-कूर्म-प्रणयवार्त्ता	४, १२ ।
४९. शृगाल-मगर-संवाद	४, १२ ।
५०. सुदर्शनश्रेष्ठिशीलव्रतोपाख्यान	४, १२, १५, १६ ।
५१. सद्यःप्रसूत सिंहशिशु द्वारा गजमारण-दृष्टान्त	४, ९, ११, १२ ।
५२. उषा-अनिरुद्ध-कथा	४, १२ ।
५३. पिङ्गल रो समीयो (पिङ्गलक-दमनककथा)	५,
५४. यदुवंशकथा	७, ९, १०, ११, १२, १३ ।
५५. विप्र-सर्प-संवाद	१४,
५६. गौ-सिंह-संवाद	१४,
५७. मृग-कपोत-कथा	१५,

लिपिकारादि - सूची

प्रतिक्रम	लिपिकार	लिपिसमय	लिपिस्थान
१.	वनेचन्द	१८७७	सुभटपुर (मानसिंहशासित)
२.	मेता मोतीचन्द खेतसी	१८८१	पालणपुर
३.	०	१८ वीं	०
४.	०	१८ वीं	०
५.	गुरजी घनजी	१८६३	राजगढ़ (अझारा परगणा, मानिकपालशासित)
६.	०	१८ वीं	०
७.	०	१८ वीं	०
८.	०	१८ वीं	०
९.	नन्दकिसोर	१८३३	करौली
१०.	मथेन सीवराम (बीकानेरी)	१८४५	पाली
११.	०	१८ वीं	०
१२.	०	१९ वीं	०
१३.	०	१८५३	०
१४.	ऋष मांणकचंद	१९ वीं	०
१५.	साह मंगलराम चीरंजी संकर	१९१०	मडावरा (लछमणनगर)
१६.	०	१९ वीं	०
१७.	०	१९ वीं	०

चित्र - सूची

शीर्षक	पृष्ठांक
१. रामसरोवर तलाव पणिहारयाँ पाणी भरे०	५
२. मधु-मालती गुरुकनै भणे छै	५
३. मालती मधुरे फुल गेहद की मारी छै	५
४. करण-पदमावती परणै०	७
५. मालती रांमसरोवर बाग में रही०	७
६. महादेव कांमने जारची तिकी भाव छै	७
७. भीम देवलने बेठो तथा पूजा करे०	१०
८. उरगांनो सपने ले गंगा गयो	११
९. हनुमांन सिता लछमन श्रीरांमजी अंजीमाता के पगे लागा ति भाव छै	११
१०. गरुड़ अपने साथ में पक्षियों की फौज लेकर आगे बढ़ रहा है	२२
११. पद्मावती करण को कटाक्ष दृष्टि से देख रही है०	२४
१२. रामसरोवर के तट पर स्थित वृक्षों पर मधु गिलोल चला रहा है	२५
१३. भारण्ड पक्षी का दृश्य	२५
१४. मैना, रतना घर मे बैठी हैं। बाहर वृक्ष के नीचे राजकुमार खड़ा है	३०
१५. वनवृक्षावली का सुन्दरतम दृश्य०	३१
१६. पारधी के अत्यन्त क्षुधापीडित परिवार का कारुणिक दृश्य	३१
१७. बाग में सर्वप्रथम चंद-रूपरेखा का सहोपवेशन	३२
१८. कामासन में आबद्ध रूपरेखा द्वारा चंदकुंअर का सिंह की ओर ध्यानाकर्षण	३२
१९. मालती के सघन वृक्षों का दृश्य	३३
२०. मधु और मालती गुरुगृह में अध्ययन करते हुए परस्पर विलोकन करते हैं	४७
२१. मालती और मधु संलाप कर रहे हैं०	५०
२२. सुलतान मोरे पायक कहै सींघन प्रसुत की वात	५१
२३. पद्मावती और करण मौन बैठे हैं, दीवार के पीछे से उन्हें चंनरेषा देख रही है	५२
२४. सब पंषी पासे कोयल आयो, पंछी फोज	५३
२५. चित्र में—रोजा चंद्रसेन और मंत्री तारणशाह बैठे हुए बात कर रहे हैं	५३
२६. प्रसन्नता की प्रतिमूर्त्ति श्रीलक्ष्मीजी कमल पर बैठी हैं	५४
२७. जाती हुई सेना का दृश्य	५४
२८. उरगेनो घोड़ चढि चाल्यो	५५
२९. (उरगेने उडोक) पथिक उरगेना बेठा हुआ है	५५
३०. (दूत वीदा कीया) राजा तीन दूतों से बात कर रहा है	५८
३१. बारी मांझ कुंवर मधु देषे, ढीग ही जेत-मालती पेषै	५८

शीर्षक	पृष्ठांक
३२. राजा परदानह बुझ (राजा प्रधानों को पूछ रहे हैं)	६३
३३. (१) मधु मालती पढै छै	६३
(२) मधु के साथ सम्पृक्त हुई मालती (सूचीपत्राङ्क–८७)	६३
३४. (१) परसंग मालतीन गदकी दीनी	६३
(२) जतमालक पाया मालती लागी (सूचीपत्राङ्क ८७)	६३
३५. बाग में स्त्रियाँ ईश्वर-गौरी की पूजा कर रही हैं	७४
३६. हदलोटा म सख्या हीद छ (हिंडोले में सखियाँ झूलती हैं)	७४
३७. स्हाह सूली प्रर दीयो (साह को शूली पर दिया)	७५
३८. भसमासर सीवजीकी पुजन कर छ। कडो दीयो। सीवजी भाग	७७
३९. स्दासीवन काम्को प्र(य)ला। भसमी को पाळ भवर	७७
४०. ऊपर बैल का तथा नीचे हाथी का चित्र है	८०
४१. सैनिक तोपों से बाग को उजाड़ रहे हैं। मधु-मालती वृक्षों की कुञ्ज में बैठे हैं	८०
४२. [राजा को भगवती चंडी उपदेश दे रही है]	८१
४३. [राजा युद्ध से भागा और उसने मंत्रियों को बुलाया]	८१
४४. सायर रुप कीधो, इडा लीधा सो दीध, फोज पंपीरी आई	८८
४५. तेली पेमचंदनै मूगलको चाकर मारे दीधी, तेलण दूति देपै	८९
४६. तेली मूया भूतगत पायो, मूगल, दूति दोनु आय तेलणकुं ले गया	८९
४७. मातारा देवलमाहे भीम बैठो रापसने भीम मारची मात नै भाईनै छोडाया, जुध कीदो	९०
४८. सिव गोरी मंधू मालती की रीछया करै	९३
४९. राजा मंधू उपर दूजी फोज वदा किधी, भमर छूटा	९३
५०. अठे श्रीसिव-पारवतीरो पूजन मालती करे सो भाव	१०२
५१. अठे मालती पिलंग उपर सुती थी सो लडाईरो सोर सुंणने जागी, जेतमाल उर सुं लगाय लीनी सो भाव	१०३
५२. अठे श्रीठाकुरांरी असतुत मालती करे सो भाव	१०३
५३. मंत्री तारनसाह अपनी पत्नियों के साथ बैठे हैं और कुमार मधु खड़ा है	१०९
५४. मधु गुरु से पढ़ता है। राजा मंत्री से बात कर रहे हैं	१०९
५५. सिंहिनी और मृग एक साथ बैठे हैं	११०
५६. हरिण के रक्षणार्थ सिंहिनी सिंह के चरणों में अपना शिर रख रही है। मधु-मालती देख रहे हैं	११०
५७. जैतमाल और मधु बैठे हैं	११०
५८. मधु, मालती और जैतमाल बैठे बात कर रहे हैं	१११
५९. पद्मावती-करण का प्रेमालिङ्गन	१११
६०. एक तरफ से आती हुई फौज को देख मालती दौड़ कर मधु के गले लग रही है	११२
६१. राजा अपने दूतों को कुछ संकेत दे रहा है	११२

शीर्षक	पृष्ठांक
६२. रावसरोवर बाग का सुन्दर दृश्य	११२
६३. मधु-मालती पालखी में बैठ कर बड़ी सज-धज के साथ महल की ओर जा रहे हैं	११५
६४. ब्राह्मण मण्डप में जेतमाल तथा मालती के साथ मधु का विवाह करा रहा है	११५
६५. अठै मधु भणने घरां जावै मालती फैटो संभावी सो भाव	११६
६६. लालनसाहने मेना समाचार कयै, दुतीनै गढ्ढे चढाई	११६
६७. चंदकवर बैठो परधांनरी बेटीनु मुरछागत आई पर गई	११६
६८. मधुकुमार रामसरोवर पर गिलोल साधे खड़ा है। पनिहारियां उसे देख अपनी सुधि भूल गई हैं	१२४
६९. राजा चंद्रसेन मालती के अध्ययनार्थ रानी कनकमाल से मंत्रणा कर रहे हैं	१२५
७०. नन्द पुरोहित मालती एवं मधु को पढ़ा रहे हैं	१२५
७१. मालती पट-परेच को फाड़ कर फूल का गेंद मधु के ऊपर फेंक रही है	१२५
७२. वृक्षों पर बैठे हुए कौओं को घूघू (उलूक) मार रहे हैं	१२६
७३. करण-पद्मावती का विवाह-संस्कार	१२६
७४. सखी चंनरेखा पद्मावती की पीठ पर पिचकारी छोड़ रही है पद्मावती चौंक कर करण पर गिर रही है, और वह उसे थांम रहा है	१२७
७५. रामसरोवर के तट पर अपनी तीन सहेलियों के साथ खड़ी मालती मधु के आने की वाट जो रही है	१२७
७६. विलासरत चंद्रकुमार बाण द्वारा सम्मुखस्थ सिंह का हनन कर रहा है	१२८
७७. मधु मालती जेतमालती बैठा	१३८
७८. पायक (सैनिक) भागा; मधु मालती जेतमालती लडै	१३८
७९. राजा करण तोरण वंदै। पदमावती राजा करण परणै	१४४
८०. रामसरोवरै मालती-भृंगी-चकवी-संवाद	१४५
८१. मधु लडै, भगवान भीरै, गरुड भीरै, भारंड भीरै	१४८
८२. चैत्र शुक्ल ३ (गणगौरी) का त्यौहार मनाने के लिए बाग में स्त्रियां हिंडोले पर हींड रही हैं	१६६
८३. मधु द्वारा पराजित सेना भाग रही है	१८६
८४. मधु मालती के साथ गठबन्धन कर विदा हो रहे हैं	१९१
८५. सरस्वती, गणपति, सश्रीक विष्णु, ब्रह्मा एवं उमा सहित शङ्कर	१९८
८६. तारणसाह को बेटो मधु का सरूप	१९८
८७. तारणसाह नंद प्रोहितनें बुलायो हाथमांहे पोथी	१९८
८८. मधु विद्या भणै छै	१९८
८९. राजा कनकमालतीनें पूछै, मालती ऊभी छै	१९९
९०. राजा चंद्रसेन मालतीनैं पूछै है	१९९
९१. मालती भणवा बैठी पंडित भणावै छै हाथमै पाटी छै, परैचकै आंतरै मधु छै	१९९
९२. मालती परेच फाड मधुनै देख फूल गैंदरी मारी	१९९

शीर्षक	पृष्ठांक
९३. सब पंछी मिल घुहरनें राज देवा लागा जितरें एक काग आयो	१९९
९४. नृपतकुमररो चित्र ऊपर बैठो थको हेठै स्त्रीयां बैठी थकी इसो सम्यो	२०१
९५. राजा सूरसेन राजलोकमें आयो सगलो परवार मुहडा आगै ऊभो इसो चित्र	२०१
९६. परणवाको सम्यो चवरी-मंडप-चित्र	२०२
९७. पदमावती ऊपरें चैनरेखा पिचकारी छोडी पदमावती चमकनै करन राजा ऊपर जाय पड़	२०२
९८. जेतमालसुं मालती पागें लागी तिणरो भाव	२०३
९९. जेत मालती बैठी छै मधु राजारा सुभटांसु लडे छै तिणरो भाव छै	२०५
१००. राजारो वन हाथी काटै मधु लडै सो भाव	२०६
१०१. मधु राजा चंद्रसेणरी बेटी परण्यो सो भाव	२०८
१०२. मधु मालतीने परणीजनें डेरे आवै सु भाव	२०८
१०३. माता सरसती बेठी कवि चतुर्भुज उभो हाथ जोडयां	२०८
१०४. सेठ सेठांणी वांट, बाजा बज, सब त्रीयां मंगल गाव	२३६
१०५. वांमम (बम्बी से) पनंग मुख काढया, लरको मुवो पीता आयो	२३६
१०६. श्रीरामचंद्र, लछमण, ज्यानकी, हनुंमान, अंजनी तप त्यांहां आये	२३६
१०७. प्रोहितपत्नी कपिला सुदर्शन सेठ को अपने जाल में फंसाने का उपक्रम कर रही है	२३९
१०८. दो स्त्रियां पनघट पर साधुवेषधारी मनुष्य से बात कर आश्चर्यान्वित होरही हैं	२४०
१०९. रानी अपने सम्मुख उपविष्ट सुदर्शन सेठ के शीलभङ्गार्थ प्रयास कर रही है	२४०
११०. मालती गुहगृह से जाते हुए मधु को रोक रही है	२४१
१११. प्रधान, राजा, खवास, दूत	२४२

सञ्चालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत ग्रंथ द्वारा प्रतिष्ठान में संगृहीत मधुमालती-कथा की सचित्र प्रतियों का परिचय मात्र अभीष्ट था। यद्यपि इस समय प्रतिष्ठान के संग्रह में और भी सचित्र प्रतियां हैं, परन्तु जब १९५९ में कार्यारम्भ हुआ था, तो केवल १७ सचित्र प्रतियां थीं। अतः इसमें १७ प्रतियों के चित्रों आदि का ही परिचय है।

इस परिचय में प्रत्येक प्रति का आद्यन्तसहित परिचय देने के पश्चात् एक टिप्पणी द्वारा प्रत्येक प्रति का सामान्य परिचय तथा प्रति में उपलब्ध चित्रों की कला आदि का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। तदनन्तर चित्रसूची में प्रत्येक चित्र का परिमाण, शीर्षक तथा परिचय देकर एक प्रसङ्गसूची में कथा के सभी प्रसंगों की एक पूरी वर्णनात्मक तालिका प्रस्तुत की गई है। यह सारा कार्य श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी के अथक परिश्रम, अध्यवसाय और सूझबूझ का परिणाम है; अतः वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। सूचियां तैयार करने में श्री-लक्ष्मीनारायण गोस्वामी के साथ कुछ दिन श्रीरमानन्द सारस्वत ने भी अहमदा-बाद रह कर योगदान दिया; अतः उनका भी आभार प्रकट किया जाता है।

खेद है कि १९५९ ई० में प्रारंभ होकर भी यह कार्य अभी तक पूरा नहीं हो सका। विद्वानों और साहित्य-प्रेमियों ने जिस उत्सुकता से इसकी प्रतीक्षा की, वह उनके द्वारा भेजे गये अनेक पत्रों से प्रकट हो रही है। इस लम्बी प्रतीक्षा में उन्हें जो कष्ट हुआ, उसके लिए क्षमा चाहते हुए अब हम यह ग्रंथ उनकी सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं।

मधुमालती चतुर्भुजदास की अमर कृति हमारी राष्ट्रभाषा की अमूल्य निधि है। गुजरात में, इसे गुजराती की कृति मान कर इसके दो संस्करण प्रकाशित किये गए। उत्तरप्रदेश में इस ग्रंथ को अवधी[1] की रचना माना गया और राजस्थान में यह राजस्थानी की रचना मानी जाती है। इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ, अचित्र और सचित्र, जितनी अधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं उससे इस ग्रंथ की लोकप्रियता तो प्रकट होती ही है, परन्तु साथ ही उसके अन्तर्प्रान्तीय प्रभाव और प्रसार को देखते हुए, यह कहना अनुचित न होगा कि लोकप्रियता में यह कबीर, मीराँ, तुलसी तथा सूर की कृतियों से तुलना करती हुई सी प्रतीत

---

१. डॉ. बाबूराम सक्सेना "इवोल्यूशन ऑव अवधी", हीराकान्त श्रीवास्तवकृत "हिन्दू कवियों के प्रेमाख्यान" आदि।

होती है। कबीर आदि संत महात्माओं की कृतियों का प्रचार यदि हिन्दीक्षेत्र की परिधि लाँघ कर बंगाल, गुजरात तथा महाराष्ट्र अथवा उसके पार भी चला जाता है, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि साधु-सन्त तीर्थाटन करते हुए भारत के कोने-कोने में सर्वत्र विचरते ही रहते हैं और उनमें परस्पर आदान-प्रदान होता ही रहता है; परन्तु चतुर्भुजदास की 'मधुमालती' मुख्यतः एक लौकिक प्रेम-कथा है, जिसका प्रसारण निस्संदेह 'रमते राम फकीर' लोगों के माध्यम से सम्भव नहीं था, ऐसी अवस्था में यह मानना पड़ेगा कि धार्मिक की भाँति लौकिक क्षेत्र में भी, संस्कृत के अतिरिक्त एक अन्य सम्पर्क-भाषा का उदय अंग्रेजों के आने से बहुत पूर्व ही प्रारम्भ हो गया था।

निस्सन्देह यह सम्पर्क-भाषा हिन्दी का एक ऐसा रूप था जिसे देश के विभिन्न प्रान्त सहर्ष तथा साभिमान अपनाते थे। यह हिन्दी केवल हिन्दुओं की ही नहीं, अपितु सारे राष्ट्र की थी। मुल्ला दाउद, खुसरू, खानखाना कुतवन, बुरहान, मलिकमुहम्मद, आलम, शेख रिज्कुल्ला, दोस्त मुहम्मद, उस्मान, कासिमशाह, शेखनिसार, नजफ अली, फाजिल शाह आदि अनेक मुसलमान लेखकों ने भी इसमें अपनी रचनाएं १३वीं या १४वीं शताब्दी से लगातार की हैं।

आशा है इस स्वतः उदीयमान सम्पर्क-भाषा के रूप को देश के सामने प्रस्तुत करने में प्रस्तुत ग्रंथ हमें प्रेरणा प्रदान करेगा और हम राष्ट्र की निजी सम्पर्क-भाषा की स्वाभाविक आवश्यकता को पूर्ण करने में शीघ्र समर्थ हो सकेंगे।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

गणेशचतुर्थी २९२४ वि०

—फतहसिंह

भूमिका

मधुमालती की कुछ सचित्र प्रतियों तथा चित्रों का परिचायक प्रस्तुत संग्रह उन शोध-प्रेमियों के कर-कमलों में समर्पित है जो मधु और मालती की प्रेम-लीला का सामान्यतः तथा चतुर्भुजदासकृत प्रेमाख्यान का विशेषतः अध्ययन करना चाहते हैं। राजस्थान और गुजरात में चतुर्भुजदास की कृति बहुत लोकप्रिय रही है, अतः इस क्षेत्र में इसकी प्रतियां बहुतायत से मिलती हैं। हमारे प्रतिष्ठान में ही अभी तक इसकी ३० सचित्र एवं ३३ साधारण प्रतियां संगृहीत हो चुकी हैं। सचित्र प्रति से अभिप्राय दो-चार चित्रों वाली से नहीं, अपितु सैकड़ों चित्रों वाली प्रति से है। जो प्रचुर श्रम, समय और धन इस आख्यान के प्रसंगों को चित्रित करने में व्यय हुआ होगा, वह इस कृति की लोकप्रियता का तो प्रमाण है ही परन्तु साथ ही इससे तत्कालीन समाज की सुरुचि-संपन्नता, सरसता और रसज्ञता भी प्रकट होती है।

अतः चतुर्भुजदास की इस सुन्दर कृति का प्रकाशन आवश्यक था। सर्वप्रथम इसका प्रकाशन गुजराती लिपि में १८७५ ई० में अहमदाबाद से और फिर १८७८ ई० में बंबई से हुआ, क्योंकि गुजराती लोग इसे प्राचीन गुजराती की कृति मानते हैं। हिन्दी लिपि में इसका प्रकाशन अभी १९६४ ई० में वाराणसी से डॉ० माताप्रसाद के संपादकत्व में हुआ। इस प्रतिष्ठान के संस्थापक तथा भूतपूर्व संचालक श्रद्धेय मुनि जिनविजयजी ने भी १९५९ ई० में इसके प्रकाशन की विशाल योजना प्रारंभ की जिसमें न केवल काव्यभाग का प्रकाशन अभिप्रेत था, अपितु उस समय तक उपलब्ध सभी सचित्र प्रतियों के चित्रों के प्रकाशन के साथ-साथ उन प्रतियों-सम्बन्धी उपयोगी सूचना जुटाने का ध्येय भी विशेष रूप से रक्खा गया था। डॉ० माताप्रसाद द्वारा संपादित मधुमालती-वार्ता के प्रकाशन के पश्चात् हिन्दी-जगत् को यह काव्य-ग्रन्थ तो उपलब्ध हो ही चुका है, अतः केवल अवशिष्ट सामग्री कला और शोध के प्रेमियों के लिए प्रकाशित की जा रही है।

ग्रन्थ का नाम

चतुर्भुजदास ने अपनी कृति का नामकरण प्रायः नायक मधु और नायिका मालती के नाम पर मधुमालती, मधुमालती-कथा, मधुमालती-वार्ता, मधुमालती-विलास, मधुमालती-सार तथा मधुमालती-रस-विलास आदि किया है, परन्तु

कभी-कभी विषय के आधार पर इसे कामविलास, कामविलासरस, कामविलास-कथा, कामप्रभुत्वप्रकाश अथवा कामप्रबंधप्रकाश भी कहा गया है। नायक मधु का मुख्य नाम 'मनोहर'[१] होने से, ग्रन्थ का नाम 'रसमालती-मनोहर'[२] भी है। 'मधु' वस्तुतः कृष्ण भगवान् के पुत्र प्रद्युम्न तथा काम के अंश का नाम है, अतः इस पुस्तक को प्रद्युम्न की लीला भी कहा जाता है—

काम पबंध पकास फुनि, मधुमालती विलास।
प्रदुमन की लीला इह, कहत चत्रभुजदास॥

ग्रन्थकार का लक्ष्य

नामकरण की उक्त विविधता से स्पष्ट है कि ग्रन्थकार का लक्ष्य केवल प्रेमकथा द्वारा पाठकों को रिझाना मात्र नहीं था, वह इस कथा के माध्यम से काम के प्रभुत्व को दिखाना चाहता था, काम के विलास को भी चित्रित करना चाहता था। काम का प्रभुत्व या विलास वस्तुतः नायक और नायिका के माध्यम से ही प्रकट होता है; संभवतः इसीलिए ग्रन्थ को मधुमालतीरसविलास, मधु-मालती-सार अथवा केवल मधुमालती भी कहा गया। स्त्री-पुरुष ही, कामसूत्र की भाषा में, 'आयतन-संप्रयोग'[३] हैं, जिनके दारा आत्म और मन से संयुक्त इंद्रियों की कामवृत्ति[४] अपना विलास कर पाती है, इसलिए कामविलास को स्त्री-पुरुष-सार या नायक-नायिका-सार कहना सर्वथा उचित है। सार का दूसरा नाम रस भी है अतः रसमालती-मनोहर कहने में भी कामविलास का स्त्रीपुरुषा-धिष्ठानत्व ही प्रतीत होता है।

सहित दृष्टि

कामविलास के चित्रणार्थ चतुर्भुजदास ने पर्याप्त सूझबूझ के साथ 'मधुमा-लती' को रचा प्रतीत होता है। लेखक ने जनसाधारण के लिए इस पुस्तक में 'चरनायक' की चातुरी, शिव को कामदहन की प्रेरणा देने वाले 'वसंतराजरस' तथा रसिकों को अति प्यारे लगने वाले अनंग-लीला-विस्तार का समावेश किया है—

---

१. ताको नाम मनोहर धर्यो। मानूं काम दूजो अवतर्यो।
मधु-मधु कहि खिलावैं तात। बाधैं चंदकला ज्यूं गात (१,१२-१३)

२. चातुरहित सहचरी रिझाऊं। रसमालती मनोहर गाऊं (१,१)

३. का० सू० १,२, २२ टोका

४. ० सू० १,२,११

चरनायक चातुरी बताई ।
थोरी-थोरी सब ही आई ।
पुनि बसंतराजरस गावैं ।
ज्यामैं ईश्वर काम दजावैं ।।
ताकी एह लीला बिसतारी ।
सुनैं रसिक लागैं बहु प्यारी ।।

इस प्रसंग में कवि ने विप्रलंभ और संभोग-शृंगार के विविध पक्षों तथा नर-नारी के बीच विद्यमान सहज आकर्षण का सांगोपांग निरूपण करके चातुर-चित को रिझाने का प्रयत्न अवश्य किया है, परन्तु उसका लक्ष्य 'चातुर-चित' की चापलूसी करके उसे विकृत करना नहीं है, उसकी प्रतिज्ञा है कि वह पाठकों को रिझायेगा, परन्तु उसका यह रिझाना हितरहित न हो कर 'हित-सहित' होगा—

चातुर चित हित सहित रिझाऊं ।
मधुमालती प्रीति रस गाऊं ।।

इसी दृष्टि से चतुर्भुजदास ने मधुमालती-प्रेमाख्यान के अंतर्गत ही नैतिक शिक्षा के अनेक प्रसंग उपस्थित करके दृष्टान्तस्वरूप पंचतंत्र और हितोपदेश की भांति बहुत सी सूक्तियों, सुभाषितों तथा उपदेशप्रद कथा-प्रसंगों का समायोजन किया है। मृग-सिंहिनी-प्रेमाख्यान, वनचर-व्याघ्र-संवाद, काकोलूकीयम्, टिट्टिभ-टिट्टिभी-वार्तालाप, काक-सर्प-कथा, शशक-सिंह-प्रसंग, कृष्ण-चन्द्रावली-लीला, करण-पद्मावती-वार्ता, कामदहन-प्रसंग, मुगल-तैलण-कथा, सतीमैंना का आख्यान, शुक-कोयल-कथा, चंद्र और रूपरेखा की प्रणयलीला, भीम-हिडिम्बा-प्रसंग, उरगाना-सर्प-प्रसंग, इंद्रायणलुब्धशुक-दृष्टान्त, हंस-वधिक-वार्ता, टालोडी-कूर्म-कथा, उषा-अनिरुद्ध-प्रसंग, विप्र-सर्प-संवाद, गो-सिंह-संवाद, मृग-कपोत-कथा, पिंगलक-दमनक-कथा, शृगाल-मगर-संवाद आदि अनेक प्रसंगों का संकलन इसी निमित्त किया है।

दार्शनिक पुट

साहित्य की इस सहित दृष्टि को और अधिक सबल बनाने के प्रयोजन से लेखक ने अपने काव्य में कुछ दार्शनिक पुट देने का भी प्रयत्न किया है। 'पंचध्यान' और 'अध्यात्म' के समावेश का संकेत[१] संभवतः इसी का द्योतक है, परन्तु यह अध्यात्मवाद वस्तुतः 'रसकला'[२] का दार्शनिक पक्ष है, जिसको समझने

---

१. प्रति १४ का अंत्य भाग।
२. रसिक होय अरु रस कूं चाहे। अध्यातम आतम ही गावे ।।
चातुर पुरुष होय जैं कोई। यह रसकला विचारी होई ।।

में 'चातुर पुरुष' ही समर्थ हो सकता है। इस 'रसकला' की तुलना वात्स्यायनीय कामसूत्र के 'काम' से की जा सकती है। कामसूत्र के अनुसार शतायुपुरुष अपने बाल्यकाल में 'अर्थ'[१] यौवन में 'काम'[२] तथा वृद्धावस्था में 'धर्म'[३] और मोक्ष का सेवन करे, परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में काम का सर्वथा अभाव होता है, क्योंकि काम तो वस्तुतः श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण-नामक पंचेन्द्रियों की स्व-स्व विषयों में वह अनुकूल प्रवृत्ति[४] हैं जो मन तथा आत्मा के संयोग से ही संभव हैं और जो इस दृष्टि से शरीरस्थिति का हेतु होने से 'आहारधर्मा'[५] है तथा धर्म एवं अर्थ का फल[६] माना जाता है। भारतीय कामशास्त्र पुरुषार्थचतुष्टय का लक्ष्य लेकर चला है, अतः उसका दावा है कि कामसूत्र के बताए हुए ढंग से अर्थ, काम एवं धर्म का अर्जन करने से इस लोक और परलोक दोनों में 'अत्यन्त सुख' (मोक्ष) प्राप्त होता है—

> एवमर्थं च कामं च धर्मं चोपाचरन्नरः।
> इहामुत्र च निःशल्यमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥ का० सू० १,२,४९

अतः धर्म, अर्थ काम तीनों का साधक कार्य करना उचित है, आवश्यकता पड़ने पर इनमें से दो अथवा एक के साधक कार्य को भी किया जा सकता हैं, परन्तु जो कार्य तीन में से एक का साधक तथा अन्य दो का बाधक हो वह कदापि नहीं करना चाहिये—

> त्रिवर्गसाधकं यत्स्याद् द्वयोर्वैकस्य वा पुनः।
> कार्यं तदपि कुर्वीत न त्वेकार्थं द्विबाधकम् ॥ का० सू० १,२,५०

लेखक ने इसी विचारधारा को व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न किया। शास्त्रीय मतानुसार त्रिवर्ग को सिद्धि के लिये विद्याग्रहण अपेक्षित है, अतः स्त्री-पुरुष को विवाह से पूर्व काम-सूत्र का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक[७] मानते हुए भी धर्मविद्या (श्रुति, स्मृति), अर्थविद्या (वार्ताशास्त्र), दण्डनीति आदि के ग्रहण में बाधा उपस्थित करके उसे सीखना कभी अभीष्ट नहीं माना गया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कवि ने अपने प्रेम-काव्य के माध्यम से

---

१. बाल्ये विद्याग्रहणादीनर्थान् (२, २)।
२. कामं च यौवने (२, ३)।
३. स्थाविरे धर्मं मोक्षं च (२, ४)।
४. का० सू० १, २. ११।
५. शरीरस्थितिहेतुत्वादाहारधर्माः कामाः (का० सू० १, २. ४६)
६. फलभूताश्च धर्मार्थयोः (का० सू० १, २, ४७)
७. का. सू. १,३,१-२।

उक्त गंभीर विद्याओं को रोचकता प्रदान करने का प्रयत्न किया है, क्योंकि युवकों और युवतियों के लिए राजनीति, धर्मनीति तथा अर्थनीति की अनेक समस्याएं मीमांसा-साहित्य, विशेषत: प्रेमाख्यान के माध्यम से सरलतापूर्वक ग्राह्य हो जाती हैं। पशु-पक्षियों की कहानियों द्वारा नीति-शिक्षा देना अत्यंत पुरानी एवं व्यापक परंपरा है। अत: कोई आश्चर्य नहीं कि लेखक ने अपने मूल प्रेमाख्यान के भीतर न केवल अन्य प्रेमकथाओं का समावेश किया है, अपितु सिंह, मृग, काक, उलूक, गर्दभ, पिक आदि अनेक पशु-पक्षियों की कथाओं को भी दृष्टान्तरूप में उपस्थित किया है।

अपने प्रेमाख्यान के नायक का नाम भी लेखक ने उपयुक्त चुना है। उसका नाम 'मनोहर' है, परन्तु मां-बाप उसे खिलाते हुए 'मधु' कहकर संबोधित करते हैं, इसलिए उसका नाम मधु पड़ जाता है। वैसे मधु वसंतऋतु का भी एक नाम है और वसंतकालीन चैत्र मास को भी मधु कहा जाता है। यौवन मानव-जीवन का वसंत है और सब से अधिक मनोहारी है। अत: प्रेमाख्यानों में युवक नायक को मधु और मनोहर नाम देने की परिपाटी सी चली आती प्रतीत होती है। मंझनकृत मधुमालती[1]-नामक प्रेमाख्यान का नायक 'मनोहर' है और आकिलखां[2] की फारसी कृति 'मेह्रो माह' तथा नुसरती[3] के एक हिन्दी काव्य के नायक का नाम भी यही है। वसंतऋतु का एक और पर्यायवाची शब्द 'माधव' भी प्रेमाख्यानों में लोकप्रिय रहा है। बड़ौदा की गायकवाड़ सिरीज से प्रो० एम० आर० मजूमदार के सम्पादकत्व में प्रकाशित माधवानलकामकन्दलाप्रबन्ध[4], माधवानलकामकन्दला[5]-चौपई तथा माधवानल-कथा[6] इसके प्रमाणस्वरूप रक्खे जा सकते हैं। आलमकवि[7] ने भी राजा टोडरमल के कहने पर शाहंशाह अकबर के लिए माधवानलकथा इसी आख्यान को लेकर लिखी और स्वयं चतुर्भुजदास ने भी अपनी मधुमालती-वार्ता में माधवानलकथा को एक उपकथा के रूप में ग्रहण

---

१. काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

२. Mughal Bibliography, Vicaji D.B. Taraporevala & D.N. Marshall Bombay 1962. Page 29.

३. ,, ,, ,,

४. कवि गणपति कृत।

५. कवि कुशललाभ विरचित।

६. कवि दामोदर रचित।

७. इसकी दो प्रतियां राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में संगृहीत हैं।

किया है। संस्कृत में भी आनन्दधरकृत एक 'माधवानलाख्यानम्'[१] प्राप्त है जिसमें उक्त प्रेमकथा को ही माध्यम बनाकर विभिन्न प्रकार की नैतिक शिक्षा दी गई है। भवभूति के 'मालतीमाधवम्' नामक नाटक में भी प्रेमी युवक नायक का नाम माधव ही है।

वसंतराज रस

प्रेमाख्यानों के युवक नायकों के वसंतवाचक नामों की सार्थकता इसी में प्रतीत होती है कि काम संभवत: यौवनरूपी वसंत का रस है। चतुर्भुजदास ने इसी बात को ध्यान में रख कर संभवत: अपने कामप्रबंधप्रकाश (मधुमालती) में काम के एक रूप को वसंत (यौवन) का 'राजरस' कहा[२] है जिसमें कामदहन का कार्य ईश्वर (सर्वसमर्थ शिव) द्वारा ही संभव हो सकता है। 'राजरस' कहने से स्पष्ट है कि कवि के मानस में किसी 'रस' की कल्पना भी थी, इसी 'रस' के संदर्भ में वह 'रसिक होय अरु रसकूं चाहै' की बात कहता है। यह रस का काम वह रूप माना जा सकता है जो सौन्दर्यमात्र की चाह के रूप में हमारे भीतर विद्यमान है और जिसकी अभिव्यक्ति कविकला में होती है। इसी को लक्ष्य करके संत दादू ने अपनी वाणी के 'काया के अंग' में कहा है—

काया मांहै कान्दलिवास।
काया मांहै है कविलास॥

कान्दल अथवा कन्दल नवकिसलय को कहते हैं, काम का उक्त रूप चाह या प्रेम के नवकिसलय के समान होने से 'कन्दल' कहा गया है, इसी रस के आस्वादन को 'कविलास' में अभिव्यक्ति मिल पाती है, परन्तु इस रस की पराकाष्ठा 'राजरस' में है जो केवल शरीर या रूप तक सीमित नहीं रहता। ईश्वर (शिव) में इसी 'राजरस' व्यापक एवं असीम रस (प्रेम) का निवास है, अतः उसके सामने कामकन्दलस्वरूप वह रूपगत सांगरस नहीं ठहर सकता, वह भस्म हो जाता है। शिव के उस 'राजरस' रूप प्रेम या काम को प्राप्त करने का सौभाग्य रूपगत सौन्दर्य को न होकर तपोगत सौन्दर्य को ही प्राप्त होता है, इसीलिए कुमार संभव में कालिदास[३] ने कामदहन के पश्चात् रूप को अनावश्यक एवं तप को आवश्यक बतलाया है।

---

१. इसका भी प्रकाशन गायकवाड़ सिरीज में प्रकाशित, माधवानलकामकन्दलाप्रबन्ध' के साथ परिशिष्ट रूप में हो चुका है।

२. पुनि वसंतराजरस गावै। ज्यामैं ईश्वर काम दजावै॥

३. देखिये—तथा समक्षं दहता मनोभवं पिनाकिना भग्नमनोरथा सती।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता॥

अतः प्रेमाख्यान-परम्परा में काम के दो रूप देखे जा सकते हैं—एक कन्दल अथवा अल्परस और दूसरा राजरस या महारस। मंझन की मधुमालती में काम के इन दोनों भेदों का स्थाननिर्देश करने के लिये क्रमशः कनैगिरि (कन्दलगिरि) और महारसनगर के प्रतीकों की कल्पना की गई है। कन्दलगिरि का राजकुमार महारसनगर की राजकुमारी के महारस के लिए अपना सब कुछ त्यागता है और उसके साथ तादात्म्य का अनुभव करता है—

मैं सभ तजि संकरेउं दुख तोरा। मोर जिउ तोर तोर जिय मोरा॥

(११४, १)

अपने प्रेमास्पद का वियोगजन्य दुःख उसके लिये अमृत है और उसकी प्राप्ति के लिए वह अपने 'अपान' को निछावर करता है, मृत्यु का भी वरण करता है—

मैं अपान दै तोर दुख लिया। मरि कै अब सो अमृत पिया॥

(११५, ५)

इस अमृत, महारस अथवा राजरस पीने के लिए जिस मृत्यु का उल्लेख हुआ है वह वस्तुतः शारीरिक काम को दग्ध अथवा मारने से प्राप्त होती है—ससीम काम को असीम काम में परिणत करने से होती है। इसी के प्रसंग में मंझन ने लिखा है—

अमर न होत कोई जग हारै। मरि जो मरै तेहि मीचु न मारै।
पेम के आगि सही जेइं आंचा। सो जग जनमि काल सेउं बांचा।
पेम सरनि जेइं-आपु उबारा। सो न मरै काहू कर मारा।
एक बार जो मरि जिउ पावै। काल बहुरि तेहि नियर ने आवै।
मिरित-क फल अम्रित होइ गया। निहचै अंबर ताहि-क कया।

(५३८, १-५)

इसी अमृतकला मृत्यु की कल्पना शिव-कथा में सतीदाह के पश्चात् शिव-पार्वती की अमरता में निहित है; अन्तर केवल इतना है कि यहाँ प्रेमी पुरुष न होकर स्त्री है जिसे कनैगिरि के बदले हिमालय से और महारसनगर के बदले कैलाश को अपने प्रेमास्पद की प्राप्ति के लिए सर्वस्व त्याग करके—देहत्याग करके भी जाना पड़ता है। यह अमृत ही काम का वह रूप है जो अथर्ववेद में 'मनसःरेतः'[1] तथा भगवद्गीता[2] में 'धर्माविरुद्ध काम' कहा गया है।

---

१. कामस्तदग्रे समवर्तत मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् (अ० वे० १९, ५२, १)
२. धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ। (भगवद्गीता ७-११)।

मधुमालती का प्रेमास्पद

मधुमालती-परम्परा के उपर्युक्त प्रेमाख्यानों में प्रेमास्पद स्त्री है जिसको मालती अथवा मधुमालती नाम दिया गया है। यह भवभूति की नायिका का भी नाम है। संस्कृत में इसका अर्थ 'कली' अथवा 'अल्पवयस्का कुमारी' है और मधु यौवन के प्रतीक वसंत का नाम है। अतः मालती अथवा मधुमालती उस युवती-सामान्य का प्रतीक बन सकती है जिसको युवक-सामान्य का प्रतीक मधु अथवा मनोहर अपना प्रेमास्पद बना सकता है। 'माधवानलाख्यान' की परंपरा में नायिका युवती कामकन्दला को इसी प्रकार 'काम का किसलय' कहा जा सकता है जिसे युवक-सामान्य का दूसरा वसंतवाची प्रतीक माधव अपना प्रेमास्पद बनाता है। दोनों परंपराओं में प्रमुख अन्तर थोड़ा ही है—मालती एक कुलाङ्गना है और उसका प्रेमी उससे पूर्वजन्म में सम्बन्धित था, जबकि कामकन्दला एक वेश्यापालिता या वेश्यापुत्री है और उसके प्रेमी माधव[1] को कभी कभी माधवानल[2] भी कहा गया है। संभवतः इस अन्तर का कारण यह है कि माधवानल-कामकन्दला की परंपरा में जिस काम की अभिव्यक्ति है वह केवल शारीरिक प्रेम है, मांसल आकर्षण है जो जीवन-वसंतरूपी यौवन (माधव) की अग्नि के समान है, परन्तु मधुमालतीपरंपरा का काम शारीरिक आकर्षण अथवा रस से प्रारंभ होकर विराट महारस होने की क्षमता रखता है। यही कारण है कि मधुमालती-परंपरा में चतुर्भुजदास वसंतराज तथा अध्यात्म की बात करते हैं और नायक मधु को कृष्णदेव[3] का पुत्र प्रद्युम्न भी मानते हैं। मंझन की मधुमालती में तो काम का यह रूप और भी सुस्पष्ट एवं सुविस्तृत प्रतीत होता है। वहाँ काम जिस प्रेम के रूप में प्रकट हुआ है उसके विषय में डॉ० माताप्रसाद जी ने लिखा है—

"इस प्रेम-साधना में एक ही बात ऐसी है जो प्रायः पाठकों को चक्कर में डाल देती है : वह है इस प्रेम की शारीरिकता; यह प्रेम जहाँ एक ओर आध्यात्मिक है, वहाँ दूसरी ओर मांसल भी है.......... । प्रश्न यह है कि इस शारीरिकता का उपर्युक्त अध्यात्मवाद से क्या संबंध है। मेरी समझ में इसका उत्तर यही है कि इन संतों ने जीवन को एक समग्र रूप में देखा है। उनका जीवन-दर्शन शारीरिक आवश्यकताओं की उपेक्षा नहीं करता है ; यह अवश्य है कि

---

१. देखिये—माधवनलकामकन्दलाप्रबन्ध १,११६, तथा माधवानलकथा।

२. देखिये—माधवानलाख्यानम्, माधवानलकन्दलाचउपई।

३. कृष्णदेव को कुँअर कहावै। प्रदुमन काम अंस मधु भावै॥

वह शारीरिक आवश्यकताओं को मर्यादित रखने का उपदेश करता है। इस शारीरिकता के अभाव में पुरुष और नारी की प्रेम-कल्पना मिथ्या होती, इसलिए सूफी साधकों की यह मर्यादित शारीरिकता उनकी आध्यात्मिक प्रेम-साधना का एक ऐसा अंग है जो उनकी दृष्टि में उनके लक्ष्य में बाधक नहीं होता है।"

भौतिक और आध्यात्मिक प्रेम

डॉ० गुप्त द्वारा उठाया गया यह प्रश्न तथा उसका समाधान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और वह सर्वथा भारतीय भी है। महाभारत, पुराण एवं रामायण तथा इन ग्रंथों पर आश्रित अनेक काव्यग्रंथों में बिखरे हुए अनेक प्रतीक एक सुसंबद्ध और सुव्यवस्थित दर्शन को छिपाये हुए हैं जो लौकिक और अलौकिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक शृंगार का सुन्दर समन्वय करके वैदिक युग से बराबर चला आ रहा है। कामात्मजा श्रद्धा और मनु, पुरुरवा और उर्वशी, यम और यमी, दुष्यन्त और शकुन्तला, नल और दमयन्ती, शिव और पार्वती तथा कृष्ण और राधा जैसे अनेक प्रतीकों की सृष्टि इसी प्रकार के समन्वय के लिए हुई है। 'शृंगार' शब्द का अर्थ ही उस 'कामरस' से है जिसकी सर्वोत्कृष्ट ऊँचाई (शृंग) 'अर' में और यह अर वही वैदिक 'अरं' है जो अन्यत्र[1] आत्यंतिक सौन्दर्य्य अथवा आनन्द का तत्त्व माना गया है और जिसके संबंध से ही 'आर्य' का आर्यत्व निश्चित हुआ है।

अथर्ववेद में 'मन का रेतस्' जिस काम को कहा गया है वह भी शृंगाररस की इसी ऊंचाई की ओर संकेत करता है और इसी दृष्टि से शृंगारप्रकाश की परम्परा में शृंगार की ही परिणति अन्य रसों में मानी गई है तथा श्रीमद्भगवद्गीता में 'धर्माविरुद्ध काम' की कल्पना की गई है। भर्तृहरि जैसे राजर्षि के मुख से शृंगार, नीति और वैराग्य की त्रिवेणी का उद्भूत होना, जगत् के माता-पिता शिव-पार्वती को अलौकिकता से उतार कर संभोग-शृंगार की घोर लौकिकता में लाना तथा उन्हें आदर्श-दम्पती के रूप में मान्यता देना आदि इसी निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं।

शृङ्गार पाप नहीं

वस्तुतः भारतीय लौकिक कामवासना (प्रेम) में ही दिया प्रेम का बीज निहित माना गया है। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने जब जर्मन कवि गेटे का यह कथन पढ़ा कि शकुन्तला में "वासन्तीपुष्प और परवर्ती फल, पृथिवी और

---

१. देखिये—लेखककृत 'भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका'।

स्वर्ग' दोनों का एक स्थान में ही समावेश है, तो उन्होंने उसका यह अर्थ लगाया कि शकुन्तला में 'एक विकास का इतिहास—पृथिवी के स्वर्ग में, प्रकृति के आत्मा में विकसित होने का इतिहास समाविष्ट है।' उनकी सम्मति में 'अभिज्ञानशाकुन्तल का लक्ष्य यही है कि ऐहिक विषय को पारलौकिक में परिणत कर दिया जाय, भौतिक सौन्दर्य्य के स्तर से उठाकर प्रेम को नैतिक सौन्दर्य्य के अनन्त आकाश तक ले जाया जाय······यौवन-सुलभ वासना के एक आकस्मिक झोंके ने शकुंतला को एक क्षण में दुष्यन्त के हवाले कर दिया, परन्तु इस प्रकार वह उसे सत्यतः और पूर्णतः नहीं मिल पाई ; उसकी प्राप्ति का सर्वोत्तम उपाय भक्ति और तपस्या है। इसलिये कवि ने दोनों प्रेमियों से एक लम्बी एवं कठोर तपस्या कराई है, जिससे वे एक दूसरे को वास्तविक और आत्यन्तिक रूप में पा सकें······ इस नाटक में कालिदास ने घोर मनोवेग के ज्वालामुखी को संतप्त हृदय के अश्रुओं द्वारा बुझाया है।' रवीन्द्रनाथ ठाकुर के इस कथन का यह अभिप्राय कदापि नहीं कि स्त्री-पुरुष का पारस्परिक आकर्षण या प्रेम (जैसा कि कुछ लोगों ने समझा है) कोई पाप है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि भारतीय मान्यता के अनुसार इस बीज का सुमधुरतम फलन उसी दिव्य प्रेम में होता है जो कृष्ण-लीला के अन्तर्गत गोपियों को विरहव्यथा में व्यक्त हुआ है। गोपियों के लिये मथुरा को पहुँचना कोई बड़ी बात नहीं, परन्तु उन्हें कृष्ण के प्रति भौतिक आकर्षण की अपेक्षा आध्यात्मिक प्रेम का अधिक महत्त्व है, इसलिए वे मथुरा न जाकर चिरवियोगिनी रह कर अमृत प्रेम-आस्वादन करना अधिक अच्छा समझती हैं। यही बात मीरां के कृष्ण-प्रेम के विषय में कही जा सकती है। यही मंझन के शब्दों में वह 'पेमपीर'[1] है जो जगत् में जन्म लेने का जीवनफल तथा जग का सुख-सर्वस्व[2] है—

जनि कोइ विरह दुक्ख जिअ बानै, ओहि जग आवा सुक्ख।
धनि जीवन जग ताकर जाहि, विरह दुख सुक्ख॥

भारतीय श्रृंगार का यह चरम लक्ष्य होते हुए भी, उसके साधारण रूप की भारतीय साहित्य के प्रतिनिधि प्रणेताओं ने उपेक्षा नहीं की है। उदाहरण के लिये कालिदास और भवभूति को लिया जा सकता है। इन दोनों के साहित्य में स्त्री-पुरुष का सहज पारस्परिक प्रेम तीन अवस्थाओं में चित्रित किया गया है—

---

१. जगत जनमि जीवन फल ताही। पेम पीर उपजी जिअ जाही॥

(म० मा० २७, ३)

२. म० मा० २७, ६।

(१) रूप-गत प्रेम—यह प्रेम शारीरिक आकर्षण पर आधारित शुद्ध मांसल प्रेम है जो मांसल होने के कारण एक ही प्रेमास्पद पर टिक कर नहीं रहता। अग्निमित्र का मालविका के प्रति और दुष्यन्त का शकुन्तला के प्रति प्रथम प्रेम इसी 'मधुकर-लोभ' की श्रेणी में आता है।

(२) गुण-गत प्रेम—यह शारीरिक आकर्षण अथवा 'मधुकर-लोभ' की श्रेणी से ऊपर उठकर प्रेमी और प्रेमास्पद के पारस्परिक गुणों पर आधारित होता है। इसका उदाहरण स्वयंवर पर आधारित रघुवंशी दाम्पत्य-प्रेम (राम-सीता, अज-इंदुमती आदि) में देखा जा सकता है और इस प्रेम में अनन्यता होती है, यद्यपि इसमें भी मांसलता का अभाव नहीं होता है।

(३) शील-गत प्रेम—यह प्रेम प्रेमी और प्रेमास्पद के उदात्त शील पर आधारित होता है। इसका एक उदाहरण उत्तररामचरित में वर्णित सीता और राम का प्रेम, जो सीता के परित्याग के बाद भी दोनों हृदयों में समान रूप से उत्तरोत्तर वृद्धि पाता है, और दूसरा कुमारसंभव में शिव-पार्वती का प्रेम है जो रूपाश्रित के भस्म होने पर भी दोनों हृदयों में समानरूप से परिपाक को प्राप्त करता है।

इन तीनों में से रूपगत प्रेम का भी अपना स्थान है, परन्तु यदि वह 'मधुकर-लोभ' के स्तर तक ही सीमित रह जाता है, तो वह स्वर्ग की अप्सरा को भी मृत्युलोक में उर्वशी की तरह ला पटकता है, पवित्र आश्रमकन्या शकुन्तला को भी लांछित एवं अपमानित करता है तथा पुरुरवा एवं दुष्यन्त जैसे चक्रवर्तियों को भी व्यामोह-ग्रस्त होने के लिए बाध्य करता है, परन्तु यदि वह मर्यादा, त्याग, संयम एवं तपस्या का आश्रय लेकर चलता है, तो वह शील-गत प्रेम के उदात्ततम आदर्श को प्राप्त कर आध्यात्मिक प्रेम में परिणत होने की क्षमता रखता है इसीलिये दुष्यन्त-शकुन्तला के रूपगत प्रेम की निरर्थकता दिखलाने के लिए व्यामोह-जनित शकुन्तला-प्रत्याख्या न करवाकर अन्त में मारीचि-ऋषि के आश्रम में तपस्विनी शकुन्तला को पश्चात्ताप एवं प्रायश्चित्त से शुद्धभूत दुष्यन्त के साथ वास्तविक दाम्पत्य-सुख का अनुभव कराया गया है। इस प्रकार दुष्यन्त का रूपगत 'मधुकर-लोभ' प्रथम तो मछुये से अंगूठी प्राप्त करने के पश्चात् शकुन्तला के प्रति 'गुणगत' प्रेम में परिणत होता है, तत्पश्चात्त मरीचि-आश्रम में जाकर शीलगत में परिणत होता है। इसी प्रकार भवभूति के 'मालती-माधवम्' में मालती का रूप-गत 'मनोराग'[1] तीव्र विष तथा निर्धूम पावक के समान बतलाया

१. मनोरागस्तीव्रं विषमिव विसर्पत्यविरतं
प्रमाथी निर्धूमो ज्वलति विधुतः पावक इव।
हिनस्ति प्रत्यङ्गं ज्वर इव गरीयानित इतो
न मां त्रातुं तातः प्रभवति न चाम्बा न भवती॥ (मा० मा० २,१)

गया है वह दाम्पत्य-प्रेम को 'समग्र बन्धुता' में तब बदलता है जब उसके पहले वह अपने माता-पिता तथा कुल की मर्यादा के सामने काम-विदग्ध जीवन परित्याग कर मृत्यु तक का वरण करने को तैय्यार हो जाती है—

ज्वलतु गगने रात्रौ रात्रावखण्डकल: शशी ।
दहतु मदन: किं वा मृत्यो: परेण विधास्यति ।
मम तु दयित: श्लाघ्यस्तातो जनन्यमलान्वया
कुलममलिनं न त्वेवायं जनो न च जीवितम् ॥

(मा० मा० २,२)

उसी प्रकार माधव भी जब अपने त्याग, शौर्य्य आदि गुणों के द्वारा अपनी रूप-सम्पन्नता में गुण-संपन्नता का योग कर पाता है, तभी वह उक्त दाम्पत्य प्रेम की 'समग्र बंधुता'[1] को पाता है, प्राप्त करता है, जो शील-गत प्रेम की भूमिका है। परन्तु मालती-माधव तथा दुष्यन्त-शकुन्तला का प्रेम आध्यात्मिकता की उच्चतम भूमि पर नहीं पहुँच पाता; उसके लिये तो भवभूति ने तुलसीदास[2] की तरह 'रूप-शील-गुणधाम राम' को चुना जो महावीरचरित में अपनी रूप-संपन्नता एवं गुण-संपन्नता को निखार कर शील-संपन्नता में परिणत कर देते हैं और उत्तररामचरित में जाकर उसे शुद्ध आध्यात्मिकता में बदल देता है और जिसके फलस्वरूप सीताराम की कथा शब्दब्रह्मविद् प्राज्ञ कवि की वाणी[3] बन जाती है—वही वाणी जिसे भवभूति ने उत्तररामचरित के प्रारंभ[4] में 'वाचममृतामात्मन: कलाम्' कह कर नमस्कार किया है तथा जिसे मंझन कवि ने अमर वचन, वचन का भी वचन, सर्वव्यापक तथा नानारूपात्मक जगत् का स्रष्टा बतलाया है—

वचन केर उतपति मुंह सेऊं। मानुस बोल अमर दहुं केऊं।
रहै न वचन केर पति जहाँ। कैसे वचन अम्बर होइ तहाँ॥

देखहु मनहि विचारि के, वचन वचन हिय माँहि ।
बचन ऐस है ताकर जो, वर्तत सभ माँहि ॥

---

१. प्रेयो मित्रं बन्धुता वा समग्रा
सर्वे कामा: शेवधिर्जीवितं वा ।
स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसा-
मित्यन्योन्यं वत्सयोर्ज्ञातमस्तु ॥ (मा० मा० ६,१८)

२. तु० क० रूप शील गुण धाम राम नृप अजिर प्रकट भये आई ।
(कवितावली, १)

३. देखिये—उ० रा० 'नान्दी'।

४. देखिये—वहीं 'भरतवाक्य'।

प्रथमहि आदि सिस्टिहु के पारा।
हरिमुख वचन लीन श्रीतारा॥
एकै वचन आदि उंकारा।
भलमंद होइ व्यापा संसारा॥

आध्यात्मिकता का रहस्य

वस्तुतः उक्त आध्यात्मिकता का रहस्य भारतीय दर्शन की मूल निधि है जिसके अनुसार नारी कोई हाडमांस का सुन्दर शरीर मात्र नहीं, अपितु नर की वह शक्ति है जिसके द्वारा वह एक से अनेक हो सकता है। समष्टि में यही नारायण की नारायणी शक्ति है जिसके द्वारा एक नारायण नानारूपात्मक सृष्टि के रूप में व्यक्त होता है। इस शक्ति का अपने शक्तिमान् से अविनाभाव संबंध है; अतः उन दोनों को तत्त्वतः अभिन्न कहा जाता है। तुलसीदास ने राम और सीता के रूप में इन्हीं दोनों तत्त्वों को देखा और कहा—

गिरा अरथ जल-बीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न।
बंदौं सीता रामपद, जिन्हिं परमप्रिय खिन्न॥

कालिदास ने इन्हीं को शिव-पार्वती के रूप में पाया और उन्हें इसी प्रकार वाक् और अर्थ के समान संपृक्त बतलाया—

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥

इन्हीं दोनों तत्त्वों को भवभूति ने आत्मा तथा उसकी वाक् कहा—

वन्देमहि च तां वाचममृतामात्मनः कलाम्।

स्थूल-सृष्टि में ये दोनों आदि-तत्त्व असीम से ससीम, एक से अनेक, सूक्ष्म से स्थूल तथा संपृक्त से पृथक् हो जाते हैं—अतः दोनों में एक दूसरे के लिए चाह जाग उठती है; यही काम है जो स्थूलोन्मुख होकर बाह्यजगत् में 'रति' (चाह की तृप्ति) ढूंढ़ता है, परन्तु सूक्ष्मोन्मुख होकर बाह्यजगत् में 'विरति' लाभ करके अन्तर्जगत में 'निरति' एवं 'सुरति' के लिए प्रयत्नशील होकर 'धर्माविरुद्ध काम' होता हुआ शुद्ध आध्यात्मिक प्रेम में परिणत हो जाता है।

चतुर्भुंजदास और माधव

संभवतः चतुर्भुंजदास के प्रेमाख्यान में यह दार्शनिक पुट देने का अधिकांश

श्रेय उनके 'परम उदार' गुरु माधव को है जिनको कवि[१] ने मधुमालतीरस-विलास नाम से प्राप्त होने वाली प्रति में श्रद्धापूर्वक याद किया है। मधुमालती के संशोधित संस्करण के पीछे जिन माधवशर्मा[२] का हाथ बताया जाता है वे संभवत: लेखक के यही गुरुदेव हैं ; क्योंकि ग्रंथ में स्पष्ट कहा गया है कि वह माधव और चतुर्भुजदास की सम्मिलित[३] कृति है और ये दोनों क्रमश: साधु, ब्राह्मण और कायस्थ हैं। परन्तु माधव का योगदान केवल कृष्णचरित और वृन्दावन के वातावरण को लाने तक ही सीमित प्रतीत होता है, जैसा कि निम्न-लिखित उल्लेख से संकेत मिलता है—

पहली कायथ ही ज वषानी।
पाछै माधव उचरी वानी।।
कछूक यामैं चरित मुरारी।
श्री व्रंदावन की सुखकारी।।

साधु माधव ने इस प्रकार मधुमालती के 'कामरस' को वृन्दावन के कृष्णलीला-सरोवर में नहलाकर मानो उस (कामरस) की पूर्णता[४] स्वीकार की है; परन्तु इसके विना भी चतुर्भुजदास[५] ने इस ग्रंथ को न केवल राजाओं, राज्यमन्त्रियों तथा कामीजनों के लिये रचा था, अपितु योगियों के लिए भी। उनकी सम्मति में, जो रसिक है और जिसे रस की चाह है वही इसके 'अध्यातम'[६] का अवगाहन कर सकता है। इसोलिए माधव ने इसमें 'कामरस' को पूर्णता दी और चतुर्भुज-दास इसके द्वारा 'रसकनि रस की बात' को गाकर मरुदेश में विख्यात हो गये—

---

१. नमसकार मो माधवा श्रीगुरु परम उदार।
जाइ कृपा तैं जगत भव निहचैं उतरैं पार।।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त द्वारा संपादित मधुमालती वार्त्ता की भूमिका, पृष्ठ १-२।

३. मधुमालती बात यह गाई। दोयजना मिलि सोय बणाई।।
येक साध ब्राह्मन सोई। दूजो कायथ कुल मैं होई।।
येक नांव माधव बड़ होई। मनुहर पुरि जानत सब कोई।।
कायथ नाम चत्रभुज जाको। मारु देसि भयो ग्रह तांको।।

४. माधो तातैं गाहियौ यो रस पूरन सोय।
कौन काम रस स्यौं हुतो जानत हैं सब कोय।

५. राजा पढ़ै तो राजगत, मंत्री पढ़ै तो वुद्ध।
कामी पढ़ै विलासरस, जोगी पढ़ै तो सिद्ध। (१, अन्त ८४)

६. रसिक होय अरु रसकूं चाहै। अध्यातम आतम अवगाहै। (१, अन्त ८१)

माधौ तातैं गाहियो यौ रस पूरन सोय।
कौन काम रसस्यौं हुतो जानत है सब कोय॥
काइथ गाई जानि कै रसकनि रस की बात।
नाम चतुर्भुज ही भयौ मारू मांहि विख्यात॥

माधवशर्मा और वृन्दावनलीला

माधवशर्मा ने मधु-मालती के भौतिक कामरस को पूर्णता देने के लिये, मधु का मालती के पास से भागकर कृष्णलीलाभूमि वृन्दावन में जाना दिखलाया है। शुद्ध नैतिक दृष्टि से राजा द्वारा भेजे गये सैनिकों के सामने से भाग जाना और वह भी अपनी प्रेयसी को संकटापन्न स्थिति में छोड़ जाना नायक के चारित्रिक पतन का द्योतक है, परन्तु यहाँ हमें भारतीय कला के 'भावसंमिलन' की दृष्टि[1] से विचार करना चाहिए न कि स्वधर्म-प्रतिपालन की दृष्टि से। द्वितीय दृष्टि इतिहास-प्रधान काव्यों की है जो नैतिक मर्यादा की स्थापना का लक्ष्य लेकर चलते हैं; रामायण इस दृष्टि का एक सर्वोत्तम उदाहरण है। इसके विपरीत, प्रथम दृष्टि 'भाव-संमिलन' की रहस्यभूमि को लक्ष्य बनाकर चलती है जिसमें कुंभ से भी अगस्त्य का जन्म हो जाता है, सती द्रौपदी के पांच पति हो सकते हैं, प्रजापति द्वारा अपनी पुत्री के साथ समागम संभव है और सूर्य अपनी स्वसा उषा का जार हो जाता है। इस दृष्टि का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण कृष्णलीला है, जिसको लक्ष्य करके भागवतटीकाकार नीलकंठ ने लिखा है कि, "देवकी आदि नाम केवल प्रतीकात्मक हैं जिनका एक गूढ़ तात्पर्य है। कथा कहने का वहां लक्ष्य नहीं, अपितु गोपियों के साथ होने वाली कृष्ण की रासलीला का आधार जीव एवं ईश्वर के बीच स्थित शाश्वत सम्बन्ध का अमर एवं सनातन सत्य है। प्रत्येक सच्चे भगवद्भक्त के हृदय में यह लीला किसी समय भी संभव हो सकती है, क्योंकि मानव का हृदय ही इस लीला की भूमि है......गोलोक (चेतना की एक भूमि-विशेष) में यह लीला कृष्ण की इच्छानुसार निरंतर चलती रहती है।" इस प्रकार की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति में नैतिकता और अनैतिकता के प्रश्न को लाना व्यर्थ है, क्योंकि, जैसा कि डा० कुमारस्वामी[1] ने कृष्णलीला के आलोचकों के उत्तर में कहा है, "यह नैतिक न होकर आध्यात्मिक विषय है; इसका आचारशास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं। यह बात सर्वमान्य है कि आचार-शास्त्र के स्तर पर, भारतीय समाज-व्यवस्था ने जो नैतिक मूल्य स्थिर किए है वे अकाटच एवं अनिंद्य हैं।" अतः यदि साधारण परकीयाप्रेम की गरिमा

१. आं० कु० राजपूत पेंटिंग (१९२६), पृ० ६२.

दिखाना ही रासलीला का लक्ष्य रहा होता, तो कृष्णलीला को यह आदर और गौरव का स्थान न मिल पाता जो आज युगों से चला आ रहा है।

इस प्रसंग में यह भ्रम-निवारण भी आवश्यक है कि कृष्णलीला से संबन्धित ग्रन्थों में ही इस प्रकार की परिपाटी प्रचलित है। वस्तुतः 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' के सिद्धान्त पर आधारित भारतीय जीवन-दर्शन में भौतिक आध्यात्मिक, बाह्य और आन्तरिक एवं स्थूल और सूक्ष्म तत्त्वों का शाश्वत सहास्तित्व माना गया है। एक सच्चे ईसाई विद्वान लेखक[1] के शब्दों में, भारतीय दृष्टि में, मानव जीवन अपने सभी व्यापारों के रूप में एक ऐसा कर्मकाण्ड समझा जाता है जिसका बाह्य होने के साथ ही आभ्यंतरिक भी होता है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि जीवन एक काल्पनिक प्रतीक है, अपितु उसका अभिप्राय एवं लक्ष्य एक साथ आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों है। जिसको हम पाशविक अथवा भ्रष्ट आचरण कहते हैं उसको केवल बाहरी रूप देख कर नहीं पहचाना जा सकता; यदि ऐसा होता, तो डाक्टर की आपरेशन टेबिल पर होनेवाली मौत को भी हत्या की संज्ञा मिलती जैसा कि आर्थर अवेलन ने अपने अंग्रेजी ग्रंथ, तांत्रिक प्रिंसिपुल्स में कहा है, वस्तुतः भ्रष्टता अथवा अपवित्रता अविद्या की पुत्री है जो वास्तविक दिव्य कर्म से भी दिव्यता को दूर करके उसको केवल विषय-भोग की श्रेणी में ला बिठाती है।" अतः मानव को मानवता के ऊँचे स्तर से गिराकर पशुत्व के निम्न स्तर पर लेजाने वाले आहार, निद्रा, मैथुन आदि जैसे स्वयं पशु-सुलभ व्यापार नहीं, अपितु उन व्यापारों के द्वारा निरन्तर सक्रिय रहने वाली ईश्वरीय व्यवस्था और आवश्यकता का अज्ञान एवं अनादर मात्र है।

शुद्ध भारतीय परंपरा के शृंगार-काव्यों (जिनमें चतुर्भुज और मंझन की कृतियाँ भी निस्संदेह शामिल हैं) के कामविलास का मर्म इसी दृष्टि से समझा जा सकता है और जहाँ यह दृष्टि नहीं रहती वहाँ का यथार्थवाद कोरा 'बुराई का विज्ञापक' मात्र रह जाता है। कामप्रवृत्ति के वैज्ञानिक विश्लेषण में रुचि रखने वाले फ्रायडवादी आज इसी दृष्टि के अभाव में स्वाभाविकता और यथार्थता के नाम पर साहित्य एवं कला के क्षेत्र में 'बुराई के विज्ञापन' का समर्थन कर जाते हैं, जबकि भारतीय कामसूत्र के प्रणेता वात्स्यायन भी अर्थकामपरायण जीवन में धर्म की सर्वोपरिता को अमान्य नहीं ठहरा सके। 'कामसूत्र के साथ 'औद्धत्य'

---

१. स्वर्गीय डा० आनन्द, ए. कुमारस्वामी, राज. पेंटिंग, पृ० ६३

का समायोजन करके भी भवभूति ने मालती-माधवम् को एक स्वस्थ मर्यादा का पोषक बनाने में जिस दृष्टि से काम लिया उसके अभाव में आज उदात्त लक्ष्य से रचित कलाकृतियाँ भी औद्धत्य और कामुकता को छूते ही नग्न कामुकता एवं स्वच्छंद उद्दण्डता का विज्ञापन करती हुई देखी जाती हैं। इसका कारण यह है कि हमारे प्राचीन साहित्य और कला ने जीवन की समग्रता में पशुता को एक अनिवार्य अंग मानते हुए भी जीवन के गूढ़ तात्पर्य और प्रयोजन को कभी भी दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया।

मधुमालती की चित्रकला

यही सत्य इस ग्रंथ में संगृहीत मधुमालती-चित्रावली के अध्ययन से भी उद्घाटित होगा। परन्तु इस निष्कर्ष तक पहुँचने से पूर्व प्रस्तुत चित्रावली की कलात्मक पृष्ठभूमि का सामान्य परिचय देना आवश्यक होगा। चित्रकला के क्षेत्र में भी संगीत की भांति हमारे यहाँ कई सम्प्रदाय हैं। इन चित्रों को आधुनिक कलामर्मज्ञों[1] ने जिस संप्रदाय-विशेष के अन्तर्गत रक्खा है उसे 'राजपूत' की संज्ञा दी गई है और इसके दो बड़े भेद 'राजस्थानी' और 'पहाड़ी' माने गये हैं। चित्रकला के क्षेत्र में प्रायः संप्रदाय के स्थान पर 'कलम' शब्द का प्रयोग होता है, परन्तु अन्य कलाओं (विशेषकर साहित्य) के व्यापक संदर्भ में रखने की दृष्टि से यहाँ संप्रदाय शब्द अधिक समीचीन प्रतीत होता है; अतः राजस्थानी और पहाड़ी की दो कलमें न कहकर यहाँ दो कला-संप्रदाय कहना अधिक अच्छा जंचता है। राजस्थानी संप्रदाय के अन्तर्गत न केवल वर्तमान राजस्थान में सम्मिलित मेवाड़, जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, किशनगढ़, बूँदी और कोटा आदि की चित्रकला आती है, अपितु उसमें बुंदेलखण्ड, पश्चिमी मालवा तथा गुजरात की चित्रावलियां भी आ जाती हैं। पहाड़ी संप्रदाय के अन्तर्गत दो बड़े वर्ग हैं, एक रावी नदी से पूर्व स्थित चम्बा, नूरपुर, गुलेर, दतारपुर, सीब, जसवान, कांगडा, कुटलेर, मण्डी, सुकेत तथा कुलू आदि का जालंधर-वर्ग तथा दूसरा रावी नदी से पश्चिम-स्थित चंबा, वसेहली, भद्दु, मांकोट, बेहनद्राल्त, जसरोट, साम्ब, जम्मू, चनेहनी, कस्टवार तथा भद्रावाह का डोंगरा-वर्ग। इन भूतपूर्व राज्यों के अतिरिक्त इसी वर्ग में टेहरी गढ़वाल को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

---

१. राज० पें० (१९२६) पृ० ३-२२।

राजपूत चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ

मधुमालती की चित्रावलि के सौन्दर्य्य को हृदयङ्गम करने के लिए राजपूत चित्रकला की प्रमुख विशेषताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। अतः यहाँ पर उनका परिचय दिया जाता है। इस संप्रदाय के चित्रों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि उसकी एक अपनी प्रविधि और शैली है जिसके द्वारा आकृति-प्रकृति, अङ्ग-प्रत्यङ्ग, वन-वनस्पति, जल-थल आदि को चित्रित करने के लिए किन्ही कलात्मक सूत्रों का प्रयोग किया गया है। इस दृष्टि से इन चित्रों से सङ्केत-विधान एवं वस्त्रविधान का गम्भीर परिचय प्रकट होता है। चेहरे को चित्रित करने में प्रायः पार्श्वबिम्ब को ही ग्रहण किया जाता है, परन्तु कभी-कभी सम्पूर्ण अथवा ईषत्पूर्ण बिम्ब अथवा पृष्ठबिम्ब भी प्राप्त होता हैं। श्री असितकुमार हलदार[1] के अनुसार मुगल-युग के आरंभ की राजपूत चित्रकारी में भारत की स्वतन्त्रता एवं आदर्शभूत शैली के दर्शन होते हैं, परन्तु परवर्ती काल में वह भारतीय एवं मुगल-कला का सुन्दर सम्मिश्रण बन जाती है। श्री-रामगोपाल विजयवर्गीय[2] का कथन है कि 'मुगल-शैली का प्रभाव केवल उन चित्रकारों पर अधिक रहा जो राजकीय सम्पर्क में थे या जहाँ के शासक मुगल दरबारों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किये हुये थे।'

डॉ० आनन्दकुमार स्वामो ने राजपूत चित्रों में प्रयुक्त निम्नलिखित रंगों का उल्लेख किया है—

अभ्रकी	...	...	पीला भूरा
आसमानो	...	...	आसमानी नीला
बादामी	...	...	बादाम का सा
चाँदी या रूपा	...	...	रजतवर्ण
चेरा, चेहरा	...	...	हलका लाल (ईंट का सा)
धूम्र	...	...	धूयें का सा
गौरी, गौर	...	...	हलका पीला, सुनहरा
गुलाबी	...	...	गुलाब जैसा लाल
कारी, काला	...	...	काजल जैसा
खाकी	...	...	

१. भारतीय चित्रकला, पृ० १६।
२. राजस्थानी चित्रकला, पृ० क।

लाल, सिंधूर, सँधूरी, सुरखी	...		रक्तवर्ण
नारंगी	...	...	संतरे जैसा
नीला	...	...	गहरा नीला
सवज़, सज, सोजा		...	हरा
सोना	...	...	स्वर्णवर्ण
सुफेद, सुफेदा, धोला, धवली	...		श्वेत या धवल
वसन्ती, पीली	...	...	केसरिया
सोसनी	...	...	(वैंगनी ?)

राजपूत चित्रकला में प्रयुक्त साज-सज्जा तथा वस्त्राभूषण आदि का अध्ययन डॉ० हरमान गोवेत्स ने विशेष रूप से किया है, और इस आधार पर राजपूत एवं मुगल शैलियों की अपनी-अपनी विशेषताओं को भी स्पष्ट किया है। राजपूत पेंटिंग-नामक ग्रंथ[1] के लेखक ने राजपूत साज-सज्जा का उपयोगी वर्णन दिया है जिसको संक्षेप में यहाँ दिया जा रहा है—

पुरुष-साज-सज्जा :

(क) बिन्दियाँ, अंगराग और रंग

टीका या तिलक—(भृकुटियों के बीच)

छाप —(संप्रदायगत चिह्न, शरीर के अंगों पर) हाथ-पैरों की अंगुलियों में मेंहदी।

(ख) सरपेश या

सरपेंच —प्राय: रत्नजटित या गोटेदार जो पगड़ी में रहता है.

माला-बन्द —रत्न-जटित पट्टी या ताजे फूल जो पगड़ी के ऊपर रहे।

बाला —मोती या रत्न पिरोई हुई कानों की बालियाँ।

भुजबंद —कुहनी से ऊपर भुजदंड का भूषण।

कंकण —कलाई का भूषण।

नूपुर —

मुकुट —पंचकोना मुकुट राजाओं और देवताओं के लिये।

मोर-मुकुट —केवल कृष्ण के लिये।

---

१. पृष्ट २३ से ३६ तक।

(ग) पगड़ी —शुद्ध राजपूती, पतला और लम्बा (प्राय: ६ इंच चौ. और ३० लम्बा) ।

साफा —सम्भवतः अफगानों की देन (?), चौड़ा और छोटा (१×८ गज) ।

धोती (सं० धौती), —अधोवस्त्र जिसे बाँधने के अनेक प्रकार हैं

पीतांबर —कृष्ण का पीला अधोवस्त्र ।

लँगोटी
टीपी —प्राय: चित्रों में गोवों द्वारा प्रयुक्त

दुपट्टा या उत्तरीय चादर

शाल-दुशाला

अंगरखा

जामा या तकौचिया—एक दरबारी पोशाक, नीचे तक झूलता हुआ लम्बा कोट सा । नीचे (कमर से ऊपर) और ऊपर (कंधे पर) तनीदार, बाईं ओर राजपूती और दाहिनी ओर मुसलमानी । कुशान युग से भारतीय पोशाक, यदि इससे पुरानी भी हो, तो आश्चर्य नहीं ।

चपकन, —एक चुश्त लम्बा घेरदार और तनीदार कोट, चित्रों में मध्यवर्गीय लोगों की पोशाक !

अंगरखा, —छोटी और सादी चपकन, किसानों की पोशाक

पैजामा, चूड़ीदार —कुशान काल से भारतीय पोशाक

कच्छा

कमरबंद या पटुका

स्त्री-साज-सज्जा—

(क) बिन्दी, रंग और अंगराग
माँग
टीका या तिलक
छाप (चन्दन-चिह्न)
महावर या लाक्षारस
अंजन
मेंहँदी

(ख) आभरण या आभूषण—

चोंक	—अर्द्धचंद्राकार या त्रिकोण आभूषण (शिर पर)
सिर-मांग	—माँग पर मोतियों की लड़ी।
घेढ़ी या टीका	—मस्तक पर लटकता हुआ भूषण
शीशफूल शीशमणि सूरज	—केशों के रत्नाभूषण
नथ बेसर बेसरी	
बेना चंद-बेना जुगनू	—मस्तक या बालों के लटकनदार भूषण
माला हार चन्द्रहार पंचलड़ी धुकधुकी	—कई प्रकार के आभूषण जो गले में पहने जायें
कंकण चूड़ी कड़ा नंगरी	—कलाई के भूषण
मुंदरी मुद्रा	—उँगलियों की अंगूठी
हथफूल	—हथेली के पृष्ठभाग का आभूषण
छल्ला	—पैर की अंगुलियों की मुंदरी
अनवट अंगुष्ठ	—पैर के अंगूठे का छल्ला
बिछुआ	—पैर की अंगुलियों का आभूषण (प्रायः बजने वाला)

नूपुर जेहरा तेहरा	—पैरों का आभूषण

(ग) वस्त्र—

सारी	—(संस्कृत साटी, साटिका)
दुपट्टा ओढ़नी चादर	—उत्तरीय
चोली अंगिया	—वक्षस्थल के वस्त्र
लँहगा घाघरा	—कटि से नीचे तक का वस्त्र
झंगुलो पेशवाज़	—पैजामा के ऊपर प्रयुक्त पूरी पोशाक जिसमें ऊपर से नीचे तक पूरा शरीर ढ़क जाता है।

राजपूत चित्रकला के विषय

राजपूत चित्रकला में चित्रण-विषय का वैविध्य और वैशिष्ट्य उल्लेखनीय है। रामायण, महाभारत, पुराण, तन्त्र, वीरकाव्य, शृंगारकाव्य, भक्तिकाव्य आदि अनेक साहित्यिक स्रोतों से विषयों का प्रायः चयन किया गया है। एक बहुत ही प्रसिद्ध विषय राजपूत कला का 'रागमाला' है जिसमें ३६ रागनियों का वर्णन करने वाली कविताओं को चित्रित किया जाता है। राग-रागनियों के गाने से वही भाव व्यक्त होता हैं जो उन कविताओं की शब्दावली से, और उस भाव को व्यक्त करने के लिये चित्र में कुछ निश्चित प्रविधि अपनाई गई है। दूसरे शब्दों में कवि, संगीतकार और चित्रकार तीनों का भाव यहाँ एकरूपता ग्रहण करता है। रागमाला-चित्रों का तात्त्विक स्वरूप शृंगारात्मक है, और उस शृंङ्गार की अपनी दार्शनिक पृष्ठभूमि है जो काव्य, संगीत एवं चित्र की सम्मिलित संपत्ति होकर रागमाला-चित्रों की आधार बनती है। इसकी तुलना भरत के नाट्य (यथा मालविका के चलित नाट्य) से की जा सकती है जहाँ काव्य, वाद्य और अभिनय के द्वारा एक ही भावाभिव्यक्ति की जाती है; कत्थक-नृत्य में अभिव्यक्त शिवताण्डव आदि विषय भी इसी प्रकार के उदाहरण हैं। अतः यह परम्परा भरत के नाट्यशास्त्र के समान ही अति प्राचीन रही होगी,

यद्यपि इसका लिखित प्रमाण अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। डॉ० आनन्दकुमार स्वामी[1] का कथन है कि रागमाला-चित्र राजपूत-चित्रों में सबसे अधिक प्राचीनता, गम्भीरता एवं रंगीणता से युक्त है, परन्तु उनकी प्राचीनता का कोई साहित्यिक प्रमाण नहीं मिलता। विष्णुधर्मोत्तर में वर्णित, वैणिक, सात्विक, नागर और मिश्र भेदों में से डॉ० आ० कु० स्वामी ने प्रथम को रागमाला के समकक्ष मानने के लिए संकेत किया है, परन्तु यथार्थतः इनको मिश्र-चित्र मानना उपयुक्त होगा क्योंकि ये चारों भेद क्रमशः पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी और परा की तुलना में किये गये हैं और इसलिए मिश्रचित्र में परा की भाँति अन्य तीनों के बीज मयूराण्डरसवत् विद्यमान मानने होंगे। नागर-चित्र में शृंगार रूपगत है, सात्विक में गुणगत है और वैणिक में वह शीलगत है तथा मिश्र में इन तीनों का एकत्र समावेश होगा; यही बात रागमाला-चित्रों में है और इसी प्रकार के समन्वय अथवा संमिश्रण के प्रयत्न काव्य के क्षेत्र में मधुमालती जैसे प्रेमाख्यानों में देखे जा सकते हैं। अतः मधुमालती के लिये शृंगार की यह दार्शनिक पृष्ठभूमि न केवल काव्य की दृष्टि से अपितु चित्रावली की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसलिये इस दृष्टि से भी शृंगार का यहाँ थोड़ा विवेचन अपेक्षित है।

राजपूत चित्रकला में शृङ्गार

उपर्युक्त रागमाला अथवा मिश्र में जो शृंगार अभिप्रेत प्रतीत होता है वह साहित्य-मीमांसाकार का शृंगाराद्वैत अथवा भोज का अहङ्कार-शृंगार या उपनिषदों का आत्मानन्द है। इसके रूपांतर न केवल शृङ्गार-प्रकाश के काम-शृंगार, अर्थ-शृङ्गार, धर्म-शृंगार तथा मोक्ष-शृंगार हैं, अपितु वे आठ या नव रस भी हैं जिनके अन्तर्गत स्त्री-पुरुषों के यौन-संबंधों से संबंधित काम-शृंगार का तथाकथित व्यावहारिक रूप आता है। डॉ० राघवन[2] के अनुसार, यही अहंकार-शृंगार मनुष्य की समस्त संस्कृति एवं स्वस्ति का मूल, चरित्र का उत्कर्ष, रसिकता का हेतु तथा पूर्वजन्म के पुण्यकर्मों का सहज फल है। यही वह केन्द्रस्थानीय अग्नि है जिसके चतुर्दिक् विराजमान अचिस्वरूपा सभी मानवीय भावनायें उसे उत्तरोत्तर ज्योतिर्मय करती रहती हैं (सप्तर्चिषं द्युतिचया इव वर्धयन्ति) इसकी तुलना एवरक्राम्बे की 'अनामा भावना' (emotion nameless) अथवा आधुनिक मनोविश्लेषणविज्ञान 'लिबिडो' से की गई[3] है, परन्तु यह तुलना तभी तक

---

१. राजपूत पेंटिंग (१९२६), पृ० ४३।

२. शृंगारप्रकाश, पृ० ४८९

३. वही, पृ० ४९०-९१

सार्थक होगी जब तक आध्यात्मिक आनन्द की भूमि से नीचे उतरने का प्रयास न करें, क्योंकि नीचे उतरते ही हम शृंगार के व्यावहारिक क्षेत्र में उतर कर मध्यमावस्था के भावप्रदेश में विचरने लगते हैं।

अस्तु, राजपूत सम्प्रदाय के सामान्य चित्रों की आधारभूमि प्रायः वही साधारण शृंगार है जिसे भोज ने कामशृंगार कहा है और जो अवस्था भेद से प्रकृष्ट-रस, भावरूप तथा आभास-रूप में पाया जाता है। प्रेमी और प्रेमास्पद, नायक और नायिका के पारस्परिक संबन्ध की दृष्टि से यह शृंगार दो प्रकार का है, वियोग और संयोग। वियोग को विरह या विप्रलंभ भी कहा जाता है जिसके पुनः प्रायः ६ या १० भेद हैं; इनमें से राजपूत चित्रकला के लिए, डॉ० आनन्द-कुमार स्वामी के अनुसार, अभिलास, स्मरण एवं व्याधि ही अधिक उपयोगी हैं। जिन विभिन्न अवस्थाओं में विरह का उद्भव होता है उनके नाम हैं पूर्वराग, मान, प्रवास, प्रव्रज्या और करुणा। राजपूत चित्रों में प्रथम चार अधिक मिलती हैं।

संयोगशृंगार अनेक प्रकार का बतलाया गया है और चित्रकला में इसकी अभिव्यक्ति भी विविध प्रकार से प्राप्त होती है। भोज के शृंगारप्रकाश में, एक दृष्टि से संयोग या संभोग-शृंगार के दो ही भेद, सामान्य और विशेष माने गये हैं। सामान्य-संभोग तो पशु पक्षियों का है और विशेष नागरिकों का। विशेष-संभोग के पुनः १२ भेद हैं, जिनमें से प्रत्येक की चार अवस्थायें सत्ता, अभिव्यक्त, अनुबंध तथा प्रकर्ष होती हैं।

इस शृंगार के अधिष्ठान हैं स्त्री-पुरुष अथवा नायिका और नायक जिनका वर्गीकरण भी आयु, अनुभव आदि की दृष्टियों से विविध प्रकार का मिलता है। प्रस्तुत विषय की दृष्टि से अष्टनायिका-भेद तथा चार या तीन नायक-प्रकार पर्याप्त होंगे।

आठ नायिकायें निम्नलिखित हैं—

स्वाधीनपतिका	—जिसका पति उसके वश में हो।
उत्का, उत्कला या उत्कंठिता	—जो अपने प्रिय नायक के लिये उत्कंठित होकर प्रतीक्षा करती हो।
अभिसंधिता या कलहान्तरिता	—जो नायिका मनुहार करने वाले नायक को फटकारती है और बाद में पछताती है।
खंडिता	—जिसका नायक रात बाहर बिताता है और सुबह वापिस आने पर फटकारती है

प्रोषित-पतिका —जिसका प्रिय आने की अवधि निश्चित करके प्रवास में गया है, परन्तु अवधि आने पर भी वापिस नहीं आता है।

विप्रलब्धा —जिसके लिये रात बीत जाती है, पर नियत स्थान पर उसका प्रिय नहीं पहुँचता है।

अभिसारिका —जो अपने प्रिय की खोज में बाहर जाती है।

अभिसारिका के भी कामाभिसारिका, कृष्णाभिसारिका, गर्भाभिसारिका आदि अनेक भेद होते हैं। परन्तु प्रमुख भेद दो ही हैं; एक शुक्लाभिसारिका जो श्वेत वस्त्र पहनकर चाँदनी रात में जाती है और दूसरी कृष्णाभिसारिका जो अंधेरी रात में काले वस्त्र पहनकर जाती है। इन दोनों में से राजपूत चित्रकला में केवल द्वितीय प्रकार हो प्राप्त होता है।

एक दूसरी दृष्टि से नायिकाओं के तीन और भेद हैं:—

(१) स्वकीया जो अपने विवाहित पति को प्रेम करती है।

(२) परकीया जो परपुरुष को प्रेम करती है।

(३) सामान्या जो निष्पक्ष भाव से प्रेम करती है।

अनुभव की दृष्टि से, अनुभवहीन अल्पवयस्का नायिका को नवला-बाला, मुग्धा या नवोढ़ा और अनुभवयुक्त बड़ी आयुवाली तथा ईषत्लज्जा वाली नायिका को प्रौढ़ा या प्रगल्भा कहा जाता है। इन दोनों के मध्य में मध्या नायिका आती है जिसमें लज्जा और प्रेम का सामंजस्य रहता है। प्रेम-मार्ग में निराशा आने पर नायिका जिस प्रकार व्यवहार करती है उसकी दृष्टि से नायिका धीरा, अधीरा तथा धीराधीरा कही जाती है।

नायिका की भाँति नायक के कई प्रकार हैं। भरत[1] ने १४ प्रकार के नायक माने हैं, परन्तु भोज ने कामशृंगार, अर्थशृंगार, धर्मशृंगार तथा मोक्ष-शृंगार की दृष्टि से चार ही नायक माने हैं, यद्यपि इनके अवान्तर-भेद अनेक हो सकते हैं। रसिकप्रियाकार और भाषाभूषणकार ने पति, उपपति (प्रेमी) तथा वैशिक (वेश्याप्रेमी) नायक स्वीकार किये हैं। अनुकूल, दक्षिण, शठ तथा धृष्ट नायकों के उदाहरण भी राजपूत चित्रकला में मिलते हैं और धीर, उदात्त, ललित, शान्त आदि भेद भी नायकों के लक्षण ग्रन्थों में मिलते हैं।

---

१. ना० शा० २२.

चित्रों में नायकों और नायिकाओं के विभिन्न प्रकारों को चित्रित करने के लिए प्रविधिविशेष अपनाई जाती है। उदाहरण के लिए डॉ० आनन्दकुमार स्वामी ने नायिका-भेद प्रकट करते हुये निम्नलिखित चित्रों की ओर संकेत किया है—

(१) स्वाधीनपतिका चित्र में सुखपूर्वक बैठी हुई दिखाई जाती है और उसका पति उसके पैरों पर झुका हुआ होता है।

(२) उत्का या उत्कंठिता नायिका किसी वृक्ष के नीचे अथवा उपवन के पास तृण या पत्तों की शय्या के पास बैठी या खड़ी होकर प्रतीक्षा करती हुई चित्रित की जाती है। सामने कमलाच्छादित जलाशय के पास मृगशावक चरते हुये या मुंह उठाये हुये दिखाये जाते हैं।

(३) वासकशय्या अपने गृह के द्वार से बाहर की ओर देखती हुई चित्रित की जाती है अथवा अपने वापिस आते हुये पति का स्वागत करती हुई होती है और उसकी सखियाँ भीतर शय्या सजाती हुई दिखाई जाती हैं। कभी-कभी चित्र में पति के आगमन का सूचक कौआ भी चित्र में होता है।

(४) अभिसंधत्ता अपने प्रेमी का निरादर करके भूमि पर निर्विण्ण होकर बैठी हुई होती है और उसका प्रेमी नायिका की ओर पीठ फेर कर जाता हुआ चित्रित किया जाता है।

(५) खंडिता प्रातःकाल अपने विलंबित पति को डाँटती हुई दिखाई जाती है।

(६) प्रोषितपतिका अपनी सखी के साथ उद्विग्नमना होकर बैठती है।

(७) विप्रलब्धा उत्कंठिता की भाँति ही शय्या के पास प्रतीक्षा करती होती है परन्तु साथ ही प्रिय के न आने से नैराश्य एवं अधैर्य्यवश आभूषणों को उतार कर फेंकती हुई दिखाई देती है।

(८) अभिसारिका अंधेरी और तूफानी रात को जाती हुई चित्रित की जाती है; एक-आध आभूषण मार्ग पर गिरते हुये जाते हैं; सर्प पैरों में लिपट जाते हैं; बिजली चमकती है; वर्षा होती है।

शृङ्गार और सहित दृष्टिकोण

चित्रकला, संगीत और काव्य में शृंगार को प्रधानता देते हुये भी मर्यादा-वाद भारतीय परम्परा की प्रमुख विशेषता है, क्योंकि चतुर्भुजदास के शब्दों में, वह शृंगार द्वारा रसिकों को रिझाना तो अपना कर्तव्य मानती है परन्तु यह

रिझाना 'सहित' होना चाहिये 'अहित' कदापि नहीं। इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं कि साहित्य या कला को विधि-साहित्य अथवा धर्मशास्त्र में परिणत कर दिया जाय; परन्तु साथ साहित्य एवं कला को उच्छृङ्खलता का प्रचारक तथा बुराई का विज्ञापक भी नहीं होने दिया जा सकता, क्योंकि ऐसा होने से मानव निस्संदेह अपने विवेक एवं स्वातंत्र्य को खोकर वासना का दास बन जाता है, जिसके फलस्वरूप उसके पल्ले न सौंदर्य्य पड़ता है, न स्वास्थ्य, न भोग पड़ता है, न आस्वादन, अपितु केवल कुरूपता, रोग, जुगुप्सा और निराशा ही अंत में उसके हाथ लगते हैं। आज विचार-स्वातंत्र्य, आचार-स्वातंत्र्य एवं जीवन-स्वातंत्र्य के नाम पर, यथार्थवाद, आधुनिकता और नवीनता के व्यामोह में मानव की मानवता का जो नृशंसतापूर्वक संहार होने जा रहा है उसकी ओर संकेत करते हुये किन्हीं कैलाशसिंहजी ने २२ अगस्त १९६७ के नवभारत टाइम्स में एक उल्लेखनीय रिपोर्ट दी है जिसको यहाँ अविकलरूप से उद्धृत किया जा रहा है—

यौन-कुंठाग्रस्त पीढ़ी के प्रतीक बीटनीक

"दिल्ली शहर के पार्कों में आजकल कतिपय विचित्र व्यक्ति देखने को मिलते हैं। आठ-दस विदेशी युवक और उनके साथ एक-दो नवयुवतियाँ गोल बाँधकर बैठी रहती हैं। गले में रुद्राक्ष और हाथों में गाँजे या चरस की चिलम लिये ये युवक आध्यात्मिकता की खोज में भटके राही हैं या पश्चिम की यौन-कुण्ठाओं से ग्रस्त एक सामाजिक प्रश्नचिह्न हैं। इनमें से कुछ अपने को 'बीटनीक' बतलाते हैं। बीटनीक या आहत पीढ़ी की अधिकांश विच्युतियों का समर्थन करने वाले ये अधकचरे तथाकथित कलाकार मूल्यहीन एवं आस्थाच्युत समाज के प्रतिबिम्ब हैं।

"प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता एवं समाजशास्त्री टोयनबी ने इस पीढ़ी को अमरीका के लिए एक चेतावनी बतलाया है। इन विदेशी युवक-युवतियों में कुछ अपने आपको हिप्पी बतलाते हैं।

"दिल्ली भारत की राजनीतिक ही नहीं कलात्मक राजधानी भी है। दिल्ली को तो इन सब विरोधी भावों को पचाने की शक्ति है, लेकिन ये विच्युत एवं कुंठित युवाजन जब भारत के ग्रामीण अंचलों में पहुँचते हैं तब आदरसूचक सम्मान से इनका स्वागत होता है, और ये अपनी इन यौन एवं मानसिक विच्युतियों को अपने हाव-भाव से प्रचारित करते हैं क्योंकि इनकी भाषा हमारा जनमानस नहीं समझता। उत्तरप्रदेश के पर्वतीय अंचलों में भी इनकी टोलियाँ किन्हीं अनजान लक्ष्यों की खोज में घूमती हुई दिखलाई देती हैं।

"खुलेआम गांजा व चरस पीने और पिलाने वाले ये पाश्चात्य युवाजन शरीर की भूख की तृप्ति के लिये 'सभी' कुछ करते हैं। अधनंगी युवतियाँ टी-हाउसों और काफी-हाउसों में अध्यात्म की खोज में अपने शरीर के प्रदर्शन एवं सेक्स-अपील से अपने तथा अपने साथियों के लिये सीधा-सादा लंच जुटाती हैं या फिर भूख और सूखे से दुःखी भारतीय को उसके स्वर्णिम अतीत की याद दिलाती है।

"इन विच्युत विदेशियों का मानसिक गठन कैसा ही हो, पर ये अपने व्यवहार से अभी तक हिंसात्मक प्रवृत्तियों को नहीं निकाल सके हैं। अभी उस दिन कनाट प्लेस में एक युवक तथा युवती गोलमार्केट से एक स्कूटर-रिक्शा में आये। उन्होंने चालक के हाथों में बीस पैसे रख दिये। चालक ने जब अपना पूरा किराया माँगा, तो वह युवक मरने-मारने पर उतारू हो गया। दो-चार भारतीयों ने बीच-बिचाव करवाया। कनाटप्लेस के कुछ जलपानगृहों ने इन विदेशियों को 'सर्व' करना छोड़ दिया है। खा-पीकर ये लोग अक्सर झगड़ा करते हैं। यह शिकायत बहुत आम हो गई है।

"चरस, अफीम और गांजा पीने वाली यह पीढ़ी किसी सामाजिक नैतिकता की कायल नहीं हैं। सामाजिक संबन्धों को ये नहीं मानते। इनके लिये औरत, भांग और खाना जीवित रहने का साधनमात्र हैं। इस पीढ़ी की युवतियां भारतीय सामाजिक जीवन की गणिकाओं की श्रेणी में भी नहीं आ सकती हैं। पशुवत् प्रवृत्ति और व्यवहार इनका जीवन है।

"नपुंसक विद्रोह और मानसिक ऐय्याशी के ये प्रतीक केवल स्वयं ही मूल्य-हीन जीवन नहीं जी रहे हैं। बल्कि उसका प्रचार भी कर रहे हैं। भटके हुए ये युवाजन अपने साथ केवल सामाजिक कलुष ही नहीं ला रहे है, बल्कि इनके साथ जासूसों के पत्र राजनीतिक एवं सैनिक सूचनाओं के लिये भी ला रहे हैं। अपने आपको 'मिस-फिट' या सामाजिक रूप से स्वीकारे गये कहने वाले ये विदेशी अपना प्रभाव किस हद तक हमारे समाज पर डालेंगे यह तो समाज-शास्त्री ही बतलायेंगे, पर हमारे साहित्यकार इनकी 'रो' में न बह जायें यह खतरा अवश्य है.................।"

स्वस्थ दृष्टि की आवश्यकता

उक्त वक्तव्य जिस नैतिक संकट की ओर संकेत कर रहा है वह हमारे राष्ट्रीय जीवन में तीव्र गति से आने को उत्सुक है। इससे भी अधिक भयङ्कर

बात यह है कि स्वामी दयानन्द और गांधीजी की शुद्ध स्वदेशी विचारधारा को पूर्णतया परित्याग कर, देश प्रत्येक विदेशी वस्तु का, चाहे वह कितनी ही सड़ी-गली क्यों न हो, हार्दिक अभिनन्दन करने को लालायित है। हालावाद की गोद में विराजमान इंद्रियलोलुपता एवं विलासिता स्वाभाविकता तथा यथार्थवाद के नाम पर, अधिकारवाद के आश्रय में पनपती हुई हिंसा तथा अराजकता की प्रवृत्ति व्यक्ति-स्वातंत्र्य के नाम पर और अभिनन्दनवाद की छाया में नृत्य-निरत आधुनिकता एवं भौतिकता की उत्कट अभिलाषा समस्त देशी परम्पराओं, मान्यताओं तथा मर्यादाओं को ध्वस्त करने में लगी हुई है जिसके परिणामस्वरूप भारतीयता के प्रति घोर विद्वेष ही हमारे वर्तमान जीवन की सबसे बड़ी विशेषता हो गई है और कोई भी 'चेतावनी' की भाषा सुनने को तैय्यार नहीं।

शताब्दियों पूर्व वेदव्यास ने ऐसी ही नैतिक अराजकता एवं दार्शनिक अव्यवस्था को लक्ष्य करके कहा था कि—"मैं भुजा उठाकर ऊँचे स्वर में कह रहा हूँ कि अर्थ, काम और मोक्ष, इन सब की रक्षा धर्म से ही संभव है; परन्तु मेरी कोई नहीं सुनता।" इस बात से कोई इन्कार नहीं करता कि अर्थ और काम 'आहारधर्मा' हैं और जीवन के लिए उनकी अनिवार्य आवश्यकता है, परन्तु यदि अर्थ, काम-परायणता सर्वतंत्रस्वतंत्र होकर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन से खिलवाड़ करने लगें, तो किसके अधिकार सुरक्षित रह सकेंगे और कहाँ जायेगा व्यक्ति-स्वातंत्र्य तथा मानव-प्रेम। सामाजिक जीवन की यह सबसे बड़ी मांग है कि व्यक्ति अपने अर्थ और काम का उपयोग इस ढंग से करे कि अन्य व्यक्तियों के अधिकार भी सुरक्षित रह सकें; व्यक्तिगत मानवता की मांग है कि अर्थ और काम का उपभोग व्यक्ति इस ढंग से करे कि वह अपने लिए, समाज के लिए और मानवता के लिए सर्वाधिक उपयोगी बन सके। इन्हीं दो मांगों की पूर्त्ति जिन नियमों और मर्यादाओं से होती है उन्हीं को भारतीय समाजशास्त्र धर्म कहता है, क्योंकि इनके द्वारा ही व्यक्ति का वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन धारण किया जाता है। इसी से प्रेरित होकर चतुर्भुजदास जैसे लेखकों ने शृंगार-काव्य में भी मर्यादावाद को नहीं छोड़ा और घोर शृंगारमय प्रसंगों में भी सामाजिक रुचि के परिष्कार एवं पथप्रदर्शन के लिये धर्म तथा नीति का प्रयोग बड़े कौशल के साथ किया। उनकी कुशलता इसी में है कि उनके इस प्रयोग से शृंगारिकता की सुवास कहीं फीकी नहीं पड़ी है और साथ ही वह स्वयं विकृत एवं विषाक्त होने से बचकर 'महारस' में डुबकी लगाने के लिए अनुपयुक्त नहीं होने पाई है।

चतुर्भुजदास की यह कला उस वैविध्यपूर्ण भारतीय परंपरा का एक अंग है जिसने घोरातिघोर शृंगार को भी धर्मसंमत और नीतिसंमत करके ग्रहण किया है। कालिदास ने जिस शृंगार-साधना का अध्ययन अपने नाटकों के साधारण जीवनसंदर्भ में प्रस्तुत किया उसी को उन्होंने जगत् के मातापिता से संबद्ध करके परम उदात्त बना दिया है। उसी प्रकार भवभूति, वाल्मीकि, श्रीहर्ष आदि कवियों ने शृंगार की सार्वभौम सत्ता को स्वीकार करते हुये भी क्या उसे निरंकुश होने की छूट दी है ; कृष्णलीला में शृंगार को जो आध्यात्मिक स्वरूप प्राप्त हुआ है और उसके माधुर्य्य से मुखरित चित्रकला, संगीतकला और काव्यकला के माध्यम से हमारे देश का मध्यकालीन विलासमय सामाजिक जीवन भी अधःपतन के गर्त में सदा के लिये गिरने से बच गया; वह उसी भारतीयता की गौरवमय विजय है जिसने शृंगार के प्रति स्वस्थ दृष्टि अपनाकर, कामशृंगार को अखण्ड जीवननीति के भीतर पुरुषार्थचतुष्टय में स्थान दिया तथा उसे त्रिवर्ग का सारभूत तत्त्व माना था। दुःख है कि यह स्वस्थ पंरपरा आज छिन्न-भिन्न होने जा रही है। और पुरुषार्थचतुष्टय तथा त्रिवर्ग की परिकल्पनायें हमारे लिये रीते शब्दमात्र रह गये हैं। आवश्यकता है इस भारतीयतामय जीवनदर्शन को उन आधुनिकता-प्रेमियों को ऐसी भाषा में समझाने की और इस कौशल के साथ समझाने की कि उनका भारतीयताद्वेषी मानस भी उसे सुगमता से ग्रहण कर सके। इसके विना आवश्यक स्वस्थ दृष्टि उन्हें नहीं मिल सकती और न मिल सकता हैं उसके विना राष्ट्रीय स्वावलम्बन और भारतीयता का गौरव। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि हमारे साहित्यिक लोग चतुरभुजदास के साथ यह व्रत लें कि:—

चातुर चित हितसहित रिझाउँ।

फतहसिंह

सचित्र मधु-मालती-कथा

राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थसूचि

१. सचित्र मधु-मालती कथा। क्रमाङ्क – १५७८ (२)

आकार – गुटका (पुस्तकाकार) माप (साइज) – ९ + ६

पृष्ठसंख्या १४१, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति २१, प्रतिपङ्क्ति अक्षर १६

कर्त्ता – चतुर्भुजदास, लेखनसमय १८७७ विक्रमी

पुस्तकदशा – साधारणतया ठीक है, किन्तु कहीं कहीं पर प्रान्त्य भाग त्रुटित है।

पुस्तक प्रारम्भ –

॥९०॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सारदाय नमः ॥ अथ मधुमालतीरी वात लिख्यते।

॥ चोपाई ॥ वर विरंचतनया वर पाऊ। संकरसुत गणपति मनाऊ ॥
चातुरहित सहचरी रिंझाऊं। रस मालती मनोहर गाऊं ॥ १ ॥
लीलावती ललित इक देशा। चंद्रसेन तिहां सुघड नरेशा ॥
सुभग धांम ज गगन प्रवेशा। मांनो मंडल रच्यौ महेशा ॥ २ ॥
वसें नयर जोजन परि च्यारें। चोरासी चोहटा चिंहुं बारें ॥
अतिविचित्र दीसे नर नारी। मांनौ तिलक नरभुवन मझारी ॥ ३ ॥
करें सेव नृपकुल छतीसा। चढें सहस दस साथ जईसा ॥
जासु चडत नमावे सीसा। चंद्रसेन नृप हे सब ईसा ॥ ४ ॥

॥ दूहा सोरठा ॥ हयदल अंत न पार, कुंजर कारे मेघ ज्युं।
कुली छतीस हजार, चडे साथ नृप चंदकै ॥ ५ ॥

॥ चोपाई ॥ मंत्री बुध पराक्रम ताम। तारन साह तासकौ नाम ॥
निस दिन सांम धरमसुं कांम। नृपति न तजे घडी पल जांम ॥ ६ ॥
नृपकै ग्रेह अंतेवर च्यार। संतिति एक मालति कुवार ॥
वरनु कहा ज[स] रूप अपारा। मानुं उंरवसी लीयो अवतारा ॥ ७ ॥
ऊपमा कौन पटंतर कहुं। गुण अनेक छवि पार न लहुं ॥
दिन दिन रूप अनोपम चढै। इसी ओर विधना नही घडै ॥ ८ ॥
गज कपोत हरि बिंब प्रबाला। भृंगी मधुकर मीन मराला ॥
कंदली कनक कीर कपि सोई। ए सब सोभा तनकी होई ॥ ९ ॥

जा देषे चित चलै महेशा । देषत धरनी डारें सेसा ॥
सुर भूलै जिय धरे अदेशा । शशि भूतल डोलत महि देसा ॥ १० ॥

राजलोक वरनन कहा कहु । थोरी मति मैं कीहांथी त लहुं ॥
थोरी मांझ बहुत शिष्य होई । अति लावण्य जन राचौ कोई ॥ ११ ॥

तारन साह सुघड घण सारा । त्रीया एक तस एक कुमारा ॥
ताको नाम मनोहर धर्यौ । मानुं काम दूजो अवतर्यो ॥ १२ ॥

मधु मधु कहि षिलावै तात । बांधे चंदकला ज्युं गात ॥
घडी दिवस पष मासनी और । ज्युं वसंत किसलय दल कोर ॥ १३ ॥

भयो वरस दस द्वय कै संध । देषत त्रिया होय कामंध ॥
तन मन सुद्ध वीसरे गेह । भृंगी भई मनो गति तेह ॥ १४ ॥

जित तित कुअर करें कहू सेल । दोरी फैरै त्रिया तस गैल ॥
कबहु रामसरोवर जायै । भृंगी जूथ मनु चोक पूरायै ॥ १५ ॥

पुस्तक के अन्त में—

॥ दोहा ॥ जेतमाल मधु मालती, बंधी मोती आस ।
जोरे सुष संजोग एह, दिन [दिन] भोग विलास ॥ ६९ ॥

सुष समाध दिन दिन वढे, मनवंछित तिहां भोग ।
मोटा मंदिर विलसीयै, सुषसै बहुत संजोग ॥ ७० ॥

॥ चोपई ॥ दिन २ प्रीत वहे घर वासौं । भोगवे सुरंग मिले प्रीतम सौं ॥
कनक मारांनी सुष पावे । हरषत हेत मधु रस गावे ॥ ७१ ॥

षीर षांड घृत भोजन करही । प्रघल मनवंछितसुं रहई ॥
कुंअर मधु सुष विलसे घरही । जेत मालती वात विचरही ॥ ७२ ॥

इति कंदर्प निवास ज्योति स्वरूप सब्द संपूर्णम् ॥

अथ कविस्वरोवाच ।

॥ दोहा ॥ कायथ नगम कुलनडी, नाथासुत अभिराम ।
तिण ए चतुरभंजन घड, कथा प्रगासी ताम ॥ ७३ ॥

अलप बुद्धि दीठो सही, काम प्रवंध प्रगास ।
कवियनसे कर जोरके, कहत चुतरभुज दास ॥ ७४ ॥

काम प्रद्युघ प्रकास फुनि, मधुमालती विलास ।
प्रभुनकी लीला वह, व(क)हे चतुरभुज दास ॥ ७५ ॥

वनसपतिमां अंबफल, रसमां उदक रसंत ।
कथा मध्य मधुमालती, षट रितु माहे वसंत ॥ ७६ ॥

लता मांहि पनगलता, सूधा मधे घनसार ।
कथा मध्य मधुमालती, आभूषनमे हार ॥ ७७ ॥

कामविलासकी ए कथा, चुतर सुने चित लाय ।
सुगने सुनने गहगहे, निगुणे कीन हाय ॥ ७८ ॥

॥ चोपई ॥ राजा मंत्री कही मे साषी । पंचमन बुया माहे भाषी ॥
चर नायक चातुरी वताई । थोरी २ सव ही आई ॥ ७९ ॥

फुनि वसंतराज रस गावै । नामे ईसर काम दजावै ॥
ताकी यह लीला विसतारी । रसिक नर सुंने श्रवन सुषकारी ॥ ८० ॥

रसिक ही अरु रसकुं चाहे । अध्यातम आतम अवगाहै ॥
चातुर पुरुष होयहे होई । एह कला रस समझे सोई ॥ ८१ ॥

कृष्ण देवकी कुंअर कहावै । प्रद्युमन काम अंस मधु गावे ॥
पुत्र कलत्र सब ही सुष पावे । दुष दालिद जिहि रोग न आवै ॥ ८२ ॥

॥ श्लो० ॥ कामार्थी लभते कांमं, निर्द्धनं प्राप्यते धनं ।
अपुत्रो लभ्यते पुत्रं, व्याधि सेस न पीडत ॥ ८३ ॥

॥ दो० ॥ राजा पढे तों राज गत, मंत्री पढे तो बुध ।
कामी पढे तो विलास रस, जोगी पढे तो सिद्ध ॥ ८४ ॥

संपूरन मधुमालती, कलसा भया संपूर ।
स्रुरता वकता सबनिकुं, सुषदायक दुष दूर ॥ ८५ ॥

एह सोलासे चोपई, चतुर सुंने चित लाय ।
सुनी सुंग्यांनी सजन हो, निगुणां कही न जाय ॥ ८६ ॥

नेह प्रीतम तुम्ह ऊति तजो, उतम जीवकी लाज ।
वरस लगे जलमे रहे, तोहि चकमक तजे न आग ॥ ७७ ॥

तुम्ह जानो हम दूर हे, अर वसां दूरके वास ।
नेनांसुं अंतर पड्यो, प्राण तुम्हारे पास ॥ ८८ ॥

॥ सोर० ॥ प्रीतम प्रेम लगाय फुनि, न तजो पतीया प्रेमकी ।
वाचत रहीयौ नित, प्रीत सपाई तेहकी ॥ ८९ ॥

काम विलासकी ए कथा, चोपई एह संपूर ।
पढे गुनें जे चित धरै, करे विलासक पूर ॥ ९० ॥

॥ इति श्री मधुमालती कथा चोपई दूहा श्लोक ग्रंथकथा संपूर्णम्
संवत् १८७७ शाके १७४२ रा वर्षे मीति पोस शुक्ल पक्ष्य ६ वा
भोमवासरे दिने लिषीतं ॥ लि । वनेचंद ॥ भं । वछराजवाचनार्थम् ।
ग्रंथाग्रंथ सर्वसंष्या २५२५ सही छे ॥

यादृसं पुस्तकं [दृ]ष्टवा तादृसं लिषितं मया ।
यदि शुद्धं मम शुद्धं वा मम दोषो न दियते ॥ १ ॥
भग्नपष्टी कटी ग्रीवा वधमुष्टिरधोमुषं ।
कष्टेन लिषीतं सास्त्रं यत्नेन पलिपालयेत् ॥ २ ॥ श्रीरस्तु ।
कल्याणमस्तु ॥ श्रीशुभटपुरमध्ये ॥ श्रीमानसिंघजीराज्यात्
॥ १ ॥ श्रीः ॥ १ श्रीः ॥

टिप्पणी — कथा का प्रारम्भ २५ वें पृष्ठ से होता है । पूर्वके २४ पृष्ठों में श्रीहर्षकीर्ति उपाध्याय द्वारा विरचित शारदीयाभिधानलघुनाममाला विलिखित है । २५ वें पृष्ठ से पृष्ठाङ्क पुनः एक १ से लगाया हुआ है । पुस्तक की लिपि सुवाच्य एवं सुस्पष्ट है । कहीं कहीं पृष्ठों के चिपक जाने से अक्षर अस्पष्ट हो गये हैं । पद्याङ्क एवं शिरोलेख (दोहा, चौपई, सोरठा एवं प्रसंग) लाल स्याही से लिखा हुआ है तथा प्रकरण (प्रबन्ध) का लेखन काली स्याही से हुआ है । चित्र सुन्दर एवं सुडौल हैं तथा बीकानेर शैली से प्रभावित हैं । चित्रों के चित्रण में सुनहली स्याही भी साधारणतया यथास्थान काम में लाई गई है । चित्रों के बोर्डर लाल रंग से रंजित हैं तथा उनके प्रांत्यों (किनारों) में पीले रंगकी लाइनें खींची हुई हैं । प्रत्येक चित्र के ऊपर में बोर्डर के नीचे प्रासङ्गिक शीर्षलेख अङ्कित है, तदनुसार भावों की अभिव्यक्ति भी ठीक ढंग से प्रदर्शित की गई है । इस पुस्तक में चित्राङ्कित पृष्ठ ७० हैं तथा चित्रों पर लिखे हुए शीर्षकों के अनुसार कुल ९० चित्र होते हैं । इनमें बड़े चित्र ८६ तथा ४ छोटे चित्र हैं । चित्रों की



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२); चित्रसंख्या–१; सूचीपत्राङ्क–५

राम सरोवर तलाव पणिहारयां पाणी भरे, मधु कूंअर घोडे असवार षेले, ओ भाव छै ।



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२); चित्रसंख्या–५; सूचीपत्राङ्क–५

मधुमालती गुरु कनै भणै छै।



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२);   चित्रसंख्या–७;   सूचीपत्राङ्क–५

मालती मधुरे फल गेहदकी माली है।

सूची मयपरिमाण (साइज) के, जो कि बोर्डर के साथ लिया गया है, शीर्षकों के साथ निम्नाङ्कित रूप में है —

चित्रसूची —

पृष्ठ २ — चित्र संख्या १ परिमाण — ५½ + ५½ २ पोइन्ट
शीर्षक — राम सरोवर तलाव पणिहारयां पाणी भरे मधु कूंअर घोडे असवार षेले ओ भाव छे ॥

पृष्ठ ३ — चित्र सं० २ परिमाण — ३½ ३ + ५½ २ पो.
शीर्षक — तारण साह ब्राह्मण वात करे ॥ ओ भाव ॥

पृष्ठ ४ — चित्र सं० ३. परिमाण — ५ + ५½ २ पो.
शीर्षक — राजा मंत्रीने बुझै मधु की वात ॥ ज भाव ॥

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ४ परिमाण — ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक — राजा राणी सुं कहें मेलमे मालती बैठी छे ओ भाव ॥

पृष्ठ ६ — चित्र सं० ५ परिमाण — ५½ + ५½ २ पो.
शीर्षक — मधुमालती गुरु कने भणे छै ॥

पृष्ठ ६ — चित्र सं० ६ परिमाण — ४¼ + ५½ २ पो.
शीर्षक — गुरु आहारन कुं गम् । मधु मालती भणे छै ॥

पृष्ट ८ — चित्र सं० ७ परिमाण — ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक — मालती मधुरे फुलगेहदरी मारी छै ॥

पृष्ठ ९ — चित्र सं० ८ परिमाण — ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक — मृग सिंघ मिल वाता करे छै ॥ श्रीः ॥

पृष्ठ १० — चित्र सं० ९ परिमाण्य — ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक — वनचर रुंष पर बैठो सिंघ सुं वात करे छै ॥

पृष्ठ १२ — चित्र सं० १० परिमाण — ६ + ५½ २ पो.
शीर्षक — सब पंछी मिल गुहरकुं राज देवे छै ॥

पृष्ठ १४ — चित्र सं० ११ परिमाण — ५ + ५½ २ पो.
शीर्षक — मेल ऊपरथी कागले हार लीयो छै ॥

पृष्ठ १४ — चित्र संख्या १२ परिमाण — ४'२ + ५½ २ पोइन्ट
　　शीर्षक — राजा की फोज सरप मारयो रूंष निचै ॥

पृष्ठ १४ — चित्र सं० १३ परिमाण — ४ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — टीटोडो गुरुड पास आयो वात करे छै ॥

पृष्ठ १५ — चित्र सं० १४ परिमाण — ४ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — गुरुड समुद्र ऊपर गया तसा पर ब्राह्म तिणरो रूप
करात....॥

पृष्ठ १५ — चित्र सं० १५ परिमाण — ३'४ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — बलष्ठी सींह कूंपमे पडी मुवो ॥ श्री ॥

पृष्ठ १६ — चित्र सं० १६ परिमाण — ५ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — वडको वृछ तठे गूहगु कागने मारे छै ॥

पृष्ठ १६ — चित्र सं० १७ परिमाण — ४½ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — समुद्ररे कांठे पारधी विछ पर चढ्यौ हंस पकड्यो छै ॥

पृष्ठ १८ — चित्र सं० १८ परिमाण — ४½ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — गुहर ने काग गुफामें जारे छै ॥

पृष्ठ २० — चित्र सं० १९ परिमाण — ५ + ½ २ पो.
　　शीर्षक — मृग सिंघन के समीयो भयो तिको भाव छै ॥

पृष्ठ २२ — चित्र सं० २० परिमाण — ४½ + ५½
　　शीर्षक — सिंघ मृग मारावा धायो तद सिंघन आडी डाई मृग
ऊपर पडी तद प्राण तज्यो मृग पेहली मुंइ ॥

पृष्ठ २५ — चित्र सं० २१ परिमाण — ६½ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — श्री कीसनजीनै गोपीयां कहै छै ॥

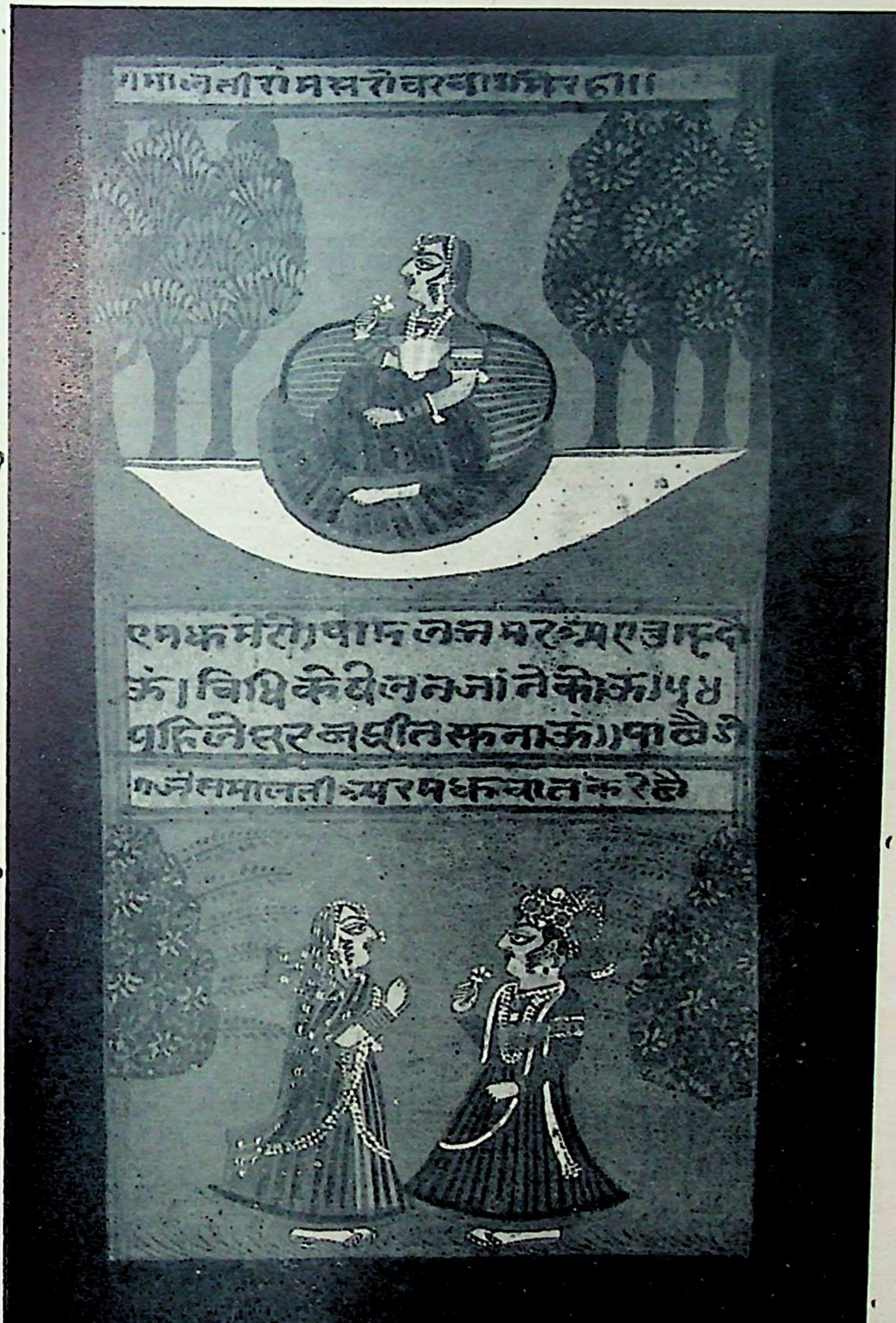
पृष्ठ २५ — चित्र सं० २२ परिमाण — ६'२ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — दुरवासा रीषनै गोपीयां नैवज चढायो जमना
उतरनै ॥

पृष्ठ २७ — चित्र सं० २३ परिमाण — ६ + ५½ २ पो.
　　शीर्षक — राजा सूरसेन सुं दासी पूछे पदमावती मेल्हौ ॥



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२); चित्रसंख्या–२५; सूचीपत्राङ्क–७

करण पदमावती परणैं। ब्रह्मामण वैद भणे छै।



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२); चित्रसंख्या–२९, ३०; सूचीपत्राङ्क–७

मालती रांम सरोवर बाग में रही। जेतमालती अर मधु वात करे छै।



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२); चित्रसंख्या–३१; सूचीपत्राङ्क–७

महादेव कांमने जारचौ तिकौ भाव छै।

पृष्ठ २८ – चित्र संख्या २४ परिमाण – ५ + ५½ २ पोइन्ट
शीर्षक – राजा रांणीने कही तद राणी अरु ओर परिवार मिल पदमावती समजावै ॥

पृष्ठ २९ – चित्र सं० २५ परिमाण – ५'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – करण पदमावती परणै ॥ ब्रह्मामण वैद भणे छे ॥

पृष्ठ ३० – चित्र सं० २६ परिमाण – ५ + ५½ २ पो.
शीर्षक – करण पदमावती मेलमे इ चैनरेषा सषी बारण ऊभी छै ॥

पृष्ठ ३२ – चित्र सं० २७ परिमाण – ५'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – चैनरेषा सषी पदमावती पिचकारी मारी करनकी संष्या (क्या) भागी ॥

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० २८ परिमाण – ३'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मधुमालती नेडा वेठा वात करे छै ॥

पृष्ठ ४३ – चित्र सं० २९ परिमाण – ४'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मालती रामसरोवर वागमे रही ॥

पृष्ठ ४३ – चित्र सं० ३० परिमाण – ४'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – जेत मालती अर मधु वात करे छै ॥

पृष्ठ ४३ – चित्र सं० ३१ परिमाण – ४ + ५½ २ पो.
शीर्षक – महादेव कांमने जारयौ तिको भाव छै ॥

पृष्ठ ५० – चित्र सं० ३२ परिमाण – ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – दूती तेलनके गरे धई हाथ जोडयां........

पृष्ठ ५१ – चित्र सं० ३३ परिमाण – ५ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मुगल तेलनके घरे गयो वात करे ॥

पृष्ठ ५१ – चित्र सं० ३४ परिमाण – ५'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मुगल परपेवका तेलीने मारयो चांकर कोरडा मारे....

पृष्ठ ५४ – चित्र सं० ३५ परिमाण – ४'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मालती सोले श्रृंगार करे छे ॥ ऊ भाव ॥

पृष्ठ ५८ — चित्र संख्या ३६ परिमाण — ४'२ + ५½ २ पोइन्ट
शीर्षक — लोरक साह अर मेना महिले बठा वात करै ॥

पृष्ठ ६१ — चित्र सं० ३७ परिमाण — ४ + ५½ २ पो.
शीर्षक — मेनां पारसदूती गई महिलमे वात करै छै ॥

पृष्ठ ६१ — चित्र सं० ३८ परिमाण — ५ + ५½ २ पो.
शीर्षक — कुंअर कुटनीने तेडी छै ॥ ऊ भाव ॥

पृष्ठ ७० — चित्र सं० ३९ परिमाण — ५'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक — कुटनीने गधे चढाई लोक देष छै ॥

पृष्ठ ७१ — चित्र सं० ४० परिमाण — ४'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक — जेतमाल मधुकुँअर पर मोहनी डारे छै ॥

पृष्ठ ७३ — चित्र सं० ४१ परिमाण — ३½'३ + ५½ २ पो.
शीर्षक — वागमे कूओ कोयल खत्रटा को घर छै ॥

पृष्ठ ७४ — चित्र सं० ४२ परिमाण — ५'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक — कोयलकै कंथने सब पंछी सुं पकार करी ॥

पृष्ठ ७६ — चित्र सं० ४३ परिमाण — ५ + ५½ २ पो.
शीर्षक — पारीधी फंद मारयो छै ॥

पृष्ठ ७६ — चित्र सं० ४४ परिमाण — ४'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक — मधु मालती जैतमाल वागमे बेठा परण्यां छै ॥

पृष्ठ ७८ — चित्र सं० ४५ परिमाण — ३½'३ + ५½ २ पो.
शीर्षक — राजा राणीसुं वात करे महिलमे वेठा छै ॥

पृष्ठ ७९ — चित्र सं० ४६ परिमाण — ५'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक — मधु मालती सुं चेरी वात करे छै ॥

पृष्ठ ८४ — चित्र सं० ४७ परिमाण — ६'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक — मधुकुंअर सो पायकने मारे जुद्ध हु जबै ॥

पृष्ठ ८५ — चित्र सं० ४८ परिमाण — ४½'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक — राजासुं घायल फिराद करे छै ॥

पृष्ठ ८७ – चित्र संख्या ४९ परिमाण – ६'३ + ५½ २ पोइन्ट
शीर्षक – मधुकुंअर रात्रा(जा)री हजार एक असवाररी फोज भांगी तिको भाव छै ॥ १००० सही ॥

पृष्ठ ८८ – चित्र सं० ५० परिमाण – ६'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजासु घायल फिराद करे छै ॥

पृष्ठ ९० – चित्र सं० ५१ परिमाण – ५½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मालती जेतमाल मधुकुंअर बागमे राजाकी फोजसुं उपर डसे छै ऊ भाव ॥

पृष्ठ ९० – चित्र सं० ५२ परिमाण – ४'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – भमरा जुद्ध छै ऊ भाव छै सही छै ॥

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ५ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा मेलमे वेठो जरत घायल आयो पुकारने तो पुकारे छै ॥

पृष्ठ ९३ – चित्र सं० ५४ परिमाण – ५ + ५½ २ पो.
शीर्षक – वागमे मालती जेतमाल मधुसुं दूत वात करे ॥

पृष्ठ ९८ – चित्र सं० ५५ परिमाण – ७ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मालती श्रीठाकुरको समरन करे जेतमाल मधुकुअर ॥

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० ५६ परिमाण – ३½'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – पंछी दल आए चा(भा)रडपंषी सिंह त्रिशूल कटक कुं[जर मारे छै] ॥

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० ५७ परिमाण – ३'३ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मालती जेतमाल राम सरोवर वाग मे मधू झझे तरे छै ॥

पृष्ठ १०० – चित्र सं० ५८ परिमाण – ४'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा मंत्री वात करे छै ॥ ऊ भाव छै सही ॥

पृष्ठ १०१ – चित्र सं० ५९ परिमाण – ५'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – केरो पण्डो वात करे ॥ ओ भाव छै ॥

पृष्ठ १०२ – चित्र संख्या ६० परिमाण – ४'३ + ५½ २ पोइन्ट
शीर्षक – हडंवासु भीमसेन वात करे फूल ऊपर हडंवा बेठी छै ॥

पृष्ठ १०३ – चित्र सं० ६१ परिमाण – ५'३ + ५½ २ पो.
शीर्षक – भीम देवल ने वेठो तजा पूजा करे कूता मात पंडव चारुं भई वेठा छै ॥

पृष्ठ १०४ – चित्र सं० ६२ परिमाण – ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा जुधिष्टर वात करे सहदेव सुं कहे छै ॥

पृष्ठ १०४ – चित्र सं० ६३ परिमाण – ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – नागकन्या पिंजरो देषें नदी पाताल मे छै ओ भाव।

पृष्ठ १०५ – चित्र सं० ६४ परिमाण – ४½ + ५½ २ पोइन्ट
शीर्षक – कन्या भीम का म्रुषमे अमृत मेलीयो पाताल मै ॥

पृष्ठ १०५ – चित्र सं० ६५ परिमाण – ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – अथ मधुकी फोज चढी छै बाप माते चढी छै ॥

पृष्ठ १०५ – चित्र सं० ६६ परिमाण – ४'४ + ५½ २ पो.
शीर्षक – अथ वापरी फोज चढी छै बेटारे माथे ऊ भाव छै ॥

पृष्ठ १०६ – चित्र सं० ६७ परिमाण – ४½२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – अमृतरा रषवारी वासुग के आगे पुकार करे छै।

पृष्ठ १०६ – चित्र सं० ६८ परिमाण – ४'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – गोरां गऊको रूप महादेवने सिंघ को रूप लीयं भीम के (आगे) गऊ (भागी) ॥

पृष्ठ १०८ – चित्र सं० ६९ परिमाण – ३½ + ३'२ पो.
शीर्षक – राजा मंत्री वात करे छै॥

पृष्ठ ११२ – चित्र सं० ७० परिमाण – ४'३ + ५½ २ पो.
शीर्षक – तारनसाह भवांनीकी सेवा करे छै वाघरी अस बारी छै ॥



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२); चित्रसंख्या–६१; सूचीपत्राङ्क–१०

भीम देवल ने वेठो तजा पूजा करे । कूंता माता पंडव चारुं भई वेठा छै ।



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२);   चित्रसंख्या–८०;   सूचीपत्राङ्क–११

उरगांनो स्नपने ले गंगा गयो ।



प्रतिक्रमाङ्क–१५७८ (२); चित्रसंख्या–८२; सूचीपत्राङ्क–११

हनुमांन सिता लछमन श्रीरांमजी अंजी माता के पगे लागा। ति भाव छै।

पृष्ठ ११३ – चित्र संख्या ७१ परिमाण – ४ + ५½ २ पोइन्ट
शीर्षक – तारनसाहा राजासुं अरज करि कहे छै ॥

पृष्ठ ११५ – चित्र सं० ७२ परिमाण – ४½' + ५½ २ पो.
शीर्षक – बींबी को सरप वेग्यो सरप वात करे उरगांनो असवार छै ॥

पृष्ठ ११७ – चित्र सं० ७३ परिमाण – ५½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – जंगल मे राजा पोढचौ बिबी को सरप उदरको श्रप वात करे छै ॥

पृष्ठ ११९ – चित्र सं० ७४ परिमाण – ४ + ५½ २ पो.
शीर्षक – वांवी मे साप वेठो उरगांनीसुं वात करे छै ॥श्री॥

पृष्ठ १२१ – चित्र सं० ७५ परिमाण – ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – ऊरगांना को घर ऊरगांनो त्रिया वात करे छै सही ॥

पृष्ठ १२२ – चित्र सं० ७६ परिमाण – ५½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – ऊरगांनौ अर लरको श्रपकुं दूध पावै छै सही ॥

पृष्ठ १२३ – चित्र सं० ७७ परिमाण – ४ + ५½ २ पो.
शीर्षक – लरकाकुं सरप षायो सरप के नीगा लागी छै ॥

पृष्ठ १२४ – चित्र सं० ७८ परिमाण – ४'१ + ३'४ पो.
शीर्षक – उरगांनो तिरायासुं कहे छै ॥

पृष्ठ १२४ – चित्र सं० ७९ परिमाण – ५'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा आगे त्रिया पुकारी उरगांनोने तेडीयो छै ॥

पृष्ठ १२६ – चित्र सं० ८० परिमाण – २'४ + ३'१ पो.
शीर्षक – उरगांनो श्रपने ले गंगा गयो ॥

पृष्ठ १२६ – चित्र सं० ८१ परिमाण – ४ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा राणी सुं कहे महिलमे वेठा वात करे छै ॥

पृष्ठ १३० – चित्र सं० ८२ परिमाण – ५'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – हनुमान सिता लछमन श्रीरामजी अजी माता के पगे लागा ॥ ति भाव छै ॥

पृष्ठ १३२ – चित्र संख्या ८३ परिमाण – ३'३ + ३½ पोइन्ट
शीर्षक – राजा रानी वेठा वात करे उकत (वेठा) ॥

पृष्ठ १३३ – चित्र सं० ८४ परिमाण – ४½'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा नेगीने तेडने पूछे ॥

पृष्ठ १३३ – चित्र सं० ८५ परिमाण – ६'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा के मोहल मे मंडप चा(वा) मं (जं)त्री अपछला नृत्य करे छै ॥

पृष्ठ १३४ – चित्र सं० ८६ परिमाण – ६ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मधुजीको वानोलो नीकरे छै गावत वजावता ॥

पृष्ठ १३६ – चित्र सं० ८७ परिमाण – ५½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मालती को वांनो नीकले छे पालषी वेठी ॥

पृष्ठ १३७ – चित्र सं० ८८ परिमाण – ५'२ + ५½ २ पो.
शीर्षक – मधु मालती परणे चोरी मांडी ब्रामण वेद भणे वाजंत्री गावे वजावे छै लोगरो घनो उभो छै देषण ॥

पृष्ठ १३८ – चित्र सं० ८९ परिमाण – ४'४ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा मधुकुंअर सुं कहत हे जेतमाल मालती वेठी ॥

पृष्ठ १३९ – चित्र सं० ९० परिमाण – ४½ + ५½ २ पो.
शीर्षक – राजा अरु मधुकुंअर वात करे एकंत वेठा ॥

प्रसङ्गसूची –

१ – राजकुलवर्णनानन्तर मधु-मालती - परिचय तथा रामसरोवर का वर्णन – पृष्ठ १ – ४

२ – मधु तथा मालती का गुरुगृह में अध्ययन – पृष्ठ ४ – ९

३ – मृग - सिंहिनी का प्रेमालाप – पृष्ठ ९ –२३
(१) वनचर - बाघ संवाद (२) काक-उलूक – संवाद – (१) टिट्टिभ - टिट्टिभी का संवाद (२) काकद्वारा सर्पमारण तथा शशकद्वारा सिंह का कूप में निपातन ।

४ – श्रीकृष्ण - चन्द्रावली का प्रसङ्ग – पृष्ठ २४ – २६

५ – मधु द्वारा करण - पद्मावती का प्रसङ्गवर्णन – पृष्ठ २६ – ३२

६ – विरहिणी मालती का भृंगी तथा चकवी के साथ में वार्तालाप – पृष्ठ ३२ – ३७

७ – मालती - जैतमाल का वार्तालाप – पृष्ठ ३७ – ४०
(१) जैतमाल के सोलह श्रृंगारों का वर्णन।

८ – जैतमाल - मधु का वार्तालाप – पृष्ठ ४० – ४९
(१) कामदहन (२) मधु को अपने पूर्वजन्म की स्मृति होना।

९ – मुगल - तेलन का आख्यान – पृष्ठ ४९ – ५७
(१) जैतमाल - मालती - मधुसंवाद।

१० – लोरकसाह - मैना का आख्यान – पृष्ठ ५७ – ७२
(१) मालती, जैतमाल के साथ मधु का वार्तालाप।

११ – शुक - पिकी (कोयल) का प्रेमाख्यान – पृष्ठ ७२ – ७७
(१) पारधी (व्याध) का प्रसंग।

१२ – मधु - मालती का गान्धर्वविवाह – पृष्ठ ७७ – ७८

१३ – मलयंदनृपति के राजकुमार चंद एवं रूपरेखा का आख्यान – पृष्ठ ७८ – ८१

१४ – मधु का राजा चन्द्रसेन की सेना के साथ युद्धवर्णन – पृष्ठ ८२ – ९९
(१) भ्रमर - युद्ध (२) मधु तथा राजदूत का वार्तालाप। (३) जैतमाल - मालतीसंवाद (४) मालती द्वारा श्रीकृष्ण की स्तुति (५) राजसेना से भारण्ड पक्षियों एवं वन्य-जन्तु सिंह आदि का युद्ध।

१५ – राजा चंद्रसेन की मंत्रियों से मंत्रणा – पृष्ठ ९९ – १०९
(१) भीम - हिडिम्बा का आख्यान (२) भीम का सर्पराज वासुकि से युद्ध।

१६ – राजा चंद्रसेन के साथ मंत्री तारनसाह का वार्तालाप – पृष्ठ १०९ – ११३
(१) तारनसाह द्वारा मधु-चंद्रसेन के युद्धमें मध्यस्थता – स्वीकार एवं युद्धविराम करना ।

१७ – उरगाना एवं सर्प का आख्यान – पृष्ठ ११३ – १२५
(१) मलयापुर के राजा हरिदत्तराय के उदरस्थ सर्प एवं बंबीस्थ सर्प का संवाद ।

१८ – राजा चन्द्रसेन का रानी कनकमाल के साथ वार्तालाप – पृष्ठ १२५ – १३२
(१) श्रीरामचन्द्र एवं अञ्जनी का संवाद ।

१९ – मधु-मालती के विवाह का वर्णन – पृष्ठ १३२ – १३७
(१) राजा चन्द्रसेन एवं मधु का संवाद ।

२० – मधु द्वारा कथित कामनिवास का प्रसंग – पृष्ठ १३७ – १३९

२१ – कविकुलवर्णन एवं कथा का उपसंहार – पृष्ठ १३९ – १४१

★

२. सचित्र मधु-मालती कथा। क्रमाङ्क—५०७८

कर्त्ता—चतुर्भुजदास, लिपिकाल १८८१ विक्रमसंवत्

आकार—पत्राकार माप (साइज)- ६½''१ + ११''१ पोइन्ट

पृष्ठसंख्या २१६, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति १२—१३, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २८

पुस्तकदशा—साधारण अच्छी है।

ग्रन्थारम्भ --

॥९०॥ ॥ श्री ँ सरस्त्रत्याय नमः॥ श्री ँ गुणेसाय नमः॥ श्री ँ सद्गुरुभ्यो नमः॥१॥
अथ श्री मधुमालती की वार्ता कथानीक प्राकृतप्रबंध लिषतं॥श्री॥

॥ दोहरा ॥ सरस्वती नांम लेइ करी, करी गणपत्ति जुहार।
कविजन साचा अष्यरी, कहे मधू-मालती सार ॥ १ ॥
सकल बूधि दीये सरस्वती, वांदी गुरु के पाय।
मधू-मालती विलासकी, कहित चतुरभुज राय ॥ २ ॥

॥ चोपाइ ॥ वर विरचितनया वर पाऊं। संकरसुत गणपति सिर नाऊं।
चातुर हीत सहित चित रिंझाऊं। सरस मालती-मनोहर गाऊं ॥ ३ ॥
लीलावंत ललित एक देसा। चंद्रसेन तिहां सुघड नरेसा।
सुभग धांम धुज गगन प्रवेसा। मांनुं मंडप रच्यो महेशा ॥ ४ ॥
वसही नगर पुर जोजन च्यार। चौरासी चोहटां चोगट बाजार।
अतिविचित्र दीसे नर नार। मांनुं तिलक नर भवन मझार ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥ वापीवप्रविहारवर्णवनिता वाग्मी वनं वाटिका,
विद्यावीरविवेकवितविनयवाच्यं यमा वल्लिका।
वैद्यब्रांह्मणवारिवादिविबुधा वेस्यावणिकवाहिनी,
वस्त्रवारुणवाजिवेसरवरं राज्यं ववे सौभ्यते ॥ ६ ॥

॥ चोपाई ॥ करे ह सेव नृपकुल छत्रीसा। चढे सेन्य दस सहस नमावे सीसा।
झरही मद कुंजर कर चीसा। चंद्रसेन नृपति हिं इसा ॥ ७ ॥

॥दूहरा, सोरठा॥ हेंदल अंत न पार, कुंजर कारे मेघ ज्युं।
कुली छत्रीस हीसार, चढे लार नृप चंदके ॥ ८ ॥

॥ चोपाइ ॥ मंत्री बूधी प्राक्रमी ताम । तारन साह तासको नाम ।
निस दिन सांम धरमस्युं कांम । नृप तजे न घरी पल जांम ॥ ९ ॥
नृपके गेह अंतेउर च्यार । संतती एक मालती कुंमार ।
वरनुं कहा रूप अपार । मानुं उरवसी लीयो अवतार ॥ १० ॥
उपमा कोन पटंतर कहुं । गुण अनेक छिब पार न लहुं ।
दिन दिन रूप अनोपम चढे । एसी नांही विधाता घडे ॥ ११ ॥
गज कपोत हरी बिंब प्रवाल । भ्रमित मधूकर मीन मराल ।
कदली कनक कीर कप सोइ । ए सब सोभा तनकी होइ ॥ १२ ॥
चातुर होय बहु चातुरी भाषे । गुन सब पूरन कर किं भाषे ।
या देषी चित चले मुनीसा । देषे धरनी डारे सेसा ॥ १३ ॥
मनुं छांह पर हे सेसा । सो भूले जीव धरे अंदेसा ।
राजलोक केतीयक कहुं । थोरी सी मंत्री की लहुं ॥ १४ ॥
थोरी मांझ बहोत रस होइ । अत लावन झिंन राचो कोइ ।
तारन साह सुघड गुंनसार । त्रीया एक तसु एक कुंमार ॥ १५ ॥
ताको नांम मनोहर धरयो । मांनुं काम तेज अवतरयो ।
मधू मधू कहि षेलावे तात । वाढे मांनु कलानिध गात ॥ १६ ॥
घडी दीवस पष मासें ओर । ज्युं वसंत कीसलता कोर ।
भयो वरस दस मास के संध । देषत त्रीया होवत कामंध ॥ १७ ॥
तन मन धन वीसरे गेह । भ्रंगी भइ मांनुं गत तेह ।
जित जित करे कुंअर कहुं सेल । दोरी फिरे त्रीया तिंहां गेल ॥ १८ ॥
कबहु क षेले बालक संग । कबहु क षेले बाग मनरंग ।
कबहु क रांमसरोवर जाय । भ्रंगीजूथ मांनु चाह भूलाय ॥ १९ ॥

ग्रन्थके अन्त में—

॥ दोहरा ॥ जेतमाल मधू-मालती, अधिक फली सबे आस ।
जुगति जोडि संजोग एह, दिन दिन भोग विलास ॥ ५४ ॥
सुष समाध दिन दिन वधे, मनवंछित हित भोग ।
राजरिध रमणी सदा, विलसे सुष संजोग ॥ ५५ ॥

॥ चोपई ॥ दिन दिन प्रीत वध्रे घर वास । षेलत रंग सदा सुष वास ।
कनकमाल रांनी सुष पावे । मधू सूरत ते महासुष भावे ॥ ५६ ॥

॥ दोहरा ॥ काम प्रवंध प्रकास फूनि, मधू-मालती विलास ।
श्रवन सुंनन सुष पाइए, कहत चतूरभुजदास ॥ ५७ ॥

कांम विलास की एह कथा, सुने चतूर चित लाय ।
सुगुणां मन गह गहे, निर्गुण स्युं कही न जाय ॥ ५८ ॥

अथ कविस्वरोवाच ।

कायथ निगम कुसल, नाथा सुत अीभरांम ।
तनय चतूरभुजदास को, कथी कथा कर परकास ॥ ५९ ॥
अल्प बुधि आंनी दया, काम प्रवंध प्रकास ।
गुरुपद नांम प्रणांम कर, कहत चतूरभुज दास ॥ ६० ॥
वनस्पती मझ अंब फल, इक्षू रस सार ।
वातन मध्य मधू-मालती, आभूषण मझ हार ॥ ६२ ॥

॥ चोपई ॥ राजनीत की दीनी साषी । पंच्याष्यांन बुध आंनके भाषी ॥
चरणाइक चातुरी बनाइ । थोरी थोरी सब आंन मिलाइ ॥ ६३ ॥
फुनि वसंतराज रस गायो । यामे इस्वर कांम दझायो ॥
एह लीला उनही की विस्तारी । रसिकने रसिक श्रवन सुषकारी ॥६४॥
रसीक होय नवरसकुं चाहे । अध्यातम आतम अवगाहे ॥
चतुर होय चातुरी जोइ । एह रसकला समझे सोइ ॥ ६५ ॥
क्रष्णदेवको कुंअर कहावे । प्रद्युमन काम अंस मधू गावे ॥
पूत्र कलत्र सबे सुष पावे । दुष दालिद्र निरा नह आवे ॥ ६६ ॥

॥ श्लोकः ॥ कांमार्थि लभ्यते कांमं, धनार्थी लभ्यते धनं ।
सुषार्थी लभ्यते सुंषं च, व्याधिः सर्वत्र विनासनं ॥ ६७ ॥

॥ दोहरा ॥ राजा पढे तो राजनीत, मंत्री पढे तो बुध ।
कांमीकुं अरु काम रस, ग्यांनी ग्यान समंद ॥ ६८ ॥
ग्यांनी सबसे अधिक हे, हूं फूंनि ताको दास ।
कवियण स्युं कर जोरके, कहत चतूरभुजदास ॥ ६९ ॥

॥ इति श्री मधु-मालती वारता संपूर्णम् ॥ श्री ॥ ॥ १ ॥

संवत् १८८९ ना वर्षे शाके १७४६ सा प्रवर्तमाने मासौत्म पून्य पवीत्र श्रीचैत्र शुदि ४ दिने बुधवासरे ॥ मेता श्री ५ मोतीचंद षेतसी लषावीतं श्री पालणपूरे पं० श्री ५ रूपविजयजी गणी शीष्य पं० श्री रंगविजयगणी पठनार्थं हेतव्यौ श्री शुभं भवतुं ॥ १ ॥

सवैउ कंकणबंध छे ।

वर वीर धरा धर धीर करी जिन वांन वधारण शुध मती ।
नर वीर सुरा सूर हीर सीरी सनमांन प्रधारण सिध ग(म) ती ।
थिर धीर चराचर नीर तरी घन दिन शुधा धण ऋध रति ।
जर पीर जरा भर भीर हरी जिन शुधा धण बुध पती ॥ १ ॥
पीया रस रेंन भइ जब स्यांम मिलें शुष अंग हुवै तन ऐन ।
लीया कस मैन दई अब वांन मिलें दुष भंग जुवें मन देंन ।
दीया जश वैंन हुइ तब नांम चुवे धन नैंन कीया वश नैंन ।
पई कब काम झिलैं कुख संग हुवैं धन वैंन पीया रस रैंन ॥ २ ॥

एक एक मैं ४८ सवैया वंचाया ॥

टिप्पणी — पुस्तक की दशा अच्छी है। लिपि साधारण होते हुए भी इसके अक्षर स्थूल होने के कारण सुवाच्य हैं। इस प्रति के प्रायः सभी पृष्ठों के लेखस्थल के ऊर्ध्व एवं अधो भाग पर कहीं लाल रंग का, तो कहीं मटमैले सुनहले रंग का, तो कहीं नीले रंग का बोर्डर तथा कहीं कहीं विविध रंगों के विभिन्न वेल बूंटे बनाए हुए हैं। पृष्ठों के दाईं बाईं ओर लाल स्याही से दो दो लाइनें खींच कर उनके बीच में पीला रंग भर दिया गया है। सन्दर्भ एवं शीर्षलेख का अङ्कन प्रायः लाल स्याही से तथा पद्याङ्कों का लेखन काली स्याही से किया गया है। प्रति के सभी पृष्ठों पर क्रमसंख्या लगी हुई है। तदनुसार पुस्तक की परिसमाप्ति २०७ पृष्ठ पर की गई है। उल्लेखनीय यह है कि जो संख्या यहाँ पर दी गई है वह बिलकुल ही अशुद्ध प्रतीत होती है। वास्तवमें ग्रन्थ की परिसमाप्ति २१६ वें पृष्ठ पर ही होनी चाहिए थी। इसका कारण यह है कि संख्याङ्कन-कर्त्ताने पृष्ठों पर ३० की संख्या से लेकर ३८ तक संख्या का भूल से दुबारा अङ्कन कर दिया, परिणामस्वरूप ९ पृष्ठों के पहले ही पुस्तक की परिसमाप्ति २०७ पर हो गई। अतः पाठकों की सुविधाकी दृष्टि से क्रमबद्धसंख्या का अङ्कन संख्या प्रथम ३० के आगे से पृष्ठों के दाईं ओर कर दिया गया है और इसके अनुसार ही ग्रन्थकी

विद्यमान पृष्ठ संख्या २१६ का अङ्कन इस विवरण के मुख पृष्ठ पर किया है। इस संख्या में प्रति के आदि का मुख पृष्ठ जो कि सरस्वती के चित्र का है सम्मिलित नहीं है।

इस प्रति में २०१ पूरे सचित्र पृष्ठ हैं जिनमें वह मुख पृष्ठ भी सम्मिलित है जो कि क्रमाङ्क से रहित है। चित्रों की कुल संख्या २२३ है। चित्रों की भूमि नानाविध रंगों से रंजित है तथा उसके चारों ओर लाल रंग से रञ्जित बोर्डर (परिधि) बना हुआ है। इसके नीचे अर्थात् चित्रभूमि को काले रंग की दो दो लाइनों से आवद्ध कर लाइनों के बीच में पीला रंग भर दिया गया है। यद्यपि चित्रों के निर्माण में ज्यादा भड़कीले रंगों एवं सूक्ष्म कलम का उपयोग नहीं हुआ है फिर भी चित्र सुन्दर एवं सुडोल बने हुए हैं। इससे एक ओर जहाँ कलाकारने मानुष आकृतियों को सुन्दर बनाने एवं तद्गत भावों का अभिव्यंजन करने में पर्य्याप्त प्रयास किया है, वहाँ दूसरी ओर वन्य जन्तुओं के चित्रण में भी अपनी कला का सुन्दर परिचय दिया है। सघन-वृक्षावली एवं उद्यानादि के मनोहर चित्रग को देख कर तो कलाकार की अभिरुचि का सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह प्राकृतिक दृश्यावली का पूर्ण अनुरागी था। चित्रों पर सिरोही शैली आ अधिकतर प्रभाव है। जहाँ तहाँ जोधपुरी एवं उदयपुर की शैली का भी अनुसरण किया गया है। सभी चित्रों की दशा ठीक है किन्तु आदि के ११, १२ चित्रों पर काले रंग के बिखर जाने से उक्त चित्रों की सुन्दरता तथा उनके चेहरे बिगड गये हैं। बोर्डर के साथ में लिए गये परिमाण के साथ सपरिचय चित्रों की सूची नीचे दी जाती है।

चित्रसूची –

पृष्ठ संख्या, प्रमुख-चित्र संख्या १ परिमाण – ६½ + ७½ १ पोइन्ट

परिचय – **वीणावादिनी सरस्वती माता का चित्र।**

पृष्ठ १ – चित्र सं० २ परिमाण – ६½ + ८½ १ पो.

परिचय – **लीलावती नगर का दृश्य।**

पृष्ठ २ – चित्र सं० ३ परिमाण – ६½ + ८'४ पो.

परिचय – **मंत्री तारनसाह अपनी पत्नी के साथ बैठे हैं।**

पृष्ठ ३ – चित्र सं० ४ परिमाण – ६½ + ८½ १ पो.

परिचय – **तारनसाह एवं उसकी पत्नी बैठी हैं। मधु कुमार उनके बीच में खड़ा है।**

पृष्ठ ४ — चित्र संख्या ५ परिमाण — ४½'१ + ८½ १ पोइन्ट
परिचय — राम सरोवर पर पणिहारियां पानी भरने के लिए आई हैं। मधु कुमार शिकार कर रहे हैं। उसे देख-कर ललनाएं मुग्ध हो आपस में बातें कर रही हैं।

पृष्ठ ४ — चित्र सं० ६ परिमाण — ५'१ + ८½ १ पो.
परिचय — राम सरोवर की एक तरफ की पैड़ियों में गिलोल हाथमें लिए मधु खड़ा है और दूसरी ओर दो पणिहारियां खड़ी हुई उसे देख कही हैं।

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ७ परिमाण — ४½'१ + ५½ १ पो.
परिचय — राजासे नगरवासी लोक मधुकी शिकायत कर रहे हैं।

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ८ परिमाण — ४'३ + ५½ १ पो.
परिचय — मंत्रीसे नगरवासी लोक मधुकी शिकायत कर रहे हैं।

पृष्ठ ६ — चित्र सं० ९ परिमाण — ३'१ + ५½ २ पो.
परिचय — मंत्री मधु को समझा रहे हैं।

पृष्ठ ७ — चित्र सं० १० परिमाण — ४½ + ८½ १ पो.
परिचय — नंद पुरोहित विद्या का मुहूर्त मंत्री को बतला रहा है। मधु कुमार खड़ा हैं।

पृष्ठ ७ — चित्र सं० ११ परिमाण — ४½ + ८½ १ पो.
परिचय — राजा मंत्री से मधु की पढ़ाई के विषय में कुछ पूछ रहा है।

पृष्ठ ८ — चित्र सं० १२ परिमाण — ४½'३ + ८½ (चित्र के बांई ओर का ४'४ पो. ऊपरी भाग लम्बाई में आधा इंच कम है।)
परिचय — राजा कनकमाल रानी से मालती की पढ़ाई के विषय में सलाह कर रहा है। मालती व उसकी सहेली दूसरे स्थान पर बैठी हैं।

पृष्ठ ९ — चित्र सं० ३१ परिमाण — ३¾'१ + ८'५ पो.
परिचय — मालती को पण्डित पढ़ा रहा है।

पृष्ठ १० — चित्र संख्या १४ परिमाण — ४ + ८½ पोइन्ट
परिचय — मालती मधु को निर्निमेष दृष्टि से देख रही है।

पृष्ठ ११ — चित्र सं० १५ परिमाण — ४'५ + ७ पो.
परिचय — मालती फूल की गेंद बना कर मधु पर फेंक रही है।

पृष्ठ ११ — चित्र सं० १६ परिमाण — ३'४ + ५½ पो.
परिचय — सूआ इन्द्रायण फल के गाछ पर बैठा है।

पृष्ठ १२ — चित्र सं० १७ परिमाण — ५ + ५'३ पो.
परिचय — मालती मधु से कह रही है कि पूर्व भव की प्रीति को पहिचानो और कुछ मेरे अंतर को भी समझो।

पृष्ठ १२ — चित्र सं० १८ परिमाण — ४'१ + ८½ १ पो.
परिचय — मधु मालती को सूवे की कथा सुनाता है।

पृष्ठ १३ — चित्र सं० १९ परिमाण — ३'१ + ८½ पो.
परिचय — मधु, मालती बातें कर रहे हैं ओर पण्डितजी देख रहे हैं।

पृष्ठ १३ — चित्र सं० २० परिमाण — २'१ + ८½ पो.
परिचय — बहुत से काले मृग बैठे हुए हैं।

पृष्ठ १४ — चित्र सं० २१ परिमाण — ३½'२ + ८½ १ पो.
परिचय — दोड़ते हुए मृग यूथ में स्थित एक सुन्दर मदमाते मृग पर सिंहिनी की दृष्टि अटकी।

पृष्ठ १४ — चित्र सं० २२ परिमाण — ६½'१ + ४'५ पो.
परिचय — कामार्त सिंहिनी मृग पर मुग्ध हुई मृग को रोककर कुछ कह रही है।

पृष्ठ १५ — चित्र सं० २३ परिमाण — ४½'३ + ८½ १ पो.
परिचय — घूघू(गूहर) को अपना राजा बनाने के लिए सारा पक्षि समाज एकत्रित हुआ है। उनमें एक काक विरोध करता है, और कह रहा है कि पक्षियों को तो राजा गरुड ही है।

पृष्ठ १६ – चित्र संख्या २४ परिमाण – ३½'१ + ४½ २ पोइन्ट
परिचय – पक्षियों को मेघवरन कौआ टीटोरा-टीटोरी की कथा सुनाता है।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० २५ परिमाण – ३'४ + ३½ २ पो.
परिचय – समुद्र के तट पर टीटोरा-टीटोरी अंडे रख रहे हैं।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० २६ परिमाण – ६'३ + ४'५ पो.
परिचय – कौए ने राजा का हार चुराकर अपने वृक्ष पर लाकर अंडोंके खानेवाले सर्पका प्राणान्त राजासे करवाया।

पृष्ठ १८ – चित्र सं० २७ परिमाण – ४½'१ + ४½ १ पो.
परिचय – गरुड़ से टीटोरा-टीटोरी प्रार्थना कर रहे हैं।

पृष्ठ १८ – चित्र सं० २८ परिमाण – ४ + ८'४ पो.
परिचय – गरुड़ पक्षियों को साथ लेकर सागर के पास जा रहा है।

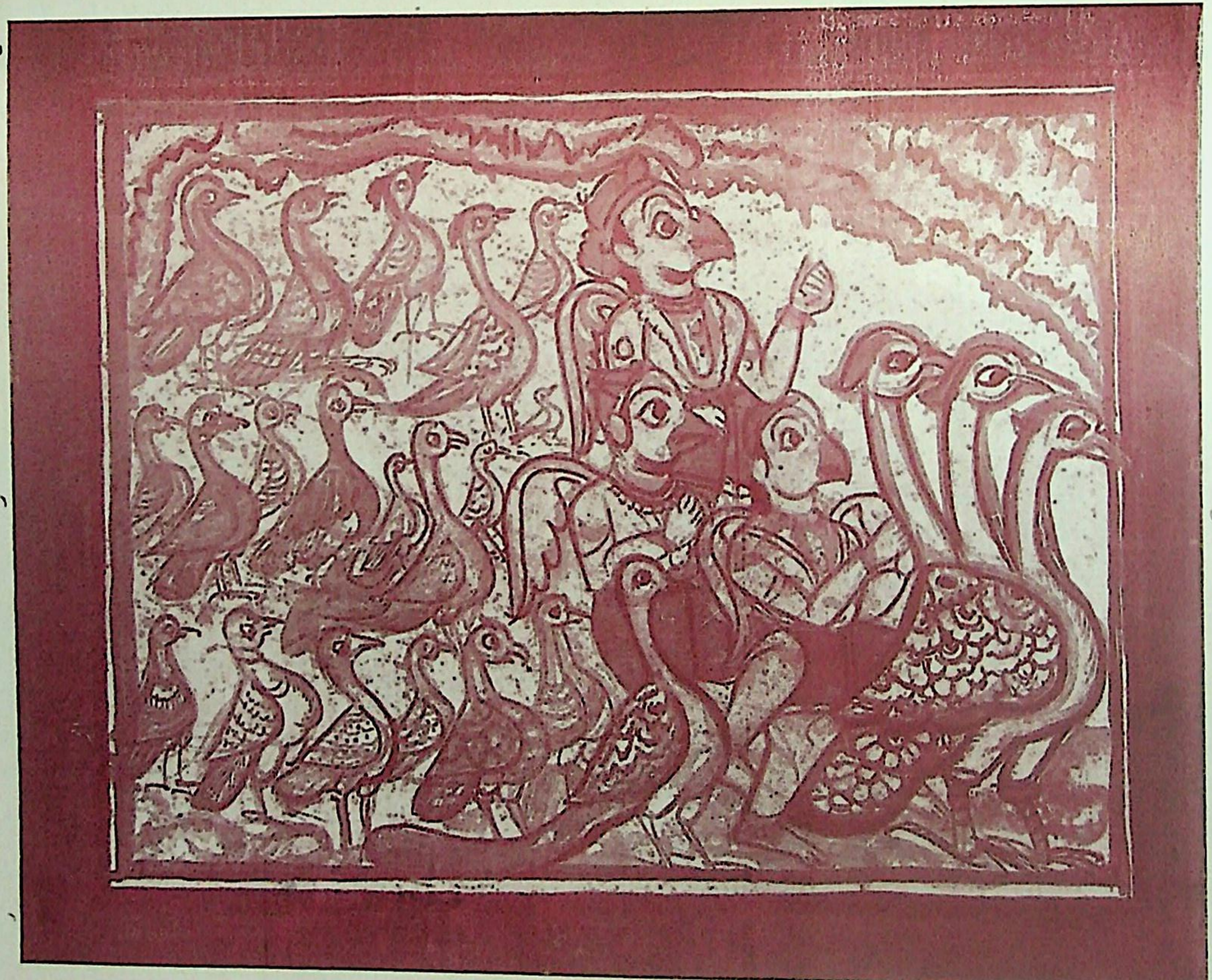
पृष्ठ १९ – चित्र सं० २९ परिमाण – ६½'१ + ८½ पो.
परिचय – गरुड़ अपने साथ में पक्षियों की फौज ले कर आगे बढ़ रहा है।

पृष्ठ २० – चित्र सं० ३० परिमाण – ६½'१ + ८½ पो.
परिचय – पक्षियों की फौज के साथ गरूड़ आगे बढ़ रहा है।

पृष्ठ २० – चित्र सं० ३१ परिमाण – ६½'१ + ८½ पो.
परिचय – गरुड़ को ब्राह्मण वेषधारी समुद्र अंडों को वापिस कर रहा है तथा भेंट में हार दे रहा है।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० ३२ परिमाण – ३½ + ८½ पो.
परिचय – सारे घूघू इकट्ठे हो कर कौओं को मारने के लिए सलाह कर रहे हैं।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० ३३ परिमाण – ६½१ + ६'४ पो.
परिचय – रात्रि में घूघू वृक्षों पर बैठे हुए कौओं को मार रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–२९; सूचीपत्राङ्क–२२

गरुड़ अपने साथ में पक्षियों की फौज लेकर आगे बढ़ रहा है।

पृष्ठ २३ – चित्रसंख्या ३४ परिमाण – ५५'+४$\frac{१}{२}$ पोइन्ट
परिचय – वृक्षस्थित हंस वधिक(बहेलिये)को बातोंमें फंसा रहे हैं।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ३५ परिमाण – २'४+८,२ पो.
परिचय – कौए घूघूके पास गये हैं।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ३६ परिमाण – ३'१+८'३ पो.
परिचय – घूघूराजसे कौए कह रहे हैं कि मेघवरण तुम्हारी सेवामें रहेगा।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ३७ परिमाण – ३'४+४$\frac{१}{२}$ पो.
परिचय – कौए घूघूराजको गुफामें डाल कर जला रहे हैं।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ३८ परिमाण – ३$\frac{१}{३}$+४$\frac{१}{२}$ पो.
परिचय – सिंहनी मृग को बातों से रीझा रही है।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ३९ परिमाण – ६$\frac{१}{२}$'१+८$\frac{१}{२}$ १ पो.
परिचय – सिंहिनी मृगको रीझा रही है।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ४० परिमाण – ५$\frac{१}{२}$'१+८$\frac{१}{३}$ १ पो.
परिचय – मृगके सामने सिंहिनी का आत्मसमर्पण।

पृष्ठ २८ – चित्र सं० ४१ परिमाण – ४'२+८$_{२}$ पो.
परिचय – मृग, सिंहिनी प्रेम रस में डूब रहे हैं।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० ४२ परिमाण – ४$\frac{१}{२}$'१+८$\frac{१}{२}$ पो.
परिचय – सिंहिनी मृग को सिंहों से छुपा रही है।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ४३ परिमाण – ४'२+८$\frac{१}{२}$ पो.
परिचय – मालती पढ़ते हुए मधु से कुछ कह रही है।

पृष्ठ ३१ – चित्र सं० ४४ परिमाण – ५'३+८$\frac{१}{३}$ पो.
परिचय – सिंहिनी आडी आकर मृग को बचाना चाहती है लेकिन वह स्वयं सिंहद्वारा मृग से पहले ही मर जाती है।

पृष्ठ ३२ – चित्र सं० ४५ परिमाण – ३$\frac{१}{२}$+८$\frac{१}{२}$ १ पो.
परिचय – पढ़ते हुए मधु से मालती कह रही है।

पृष्ठ ३३ – चित्र संख्या ४६ परिमाण – ३½ + ४½ २ पोइन्ट
परिचय – मालती-मधु को पद्मावती की बात सुना रही है।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ४७ परिमाण – ४½'३ + ८½ पो.
परिचय – सूरसेन राजा को करणकुमार के चरित्र के विषयमें कोई व्यक्ति जानकारी दे रहा है। राजा उस वृत्तको सुन कर आश्चर्यचकित हो रहा है।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ४८ परिमाण – ४'५ + ४'३ पो.
परिचय – सूरसेन की कन्या पद्मावती अपनी दूती को कुछ कह रही है।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ४९ परिमाण – ५ + ८½ पो.
परिचय – दूती सूरसेन को पद्मावती का यह संदेश कह रही है कि मैं करणकुमार को वरूंगी।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ५० परिमाण – ५ + ८½ १ पो.
परिचय – सूरसेन अपनी रानी एवं पारिवारिक स्त्रियों से मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ५१ परिमाण – ५'४ + ८½·१ पो.
परिचय – रानी पद्मावतीको समझा रही है। पीछे दासी खड़ी है।

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ५२ परिमाण – ५'४ + ८'४ पो.
परिचय – स्त्रियां पद्मावती को समझा रही हैं।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ५'३ + ८½ पो.
परिचय – सुन्दर मण्डपमें करण-पद्मावती का पाणिग्रहण (हथलेवा विवाह) हो रहा है।

पृष्ठ ३९ – चित्र सं० ५४ परिमाण – ६½'१ + ८½ १ पो.
परिचय – पद्मावती करण को कटाक्ष दृष्टि से देख रही है। दोनों अवाक् से बैठे हुए हैं।

पृष्ठ ४० – चित्र सं० ५५ परिमाण – ६¾'१ + ८½ पो.
परिचय – सशङ्क करण और पद्मावती सुखशय्या पर आसीन हैं। चैनरेषा उन्हें देख रही है।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–५४; सूचीपत्राङ्क–२४

पद्मावती करण को कटाक्षदृष्टि से देख रही है। दोनों अवाक् बैठे हुए हैं।



७

प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–६१; सूचीपत्राङ्क–२५

रामसरोवर के तट पर स्थित वृक्षों पर मधु गिलोल चला रहा है।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–६२; सूचीपत्राङ्क–२५

भारण्ड पक्षी का दृश्य।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–६२; सूचीपत्राङ्क–२५

भारण्ड पक्षी का दृश्य।

पृष्ठ ४१ — चित्र संख्या ५६ परिमाण — ६½ + ८½

परिचय — करण शय्या पर बैठा है । पद्मावती शय्या के पास खड़ी है । चैनरेषा दूर से देख रही है और उन्हें विलासरत करने का उपाय सोच रही है ।

पृष्ठ ४२ — चित्र सं० ५७ परिमाण — ६½ + ८½

परिचय — चैनरेषा पद्मावती की पीठ पर जल से भरी पिचकारी मार रही है । पद्मावती हठात् उचक कर करण की गोद से लिपट जाती है । करण निश्शंक हो रमण-रत हो जाता है ।

पृष्ठ ४३ — चित्र सं० ५८ परिमाण — ६½ + ८½ २ पो.

परिचय — मधु, मालती पढ़ते हुए वार्तालाप कर रहे हैं ।

पृष्ठ ४४ — चित्र सं० ५९ परिमाण — ६½'१ + ८½

परिचय — मधु, मालती-वार्तालाप ।

पृष्ठ ४६ — चित्र सं० ६० परिमाण — ४½ + ५'४ पो.

परिचय — घर जाते हुए मधु को मालती रोक रही है ।

पृष्ठ ४६ — चित्र सं० ६१ परिमाण — ६½'१ + ८½ १ पो.

परिचय — रामसरोवर के तट पर स्थित वृक्षों पर मधु गिलोल चला रहा है ।

पृष्ठ ४७ — चित्र सं० ६२ परिमाण — ६½'१ + ८½

परिचय — भारण्ड पक्षी का दृश्य ।

पृष्ठ ४८ — चित्र सं० ६३ परिमाण — ६½'१ + ८½ १ पो.

परिचय — दूती मालती से मधु के विषय में कुछ कह रही है ।

पृष्ठ ४९ — चित्र सं० ६४ परिमाण — ६½'१ + ८'५ पो.

परिचय — रामसरोवर बाग का दृश्य । मधु गिलोल हाथ में लिये खड़े हैं । उन्हें एक पणिहारी माथे पर कलश रखी हुई टेढ़ी गर्दन कर निहार रही है ।

पृष्ठ ५० – चित्र संख्या ६५ परिमाण –६½'१ + ८'५ पोइन्ट
परिचय – मालती अपनी सखियों के साथ रामसरोवर पर खड़ी हुई है।

पृष्ठ ५१ – चित्र सं० ६६ परिमाण – ३½'२ + ८½
परिचय – मालती, भृंगी और चकवी का दृश्य।

पृष्ठ ५२ – चित्र सं० ६७ परिमाण – ६½'१ + ५'२ पो.
परिचय – चकवी मालती को प्रसविनी सिंहिनी की कथा कह रही है। ऊपर पींजरा दिखाई दे रहा है।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० ६८ परिमाण – ३½ + ८'५ पो.
परिचय – सिंहिनी बैठी है, उसे दो सिपाही देख रहे हैं।

पृष्ठ ५४ – चित्र सं० ६९ परिमाण –५'१ + ८'४ पो.
परिचय – हाथी पर सवार होकर सुलतान सिंहिनीकी ओर आता है, सिंहिनी के उदर से निकला हुआ बच्चा तुरन्त ही हाथी को देखकर उसके माथे पर जा चढ़ता है।

पृष्ठ ५६ – चित्र सं० ७० परिमाण –४½'४ + ८½
परिचय – मालती और जैतमाल बैठी हुई वार्तालाप कररही हैं। उनके आसपास २ दासियाँ खड़ी हैं।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० ७१ परिमाण – ६½'१ + ८½
परिचय – जैतमाल के चरणों को मालती पकड़ रही है। दो दासियाँ उसके पीछे खड़ी हैं।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० ७२ परिमाण – ५'४ + ३½ ३ पो.
परिचय – वृक्षों का दृश्य, वानर बैठे हैं।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० ७३ परिमाण – ६ + ८½
परिचय – रामसरोवर बाग में जैतमाल मालती को धीरज बंधा रही है। दासी खड़ी है।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० ७४ परिमाण – ४½'२ + ८'२ पो.
परिचय – जैतमाल, मालती वार्तालाप कर रही हैं। दासीने आकर उन्हें मधु की खबर दी है।

पृष्ठ ६२ – चित्र संख्या ७५ परिमाण – ४'२ + ८½ (चित्र के बांई ओर का ऊपरी १'१ इञ्च हिस्सा लम्बाई में ४ पोइन्ट कम है।)

परिचय – जैतमाल मधु को अपनी दृष्टि के तीक्ष्ण कटाक्षों से मुग्ध कर रही है। मधु हाथ में गिलोल साधा हुवा उसे निहार रहा है।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ७६ परिमाण – ५½ + ८'१ पो.

परिचय – जैतमाल भ्रमर का बहाना करके मधु से कह रही है।

पृष्ठ ६४ – चित्र सं० ७७ परिमाण – ६½'१ + ८½ पो.

परिचय – मधु जैतमाल से मालती के विषय में कुछ पूछ रहा है। जैतमाल उसे कामावतार की कथा सुनाती है।

पृष्ठ ६५ – चित्र सं० ७८ परिमाण – ६½'१ + ९'१ पो.

परिचय – भगवान् शिव बैठे हुए हैं। पार्वती एवं गणेश उन पर चंवर डुला रहे हैं।

पृष्ठ ६८ – चित्र सं० ७९ परिमाण – ५'३ + ८½

परिचय – मधु, मालती और जैतमाल तीनों पास में बैठे वार्तालाप कर रहे हैं।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० ८० परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.

परिचय – मधु, मालती, जैतमाल प्रश्नोत्तर में मग्न हैं।

पृष्ठ ७४ – चित्र सं० ८१ परिमाण – ३ + ८½ १ पो.

परिचय – जैतमाल, मालती और उसकी दासी बैठी हैं।

पृष्ठ ७५ – चित्र सं० ८२ परिमाण – ४½'१ + ८½ १ पो.

परिचय – मधु जैतमाल द्वारा वर्णित मालती के रूप को प्रत्यक्ष रूप में देखरहा है।

पृष्ठ ७६ – चित्र सं० ८३ परिमाण – ६½'२ + ८½

परिचय – मधु, मालती और जैतमाल खड़े २ बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ ७७ — चित्र संख्या ८४ परिमाण — ६½'२ + ८½

परिचय — मालती और मधु बैठे हैं। मालती मधु को कह रही है कि मैं इतने दिन वियोगिनी अवश्य रही किन्तु मेरे प्राण तुम्हारे पास ही रहे, और अब मैं पल भर तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सकूंगी।

पृष्ठ ७८ — चित्र सं० ८५ परिमाण — ६½'२ + ८½ १ पो.

परिचय — मधु बैठा हुआ मालती के साथ सामने खड़ी हुई जैतमाल को समझा रहा है कि मनुष्य को अपने सत्य मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए।

पृष्ठ ७९ — चित्र सं० ८६ परिमाण — ६½'२ + ८½ १ पो.

परिचय — मधु, मालती, जैतमाल बैठे हुए प्रश्नोत्तर में निमग्न हैं।

पृष्ठ ८० — चित्र सं० ८७ परिमाण — ६½२' + ८½

परिचय — मधु, मालती और जैतमाल को मैना के सतीत्व का प्रसंग सुना रहा है।

पृष्ठ ८१ — चित्र सं० ८८ परिमाण — ६½'१ + ८½

परिचय — मैना अपने प्रियतम लालनसाह सेठ से प्रार्थना कर रही है कि मुझे अकेली छोड़कर परदेश मत जाओ।

पृष्ठ ८२ — चित्र सं० ८९ परिमाण — ६½'१ + ८½

यरिचप — लालनसाह-मैना शय्या पर बैठे हुए हैं। साह मैना को समझा रहा है।

पृष्ठ ८३ — चित्र सं० ९० परिमाण — ६½'१ + ८½ १ पो.

परिचय — मैना अपने मन्दिर (अटारी) में बैठी है। शिकार के लिए उद्यत घोड़े पर सवार हुए राजकुमार की उस पर दृष्टि पड़ती है, कुमार मुग्ध होकर उसे अपने वश में करना चाहता है।

पृष्ठ ८४ — चित्र सं० ९१ परिमाण — ६½'१ + ८½ २ पो.

परिचय — रतना मालिन को कुमार अपना मंतव्य कह रहा है।

पृष्ठ ८५ – चित्र संख्या ९२ परिमाण – ६½'१ + ८½
परिचय – रतना मालिन मैना को फूलों का हार देना चाहती है। मैना विरह से व्यथित हुई उदासीन बैठी है।

पृष्ठ ८६ – चित्र सं० ९३ परिमाण – ६½'१ + ८½
परिचय – रतना मालिन फूलों की छबड़ी मैना के सामने कर रही है और फूलों को लेने के लिए उसे कह रही है।

पृष्ठ ८७ – चित्र सं० ९४ परिमाण – ६½ + ८½ १ पो.
परिचय – रतना मालिन मैना को सत्पथ से विचलित करने की इच्छा से मैना के सामने सर्व प्रथम आषाढ़ मास का श्रृंगारिक वर्णन कर उसे अपने दौत्यजाल में फंसाने का उपक्रम कर रही है।

पृष्ठ ८८ – चित्र सं० ९५ परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.
परिचय – रतना मालिन दूती को मैना उत्तर दे रही है।

पृष्ठ ८९ – चित्र सं० ९६ परिमाण – ६½ + ८'४ पो.
परिचय – रतना मालिन मैना से प्रश्न कर रही है।

पृष्ठ ९० – चित्र सं० ९७ परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.
परिचय – रतना एवं मैना प्रश्नोत्तर में रत हैं।

पृष्ठ ९१ – चित्र सं० ९८ परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.
परिचय – प्रश्नोत्तर में निरत रतना और मैना।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० ९९ परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.
परिचय – मैना एवं रतना का वार्तालाप।

पृष्ठ ९३ – चित्र सं० १०० परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.
परिचय – रतना एवं मैना का वार्तालाप।

पृष्ठ ९४ – चित्र सं० १०१ परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.
परिचय – रतना को मैना उत्तर दे रही है।

पृष्ठ ९५ – चित्र सं० १०२ परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.
परिचय – रतना एवं मैना खड़ी २ बातें कर रही हैं।

पृष्ठ ९६ – चित्र संख्या १०३ परिमाण – ६½'१ + ८½

परिचय – मैना, रतना घर में बैठी हैं, बाहर वृक्ष के नीचे राजकुमार खड़ा है।

पृष्ठ ९७ – चित्र सं० १०४ परिमाण – ६½'१ + ८½ १ पो.

परिचय – मैना, लालनसाह पास पास में बैठे हैं, तथा वे अपने सामने खड़ी हुई रतना मालिन पर क्रुद्ध हो उसे धिक्कार रहे हैं।

पृष्ठ ९८ – चित्र सं० १०५ परिमाण – ६½'२ + ९½ ३ पो.

परिचय – लालनसाह के पास में मैना बैठी है। पुरवासी लोग शिर मुंडी हुई तथा गधे पर चढ़ी हुई कुट्टिनी रतना मालिन को देख रहे हैं।

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० १०६ परिमाण – ६½'३ + ८½ ३ पो.

परिचय – मालती, जैतमाल और मधु वार्तालाप कर रहे हैं।

पृष्ठ १०० – चित्र सं० १०७ परिमाण – ६½'२ + ८½ ४ पो.

परिचय – मधु के सामने मालती बैठी है और मालती के पीछे खड़ी हुई जैतमाल मधु को उषा-अनिरुद्ध की तरह गान्धर्व-विवाह करके मालती को अपनाने का उपदेश दे रही है।

पृष्ठ १०१ – चित्र सं० १०८ परिमाण – ६½'२ + १०

परिचय – मधु और मालती एक दूसरे के सम्मुख बैठे हैं। मधु मालती को एक सूवे का उदाहरण देकर यह समझाने का प्रयास कर रहा है कि मुझे तुम उसकी तरह मत फंसाओ।

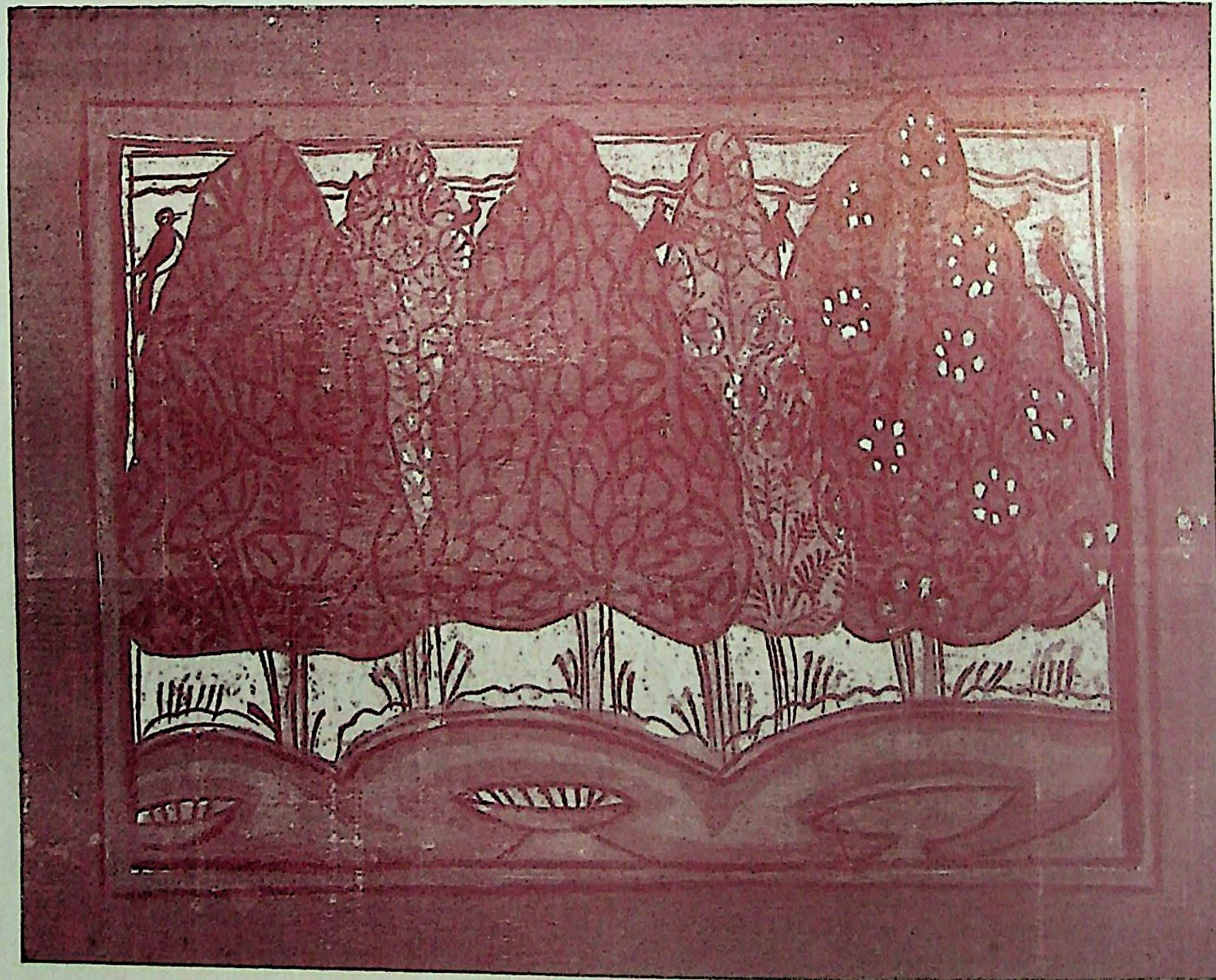
पृष्ठ १०२ – चित्र सं० १०९ परिमाण – ६½'१ + ८½

परिचय – वृक्षावली का सुन्दर दृश्य है। सूवा एक तरफ बैठा है और दूसरी तरफ सारे पक्षी उसे घेरने की इच्छा से आकर एकत्रित हुए हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–१०३; सूचीपत्राङ्क–३०

मैना, रतना घर में बैठी हैं। बाहर वृक्ष के नीचे राजकुमार खड़ा है।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–११०; सूचीपत्राङ्क–३१

वनवृक्षावली का सुन्दरतम दृश्य है। वृक्षों पर पिक पक्षी बैठे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८;   चित्रसंख्या–११५;   सूचीपत्राङ्क–३१

पारधी के अत्यन्त क्षुधापीड़ित परिवार का कारुणिक दृश्य।

पृष्ठ १०३ – चित्र संख्या ११० परिमाण – ६½'१ + ८½

परिचय – वनवृक्षावली का सुन्दरतम दृश्य है। वृक्षों पर पिक-पक्षी बैठे हैं।

पृष्ठ १०४ – चित्र सं० १११ परिमाण – ६½'१ + १०

परिचय – सघन वृक्षावली का दृश्य।

पृष्ठ १०५ – चित्र सं० ११२ परिमाण – ६½'१ + ८'४ पो.

परिचय – कोयल वृक्ष पर बैठे हुए सूवे से शरण की अनुनय विनय कर रही है।

पृष्ठ १०६ – चित्र सं० ११३ परिमाण – ६½'१ + ९'४ पो.

परिचय – पिक अपनी पत्नी को सूवे से मुक्त कराने के लिए सघन वृक्षावली पर अवस्थित अपने सभी मित्र पक्षियों से प्रार्थना कर रहा है।

पृष्ठ १०७ – चित्र सं० ११४ परिमाण – ६½'१ + ८'२ पो.

परिचय – पक्षियों ने मिल कर शुक तथा कोयल को चारों ओर से घेर लिया है। सूवा प्रभु से यह मानसिक प्रार्थना कर रहा है कि हे राम! मुझे बचाओ।

पृष्ठ १०८ – चित्र सं० ११५ परिमाण – ६½'१ + ९½ ३ पो.

परिचय – पारधी के अत्यन्त क्षुधा पीड़ित परिवार का कारुणिक दृश्य। पारधी खड़ा हुआ कुछ उपाय सोच रहा है।

पृष्ठ १०९ – चित्र सं० ११६ परिमाण – ६½'१ + १०

परिचय – पारधी वृक्ष पर जाल फेंक रहा है, उस जाल में सारे पंछी फंस गये हैं। अकेला ध्यानमग्न सूवा ही बच पाया है।

पृष्ठ ११० – चित्र सं० ११७ परिमाण – ६½'१ + १०'१ पो.

परिचय – मधु-मालती का गांधर्व-विवाह हो रहा है, जिसे बाग का एक खोड़ा (लंगड़ा) माली प्रच्छन्न रूप से देख रहा है।

पृष्ठ १११ — चित्र संख्या ११८ परिमाण — ६½'१ + १०

परिचय — राजा खोड़े (लंगड़े) माली के द्वारा मधु-मालती के सुखविहार की बात सुनकर कुपित हो रहा है।

पृष्ठ ११२ — चित्र सं० ११९ परिमाण — ६½'१ + १०

परिचय — बांई ओर चंपावतीपुर का दृश्य है। चित्रके ऊपरी अर्द्ध भाग में-मलयंद नृपति का कुंवर (चंद) अपने साथियों को लेकर भ्रमणार्थ घोड़े पर जा रहा है। नीचे के अर्द्धभाग में—चंदकुँअर को रूपरेखा(मंत्रिसुता) की सैल तथा सुन्दरता के विषय में दो व्यक्ति जानकारी दे रहे हैं।

पृष्ठ ११३ — चित्र सं० १२० परिमाण — ६½'१ + ८'४ पो.

परिचय — बाग की मालिन घोड़े पर चढ़े हुए चंदकुँअर को पुष्प दे रही है। मालिन को कुँअर कह रहा है कि यहाँ पर एक कोठड़ी बना दो और उस में फुलवारी भी लगा दो, तुम्हें द्रव्य दूंगा। बाग में रूपरेखा भी एक कुंज की ओट में बैठी है।

पृष्ठ ११४ — चित्र सं० १२१ परिमाण — ६½'१ + १०

परिचय — मालिन बाग में एकसाथ पास में बैठे हुए चंद और रूपरेखा को देख कर शङ्कित हो रही है।

पृष्ठ ११५ — चित्र सं० १२२ परिमाण — ६½'१ + १०

परिचय — बाग में सर्व—प्रथम दोनों प्रेमियों के नयन मिले हैं, फिर आकर एकसाथ आपस में लिपट गये हों, ऐसा चित्र का भाव है।

पृष्ठ ११६ — चित्र सं० १२३ परिमाण — ६½'१ + ८'४ पो.

परिचय — चंदकुँअर द्वारा कामासन में आवद्ध रूपरेखा वहां पर सद्यःप्राप्त सिंह से भयभीत हो चंदकुँअर का ध्यान सिंह की ओर आकृष्ट कर रही है।

पृष्ठ ११७ — चित्र सं० १२४ परिमाण — ६½'१ + ९'४ पो.

परियच — मालती, मधु बाग में बैठे बातें कर रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८;   चित्रसंख्या–१२२;   सूचीपत्राङ्क–३२

बाग में सर्वप्रथम दोनों प्रेमियों (चंद–रूपरेखा) का सहोपवेशन ।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–१२३; सूचीपत्राङ्क–३२
कामासन में आबद्ध रूपरेखा द्वारा चंदकुंअर का सिंह की ओर ध्यानाकर्षण।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–१३३; सूचीपत्राङ्क–३३

मालती के सघन वृक्षों का दृश्य।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७८; चित्रसंख्या–१३३; सूचीपत्राङ्क–३३

मालती के सघन वृक्षों का दृश्य।

पृष्ठ ११८ – चित्र संख्या १२५ परिमाण – ६½'१ + १०
परिचय – रतिविलास-रत चंद कुँअर बाण द्वारा सिंह को मार रहा है। अश्लील किन्तु अर्द्धनग्न चित्र है।

पृष्ठ ११९ – चित्र सं० १२६ परिमाण – ६½'१ + ९'३ पो.
परिचय – मालती, मधु, जैतमाल विचार विमर्श कर रहे हैं।

पृष्ठ १२० – चित्र सं० १२७ परिमाण – ६½'१ + १०
परिचय – वृषारूढ शिव तथा सिंहारूढ पार्वती माता के बीच खड़ी हुई मालती मधु की रक्षा के लिये प्रार्थना कर रही है।

पृष्ठ १२१ – चित्र सं० १२८ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.
परिचय – मधु कुमार मालती को धैर्य बंधाने के लिये वृक्षोंको अपने आयुध गिलोल का निसाना बना कर अपना बल दिखला रहा है।

पृष्ठ १२२ – चित्र सं० १२९ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पों.
परिचय – बैठी हुई मालती के पास खड़ा मधु कुमार राजा द्वारा भेजे गये सिपाहियों को गिलोल से मार रहा है।

पृष्ठ १२३ – चित्र सं० १३० परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – गिलोल की चोट से बचे हुए सिपाही राजा को कुछ संदेश दे रहे हैं। चंद्रसेन क्रुद्ध हुआ बैठा है।

पृष्ठ १२४ – चित्र सं० १३१ परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – मालती, जैतमाल और मधु मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ १२५ – चित्र सं० १३२ परिमाण – ६½'१ + १०
परिचय – मधु सिपाहियों से लड़ रहा है और मालती, जैतमाल उस के पीछे बैठी देख रही हैं।

पृष्ठ १२६ – चित्र सं० १३३ परिमाण – ६½'१ + १०
परिचय – मालती के सघन वृक्षों का दृश्य।

पृष्ठ १२७ – चित्र सं० १३४ परिमाण – ६½'१ + १०
परिचय – अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित सेना का दृश्य।

पृष्ठ १२८ – चित्र सं० १३५ परिमाण – ६½'१ + ९½ ३ पो.
परिचय – घायल सिपाही राजासे फरियाद कर रहे हैं नृपति क्रुद्ध हो रहा है।

पृष्ठ १२९ – चित्र सं० १३६ परिमाण – ६½'१ + ९'४ पो.
परिचय – मालती, जैतमाल तथा मधु मंत्रणा में निमग्न हैं।

पृष्ठ १३० – चित्र सं० १३७ परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – कुञ्ज में बैठे हुए मालती और मधु ने भ्रमरों की सृष्टि की। भ्रमर फौज से युद्ध कर रहे हैं।

पृष्ठ १३१ – चित्र सं० १३८ परिमाण – ६½'१ + ९½ ३ पो.
परिचय – मालती-वनस्थित मधु, मालती तथा जैतमाल भ्रमरों के दंशनों से आहत भागती हुई सेना को देख रहे हैं।

पृष्ठ १३२ – चित्र सं० १३९ परिमाण – ६½'१ + ९'३ पो.
परिचय – भ्रमर-यूथ द्वारा पलायित फौज के सिपाहियों का दृश्य

पृष्ठ १३३ – चित्र सं० १४० परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – भ्रमर - दंशाहत, अवशिष्ट सैनिक राजा को यह सूचना दे रहे हैं कि भ्रमरों द्वारा सेना समाप्त कर दी गई है। राजा आश्चर्यान्वित एवं क्रुद्ध हो रहा है।

पृष्ठ १३४ – चित्र सं० १४१ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.
परिचय – राजा चंद्रसेन खड़े खड़े कुछ सोच कर अपने दो वीरों को कुछ आज्ञा दे रहे हैं।

पृष्ठ १३५ – चित्र सं० १४२ परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – तीन घुड़सवार दूत जा रहे हैं।

पृष्ठ १३६ – चित्र सं० १४३ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो,
परियय – मधु, मालती तथा जैतमाल के साथ बाग में बैठे हैं। एक राजदूत उन्हें खरी खोटी सुना रहा है।

पृष्ठ १३७ – चित्र सं० १४४ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.
परिचय – मधु के पास मालती, जैतमाल बैठी हैं और दासी दूत को वहाँ से निकाल रही है।

पृष्ठ १३८ – चित्र सं० १४५ परिमाण – ६½'१ + १०

परिचय – मधु की खबर पाकर क्रुद्ध हुआ राजा चंद्रसेन अपने एक सेनानी को आज्ञा दे रहा है।

पृष्ठ १३९ – चित्र सं० १४६ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – पैदल सिपाहियों ने बाग को घेर लिया है।

पृष्ठ १४० – चित्र सं० १४७ परिमाण – ६½'१ + ९½'१ पो,

परिचय – भ्रमर हयसेना और गजसेना से युद्ध कर रहे हैं और मधु अपनी गिलोल से सेना पर वार कर रहा है। हाथी, घोड़े घायल हुए भाग रहे हैं।

पृष्ठ १४१ – चित्र सं० १४८ परिमाण – ६½'१ + ९½

परिचय – उन्निद्र मालती अपने पास मधु को न देख, विकल हो कर जैतमालकी छाती से जा लपटी। जैतमाल उसे धैर्य बंधा रही है। कुंज के बाहर मधु खड़ा है।

पृष्ठ १४२ – चित्र सं० १४९ परिमाण – ६½'१ + १०

परिचय – मधु, मालती, जैतमाल बैठी हैं। दासी मधु पर चंवर (पंखा) डुला रही है।

पृष्ठ १४३ – चित्र सं० १५० परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – मालती को जैतमाल धैर्य बंधा रही है तथा मधु शान्त खड़ा उसे देख रहा है।

पृष्ठ १४४ – चित्र सं० १५१ परिमाण – ६½'१ + ९½

परिचय – जैतमाल अपने पास में बैठे हुए मधु तथा मालती को उनके पूर्वजन्म (यदुवंश) की बात सुना रही है।

पृष्ठ १४५ – चित्र सं० १५२ परिमाण – ६½'१ + ९'४ पो.

परिचय – मधु बैठा है, जैतमाल खड़ी हुई सूर्य की स्तुति कर रही है और उनके बीचमें खड़ी मालती सूर्य को अर्घ्य दे रही है।

पृष्ठ १४६ – चित्र सं० १५३ परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – जैतमाल, मालती तथा मधु बैठे हुए हैं, मन ही मन मालती मधु-रक्षार्थ भगवान् की स्तुति कर रही है।

पृष्ठ १४७ – चित्र सं० १५४ परिमाण – ६½'१ + ९'३ पो.
परियच – जैतमाल-मधु-मालती बैठी हैं और वे अपने रक्षार्थ भगवान् के द्वारा संप्रेषित गरुड-भारण्ड आदि पशु-पक्षियों के भयानक रूप को देख रहे हैं।

पृष्ठ १४८ – चित्र सं० १५५ परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – सिंह, भारण्ड तथा हाथी आदि पशु-पक्षियों का दृश्य।

पृष्ठ १४९ – चित्र सं० १५६ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.
परिचय – हाथी पर चढ़ा हुआ राजा चंद्रसेन भागती हुई अपनी सेना को देख रहा है।

पृष्ठ १५० – चित्र सं० १५७ परिमाण – ६½'१ + ९'४ पो.
परिचय – सिंह-भारण्ड आदि सेना के हाथियों पर प्रहार कर रहे हैं। हाथी भाग रहे हैं।

पृष्ठ १५१ – तित्र सं० १५८ परिमाण – ६½'१ + ९'१ पो.
परिचय – राजकुमार से एक व्यक्ति कुछ कह रहा है।

पृष्ठ १५२ – चित्र सं० १५९ परिभाण – ६½'१ + ९½ २ पो.
परिचय – राजा चन्द्रसेन अपने मंत्री से कुछ कह रहा है।

पृष्ठ १५३ – चित्र सं० १६० परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – राजा चन्द्रसेन को मंत्री तारनसाह समझा रहा है।

पृष्ठ १५४ – चित्र सं० १६१ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.
परिचय – राजकुमार बैठे हैं तथा दो व्यक्ति उनके नीचे बैठे हुए बातें कर रहे हैं। दास कुमार के पीछे खड़ा है।

पृष्ठ १५५ – चित्र सं० १६२ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.
परिचय – मंत्री तारनसाह अपनी इष्टदेवता दुर्गा माता की कृपा-बल से सिंह, भारण्ड एवं गरुड़ को शांत कर रहा है।

पृष्ठ १५६ – चित्र सं० १६३ परिमाण – ६½'१ + ९½ ३ पो.

परिचय – मालती और जैतमाल के बीच में मधु बैठा है, मालती हाथ जोड़ कर उस से कुछ कह रही है।

पृष्ठ १५७ – चित्र सं० १६४ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – कृपाणधारी पैदल सिपाहियों का दृश्य।

पृष्ठ १५८ – चित्र सं० १६५ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – राजा सिंहवाहिनी दुर्गा माता के सामने कर जोड़े खड़ा है। दुर्गा मां उसे उपदेश दे रही है।

पृष्ठ १५९ – चित्र सं० १६६ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – चन्द्रसेन को मंत्री तारणसाह समझा रहा है।

पृष्ठ १६० – चित्र सं० १६७ परिमाण – ६½'१ + ९½ ३ पो.

परिचय – चन्द्रसेन एवं तारणसाह मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ १६१ – चित्र सं० १६८ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – घोड़े पर सवार हुआ उरगाना जा रहा है।

पृष्ठ १६२ – चित्र सं० १६९परिमाण – ६½'१ + ९½

परिचय – उरगाना मोची से बात कर रहा है।

पृष्ठ १६३ – चित्र सं० १७० परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – उरगाना घोड़े से उतर कर मोची से बात कर रहा है। घोड़े के बाएं पैर से सर्प की पूंछ सटी है और मोची ने सर्प के बीच के (फण के बाद के) हिस्से को चमड़ा समझ कर अपने हाथ में पकड़ रखा है।

पृष्ठ १६४ – चित्र सं० १७१ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – उरगाना घोड़े पर सवार हुआ जा रहा है, घोड़े के पेट पर बंधे हुए सर्प को देख कर बांबी वाला सर्प उसे इस प्रकार बंधने का कारण पूछ रहा है। उरगाना यह सब शान्त भाव से सुन रहा है।

पृष्ठ १६५ – चित्र सं० १७२ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – उरगाना सर्प के भय से घोड़े से उतर कर यह सोच रहा है कि सर्प को क्यों न तलवार से मार दिया जाय?

पृष्ठ १६६ – चित्र सं० १७३ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – सर्प और उरगाना बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ १६७ – चित्र सं० १७४ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – उरगाना एवं सर्प के वार्तालाप का दृश्य।

पृष्ठ १६८ – चित्र सं० १७५ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – उरगाना-सर्प-संवाद का दृश्य।

पृष्ठ १६९ – चित्र सं० १७६ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.

परिचय – उरगाना-सर्प की समझौता-वार्ता का दृश्य।

पृष्ठ १७० – चित्र सं० १७७ परिमाण –६½'१ + ९½

परिचय – मलयापुर का राजा हरिदत्त अस्वस्थ हुआ वन में पलंग पर नींद में सोया हुआ है। मंत्री उसके सिरांयते के नीचे बैठा है। वन में एक वंबी से निकले हुए सर्पकी आवाज सुन कर राजा के उदर में निवास करने वाला सर्प राजा के मुख से अर्द्ध-निसृत हो उससे बातें कर रहा है। मंत्री चुपचाप यह सब देख सुन रहा है।

पृष्ठ १७१ – चित्र सं० १७८ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – मलयापुर-नृपति अपने मंत्री एवं परिवार के साथ बैठा है।

पृष्ठ १७२ – चित्र सं० १७९ परिमाण – ६½'१ + ९½ ३ पो.

परिचय – मंत्री राजा को सर्प द्वारा बताई हुई औषधि पिला रहा है।

पृष्ठ १७३ – चित्र सं० १८० परिमाण – ६½ + ८½

परिचय – उरगाना हाथ जोड़े सर्प के सामने खड़ा है, सर्प उसे मंत्र सुना रहा है।

पृष्ठ १७४ – चित्र सं० १८१ परिमाण – ६½ + ९'२ पो.

परिचय – उरगाना एवं सर्प परस्पर वचनबद्ध हो रहे हैं।

पृष्ठ १७५ – चित्र सं० १८२ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – उरगाना सर्प को कटोरे से दूध पिला रहा है।

पृष्ठ १७६ – चित्र सं० १८३ परिमाण – ६½'१ + ९'२

परिचय – उरगाना खड़ा है और उस की पत्नी तथा पुत्र बैठे हैं। पति - पत्नी प्रश्नोत्तर में संलग्न हैं।

पृष्ठ १७७ – चित्र सं० १८४ परिमाण – ६½'१ + ९'२

परिचय – पत्नी उरगाना से पूछ रही है कि तुम नित्य मोहर कहाँ से लाते हो?

पृष्ठ १७८ – चित्र सं० १८५ परिमाण – ६½'१ + ९'२ पो.

परिचय – उरगाना अपने पुत्र के हाथों से सर्प को दूध पिला रहा है।

पृष्ठ १७९ – चित्र सं० १८६ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.

परिचय – हाथ जोड़े हुए उरगाना से सर्प कुछ कह रहा है। उरगाना के पीछे उसका लड़का भी खड़ा है।

पृष्ठ १८० – चित्र सं० १८७ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – उरगाना का लड़का सर्प को दूध पा रहा है। उसने एक अपने हाथ से लाठी और दूसरे हाथ से कटोरा पकड़ रखा है।

पृष्ठ १८१ – चित्र सं० १८८ परिमाण – ६½'१ + १०

परिचय – उरगाना का लड़का सर्प पर लाठी का प्रहार कर रहा है और सर्प उसे डस रहा है।

पृष्ठ १८२ – चित्र सं० १८९ परिमाण – ६½'१ + ९'३ पो.

परिचय – उरगाना अपनी पत्नी को समझा रहा है कि तुम कलह मत करो। उसका लड़का पास में ही मरा पड़ा है।

पृष्ठ १८३ – चित्र सं० १९० परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.

परिचय – उरगाना की पत्नी राजा से उरगाना की शिकायत कर रही है।

पृष्ठ १८४ – चित्र सं० १९१ परिमाण – ६½'१ + ८½
परिचय – राजा उरगाना से जवाब तलब कर रहा है।

पृष्ठ १८५ – चित्र सं० १९२ परिमाण – ६½'१ + ९'३ पो,
परिचय – उरगाना तीन पैदल सिपाहियों के साथ आये हुए, अश्वारूढ़ राजाको सर्पकी बंबी बता रहा है।

पृष्ठ १८६ – चित्र सं० १९३ परिमाण – ६½'१ + ९'३ पो.
परिचय – मंत्री तारणसाह राजा चंद्रसेन को समझा रहा है।

पृष्ठ १८७ – चित्र सं० १९४ परिमाण – ६½ + ९½ २ पो.
परिचय – मालती और जैतमाल पालखी में बैठ कर राजमहल की ओर जा रही हैं।

पृष्ठ १८८ – चित्र सं० १९५ परिमाण – ६½'१ + ९'४ पो.
परिचय – महल में मालती और जैतमाल रानी कनकमाल के पास बैठी हैं।

पृष्ठ १८९ – चित्र सं० १९६ परिमाण – ६½ + ९'२
परिचय – मालती, मधु बैठे हैं। मालती पान-सुपारी की तश्तरी अपने हाथ से उठाकर मधु के सामने कर रही है।

पृष्ठ १९० – चित्र सं० १९७ परिमाण – ६½'१ + ९'३ पो.
परिचय – मालती-मधु बैठे हैं, जैतमाल मालती के पीछे खड़ी है, मधु के पीछे कोई उसका साथी बैठा है।

पृष्ठ १९१ – चित्र सं० १९८ परिमाण – ६½'१ + ९'४ पो.
परिचय – अंजना बैठी है, उसके सामने खड़ा हुआ हनुमान् उससे कुछ पूछ रहा है।

पृष्ठ १९२ – चित्र सं० १९९ परिमाण – ६½'१ + ९½ ३ पो.
परिचय – अंजना के सामने राम और लक्ष्मण बैठे हैं, रामके पीछे सीता खड़ी है, हनुमान् खड़े २ अञ्जना माता के ऊपर चँवर डुला रहे हैं।

पृष्ठ १९३ – चित्र संख्या २०० परिमाण – ६½'१ + १०

परिचय – राम और सीता एक दूसरे के सामने खड़े हैं। उन के बीच में सीता के अमोघ वचन से त्रस्त हुआ लक्ष्मण राम के पैरों पर पड़ कर विनय कर रहा है। हनुमान् राम के पीछे खड़ा है।

पृष्ठ १९४ – चित्र सं० २०१ परिमाण – ६½'१ + १०

परिचय – अंजना के सामने नीचे राम, लक्ष्मण बैठे हैं। लक्ष्मण के पीछे हनुमान् और अंजना के पीछे सीता खड़ी हैं। अंजनी कुछ कह रही है, और वे सब सुन रहे हैं।

पृष्ठ १९५ – चित्र सं० २०२ परिमाण – ६½'१ + १०

परिचय – अंजना के सामने हनुमान् हाथ जोड़े खड़ा है, उसके पीछे राम, लक्ष्मण बैठे हैं, सीता अञ्जना के पीछे खड़ी है।

पृष्ठ १९६ – चित्र सं० २०३ परिमाण – ६½'१ + ९½

परिचय – बैठी हुई अंजना से हाथ जोड़ कर खड़े हुए राम और लक्ष्मण अयोध्या जाने की आज्ञा ले रहे हैं।

पृष्ठ १९७ – चित्र सं० २०४ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.

परिचय – मधु-मालती बैठे हुए बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ १९८ – चित्र सं० २०५ परिमाण – ६½'१ + ९½ ४ पो.

परिचय – वार्तालाप में निमग्न मधु, मालती और जैतमाल।

पृष्ठ १९९ – चित्र सं० २०६ परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.

परिचय – राजा चंद्रसेन दरबार में आकर मंत्री तारणसाह को कह रहे हैं कि विवाह की तय्यारी करो।

पृष्ठ २०० – चित्र सं० २०७ परिमाण – ६½'१ + ९'४ पो.

परिचय – मालती मधु को निहार रही है। दोनों दूर अलग अलग बैठे हैं।

पृष्ठ २०१ — चित्र संख्या २०८ परिमाण — ६½'२ + ९'१ पो.

परिचय — दो सुवासिनी स्त्रियां मधु के तिलक लगाने आई हैं किन्तु उनके हाथ ऊँचे नहीं हो रहे हैं, क्यों कि वे मधु के मन-मोहक रूप को देख कर अपनी सुधि भूल गईं।

पृष्ठ २०२ — चित्र सं० २०९ परिमाण — ६½'१ + ९½

परिचय — मालती के रूप को देख कर विमुग्ध हुए देश-विदेश के आमंत्रित-राजाओं का दृश्य।

पृष्ठ २०३ — चित्र सं० २१० परिमाण — ६½'१ + ९'४ पो.

परिचय — खड़ी हुई मालती और जैतमाल के रूप—लावण्य पर मुग्ध एवं मूर्च्छित हुए नर-समूह का दृश्य।

पृष्ठ २०४ — चित्र सं० २११ परिमाण — ६½'१ + ९½ १ पो.

परिचय — बाजे गाजे का दृश्य।

पृष्ठ २०५ — चित्र सं० २१२ परिमाण — ६½'१ + ९½ १ पो.

परिचय — विवाह-मण्डप में जैतमाल और मालती के बीच में मधु बैठा है। मण्डप के आस-पास दो पण्डित खड़े हैं।

पृष्ठ २०६ — चित्र सं० २१३ परिमाण — ५½'१ + ९½

परिचय — तारणसाह को चंद्रसेन दहेज दिखला रहे हैं।

पृष्ठ २०६ — चित्र सं० २१४ परिमाण — ५½ + ९'४ पो.

परिचय — मधुकुमार तोरण मार रहे हैं, जिसे देख कर कनकमाल रानी प्रसन्न हो रही है।

पृष्ठ २०७ — चित्र सं० २१५ परिमाण — ६½'१ + ९½ ३ पो.

परिचय — घोड़ा पकड़े हुए एक हाजरिया मधु के सामने खड़ा है। मधु ऐसी मुद्रा में खड़ा है जैसे कोई उसे रोक रहा हो।

पृष्ठ २०८ — चित्र सं० २१६ परिमाण — ६½'१ + ९½ १ पो.

परिचय — चंद्रसेन नृपति और मधु बैठे हैं। नृपति उसे अपना राज्य—भार संभालने को कह रहे हैं।

पृष्ठ २०९ – चित्र संख्या २१७ परिमाण – ६½'१ + ९½
परिचय – सामने बैठे हुए मधु से हाथ जोड़ कर राजा अपना राज्य-भार संभालने का आग्रह कह रहा है।

पृष्ठ २१० – चित्र सं० २१८ परिमाण – ६½'१ + १०
परिचय – मधु चंद्रसेन को कामनिवास का प्रसंग सुना रहा है।

पृष्ठ २११ – चित्र सं० २१९ परिमाण – ६½'१ + १०
परिचय – मधु एवं चन्द्रसेन का वार्तालाप।

पृष्ठ २१२ – चित्र सं० २२० परिमाण – ६½'१ + ९½ १ पो.
परिचय – मालती और जैतमाल के बीच में मधु बैठा है।

पृष्ठ २१३ – चित्र सं० २२१ परिमाण – ६½'१ + १०'१ पो.
परिचय – मधु बैठा है और उसके आस पास में जैतमाल और मालती खड़ी हैं।

पृष्ठ २१४ – चित्र सं० २२२ परिमाण – ६½'१ + १०'१ पो.
परिचय – बैठे हुए मधु के सामने मालती-जैतमाल बैठी हैं।

पृष्ठ २१५ – चित्र सं० २२३ परिमाण – ६½'१ + ९½ २ पो.
परिचय – मधु के सामने एक पुस्तक इस प्रकार खुली पड़ी है जैसे कि उस का अन्तिम – पत्र आ गया हो।

प्रसङ्गसूची –

१ – राज - कुल - वर्णन के अनन्तर मधु - मालती - परिचय तथा रामसरोवर का वर्णन – पृष्ठ १ – ५

२ – मधु तथा मालती का गुरु - गृह में अध्ययन – पृष्ठ ६ – १३
(१) मालती द्वारा मधु के प्रति प्रणय - निवेदनार्थ वार्तालाप का उपक्रम (२) मधु द्वारा प्रस्तुत इन्द्रायण वृक्ष पर लुब्ध एक शुक का दृष्टान्त।

३ – मृग तथा सिंहिनी का प्रेमाख्यान – पृष्ठ १३ – ३३
(१) काकोलूक - वार्ता (२) टिट्टिभ - टिट्टिभी - संवाद
(३) काक द्वारा सर्प - मारण (४) हंस - बधिकोदाहरण।

४ — मालती द्वारा कथित करण - पद्मावती का प्रसङ्ग - वर्णन — पृष्ठ ३३ – ४७

५ — रामसरोवर - प्रसङ्ग — पृष्ठ ४७ – ५५
(१) मधु का वन - विहार (२) मालती - चकवी का संवाद।

६ — मालती तथा जैतमालका वार्तालाप — पृष्ठ ५५ – ६२
(१) जैतमाल के सोलह श्रृंगारों का वर्णन।

७ — जैतमाल का मधु के साथ वार्तालाप — पृष्ठ ६२ – ७८
(१) काम - दहन - प्रसङ्ग (२) मधु को अपने पूर्वजन्म का आभास होना (३) मधु का मालती तथा जैतमाल के साथ वार्तालाप (४) मालती के रूप - लावण्य का वर्णन।

८ — मधु द्वारा कथित लालनसाह की पत्नी मैना के सतीत्व का आख्यान— पृष्ठ ७८ – १०२
(१) वरुणपुरी के राजकुमार द्वारा मैना के वश्यार्थ सम्प्रेषित दूती रतनामालिन का मैना से सम्पर्क - साधन (२) दूती द्वारा प्रस्तुत षड्तु (द्वादश - मास) के श्रैङ्गारिक विषयों का मैना द्वारा सयुक्तिक प्रतिवाद (३) दूती की दुर्दशा एवं देश - निस्सारण (४) मधु तथा मालती के प्रश्नोत्तर।

९ — मालती द्वारा कथित शुक - पिकी का आख्यान — पृष्ठ १०३ – १०९
(१) व्याध का प्रसंग।

१० — मधु - मालती का गान्धर्व - विवाह — पृष्ठ १०९ – १११

११ — मधु द्वारा निगदित पुष्पावती - पुरी के नृपति मलयंद के कुमार चंद एवं रूपरेखा (मंत्रिसुता) का आख्यान — पृष्ठ ११२ – ११९

१२ — मधु का राजसेना के साथ घटित युद्ध - वर्णन — पृष्ठ १२० – १५०
(१) मधु द्वारा मालती को आश्वासन (२) भ्रमर - युद्ध, (३) मधु तथा राजदूत का संवाद (४) जैतमाल द्वारा मालती को धैर्याभिबंधन (५) मधु की सहायतार्थ मालती - कृत श्रीकृष्ण - स्तुति के परिणाम स्वरूप सद्यःप्राप्त भारण्ड सिंह आदि वन्यजन्तुओं का राजसेना से युद्ध।

१३ – राजा चंद्रसेन की अपने मंत्रियों के साथ मंत्रणा – पृष्ठ १५१ – १६१
(१) मंत्रियों द्वारा युद्धार्थ प्रधानमन्त्री तारनसाह को मध्यस्थ बनाने का प्रस्ताव करना (२) तारनसाह द्वारा अपनी मांत्रिक - शक्ति के प्रभाव से भारण्ड आदि का बन्धन (३) श्रीदुर्गाम्बा का प्रत्यक्ष - दर्शन एवं उपदेश (४) युद्ध - विराम (५) राजा चंद्रसेन एवं मंत्री तारनसाह का वार्तालाप।

१४ – तारनसाह द्वारा वर्णित उरगाना तथा सर्पका आख्यान– पृष्ठ १६२ – १८६
(१) अश्वोदर - बद्ध सर्प एवं वन - बम्बीस्थ सर्प का संवाद (२) उरगाना - सर्प का संवाद (३) बम्बीस्थ सर्प - उरगाना - संवाद (४) सर्पोदाहृत मलयंद - नृपति हरिदत्त राय के उदरस्थ सर्प एवं बंबीस्थ सर्प का प्रसङ्ग (५) उरगाना का गृह - कलह (६) उरगाना के पुत्र की सर्प द्वारा मृत्यु (७) उरगाना की पत्नी द्वारा राजा अमरसेन के सम्मुख उरगाना - सर्प - सम्बन्धी रहस्योद्घाटन (८) राजा द्वारा सर्प की बम्बी से धनापहरण।

१५ – राजा चन्द्रसेन द्वारा आहूत मधु - मालती का पुनः स्वगृहागमन – पृष्ठ १८७ – १९१
(१) राजा चन्द्रसेन एवं कनकमाल रानी का वार्तालाप।

१६ – चन्द्रसेन द्वारा कथित श्रीरामचन्द्र, अञ्जनी एवं हनुमान् का परस्पर संवाद – पृष्ठ १९१ – १९८

१७ – मधु-मालती का विवाह - वर्णन – पृष्ठ १९८ – २१०

१८ – मधु द्वारा वर्णित काम - निवास का प्रसङ्ग – पृष्ठ २११ – २१४

१९ – कवि - वंश - वर्णन तथा कथोपसंहार – पृष्ठ २१४ – २१५

★

३. सचित्र मधु-मालती कथा।   क्रमाङ्क-५०७९

कर्त्ता-चतुर्भुजदास, लिपिकाल-१८ वीं शताब्दी (वि०)

आकार-पत्राकार   माप(साइज)-९'३ + ७½

पृष्ठसंख्या ८८, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति १५, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २८

पुस्तकदशा-त्रुटित एवं अपूर्ण, कहीं कहीं मध्यभाग भी त्रुटित है।

ग्रन्थारम्भ --

........त हरि वि महवाल भ्रगीत मधुकर मीन मराल ॥
कदली कनक की [र] पीक सोई । ईंद्र सभा सब फीकी होय ॥ १२ ॥
ज्या देषे चीत चले मुनीसा । देषे धरणी डारे सीसा ॥
मांनु छांह परि सेसा । सुर भुले जीव धरे अंदेसा ॥
नगरलोक वरणव केती कहु । थोरी सी मंत्री की कहु ॥
थोरे मांझ बहुत रस होय । अति लावन राचो न कोई ॥
तारणसाह सुगड गुण सार । त्रीया एक तसु ऐक कुवार ॥
ताको नाम [म] नोहर धर्यो । मांनु काम तेज अवतर्यो ॥
मधु मधु कहि पिलावे तात । बाड्यो मांनु कलानिध गात ॥
घडि दीवस पष मासे ओर । जीम वंसंत कीसीलता कोर ॥
भयो वरस दस मास के अध । देषि त्रीया होवे कामंध ॥
तन मन धन विसरि ग्रेह । भ्रंगी भई मांनु गति तेह ॥
जित तीत कुवर करे कछु केल । दोरि फीरें त्रीया ताकी गेल ॥

पुस्तक के अन्त में -

ढोल दमांमे अर सहणाई । बीजी भेर वजी करणाई ॥
झंझर ताल मृदंग डफ बाजे । वाजत्र नाद रस राजे ॥
गुण गंधरप अवछरा अनंगी । संगत कला कोकरस संगी ॥
गावेही राग नीरत सुध नचे । मांनु [इं]द्रसभा सुर सचे ॥
बांने फीरही दुलहनी दुलह । बांधे मोड सेहरा फुलह ॥
भ्रम सुरहीनी क चोरे । अभ्रण लेण नवावहि भोरे ॥



प्रतिक्रमाङ्क–५०७९; चित्रसंख्या–१; सूचीपत्राङ्क–४७

मधु और मालती गुरुगृह में अध्ययन करते हुए परस्पर विलोकन करते हैं।

दुलहकु नीरखे त्रीया, आगे ही सुरत काम ।
ता पर बन बांने चढे, चीत वीत मुरछात बांम ॥
बसन भुलाने देह कै, पंथ भुलाने गेह ।
प्राण भुलाने थीर नही, प्रगटयो काम सनेह ॥
अईत ले आई त्रीया, कहत सुवासमणी सोय ।
तीलक लगावणकु करै, उचो................॥

टिप्पणी – इस ग्रन्थ के पत्र अत्यन्त जीर्ण - शीर्ण एवं त्रुटित हैं । पत्रों का प्रान्त्य भाग (किनारा) कटा होने से अधिकांश पत्रों की क्रम - संख्या भी मिट गई है। प्रत्येक पत्र में वर्तनी के रूप में दोनों ओर लाल स्याही से रेखाङ्कन किया गया है । पत्र - संख्या १७ तक पद्य का अर्धाली चिन्ह और पद्याङ्क भी लाल स्याही से लिखे गये हैं, पर आगे के पत्रों में केवल काली स्याही का ही प्रयोग हुआ है । ग्रन्थ के १७, ४२ और ७३ संख्या वाले पत्र बीच से कटे हुए हैं तथा १, २, ३, ७, ८, ११, १८, २३, २५, २९, ३१, ३२, ३६, ३९, ४५, ५०, ५९, ६१, ६२, ६५, ६८, ७१, ७४, ७५, ७६, ७९, ८१, ८२, ८३, ८४, ८६, ८७, ९२, १०० तथा १०२ संख्या वाले पत्र भी इस ग्रन्थ में अनुपलब्ध हैं । इस के अतिरिक्त ग्रन्थ – गत प्रकरण भी असम्बद्ध रूप में लिखा हुआ है । सारांशतः यह ग्रन्थ अपूर्ण एवं त्रुटक है । इस की लिपि स्पष्ट एवं सुवाच्य है । प्रति के आद्यन्त पत्रों की अनुपलब्धि के कारण चौथे पत्र का प्रारम्भिक अंश एवं प्राप्त अन्तिम पत्रका अन्तिम अंश ही ऊपर में उद्धृत किया गया है ।

इस प्रति में सचित्र पत्र ६२ हैं तथा चित्रों की संख्या ९० है। प्रत्येक चित्र का बोर्डर बनाने में लाल स्याही का एवं अधिकांश चित्रों की आधार - भूमि में पीले रंग का उपयोग किया गया है। चित्रों में किशनगढ - शैली तथा जोधपुर - शैली का प्रभाव लक्षित होता है । इस प्रति में आये हुए चित्रों का परिचय नीचे लिखा जा रहा है–

चित्रसूची –

पृष्ठ ४ – चित्र संख्या १ परिमाण – ६ + ४½

परिचय – **मधु और मालती गुरु - गृह में अध्ययन करते हुए परस्पर विलोकन करते हैं । चित्र के वाम - पार्श्व में गुरुजी बैठे दीख रहे हैं।**

पृष्ठ ४ — चित्र संख्या २ परिमाण — २½ + ४
परिचय — मधु को देखने के लिये मालती अपनी सखी
साथ जा रही है।

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ३ परिमाण — ४ + ४'३ पो.
परिचय — राजा चन्द्रसेन मालती और रानी से अध्ययन वि
यक चर्चा कर रहा है।

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ४ परिमाण — ३ + ५
परिचय — मालती, रानी और मालती की सखी से राज
चन्द्रसेन अध्ययन की व्यवस्था बता रहा है।

पृष्ठ ६ — चित्र सं० ५ परिमाण — ५ + ४
परिचय — मधु और मालती पटान्तर (परेच) में अध्ययन कर रहे

पृष्ठ ९ — चित्र सं० ६ परिमाण — ४ + ३
परिचय — मालती मधु को फूलों की गेंद बना कर मारती
वे दोनों बैठे हैं।

पृष्ठ ९ — चित्र सं० ७ परिमाण — २'३ + ३
परिचय — मालती विचार - मुद्रा में बैठी है।

पृष्ठ १० — चित्र सं० ८ परिमाण — ५'१ + १'३ पो.
परिचय — पेड़ पर पक्षियों के अण्डे खाने साँप चढ़ रहा है
चित्र का आधा भाग फटा हुआ है।

पृष्ठ १० — चित्र सं० ९ परिमाण — ७'२ + २'३ पो.
परिचय — पेड़ पर टिटोड़ा और टिटोड़ी परस्पर संवाद कर
रहे हैं। चित्र का अन्य अंश फटा हुआ है।

पृष्ठ १० — चित्र सं० १० परिमाण — ७ + २½
परिचय — सिंहनी और मृग सम्मुख बात कर रहे हैं। चित्र क
ऊपर का भाग फटा हुआ है।

पृष्ठ १२ — चित्र सं० ११ परिमाण — ४½ + ३½
परिचय — गोलाकार इस चित्र में अरिमर्दन द्वारा आहूत चा
घूघू मंत्रीगण बैठे हुए परस्पर मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ १२ – चित्र संख्या १२ परिमाण – ४½ + ४½
परिचय – घूघू (उलूक) मिल कर काकों (कौओं) को मार रहे हैं। (मू० काग हजार च्यार तिहां मारे)।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० १३ परिमाण – ३ + ३½
परिचय – मालती और जैतमाल दोनों बातें कर रही हैं।

पृष्ठ १३ – चित्र संख्या १४ परिमाण – ६'२ + ३'३ पो.
परिचय – (मू०मालती सरोवर आवी सखी साथे छै) मालती और उसकी सखी दोनों साथ साथ सरोवर पर पहुँची हैं।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० १५ परिमाण – २ + ३'३ पो.
परिचय – राजा चंद्रसेन और तारनसाह मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० १६ परिमाण – ३'२ + २½
परिचय – (मू० मेघवरण मंत्रीने कहे काग भेला कीया) चार कौए मिल कर मंत्रणा कर रहे हैं। चित्र गोल-अण्डाकार है, चि. सं. १५ और १६ संयुक्त से हो गये हैं।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० १७ परिमाण – ५'२ + २½
परिचय – (मू० हंसने बधक लेवा चढ्यो तरुण हंस कहे) एक वृक्ष पर दो हंस बैठे हैं, उन्हें पकड़ने को एक शिकारी चढ़ रहा है, पास में दो हंस (वृद्ध-तरुण) चर्चा कर रहे हैं।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० १८ परिमाण – ३½ + १½
परिचय – (मू० हंस मृतकरूप कीधु छ बधक लेवा चढ़ो) हंसों ने ऐसा रूप धारण कर लिया है जैसे वे मरे हुए हों।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० १९ परिमाण – ४ + २½
परिचय – (मू०मेघवरण मीलीयो) राजा-मंत्री परस्पर मिल रहे हैं।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० २० परिमाण – ३ + ६
परिचय – (मू० काग घुहर बाले) कागों द्वारा घूघू के घोंसलों में आग लगा दी गई है। कौए बाहर देख रहे हैं। चित्र बीच में अण्डाकार है तथा बाहरी तरफ परिमाण में ऊपर छोटा तथा नीचे की ओर बड़ा है।

पृष्ठ १९ — चित्र संख्या २१ परिमाण — ३½ + ४½

परिचय — (मू० मालती फेट समाई, मधु उठ अपने घर जाये। मालती दोउ ग्रह फेंट समावे ॥ ४८ ॥) मालती ने मधु का फेंट (दुपट्टा, कमर बन्दा) पकड़ लिया है और वह गमनोद्यत-मुद्रा में दीख रहा है।

पृष्ठ २० — चित्र सं० २२ परिमाण — १½ + ३

परिचय — मधु और मालती परस्पर संलाप कर रहे हैं।

पृष्ठ २० — चित्र सं० २३ परिमाण — ५'२ + २

परिचय — (मू० मृग मारयो) सिंह मृग को मार रहा है।

पृष्ठ २१ — चित्र सं० २४ परिमाण — ५'३ + ४½

परिचय — मालती और मधु संलाप कर रहे हैं। चित्र में वृक्ष, महल दोनों दिखलाई पड़ रहे हैं।

पृष्ठ २२ — चित्र सं० २५ परिमाण — ४ + ३½

परिचय — (मू० करण राजा भाव छै) राजा करण मसनद के सहारे बैठे हैं।

पृष्ठ २२ — चित्र सं० २६ परिमाण — ३½ + ३½

परिचय — (मू० अस्त्री रो कण) चित्र में मौन मुद्रा में पद्मावती बैठी हुई है।

पृष्ठ २४ — चित्र सं० २७ परिमाण — ३½ + ३½

परिचय — राम सरोवर के तट पर बैठे मधु तथा मालती को देखकर माली इसकी सूचना राजा को दे रहा है। चित्र में राजा और माली दोनों दिखलाई दे रहे हैं।

पृष्ठ २४ — चित्र सं० २८ परिमाण — ३½ + ३½

परिचय — (मू० रांणी राजा वात करे) चित्र में राजा और रानी वार्तालाप कर रहे हैं।

पृष्ठ २७ — चित्र सं० २९ परिमाण — ५½ + २½

परिचय — (मू० जलषेथी सांप छछुंदरी) साँप छछुंदरी को अपने मुँह में पकड़े हुए है।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७९; चित्रसंख्या–२४; सूचीपत्राङ्क–५०

मालती और मधु संलाप कर रहे हैं। चित्र में वृक्ष, महल दोनों दिखलाई दे रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क-५०७९,   चित्रसंख्या-३३;   सूचीपत्राङ्क-५१

सुलतान मोरे पायक कहे सींघन प्रसुतकी वात ।

पृष्ठ २७ – चित्र संख्या ३० परिमाण – ४½ + ३½

परिचय – मधु और मालती विचार मुद्रा में बैठे बात कर रहे हैं।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ३१ परिमाण – ४½'२ + ६½ द पो.

परिचय – (मू० रांम सरोवर मधु षेले हे नारी पांणी भरैं) चित्र में दो स्त्रियाँ पानी भर रही हैं और मधु उनकी ओर गिलोल तान रहा है। पीछे मालती बैठी है।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ३२ परिमाण – ३ + ३

परिचय – (मू० भारड पषी मधु वन मे गया) चित्र में भारण्ड-पक्षी और मधु वन में दिखलाई पड़ रहे हैं।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ३३ परिमाण – ३ + ८

परिचय – (मू० सुलतान मोरे पायक कहे सींघन प्रसुत की वात) चित्र में हाथी पर सुलतान बैठा है, सामने घोड़े पर सेवक लोग आकर सिंहनी के प्रसव की सूचना दे रहे हैं।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ३४ परिमाण – ३½'३ + ३

परिचय – मालती और जैतमाल मसनद के सहारे बैठकर संलाप कर रही हैं।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ३५ परिमाण – ७½'३ + ३½

परिचय – सुलतान हाथी पर बैठा हुआ शेर की शिकार कर रहा है। शेर ने हाथी की सूंड पकड़ कर उस के मस्तक को घायल कर दिया है।

पृष्ठ ४० – चित्र सं० ३६ परिमाण – ३½'२ + ३

परिचय – वृक्ष पर कोयल और शुक बैठे हुए हैं।

पृष्ठ ४१ – चित्र सं० ३७ परिमाण – ६ + ३'३ पो.

परिचय – (मू० छ जणानो भाव) चित्र में छः व्यक्ति परस्पर वार्ता कर रहे हैं। पाँच व्यक्ति मुगल-रीति से (गोडे गाड़ कर) बैठे हैं, एक बीच में खड़ा है।

पृष्ठ ४४ – चित्र संख्या ३८ परिमाण – ३½'३ + ३
परिचय – मधु और मालती वार्तालाप में लगे हुए हैं।

पृष्ठ ४६ – चित्र सं० ३९ परिमाण – ४'३ + २½
परिचय – (मू० लोहार लकड़ी काटे) चित्र बीच से फटा होने के कारण उस पर किसी व्यक्ति ने कागज चिपका दिया है, फलतः दृश्यमान अंश में केवल एक व्यक्ति कुल्हाड़ी हाथ में लिये हुए वृक्ष की ओर तानता हुआ प्रतीत हो रहा है।

पृष्ठ ४६ – चित्र सं० ४० परिमाण – २½ + २½
परिचय – मधु और मालती परस्पर मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ४८ – चित्र सं० ४१ परिमाण – ४'३ + ४½ ३ पो.
परिचय – पद्मावती और करण मौन बैठे हैं, दीवार के पीछे से सखी चैनरेषा उन्हें देख रही है।

पृष्ठ ५१ – चित्र सं० ४२ परिमाण – ७'३ + ४
परिचय – (मू० कुवर सीकार जाय) राजकुमार करण घोड़े पर सवार होकर शिकार के लिये जा रहा है। पेड़ पर कोयल बैठी है।

पृष्ठ ५२ – चित्र सं० ४३ परिमाण – ३'२ + ४
परिचय – चित्र में मालती चकवी से बात कर रही है।

पृष्ठ ५६ – चित्र सं० ४४ परिमाण – ४½ + ४
परिचय – मालती और उसकी सखी जैतमाल, कोयल और चकवी से बातें कर रही हैं।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० ४५ परिमाण – २½ + ३
परिचय – (मू० कोयल सूवटा पासे आवी) कोयल सूवेके पास पेड़ पर बैठी है।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० ४६ परिमाण – २½ + २½
परिचय – (मू० सुवटो कोयल वात करण) कोयल और सूवा बात कर रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७९; चित्रसंख्या–४१; सूचीपत्राङ्क–५२

पद्मावती और करण मौन बैठे हैं, दीवार के पीछे से उन्हें चैनरेखा देख रही है।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७६; चित्रसंख्या–४८; सूचीपत्राङ्क–५३

सब पंषी पासे कोयल श्रायो, पंछी फोज ।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७९; चित्रसंख्या–४९; सूचीपत्राङ्क–५३
चित्र में–राजा चन्द्रसेन और मंत्री तारणसाह बैठे हुए बात कर रहे हैं।

पृष्ठ ५८ – चित्र संख्या ४७ परिमाण – १½ + २
परिचय – (मू० कोयल लडाई) चित्र में कोयल और पुंस्कोकिल विरोधी मुद्रा में दिखलाए गए हैं।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० ४८ परिमाण – ७½ + २½
परिचय – (मू० सब पंषी पासे कोयल आयो, पछी फोज)। इस चित्र में सब पक्षी वृक्षों पर एकत्र हो रहे हैं। उनके पास पुंस्कोकिल भी आता है।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० ४९ परिमाण – ४'३ + २½ २ पो.
परिचय – चित्र में राजा चंद्रसेन और मंत्री तारणसाह बैठे हुए बात कर रहे हैं।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ५० परिमाण – ५½ + ३'२
परिचय – (मू० सुष पालषी नीन सज कीनी; नीन सुष पाहा-की 'मधु को तारण ग्रेह पठाये') दो व्यक्ति पालकी को लेकर जा रहे हैं।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ५१ परिमाण – ५ + ३
परिचय – उरगाना और सर्प का संवाद।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ५२ परिमाण – २½ + २½
परिचय– सर्प बांबी में कुण्डली मारकर बैठा है। चित्र कोण-रूप में आया हुआ है।

पृष्ठ ६४ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ३½'३ + २½
परिचय – (मू० मुरछा गत पडी) रूपरेखा अपने पास में चंद्र कुवर को न देख, मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

पृष्ठ ६६ – चित्र सं० ५४ परिमाण – ५½ + ३½
परिचय – (मू० नाहर मार्‌यो) रूपरेखा से संभोग करता हुआ चंद्र कुवर शेर को मार रहा है।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० ५५ परिमाण – २½'३ + १½
परिचय – मालती सखी को कथा सुना रही है।

पृष्ठ ६९ – चित्र संख्या ५६ परिमाण – ४ + २½
परिचय – (मू० मालती मधु बाग में बात करे)।

पृष्ठ ७० – चित्र सं० ५७ परिमाण – ७½ + ६½
परिचय – (मू० हजार असवार लड़ाई) मधु और मालती अंदर बाग में बैठे हैं। बाहर से फौज ने बाग को घेर लिया है। चित्र में बाहर की फौज का दृश्य है। चित्र बीच में फटा हुआ है।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० ५८ परिमाण – ३½ + ३'२ पो.
परिचय – रामसरोवर के समीप कुंज में बैठी हुई मालती मधु से प्रार्थना कर रही है।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० ५९ परिमाण – ३½'२ + ४'३ पो.
परिचय – राजा को दूत आकर फौज को मधु-मक्खियों द्वारा काटे जाने का वृत्तान्त सुना रहे हैं।

पृष्ठ ७३ – चित्र सं० ६० परिमाण – ५'२ + ४½
परिचय – फौज के चले जाने का समाचार सुन मालती और उसकी सखियाँ पुलकित हो रही हैं।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० ६१ परिमाण – ६'२ + ४½
परिचय – प्रसन्नता की प्रतिमूर्ति श्रीलक्ष्मीजी कमल पर बैठी हैं, दोनों ओर से दो हाथी उन पर अभिषेक कर रहे हैं।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० ६२ परिमाण – ७½'२ + ४½ ३ पो.
परिचय – जाती हुई सेना का दृश्य। आगे झंडा है, उसके पीछे दो अश्वारोही हैं, तदनन्तर हस्ती है, पीछे भी घुड़सवार हैं। सब लोग चले जा रहे हैं।

पृष्ठ ७८ – चित्र सं० ६३ परिमाण – ३½ + २½ ३ पो.
परिचय – मालती और उसकी सखी वार्तालाप में व्यस्त हैं।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० ६४ परिमाण – ३½'२ + ४'२ पो.
परिचय – मालती हाथ में पुष्प ली हुई मसनद के सहारे बैठी है।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७६; चित्रसंख्या–६१; सूचीपत्राङ्क–५४

प्रसन्नता की प्रतिमूर्त्ति श्री लक्ष्मीजी कमल पर बैठी हैं।

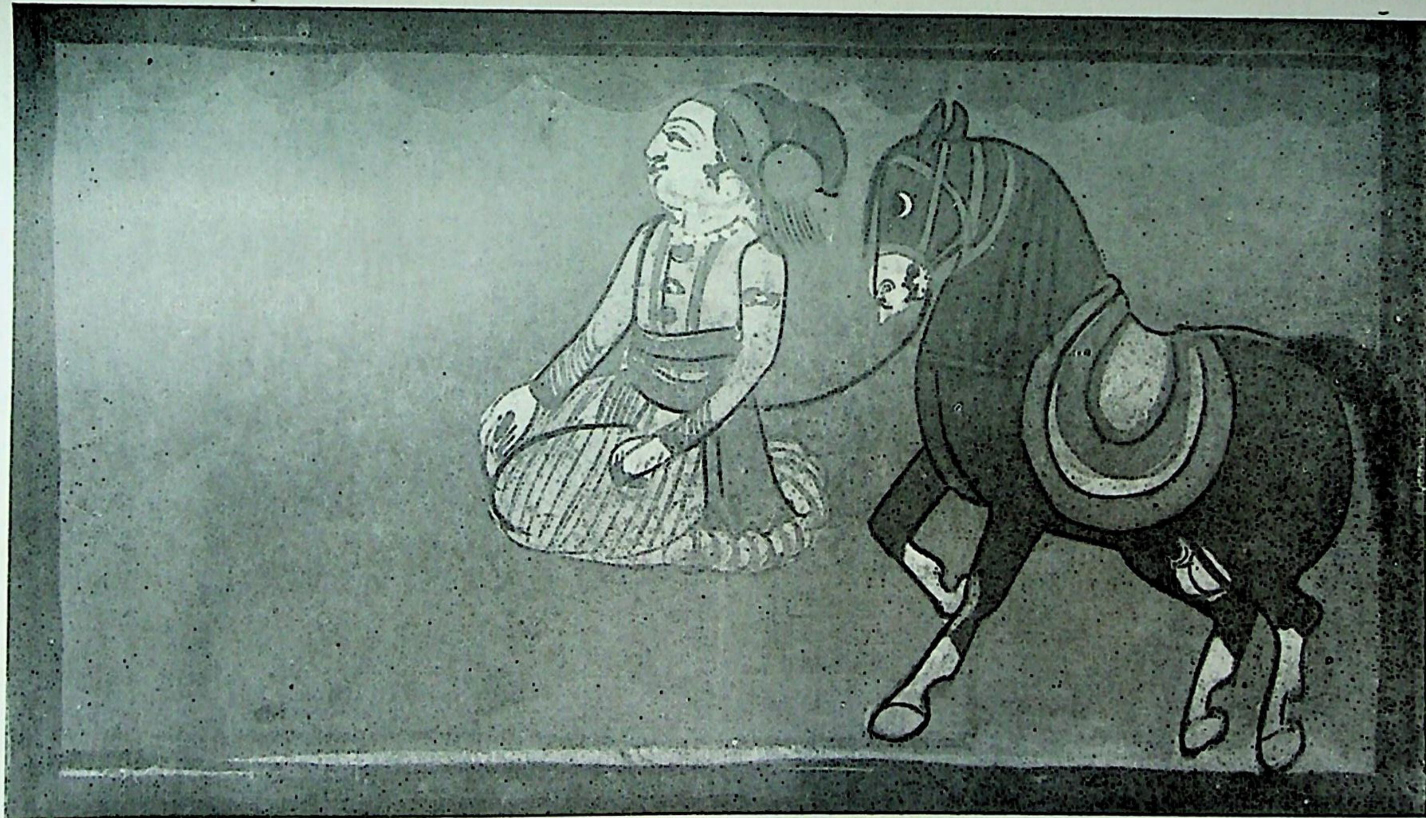


प्रतिक्रमाङ्क–५०७६; चित्रसंख्या–६२; सूचीपत्राङ्क–५४
जाती हुई सेना का दृश्य ।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७९; चित्रसंख्या–७०; सूचीपत्राङ्क–५५

उरगेनो घोड़ चढ़ि चाल्यो



प्रतिक्रमाङ्क–५०७६; चित्रसंख्या–७१; सूचीपत्राङ्क–५५

(उरगेने उडोक) पथिक उरगेना बैठा हुआ है।

पृष्ठ ८० — चित्र संख्या ६५ परिमाण — ३½ + २½ १ पो.

परिचय — जैतमाल पुष्प ली हुई वृक्ष के समीप बैठी हुई है ।

पृष्ठ ८५ — चित्र सं० ६६ परिमाण — ५½ + ३'१ पो.

परिचय — (मू० पद्मावती ने सब लोग समजावे) ।

पृष्ठ ८८ — चित्र सं० ६७ परिमाण — ८ + ३½

परिचय — चित्र के वाम-पार्श्व में चंद्रसेन राजा और मंत्री तारणसाह वार्तालाप में व्यस्त दीख रहे हैं तथा दक्षिण पार्श्व में सिंह बैठा हुआ दिखलाई दे रहा है ।

पृष्ठ ८९ — चित्र सं० ६८ परिमाण — ३½ + २½

परिचय — मधु मालती को कहानी सुना रहा है ।

पृष्ठ ९० — चित्र सं० ६९ परिमाण — ७½ + १½ २ पो.

परिचय — उरगांना नामक पथिक वन में जा रहा है । चित्र के वाम-पार्श्व में मृग बैठा है । चित्र का निम्न-भाग त्रुटित है ।

पृष्ठ ९१ — चित्र सं० ७० परिमाण — ७½ + ३

परिचय — (मू० उरगेनो घोड़े चढ़ि चाल्यो) पथिक उरगाना घोड़े पर सवार हो, जा रहा है। सामने कुण्डली मार कर रास्ते में सर्प बैठा है ।

पृष्ठ ९१ — चित्र सं० ७१ परिमाण — ५½ + ३

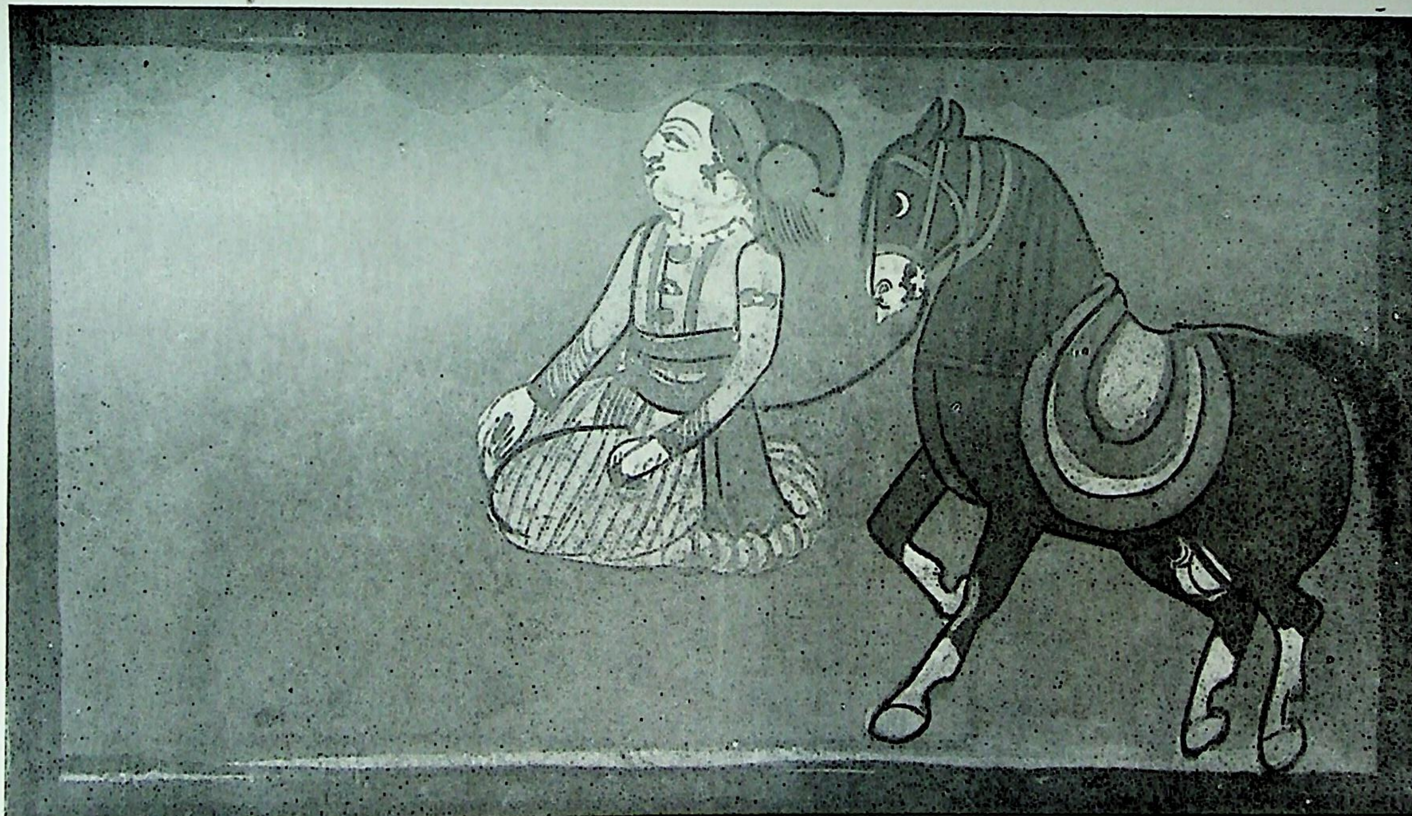
परिचय — (मू० उरगेने उडोक) पथिक उरगेना बैठा हुआ है और घोड़े की रास उसने कमर से बांध रखी है ।

पृष्ठ ९३ — चित्र सं० ७२ परिमाण — ४½'२ + २½

परिचय — मलयापुर का राजा हरिदत्त उदर में साँप के बढ़ते रहने से जीर्ण-क्षीण हो गया है। चित्र में राजा को रुग्ण-दशा में दिखाया गया है ।

पृष्ठ ९४ — चित्र सं० ७३ परिमाण — ४½'३ + २

परिचय — कथानक के अनुसार सोते हुए राजा के मुख से निकलता हुआ सर्प दिखलाई दे रहा है ।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७६;   चित्रसंख्या–७१;   सूचीपत्राङ्क–५५

(उरगेने उडोक) पथिक उरगेना बैठा हुआ है।

पृष्ठ ८० — चित्र संख्या ६५ परिमाण — ३½ + २½ १ पो.
परिचय — जैतमाल पुष्प ली हुई वृक्ष के समीप बैठी हुई है।

पृष्ठ ८५ — चित्र सं० ६६ परिमाण — ५½ + ३'१ पो.
परिचय — (मू० पद्मावती ने सब लोग समजावे)।

पृष्ठ ८८ — चित्र सं० ६७ परिमाण — ८ + ३½
परिचय — चित्र के वाम-पार्श्व में चंद्रसेन राजा और मंत्री तारणसाह वार्तालाप में व्यस्त दीख रहे हैं तथा दक्षिण पार्श्व में सिंह बैठा हुआ दिखलाई दे रहा है।

पृष्ठ ८९ — चित्र सं० ६८ परिमाण — ३½ + २½
परिचय — मधु मालती को कहानी सुना रहा है।

पृष्ठ ९० — चित्र सं० ६९ परिमाण — ७½ + १½ २ पो.
परिचय — उरगांना नामक पथिक वन में जा रहा है। चित्र के वाम-पार्श्व में मृग बैठा है। चित्र का निम्न-भाग त्रुटित है।

पृष्ठ ९१ — चित्र सं० ७० परिमाण — ७½ + ३
परिचय — (मू० उरगेनो घोड़े चढ़ि चाल्यो) पथिक उरगाना घोड़े पर सवार हो, जा रहा है। सामने कुण्डली मार कर रास्ते में सर्प बैठा है।

पृष्ठ ९१ — चित्र सं० ७१ परिमाण — ५½ + ३
परिचय — (मू० उरगेने उडोक) पथिक उरगेना बैठा हुआ है और घोड़े की रास उसने कमर से बांध रखी है।

पृष्ठ ९३ — चित्र सं० ७२ परिमाण — ४½'२ + २½
परिचय — मलयापुर का राजा हरिदत्त उदर में साँप के बढ़ते रहने से जीर्ण-क्षीण हो गया है। चित्र में राजा को रुग्ण-दशा में दिखाया गया है।

पृष्ठ ९४ — चित्र सं० ७३ परिमाण — ४½'३ + २
परिचय — कथानक के अनुसार सोते हुए राजा के मुख से निकलता हुआ सर्प दिखलाई दे रहा है।

पृष्ठ ९४ – चित्र संख्या ७४ परिमाण – ५ + ३
परिचय – राजा को व्याधि-ग्रस्त देख कर रानियाँ चिंताकु
हो रही हैं।

पृष्ठ ९५ – चित्र सं० ७५ परिमाण – ४½ + ३½ ३ पो.
परिचय – उरगाना अपने एवं सर्प के बीच हुई वचन-बद्धत
के अनुसार सर्प को नित्य एक कटोरा दूध पिलात
है और सर्प उसे नित्य एक मोहर देता है। इस
भाव को इस चित्र में दिखलाया गया है।

पृष्ठ ९६ – चित्र सं० ७६ परिमाण – ६½ + २½
परिचय – सिंहनी और मृग बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ ९७ – चित्र सं० ७७ परिमाण – ६ + २
परिचय – उरगेना का लड़का साँप को दूध पिलाने आया है
साँप सहम कर देख रहा है। (मू० पंनग कू परती
न आवे। लरिका मोकु दूध पीलावे)।

पृष्ठ ९८ – चित्र सं० ७८ परिमाण – ४ + २½ ३ पो.
परिचय – साँप के ऊपर प्रहार करने पर उरगेना के लड़के को
साँप डँस रहा है।

पृष्ठ ९८ – चित्र सं० ७९ परिमाण – ४½ + २½ ३ पो.
परिचय – मधु, जैतमाल और मालती के साथ बैठा हुआ है।

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० ८० परिमाण – ३½ + ४'२ पो.
परिचय – साँप के डँसने से उरगेना का लड़का मूर्च्छित
होकर पड़ा है।

पृष्ठ १०१ – चित्र सं० ८१ परिमाण – ३ + ३½ २ पो.
परिचय – (मू० राजा राणी वात करे छे)।

पृष्ठ १०३ – चित्र सं० ८२ परिमाण – ४' + ३½
परिचय – (मू० अंजनी सु परणाम करे) हनुमान् जी अपनी
माता अंजनी को प्रणाम कर रहे हैं।

निम्न सचित्र पत्रों के क्रमाङ्क इस प्रति में से हट गये हैं, अतः उनका विवरण भी पाठकों की जानकारी के लिये पृथक् से दिया जा रहा है—

पृष्ठ १ — चित्र संख्या १ परिमाण — ३½'२ + २½
परिचय — चित्र आधे से अधिक कटा हुआ है और चेहरे भी विगड़ गये हैं, किंतु इस में मधु के साथ जैतमाल और मालती बैठी हुई दिखलाई पड़ रही हैं।

पृष्ठ २ — चित्र सं० २ परिमाण — ४½'२ + ४½
परिचय — पक्षी-गण बहुत से एकत्र हो रहे हैं। इस चित्र का भाव शुक-कोकिल-कथा-सन्दर्भ से सम्बद्ध है।

पृष्ठ २ — चित्र सं० ३ परिमाण — ५'२ + ४½
परिचय — शिकारी के जाल में पक्षी फँस गये हैं। अण्डाकार गोल चित्र में पक्षियों को फँसाया हुआ दिखाया गया है। पारधी (शिकारी) अलग जाल डालता हुआ दिखलाई पड़ रहा है।

पृष्ठ ३ — चित्र सं० ४ परिमाण — ७½ + २
परिचय — इस संयुक्त चित्र के वाम-पार्श्व में शिकारी मृग का शिकार कर रहा है। दक्षिण-पार्श्व में जाल में पक्षी फँस गये हैं और उन्हें पकड़ने के लिये व्याध अपने जाल को खींच रहा है।

पृष्ठ ४ — चित्र सं० ५ परिमाण — ६ + २' २ पो.
परिचय — सिंह मृग को मारने के लिये दौड़ रहा है, सिंहिनी विवश, करुण नेत्रों से देख रही है। (मू० 'जारूं प्रीत काज कहा आवे। मो देषत मृघ प्राण गमावे')।

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ६ परिमाण — ४½ +'४ २ पो.
परिचय — (मू० करण परेणे) करण और पदमावती का विवाह होता हुआ दिखलाई दे रहा है।

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ७ परिमाण — ५ + ४
परिचय — वृषभ करण को मारने दौड़ रहा है तथा करण अपने बायें हाथ की गदा से उसका निवारण कर रहा है।

म ८

पृष्ठ ६ – चित्र संख्या ८ परिमाण – ४½ + ३½
परिचय – राजा सूरसेन अपने दो सामन्तों से परामर्श कर र

पृष्ठ ६ – चित्र सं० ९ परिमाण – ३½ + ३
परिचय – राजा सूरसेन पदमावती से पूछ रहे हैं कि करण
आसक्त होने का क्या कारण है ?

पृष्ठ ७ – चित्र सं० १० परिमाण – ३½ + ४½
परिचय – (मू० गीत गावे छे) एक स्त्री गीत गा रही है

पृष्ठ ८ – चित्र सं० ११ परिमाण – ४'२ + ३½
परिचय – (मू० तारण राजा वाते पुछ) राजा चंद्रसेन अ
मंत्री तारणसाह से परामर्श कर रहे हैं।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १२ परिमाण – ४½ + ३
परिचय – (मू० दूत वीदा कीया) राजा चंद्रसेन फौज
प्रबंध करने के लिये तीन दूतों से बात कर रह
और उन तीन दूतों को विदा कर रहा है।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १३ परिमाण – ४½ + ३½
परिचय – (मू० 'वारी मांझ कुंवर मधु देषे। ढीगही जे
मालती पेषै'॥७६॥) चित्र में जैतमाल और माल
को मसनद के सहारे बैठा हुआ मधु निहार रहा
ऊपर से वृक्ष की छाया उस पर पड़ रही है।

पृष्ठ १० – चित्र सं० १४ परिमाण – ४ + ३
परिचय – जैतमाल मालती को विद्या और बुद्धि का मह
समझा रही है।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० १५ परिमाण – ४½'३ + ३'२ पो.
परिचय – (मू० सीघासण पर मधु-मालती जैतमाल बेठा छै
विवाह के पश्चात् का बनाया हुआ यह चित्र है
इस में सिंहासन पर मधु के साथ मालती औ
जैतमाल दोनों बैठी हुई दिखलाई दे रही हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७६; चित्रसंख्या–१२ (परिशिष्ट); सूचीपत्राङ्क–५८
(दूत वीदा कीया) राजा तीन दूतों से बात कर रहा है।



प्रतिक्रमाङ्क–५०७६; चित्रसंख्या–१३ (परिशिष्ट); सूचीपत्राङ्क–५८

वारी मांझ कुंवर मधु देषे, ढीग ही जेत-मालती पेषैं ।

प्रसङ्गसूची –

१ –	मधु - मालती का गुरु - गृह में पठन –	पृष्ठ १ – ८
२ –	टिंटोरी - वार्ता –	पृष्ठ ८ – १०
३ –	काग - घूहर - प्रसंग –	पृष्ठ १० – १६
४ –	मृग - सिंहनी - प्रसंग –	पृष्ठ १६ – २६
५ –	भारंड - पक्षी (एक उदर दो मुख) प्रसंग –	पृष्ठ २७ – ३७
६ –	जेतमाल - प्रसंग –	पृष्ठ ३७ से अन्त तक।
७ –	काम - दहन - प्रसंग –	पृष्ठ ३९ – ४२
८ –	मैंना - लालन - प्रसंग –	पृष्ठ ४८ – ५६
९ –	सूवटा - कोयल - प्रसंग –	पृष्ठ ५७ – ६१
१० –	पारधी - कथा –	पृष्ठ ६१ – ६४
११ –	चन्दकुंवर - रूपरेखा - प्रसंग –	पृष्ठ ६४ – ६६
१२ –	मधु से फौज का युद्धादि - वर्णन - प्रसंग –	पृष्ठ ६६ – ८०
१३ –	करण - पदमावती - प्रसंग –	पृष्ठ ८० – ८५
१४ –	उरगांना - प्रसंग –	पृष्ठ ८६ – ९३
१५ –	राजा - मुख - गत - सर्प - प्रसंग –	पृष्ठ ९४ – ९५
१६ –	मधु को युद्धादि के बाद मालती और जेतमालती की प्राप्ति का प्रसंग –	पृष्ठ ९५ – १०३

★

४. सचित्र मधु-मालती कथा। क्रमाङ्क—५०८०

कर्त्ता—चतुर्भुजदास, लेखन समय-१८ वीं शताब्दी (वि०)

आकार—गुटका (सजिल्द) माप(साइज)-८½ + ११

पृष्ठसंख्या १२५, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति १२-१३, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २०-२४।

पुस्तकदशा—जीर्ण-शीर्ण है, तथा पत्रों के प्रान्त्यभाग त्रुटित हैं।

पुस्तक का प्रारम्भ

॥श्रीगणेशजी स्हे छ जी॥ अथ मदुमालतीकी पोथी लीषतं ॥

स (व)व (स)ई नगर पुर जोजन चार। चोरासी चोहोटा च्यारु वार॥
अंत वीच तर दीस नर नारी। मानु तीन लोक तरी भवन मझारी॥३॥
कर सेव नरपकी कुली छतीस। चड़ स्हस दस नीवाव सीस॥
झर म्ह मत कुजर कर मी(ची)स। चंद्रसण सब ईसर ईस॥४॥

॥ सोरठा ॥ हदल अनत अपार। कुजर कारे मेघजु ॥
कुली छतीस हजार। चड़े दुवारे नरपक चंदक ॥५॥
मीतरी वुधी वरकार[ताम]। तारण तासको नाव॥
स्याम धरम राष स्ही। म्हानीत की राहा॥ ६॥
चंद्रस्हन राजा वड़ो। मीतरी तारनस्हा॥
नीस दन स्याम धरम सु काम। नरपत तज घर पलक न्ही जाई॥७॥
नरप तरीय्या (आ) अतवुर च्यार। सजेती ईक मालती कवार
वरनु काहा रूप अपार। मानु वुरवस लीओ अवुतार॥८॥
ओपमा कुन पटतर कहू। गुन अनेक छव पार न लहू।
राजलोक रूप दन दन अनुप वड़। असी वोर न्ही सो वीधी गढ॥९॥
गज कपोती कदरपन परवाल। मालती मधुकर मीन रसाल॥
कदली गरभ तन वड़॥१०॥ कदली वप कह दीपक सोई॥
कह राम नाव रा लेब। ए सोवा कहत न आव॥ ११॥
ता देख्या त धरनी डार स। सुर भुले जीह य्या[ध]रती अदोस॥
सीस भुलो डोल़ भव दीस .... ॥ १२॥

राजलोक की कतीईक कहू । तोड़ीसी वात मीतरी की लहू ॥
तोड़ी सी माज व्होत रस होई । अत लालच वाड़त न सोई ॥ १ ३॥

॥ वात ॥ वीद्या वना धरम न्ही याव ॥ वीद्या वना ग्यान न्ही आव ॥ ३२ ॥

॥ सरलोक ॥ अपढ़ अखारत जनम गुमाव । वे वे लोचन सर वा नाव ॥
वीद्या तीन लोचन ॥ सपत लोचन धरमा नाव ॥ ग्यानी असोक लोचन ॥ ३३

॥ चोपाई ॥ दोई दोई लोचना व(प) खेरा । तीन लोचन वीद्या के वरा ॥
लोचन सपत धरम ते ह वर। ग्यानी लोचन गणत न पड़ ॥३८॥

पुस्तक के अन्त में –

॥कवीसरोवाच॥ दुहा ॥ काईथ नेगम कुलह नाथु भई । राम नाव चुतभुज तासकी ॥
कथा भरगासो ॥तुम॥ १४३१ ॥ काम परवद परगास ॥
कवीईन सु करी जोरक, कह चुतरभुजदास ॥ १४३२ ॥

काम भरवद भरकास फुनी मधु मालती वीलास ॥
प्यरदेवन की लीला ईह कह चुतरभुजदास ॥ १४३३ ॥

वनासपती व(अ)अ(व) फल, स्हव माई वरसंत ॥
गाथा मधे मधु-मालती, खट रत मध वसंत ॥ १४३४ ॥

लेता मधे पनग लता, सोधा म घन सार
कथा म मधु-मालती, अभूखन म हार ॥ १४३५ ॥

॥ चोपाई ॥ राजा नीती की दीनी साखी । पचखीय्यानी ईह वुध भाखी ॥
चरणाईका क्रत वताई । थोरी थोरी स्व गाई ॥ १४३६ ॥

॥ चोपाई ॥ कसंन देवको कवर कुवाव । प्यरदेवुन असो काम मधु गाव ॥
पुतर कीलतर सव सुख पाव। वलदय्यरे नरो न्ही आव ॥ १४३७ ॥

टिप्पणी – इस गुटकाकार पुस्तक में लिखित उक्त कथा - भाग में (आदि में ४ एवं अन्त में ४१) कुल ४५ पृष्ठ ऐसे भी जुड़े हुए मिलते हैं, जो कि अलिखित (खाली) एवं सख्याङ्कन-रहित हैं । कथा - भाग के प्रत्येक पृष्ठ पर क्रम - बद्ध - संख्या का अङ्कन किया हुआ है, तदनुसार इस (कथा) की समाप्ति कुछ अन्तिमांश - रहित अपूर्ण - दशा में १२५ वें पृष्ठ पर होती है। किन्तु इन पृष्ठों में भी ४६, ६१, ८३, ८४, ८६ तथा ८७ क्रमाङ्क वाले पृष्ठ इस प्रति में अनुपलब्ध हैं। प्रति का लेखन काली स्याही से महाजनी (कामदारी-

४. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क—५०८०

कर्त्ता—चतुर्भुजदास, लेखन समय-१८ वीं शताब्दी (वि०)

आकार—गुटका (सजिल्द) माप (साइज)-८½ + ११

पृष्ठसंख्या १२५, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति १२-१३, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २०-२४।

पुस्तकदशा—जीर्ण-शीर्ण है, तथा पत्रों के प्रान्त्यभाग त्रुटित हैं।

पुस्तक का प्रारम्भ

॥श्रीगणेशजी स्हे छ जी॥ अथ मदुमालतीकी पोथी लीषतं ॥

स (व)व (स)ई नगर पुर जोजन चार। चोरासी चोहोटा च्यारू वार॥
अंत वीच तर दीस नर नारी। मानु तीन लोक तरी भवन मझारी ॥३॥

कर सेव नरपकी कुली छतीस। चड़ स्हस दस नीवाव सीस॥
झर म्ह मत कुजर कर मी(ची)स। चंद्रसण सब ईसर ईस ॥४॥

॥ सोरठा ॥ हदल अनत अपार। कुजर कारे मेघजु ॥
कुली छतीस हजार। चड़े दुवारे नरपक चंदक ॥५॥

मीतरी वुधी वरकार[ताम]। तारण तासको नाव॥
स्याम धरम राष स्ही। म्हानीत की राहा॥ ६॥

चंद्रस्हन राजा वड़ो। मीतरी तारनस्हा॥
नीस दन स्याम धरम सु काम। नरपत तज घर पलक न्ही जाई॥७॥

नरप तरीय्या (आ) अतवुर च्यार। सजेती ईक मालती कवार
वरनु काहा रूप अपार। मानु वुरवस लीओ अवुतार ॥ ८॥

ओपमा कुन पटतर कहू। गुन अनेक छब पार न लहू।
राजलोक रूप दन दन अनुप वड़। असी वोर न्ही सो वीधी गढ॥९॥

गज कपोती कदरपन परवाल। मालती मधुकर मीन रसाल॥
कदली गरभ तन वड़ ॥ १०॥ कदली वप कह दीपक सोई॥
कह राम नाव रा लेव। ए सोवा कहत न आव॥ ११॥

ता देख्या त धरनी डार स। सुर भुले जीह य्या[ध]रती अदोस॥
सीस भुलो डोळ भव दीस .... ॥ १२॥

राजलोक की कतीईक कहू । तोड़ीसी वात मीतरी की लहू ॥
तोड़ी सी माज ब्होत रस होई । अत लालच वाड़त न सोई ॥१ ३॥

॥ वात ॥ वीद्या वना धरम न्ही याव ॥ वीद्या वना ग्यान न्ही आव ॥ ३२ ॥

॥ सरलोक ॥ अपढ़ अखारत जनम गुमाव । वे वे लोचन सर वा नाव ॥
वीद्या तीन लोचन ॥ सपत लोचन धरमा नाव ॥ ग्यानी असोक लोचन ॥३३

॥ चोपाई ॥ दोई दोई लोचना व(प) खेरा । तीन लोचन वीद्या के वरा ॥
लोचन सपत धरम ते ह वर। ग्यानी लोचन गणत न पड़ ॥३८॥

पुस्तक के अन्त में —

॥कवीसरोवाच॥ दुहा ॥ काईथ नेगम कुलह नाथु भई । राम नाव चुतभुज तासकी ॥
कथा परगासो ॥तुम॥ १४३१ ॥ काम परवद परगास ॥
कवीईन सु करी जोरक, कह चुतरभुजदास ॥ १४३२॥

काम परवद परकास फुनी मधु मालती वीलास ॥
प्यरदेवन की लीला ईह कह चुतरभुजदास ॥ १४३३॥

वनासपती व(अ)अ(ब) फल, स्हव माई वरसंत ॥
गाथा मधे मधु-मालती, खट रत मध वसंत ॥ १४३४॥

लेता मधे पनग लता, सोधा म घन सार
कथा म मधु-मालती, अभूखन म हार ॥ १४३५॥

॥ चोपाई ॥ राजा नीती की दीनी साखी । पचखीय्यानी ईह वुध भाखी ॥
चरणाईका क्रत वताई । थोरी थोरी स्व गाई ॥ १४३६ ॥

॥ चोपाई ॥ कसंन देवको कवर कुवाव । प्यरदेवुन असो काम मधु गाव ॥
पुतर कीलतर सव सुख पाव। वलदचरे नरो न्ही आव ॥ १४३७ ॥

टिप्पणी — इस गुटकाकार पुस्तक में लिखित उक्त कथा-भाग में (आदि में ४ एवं अन्त में ४१) कुल ४५ पृष्ठ ऐसे भी जुड़े हुए मिलते हैं, जो कि अलिखित (खाली) एवं सख्याङ्कन-रहित हैं। कथा-भाग के प्रत्येक पृष्ठ पर क्रम-बद्ध-संख्या का अङ्कन किया हुआ है, तदनुसार इस (कथा) की समाप्ति कुछ अन्तिमांश-रहित अपूर्ण-दशा में १२५ वें पृष्ठ पर होती है। किन्तु इन पृष्ठों में भी ४६, ६१, ८३, ८४, ८६ तथा ८७ क्रमाङ्क वाले पृष्ठ इस प्रति में अनुपलब्ध हैं। प्रति का लेखन काली स्याही से महाजनी (कामदारी-

चारणी) लिपि में किया गया है। कहना न होगा कि एक तो यह लिपि ही दुरूह तथा सङ्केत - गम्य है फिर दूसरे इस के अक्षर इतने भ्रष्ट, भद्दे एवं अस्पष्ट लिखे हुए हैं, जिनकी वजह से प्रबन्ध का पढ़ना अत्यन्त कठिन हो गया है। इस लिपि के इन अशुद्ध अक्षरों को देखने से एक ओर जहाँ लिपिकार की अपठित अवस्था का बोध होता है, वहाँ दूसरी ओर यह भी स्पष्ट ज्ञात होता है कि लिपिकर्ता को मात्र साधारण अक्षर - ज्ञान के अतिरिक्त भाषा एवं अक्षरों की शुद्धाशुद्धि का तनिक भी ज्ञान प्राप्त नहीं था। इसी प्रकार जब हमारा ध्यान प्रकरण - गत - पद्यों की ओर जाता है तब हमें यह अनुभव होता है कि लिपिकार व्यवसायी लिपिकार न होकर चारण - भाट आदि की तरह प्राचीन --प्रथा के अनुसार कण्ठ - गत - विद्याभ्यासी था, और उसने अपनी स्मृति के आधार पर ही कालान्तर में इस कथा को लिपि - बद्ध किया है। यही कारण है कि कथांश में बहुत से पद्य बीच बीच में उपलब्ध नहीं हैं और बहुत से पद्य कहीं के कहीं लिखे मिलते हैं, तथा पद्यांश (अर्द्धालियाँ) तो प्रायः पूर्वापरवर्ती पद्यों में संयुक्त किये हुए पाए जाते हैं। इस असंगत पूर्वापर - संयुक्ति - वियुक्ति से ही इस बात की पुष्टि होती है कि लिपिकार ने स्मृत - स्थलों को चाहे जैसे लिख दिया है जिसके परिणाम - स्वरूप विस्मृत - पद्य प्रति में लिखने से रह गये हैं तथा पद्यांशों का उलट - फेर हो गया है। अस्तु, कुछ भी हो यह बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि लिपिकार पठित, एवं भाषाभिज्ञ नहीं था फलतः यह प्रति अपूर्ण एवं त्रुटक ही रह गई है।

इस प्रति में प्राप्त ११९ पृष्ठों में १०६ पृष्ठ सचित्र पाए जाते हैं, तथा इन पर आलेखित चित्रों की संख्या २३४ है। चित्रों की परिधि लाल रङ्ग से रञ्जित है, कहीं कहीं उसके नीचे (चित्र - स्थली के ऊपर) काले रङ्ग से खींची हुई एक - एक रेखा भी दृष्टि - गत होती है। चित्र - स्थली विविध रंगों से सुसज्जित है। चित्रों के चित्रण में साधारण देश्य रङ्गों का ही उपयोग किया गया है। यद्यपि चित्रों की बनावट कुछ ग्रामीण ढंग की अवश्य है किन्तु फिर भी हाडोती - कलम से प्रभावित होने के कारण चित्रों के चेहरे सुन्दर - सुडौल बने हुए हैं। कहीं कहीं एक ही पंक्ति में ३ - ४ चित्र संयुक्त किन्तु असम - परिमाण में भी बने हुए मिलते हैं। चित्र - परिधि के आजू - बाजू में चित्रों के शीर्षक भी लिखे हुए हैं किन्तु अधिकतर पत्रों के प्रान्त्य भागों के कट - फट जाने से वे विलुप्त, अस्पष्ट एवं अधूरे से रह गये हैं। अतः प्राप्त - शीर्षक तथा नव - निर्मित परिचयों के साथ चित्रों का विवरण निम्न लिखित रूप में दिया जा रहा है—



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–६; सूचीपत्राङ्क–६३
राजा परदानह बुझ। [राजा प्रधानों को पूछ रहे है]



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–११; सूचीपत्राङ्क–६३
मधु मालती पंढ़ छ। [पढ़ैं छै]



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–६६/३; सूचीपत्राङ्क–८७
मधु के साथ सम्पृक्त हुई मालती ।



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–१३; सूचीपत्राङ्क–६३

परसंग मालतीन गदकी दीनो । [प्रसंग मालती ने गेंद की दी]



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–१६; सूचीपत्राङ्क–७६

जतमालक पाया मालती लागी । [मालती जैतमाल के पैर छू रही है]

चित्रसूची –

पृष्ठ १ – चित्र संख्या १ परिमाण – ४'३ + ५'३ पोइन्ट
शीर्षक – राजा तारंन स्हा ।

पृष्ठ १ – चित्र सं० २ परिमाण – ४'३ + ५'४ पो.
शीर्षक – राजलोक ।

पृष्ठ २ – चित्र सं० ३ परिमाण – ४'२ + ४½ १ पो.
शीर्षक – स्हानं पड़त बुलाय्यो ।

पृष्ठ २ – चित्र सं० ४ परिमाण – १½'१ + ८½ ४ पो.
शीर्षक – श्री गनेसज की पुजा मधु मालती कर छ ।

पृष्ठ २ – चित्र सं० ५ परिमाण – २½'४ + ४½ ३ पो.
शीर्षक – राजा मीतरीह पुछ छ ।

पृष्ठ ३ – चित्र सं० ६ परिमाण – ७'४ + ९
शीर्षक – राजा परदानह बुझ ।

पृष्ठ ३ – चित्र सं० ७ परिमाण – ४ + ४½ ४ पो.
शीर्षक – राजा राजलोक म पुछवा गयो छ ।

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ८ परिमाण – ४ + ५½
शीर्षक – राजा सु मालती बुझ ।

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ९ परिमाण – ५ + ६
शीर्षक – पड़तह देख छ ।

पृष्ठ ५ – चित्र सं० १० परिमाण – ४½ + ९
शीर्षक – राजा पड़तह बुज छ । परसंग फुलकाको ।

पृष्ठ ५ – चित्र सं० ११ परिमाण – ३½'४ + ४½ २ पो.
शीर्षक – मधु मालती पढ़ छ ।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० १२ परिमाण – ४ + ९'१ पो.
शीर्षक – परसंग साळ कौ गरू आरन गयो ।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० १३ परिमाण – ३½'३ + ४½ २ पो.
शीर्षक – परसंग मालतीन गद की दीनी ।

पृष्ठ ७ – चित्र संख्या १४ परिमाण – २ + ९
शीर्षक – मरग सगनी ।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० १५ परिमाण – २½'३ + ४½ ३ पोइन्ट
शीर्षक – मधु, मालती ।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० १६ परिमाण – ३½'१ + ९
शीर्षक – हरन अघनी चर भागो सामो ।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० १७ परिमाण – ४½ + ७'४ पो.
शीर्षक – परसंग मरग संगनी को ।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० १८ परिमाण – ३½ + ४½ २ पो.
परिचय – सिंहिनी मृग को विश्वास दिला रही है कि तुम मत डरो, अब से मैं तुम्हारी ही रहूंगी ।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १९ परिमाण – (१) २½ + ९ (२) ३ + ४'२ पो.
शीर्षक – मरग वादरा को परसंग बताव छ ।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० २० परिमाण – (१) ६'२ + ४½ ३ पो. (२) १½'४ + ४½
परिचय – वनचर वानर वृक्ष पर बैठा है और वृक्ष के नीचे खड़ा हुआ सिंह उसे पेड़ से नीचे उतरने के लिए कह रहा है । सिंहिनी एक तरफ बैठी है ।

पृष्ठ १० – चित्र सं० २१ परिमाण – ४½'२ + ४½ ४ पो.
परिचय – वृक्ष पर बैठे वानर को नीचे खड़ा सिंह फुसला रहा है ।

पृष्ठ १० – चित्र सं० २२ परिमाण – ४½'४ + ५'३ पो.
परिचय – दो वानर वृक्ष पर बैठे हैं । उन में से एक वानर वृक्ष से नीचे उतरने की मुद्रा में बैठा है और सिंह भोली-भाली मुद्रा में बैठा उसे देख रहा है ।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० २३ परिमाण – ४'३ + ९
शीर्षक – फल धरया, ड़ंड़वत करी । संघन वादरो मुख म लीनो छ ।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० २४ परिमाण – ४'३ + ४½
परिचय – वानर को अपने मुख में लिये हुए सिंह का दृश्य ।

पृष्ठ १२ – चित्र संख्या २५ परिमाण – ५ + ९
शीर्षक – वादरो मुढा म सु छुटो छ ।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० २६ परिमाण – १½'३ + ९
परिचय – घूघू और काक बैठे हैं ।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० २७ परिमाण – (१) १'४ + ९ (२) ४ + ९
शीर्षक – प्रसंग मरघ संघनी । राज घुघुन देसी ।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० २८ परिमाण – ३'१ + ९
परिचय – तीन भावों का चित्र – चित्र के बाईं ओर गरुड़ सर्प पर पैर रखा हुआ समुद्र के पास जा रहा है । बीच में कौए बैठे हैं । और उन के दाहिनी तरफ में टिट्टिभ-मिथुन समुद्र की पाल पर अंडे धर रहा है ।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० २९ परिमाण – २'१ + ९
परिचय – तीन भागों में विभक्त चित्र – चित्र के प्रथम-भाग में टिट्टिभ-युग्म, मध्य-भाग में बगुला और तीसरे भाग में फिर टिट्टिभ-युग्म बैठा है ।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० ३० परिमाण – २'२ + २'२ पो.
परिचय – टिट्टिभ को उसकी पत्नी कह रही है कि मेरे अंडे फिर समुद्र ले गया है । अतः वे अंडे या तो मुझे वापिस ला दो अन्यथा मैं मर जाऊँगी । टिट्टिभ उसे राम, युधिष्ठर आदि का उदाहरण देकर समझा रहा है ।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० ३१ परिमाण – ३½'२ + ९ (चित्र के दाईं ओर के ४½'३ पोइन्ट हिस्से की लम्बाई ३'४ पो. ही है ।)
शीर्षक – सीतारामजी छ । राजा जुजीसटर । रूकमणीजी ।
(नोट – रुक्मिणीजी का चित्र नहीं है, पूंगी बजाकर सर्पको नचाते हुए एक गोड़िये (सपेरे) का चित्र है ।)

पृष्ठ १५ – चित्र सं० ३२ परिमाण – २½ + ९ (चित्र के बीच का २'४ पोइन्ट भाग लम्बाई में २' ही है ।)
परिचय – तीन भावों का चित्र – एक तरफ टिट्टिभ टिट्टिभी को समझा रहा है । बीच में सर्प बैठा है । चित्र के दाईं ओर बम्बी में से अपना फण निकाले सर्प बैठा है ।

पृष्ठ १६ – चित्र संख्या ३३ परिमाण – ३ + ४
परिचय – सर्प वृक्ष की टहनी में बैठा है तथा हंस उड़ते हुए दिखलाई दे रहे हैं।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० ३४ परिमाण – ४½'४ + ५'३ पो.
शीर्षक – राजा तलाव क(ना) नाव छ।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० ३५ परिमाण – २½'३ + ५'३ पो.
शीर्षक – बुगलो हार ले उड़ो।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० ३६ परिमाण – ६'२ + ३
शीर्षक – रूख उपर दुत चढ़ो।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० ३७ परिमाण – ३'४ + ३'४ पो.
परिचय – राजा दूत को यह हुक्म देता है कि खाती द्वारा वृक्ष को कटवा कर उस में से हमारे हार को निकाल कर हमें अर्पण करो।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० ३८ परिमाण – २½'४ + २
शीर्षक – खातीह दुत बुलावा गयो।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० ३९ परिमाण – ३½ + ४
परिचय – राजा दूत के साथ आये हुए खाती को हुक्म दे रहा है-रूंख को काटो और हमारा हार लाओ।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० ४० परिमाण – ५'३ + २½ १ पो.
परिचय – दूत राजा को हार दे रहा है।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० ४१ परिमाण – ७ + २½ १ पो.
परिचय – सिपाही रस्सा बांधकर वृक्षको उखाड़ रहे हैं।

पृष्ठ १८ – चित्र सं० ४२ परिमाण – ४'३ + ४½ २ पो.
शीर्षक – टहटोड़ो गरुड़क पुकार आयो।

पृष्ठ १८ – चित्र सं० ४३ परिमाण – २½'३ + १½'४ पो.
शीर्षक – गरुड़ उड़ो।

पृष्ठ १८ – चित्र संख्या ४४ परिमाण – ५'४ + ८'३ पोइन्ट
परिचय – गरुड़ सब पक्षियों को अपने साथ में लेकर समुद्र के पास गया। कौआ पक्षियों को उक्त कथानक सुना रहा है।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० ४५ परिमाण – ४'३ + ४'३ पो.
शीर्षक – घुघुन ज्यात बुलाई छ।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० ४६ परिमाण – ६ + ९
शीर्षक – घुघु कागला आपस्म लड़ छ। कागला सारा आन्या...।

पृष्ठ २० – चित्र सं० ४७ परिमाण – ४'४ + ५½ ३ पो.
परिचय – उलूक एवं काक पास में बैठे हैं।

पृष्ठ २० – चित्र सं० ४८ परिमाण – ७'२ + ५
शीर्षक – सीआर गुलर खाद्यो मगर सुभाव कीन छे।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० ४९ परिमाण – ६'२ + ४'२ पो.
शीर्षक – मगर साल्यासु मील छ।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० ५० परिमाण – ३'२ + ४½ ३ पो.
परिचय – समुद्र के किनारे मगर बैठा है और दो पक्षी पाल पर बैठे हैं।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० ५१ परिमाण – (१) ४½'२ + ३½ (२) ४'१ + ४
शीर्षक – पलास [वृक्ष]। नदी की तीर आयो।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० ५२ परिमाण – २½'३ + ५
शीर्षक – मगर मगरीक आयो।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ३'३ + ४
शीर्षक – मगर साल की पोल आयो।

पृष्ठ २३ – चित्र सं० ५४ परिमाण – ४'१ + ३'३ पो.
शीर्षक – काग राजासु कह छ।

पृष्ठ २३ – चित्र सं० ५५ परिमाण – २'१ + ५½ २ पो.
शीर्षक – सुसो न्हार।

पृष्ठ २३ – चित्र संख्या ५६ परिमाण – ३½'२ + ४½ ४ पोइन्ट
शीर्षक – संघ जीव मार छ ।

पृष्ठ २३ – चित्र सं० ५७ परिमाण – १'२ + ४
शीर्षक – जनावर संघ सु स्तूत कर छ ।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ५८ परिमाण – ३'२ + ३½ २ पो.
शीर्षक – कुवो देख सुसो ।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ५९ परिमाण – १½ + ३½ २ पो.
शीर्षक – सुसो संघसु स्तूत कर ।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ६० परिमाण – २'३ + २३½ ४ पो.
परिचय – सिंह बैठा है ।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ६१ परिमाण – ४½'४ + ५ १ पो.
शीर्षक – सुसो न्हार कुवा म जाव ।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ६२ परिमाण – ६½'४ + ३½
परिचय – चित्र के ऊपर के हिस्से में सुसा सिंह को कूप दिखला रहा है। सिंह कूप के जलमें अपनी परछांई को ही अन्य सिंह समझ कर कूद रहा है। नीचे के भाग में घूघू बैठे हैं।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ६३ परिमाण – २'१ + २'४ पो.
परिचय – काक बैठे हुए हैं ।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ६४ परिमाण – २½'३ + ९'१ पो.
शीर्षक – काग उड चल्यो मीलवा ।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ६५ परिमाण – ३'३ + ३½
शीर्षक – कागला घुघु वतलाव छ ।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ६६ परिमाण – २½'२ + ३½
शीर्षक – कागला भसट (काट) ढोव छ ।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ६७ परिमाण – १'२ + ५½
शीर्षक – काट को मदर वनायो ।

पृष्ठ २६ – चित्र संख्या ६८ परिमाण – $१\frac{१}{२}$'१ + ९

शीर्षक – घुघु गुफाम वठ। घुघु आग स्त्राला। काग वठा छ।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ६९ परिमाण – ३'४ + $४\frac{१}{२}$ ४ पो.

शीर्षक – मरघ संघनीसु बुझ छे।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ७० परिमाण – २'४ + ४'३ पो.

शीर्षक – वीची ड़ोला मड़ो।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ७१ परिमाण – $३\frac{१}{२}$'२ + $४\frac{१}{२}$ ४ पो.

शीर्षक – मरघ संघनीक वाचा होव छ।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ७२ परिमाण – $२\frac{१}{२}$'१ + ५

शीर्षक – संघनीसु म्रग कह छ।

पृष्ठ २८ – चित्र सं० ७३ परिमाण – $५\frac{१}{२}$'२ + ३'४ पो.

परिचय – नदी के किनारे पर स्थित वृक्ष पर गिलहरी (टालोड़ी) बैठी है और नदी के किनारे पर कछुआ बैठा है।

पृष्ठ २८ – चित्र सं० ७४ परिमाण – $५\frac{१}{२}$'३ + ७'२

परिचय – नदी के किनारे पर टालोड़ी और कछुवे का विवाह हो रहा है। पंडित होम कर रहा है, और स्त्रियां बधाई गारही हैं।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० ७५ परिमाण – $२\frac{१}{२}$'४ + ३'२

शीर्षक – गल्याडी कुरमसु सुख कर छे।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० ७६ परिमाण – $५\frac{१}{२}$'२ + ५'४ पो. (चित्र की चौड़ाई का २ इञ्च हिस्सा लम्बाई में १'१ कम है।

शीर्षक – रूख क[ने] ले गयी।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ७७ परिमाण – ५'१ + $४\frac{१}{२}$ ३ पो.

शीर्षक – काछवाह कागला मार छ।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ७८ परिमाण – $४\frac{१}{२}$'४ + $४\frac{१}{२}$ २ पो.

शीर्षक – मरग संगने स्कइ छ।

पृष्ठ ३१ — चित्र संख्या ७९ परिमाण — ३'४ + ९'१ पो.
शीर्षक — प्र० वावनजीको वा राजा वलको ।

पृष्ठ ३१ — चित्र सं० ८० परिमाण — ३½ + ९'१ पो.
शीर्षक — संघनी अघसु कह छ । राजा हरचंद ।

पृष्ठ ३१ — चित्र सं० ८१ परिमाण — ६½'४ + ९'१ पो.
शीर्षक — श्रीरामचंद्रजी भभीकणह लंका देवा आया ।

पृष्ठ ३२ — चित्र सं० ८२ परिमाण — ३½'३ + ९'१ पो.
शीर्षक — मरग अगनी का वचन । मृग संगनीक गयो ।

पृष्ठ ३२ — चित्र सं० ८३ परिमाण — ६½'३ + ९
शीर्षक — श्रीरामचंद्रजीन रावन मारो छ ।

पृष्ठ ३३ — चित्र सं० ८४ परिमाण — (१) ३ + ७ (२) ४'४ + ५'२ पो.
शीर्षक — कीचकंन द्रोपताको चीर गयो (ह्यो) ।

पृष्ठ ३३ — चित्र सं० ८५ परिमाण — ६ + २'२ पो.
शीर्षक — कीचंक थंत्र तलह दीयो ।

पृष्ठ ३३ — चित्र सं० ८६ परिमाण — ३'४ + ५'३ पो.
शीर्षक — मरगनी अगसु कह छ ।

पृष्ठ ३४ — चित्र सं० ८७ परिमाण — ३'४ + ४½'२ पो.
परिचय — हरिणी हरिण को समझा रही है ।

पृष्ठ ३४ — चित्र सं० ८८ परिमाण — २½ + ४'२ पो.
परिचय — हरिण हरिणी वार्तालाप कर रहे हैं ।

पृष्ठ ३५ — चित्र सं० ८९ परिमाण — ३'२ + ५
परिचय — हरिण सिंहिनी के पास बैठा है ।

पृष्ठ ३५ — चित्र सं० ९० परिमाण — ३½'१ + ४'२ पो.
परिचय — हरिणी सिंहिनी के पास आई है और उसे समझा रही है कि मेरे स्वामी से प्रेम मत करो ।

पृष्ठ ३५ — चित्र सं० ९१ परिमाण — ४½'४ + ४'४ पो.
शीर्षक — संघनीह हरनी वोलवो दे छ ।

पृष्ठ ३६ – चित्र संख्या ९२ परिमाण – ३½'१ + ५
परिचय – सिंहिनी और हरिण के रति विलासका अश्लील-दृश्य।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ९३ परिमाण – ६'२ + ९'१ पो.
परिचय – सिंह हरिण की शिकार कर रहा है।

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ९४ परिमाण – ४'३ + ५
शीर्षक – मालती मधुसु कह।

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ९५ परिमाण – १½ + ४'२ पो.
शीर्षक – संघ स्हलसु आयो।

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ९६ परिमाण – २½'४ + ४½ १ पो.
शीर्षक – संघनी सामी आई।

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ९७ परिमाण – ६'२ + ९
परिचय – तालाब के किनारे एक तरफ सिंह, सिंहिनी खड़े हैं, और दूसरी तरफ हरिण बैठा है।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० ९८ परिमाण – ५½' + ६½ ३ पो.
शीर्षक – वीदाता करस अछर लीख छ। न्हार हरनह देख छ। मरग वठो छ।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० ९९ परिमाण – ३'२ + ४'२ पो.
परिचय – सिंह हरिण पर झपट पड़ा है।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० १०० परिमाण – ३'१ + ९
परिचय – सिंहिनी और मृग दोनों मर गये।

पृष्ठ ३९ – चित्र सं० १०१ परिमाण – ३'४ + ४'२ पो.
परिचय – सिंह मृग को खा रहा है।

पृष्ठ ३९ – चित्र सं० १०२ परिमाण – १½'४ + ३'४ पो.
परिचय – मालती मधु से कह रही है।

पृष्ठ ३९ – चित्र सं० १०३ परिमाण – १½'२ + ४½ १ पो.
शीर्षक – मधु मालतीह कह छ।

पृष्ठ ४० – चित्र संख्या १०४ परिमाण – ५'२ + ३'४ पोइन्ट
परिचय – मधु मालती को नरपति-कुमार करण का आख्या[न] सुना रहा है।

पृष्ठ ४१ – चित्र सं० १०५ परिमाण – ६½'३ + ५'४ पो.
शीर्षक – स्यात्र(ठ) तरीया व्यात्र करा छ।

पृष्ठ ४१ – चित्र सं० १०६ परिमाण – ३'४ + ३½ ३ पो.
शीर्षक – सुर-नगर।

पृष्ठ ४१ – चित्र सं० १०७ परिमाण – ६'२ + ९'३ पो.
परिचय – सूरसेन नरपति के राजमहल का एक दृश्य।

पृष्ठ ४२ – चित्र सं० १०८ परिमाण – ५½'२ + ९'३ पो.
परिचय – राजा सूरसेन को उसकी राजकुमारी पद्मावती ने अपनी दासी के द्वारा यह संवाद कहलवाया है कि मैं अपना विवाह करण के साथ में ही करूंगी। चित्र के दोनों तरफ दासी और सूरसेन के दो चित्र बने हुए हैं और मध्य भाग में-हाथ में वरमाला ली हुई पद्मावती खड़ी है।

पृष्ठ ४२ – चित्र सं० १०९ परिमाण – ५'१ + ५½
परिचय – राजा सूरसेन अपने परिवार की स्त्रियों से पद्मावती के विषय में मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ४३ – चित्र सं० ११० परिमाण – ६'१ + ५½ १ पो.
परिचय – सूरसेन एवं उसकी पारिवारिक स्त्रियाँ पद्मावती को समझा रही हैं कि तुम उस कठोर, निष्करुण करण के साथ विवाह करने का विचार छोड़ दो, अन्यथा तुम्हारी वही दशा होगी जैसी कि उसके साथ में विवाहित अन्य साठ स्त्रियों की हो रही है।

पृष्ठ ४४ – चित्र सं० १११ परिमाण – (१) ३'२ + ३½ (२) ६'१ + ५½'२ पो.
परिचय – चैनरेखा सखी बैठी देख रही है। करण-नृपति पलं[ग] पर बैठा है और पद्मावती उसके नीचे बैठी है।

पृष्ठ ४५ – चित्र संख्या ११२ परिमाण – ४ + ९

परिचय – एक तरफ पलङ्ग पर बैठी हुई पद्मावती अपना दुःख अपनी सखी चैनरेखा के सामने प्रकट कर रही है। दूसरी तरफ करण-पद्मावती पलङ्ग पर अवाक् स्थिति में बैठे हैं, चैनरेखा पद्मावती के पीछे खड़ी उन्हें देख रही है।

पृष्ठ ४५ – चित्र सं० ११३ परिमाण – ४½'१ + ५

परिचय – चैनरेखा पद्मावती को समझा रही है।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ११४ परिमाण – ४½'१ + ५'२ पो.

परिचय – करण को पद्मावती अपने हाव-भाव एवं कटाक्षों द्वारा कामोद्विग्न करना चाह रही है। करण मौन-मुद्रा में बैठा है।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ११५ परिमाण – ३½'३ + ५'४ पो.

परिचय – पद्मावती अपने नयन-वाणों से करण को विद्ध कर रही है।

पृष्ठ ४८ – चित्र सं० ११६ परिमाण – ४'२ + ७

परिचय – करण और पद्मावती मौन मुद्रा में बैठे एक दूसरे को देख रहे हैं।

पृष्ठ ४८ – चित्र सं० ११७ परिमाण – ३½'१ + ५'१ पो.

परिचय – पद्मावती और करण एक दूसरे से सटे हुए बैठे हैं।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ११८ परिमाण – ३'३ + ४'१ पो.

शीर्षक – सेठ की जाईगा।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ११९ परिमाण – ३½'३ + ९'१ पो.

शीर्षक – प्र० सेठ प्ररोतणी दासी को।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० १२० परिमाण – ४ + ५½ ३ पो.

परिचय – पुरोहित की पत्नी कपिला और सुदर्शन सेठ बैठे हैं, दासी दरवाजे पर खड़ी उन्हें देख रही है।

पृष्ठ ५० — चित्र संख्या १२१ परिमाण — ३'१ + ५'१ पोइन्ट

परिचय — कामातुर कपिला (पुरोहितन) सुदर्शन सेठ के सामने रुग्णा बनकर पलङ्ग पर लेटी हुई है तथा सेठ को अपनी नब्ज दिखाने का बहाना कर उसके हाथ को अपने हाथों से पकड़ रही है। सेठ अपना हाथ छुड़ाकर उसे ज्ञान दे रहा है।

पृष्ठ ५० — चित्र सं० १२२ परिमाण — (१) ४'२ + २ (२) २½ + ७'१ पो.

शीर्षक — रावनह मारी।

पृष्ठ ५१ — चित्र सं० १२३ परिमाण — ४'२ + ९'१ पो.

शीर्षक — म्हलकसु सेठ ऊतरयो।

पृष्ठ ५१ — चित्र सं० १२४ परिमाण — ५½'४ + ४½ ३ पो.

परिचय — सुदर्शन सेठ अपनी पत्नी मनोरमा को पुरोहितन के चंगुल से बच निकलने का वृत्तान्त सुना रहा है।

पृष्ठ ५२ — चित्र सं० १२५ परिमाण — ३½'३ + ९

परिचय — सेठ अपने स्नेही तथा बन्धु आदि को इच्छित भोजन खिला कर संतुष्ट कर रहा है।

पृष्ठ ५२ — चित्र सं० १२६ परिमाण — २½'४ + ९

परिचय — सेठ अपने नवजात पुत्र की बधाई के उपलक्ष्य में दान-दक्षिणा बांट रहा है। बाजे बज रहे हैं।

पृष्ठ ५२ — चित्र सं० १२७ परिमाण — २½'३ + ४'२ पो.

परिचय — स्त्रियां बधाइयां गा रही हैं।

पृष्ठ ५३ — चित्र सं० १२८ परिमाण — ५½'१ + ९

परन्चिय — वाग में स्त्रियां ईश्वर - गौरी (गवर-ईसर) की पूजा कर रही हैं।

पृष्ठ ५३ — चित्र सं० १२९ परिमाण — ५ + ७½

शीर्षक — हदलोटाम सख्या हीद छ।

पृष्ठ ५४ — चित्र सं० १३० परिमाण — ४'२ + ४'३ पो.

शीर्षक — राणी परोतणसु वुझ छ।



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–१२८; सूचीपत्राङ्क–७४

बाग में स्त्रियाँ ईश्वर-गौरी (गवर-ईसर) की पूजा कर रही हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–१२६; सूचीपत्राङ्क–७४

हदलोटाम सख्या ह्रीद छ। [हिंडोले में सखियाँ झूलती हैं]



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–१४३; सूचीपत्राङ्क–७५

स्हाह सूली प्रर दीयो। [साह को सूली पर दिया]

पृष्ठ ५५ – चित्र संख्या १३१ परिमाण – ३'४ + ४'२ पोइन्ट
शीर्षक – रानीन परोतणी बुलाई ।

पृष्ठ ५५ – चित्र सं० १३२ परिमाण – ३ + ९
शीर्षक – बावनजी राजा वल । पाड़वाको । राजा हरचंदको ।

पृष्ठ ५५ – चित्र सं० १३३ परिमाण – २½'२ + ९
शीर्षक – भभीकड़न राज दीनो ।

पृष्ठ ५५ – चित्र सं० १३४ परिमाण – ३½'१ + ५½ १ पो.
शीर्षक – कंकाली असीस द छ । कुरु पाडुकी राड़ ।

पृष्ठ ५६ – चित्र सं० १३५ परिमाण – २½ + ४½ १ पो.
शीर्षक – प्र० सेठसु परोतानी मील छ ।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० १३६ परिमाण – ४'४ + ५½ १ पो.
शीर्षक – कुमार वरतनाह कर छ ।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० १३७ परिमाण – ३'३ + ३½ ४ पो.
शीर्षक – द्रवाज पड़ता ।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० १३८ परिमाण – ७'४ + ३'४ पो.
परिचय – चित्र के ऊपरी भाग में - परता सेठ से कुछ अर्ज कर रही है । नीचे में - रानी परता से कुछ कह रही है ।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० १३९ परिमाण – ४½'३ + ३'२ पो.
परिचय – सेठ रानी के सामने खड़ा है ।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० १४० परिमाण – ३'४ + २½ २ पो.
शीर्षक – राणीजीसु रहा वतलाव छ ।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० १४१ परिमाण – ३'३ + ४½ १ पो.
शीर्षक – राणीन सेठको हाथ छातीक धरयो ।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० १४२ परिमाण – ३½'२ + ४'४ पो.
शीर्षक – राजान दुतसु कई ।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० १४३ परिमाण – ५'१ + ३½ २ पो.
शीर्षक – रहाह सुली भर दीयो ।

पृष्ठ ५९ – चित्र संख्या १४४ परिमाण – ५'४ + ३ पोइन्ट
शीर्षक – सुलीक सीगासण भयो ।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० १४५ परिमाण – ४'१ + ४'२ पो.
शीर्षक – दुतन राजासु कयो ।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० १४६ परिमाण – ५'१ + ५'१ पो.
शीर्षक – सुलीकसु उतारयो राजा पंगा पड़ो ।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० १४७ परिमाण – ३½'३ + ४½
शीर्षक – सेठ सेठाणी सु मील्यो ।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० १४८ परिमाण –५'३ + ५'३ पो.
शीर्षक – लुगाया गीत ऊवार कर छ, वदाया वट छ ।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० १४९ परिमाण – २½ + ४
शीर्षक – मालती मधु वठा छ ।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० १५० परिमाण – २½'१ + ३'१
परिचय – पक्षि - युग्म बैठा है ।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० १५१ परिमाण – ४½'३ + ६'१ पो.
शीर्षक – प्र० म्रग रागनी ।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० १५२ परिमाण – २'१ + ४½ ३पो.
परिचय – चकवा - चकवी से कुछ कह रहा है ।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० १५३ परिमाण – ३½'४ + ६'४ पो.
शीर्षक – चतरसालक पीजरो वंधो ।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० १५४ परिमाण – ४'३ + ६'४ पो.
परिचय – सिंहिनी का सद्योजात शिशु हाथी की शिकार कर रहा है ।

पृष्ठ ६४ – चित्र सं० १५५ परिमाण – ४½'१ + ४'४ पो.
शीर्षक – जतमालती चकवो ।

पृष्ठ ६५ – चित्र सं० १५६ परिमाण – ३½'३ + ४½ ३ पो.
शीर्षक – जतमालक पाया मालती लागी ।



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–१६६; सूचीपत्राङ्क–७७,

प्र० स्दासीवन कास्को(म्को)प्र(य)ला । भसमीको पाळ भवर । [सदाशिव ने काम को जलाया । भस्म का ढेर भ्रमर वन गया]



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या १६२; सूचीपत्राङ्क–७७

भसमाग(स)र सीवजीकी पुजन कर छ। कड़ो दीयो। सीवजी भाग। [भस्मासुर शिवजी का पूजन करता है। कड़ा दिया। शिवजी भागे]

पृष्ठ ६६ – चित्र संख्या १५७ परिमाण – ५½'२ + ३½ ४ पोइन्ट
शीर्षक – स्याम को प्ररसंग ।

पृष्ठ ६६ – चित्र सं० १५८ परिमाण – ३ + ४
परिचय – जैतमालती मालती को धैर्य बंधा रही है ।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० १५९ परिमाण – ५'३ + ४'४ पो.
परिचय – जैतमाल मधु को समझा रही है और मालती जैत के पीछे खड़ी है ।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० १६० परिमाण – ३'४ + ४½ ३ पो.
परिचय – जैतमाल-मधु का वार्तालाप ।

पृष्ठ ६८ – चित्र सं० १६१ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – मधुसु जतमालती कह छ ।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० १६२ परिमाण – ४'२ + ९½
शीर्षक – भसमाग(स)र सीवजीकी पुजन कर छ। कड़ो दीयो। सीवजी भाग ।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० १६३ परिमाण – ३½'१ + ९'१ पो.
शीर्षक – सीवजी गुफाम वडचा । म्होनी सरूप कर आयो ।

पृष्ठ ७० – चित्र सं० १६४ परिमाण – ५½'२ + ७½ १ पो.
परिचय – विष्णु ने अपने मोहिनी-रूप से भस्मासुर को मोह में डाल कर उसी कड़े 'जिसका प्रयोग वह पार्वती के साथ परिणय करने की इच्छा से शिव को भस्म करने के लिये करना चाहता था' से जला दिया ।

पृष्ठ ७० – चित्र सं० १६५ परिमाण – ४'४ + ७½ १ पो.
परिचय – पार्वती-शिव खड़े हैं। शिव को विष्णु समझा रहे हैं।

पृष्ठ ७१ – चित्र सं० १६६ परिमाण – ३½'२ + ९'३
शीर्षक – प्र० स्दासीवन कास्को(म्को)प्र(य)ला । भसमी को पाळ भवर ।

पृष्ठ ७३ – चित्र सं० १६७ परिमाण – ३½ + ४'२ पो.
परिचय – मालती-जैतमाल गल-बांहें डाली हुई खड़ी हैं।

पृष्ठ ७४ – चित्र संख्या १६८ परिमाण – ४'१ + ७
परिचय – मालती मधु से प्रार्थना कर रही है।

पृष्ठ ७६ – चित्र सं० १६९ परिमाण – ३½ + ४½ ३ पो.
परिचय – मालती और जैतमाल मधु को कुछ कह रही हैं।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० १७० परिमाण – ४'१ + ४½ ३ पो.
परिचय – मालती जैतमाल के पैरों में पड़ कर मधु के सामने आकर खड़ी हो गई है।

पृष्ठ ७८ – चित्र सं० १७१ परिमाण – ४½ + ३½ १ पो.
शीर्षक – वीना बजाव छ।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० १७२ परिमाण – ३'१ + ९
शीर्षक – बानासुरक उखा भई।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० १७३ परिमाण – ३'१ + ४२' पो.
परिचय – उषा नमस्कार कर रही है।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० १७४ परिमाण –३½ + ३'४ पो.
परिचय – उषा अपनी सखी चित्ररेखा को अपने स्वप्न का वृत्तान्त सुना रही है।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० १७५ परिमाण – ३½'१ + ४'२ पो.
परिचय – चित्ररेखा विविधाकृति के चित्र बना बना कर उषाको दिखला रही है।

पृष्ठ ८१ – चित्र सं० १७६ परिमाण – ३½'२ + ४½ १ पो.
परिचय – चित्ररेखा उषा से कह रही है कि हे उषे! तुम्हारे भाग्योदय का ही समय आनेवाला है, क्यों कि आज तुमने श्रीकृष्ण के पुत्र अनिरुद्ध को स्वप्न में अपने पति के रूप में देखा है।

पृष्ठ ८१ – चित्र सं० १७७ परिमाण – ३½ + ४½ १ पो.
परिचय – उषा अपने महल के बाहर प्रसन्न मुद्रा में खड़ी है।

पृष्ठ ८१ – चित्र सं० १७८ परिमाण – ३'४ + ९'२
शीर्षक – चतरेखा दुवारकास आई। उषाको व्याव।

पृष्ठ ८१ – चित्र संख्या १७९ परिमाण – २½'१ + ५'२ पोइन्ट

शीर्षक – असुरन सुन्या वी नाके (?)....।

पृष्ठ ८२ – चित्र सं० १८० परिमाण – ५'२ + ९'१ पो.

शीर्षक – स्दासीव न क्रसंन मु अज् करी । जतमाल आनाम्रुर उखा अनिरदह जे पा (वा) वड़ो ।

पृष्ठ ८२ – चित्र सं० १८१ परिमाण – ३½'३ + ४½ २ पो.

परिचय – जैतमाल मधु से प्रार्थना कर रही है कि आप भी अनिरुद्ध की तरह मालती के साथ गान्धर्व विवाह करें। मालती जैत के पीछे बैठी है।

पृष्ठ ८५ – चित्र सं० १८२ परिमाण – (१) ६'१ + ५'४ (२) ३'१ + १½ ३ पो.

परिचय – चित्र के ऊपरी भाग में - चम्पावती नगरी का दृश्य है - महल में बैठे हुए राजकुमार हरचंद को उसके दो दूत रूपरेखा के रूपलावण्य की जानकारी दे रहे हैं। चित्र के नीचे भाग में - बाग में चंदकुँअर रूपरेखा से मिल रहे हैं। एक तरफ छोटे से बाग का दृश्य है।

पृष्ठ ८५ – चित्र सं० १८३ परिमाण – ५'१ + ९'२ पो.

शीर्षक – बाग को प्र० । रूपरेखा चंदकुवर बागम ।

पृष्ठ ८८ – चित्र सं० १८४ परिमाण – ७'३ + ९'१ पो.

शीर्षक – प्र० राड़को रामसरवर[सन लड छ]।

पृष्ठ ८९ – चित्र सं० १८५ परिमाण – ४½'१ + ९'२ पो.

परिचय – राजा चन्द्रसेन अपने अन्तःपुर में बैठे हैं। स्त्रियां उन्हें समझा रही हैं कि राड़ मत करो।

पृष्ठ ९० – चित्र सं० १८६ परिमाण – ७'२ + ९'३ पो.

परिचय – युद्ध का दृश्य।

पृष्ठ ९१ – चित्र सं० १८७ परिमाण – ७½'४ + ९'४ पो. (चित्र के दाहिनी ओर का ऊपरी भाग करीब २½ इञ्च लम्बाई में कम है।)

शीर्षक – प्र० राड़ को ।

पृष्ठ ९१ – चित्र संख्या १८८ परिमाण – ५½+५'२ पोइन्ट
शीर्षक – राजासु पुकार कर छ ।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० १८९ परिमाण – ३½'२+९'२ पो.
परिचय – राजा चंद्रसेन क्रुद्धमुद्रा में बैठे हैं और स्वयं मधु पर चढ़ाई करने की सोच रहे हैं। उनके सामने दासी के साथ उनकी रानी कनकमाल हाथ जोड़े खड़ी है।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० १९० परिमाण – ५+९'२ पो.
शीर्षक – दूती रामसरोवरको आई ।

पृष्ठ ९३ – चित्र सं० १९१ परिमाण – ६½'४+४'३ पो.
परिचय – ऊपर में बैल का तथा नीचे में हाथी का चित्र है।

पृष्ठ ९३ – चित्र सं० १९२ परिमाण – ३½'२+३½ २ पो.
परिचय – मधु-मालती बैठे संत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ९४ – चित्र सं० १९३ परिमाण – ५+९'३ पो.
परिचय – सैनिक मशीन गनों से बाग को उजाड़ रहे हैं। मधु, मालती वृक्षों की कुञ्ज में बैठे हैं।

पृष्ठ ९४ – चित्र सं० १९४ परिमाण – ७½'४+६'२ पो.
परिचय – रामसरोवर बाग का दृश्य ।

पृष्ठ ९५ – चित्र सं० १९५ परिमाण – ७½'३+९'३ पो.
शीर्षक – प्र० राड़को ।

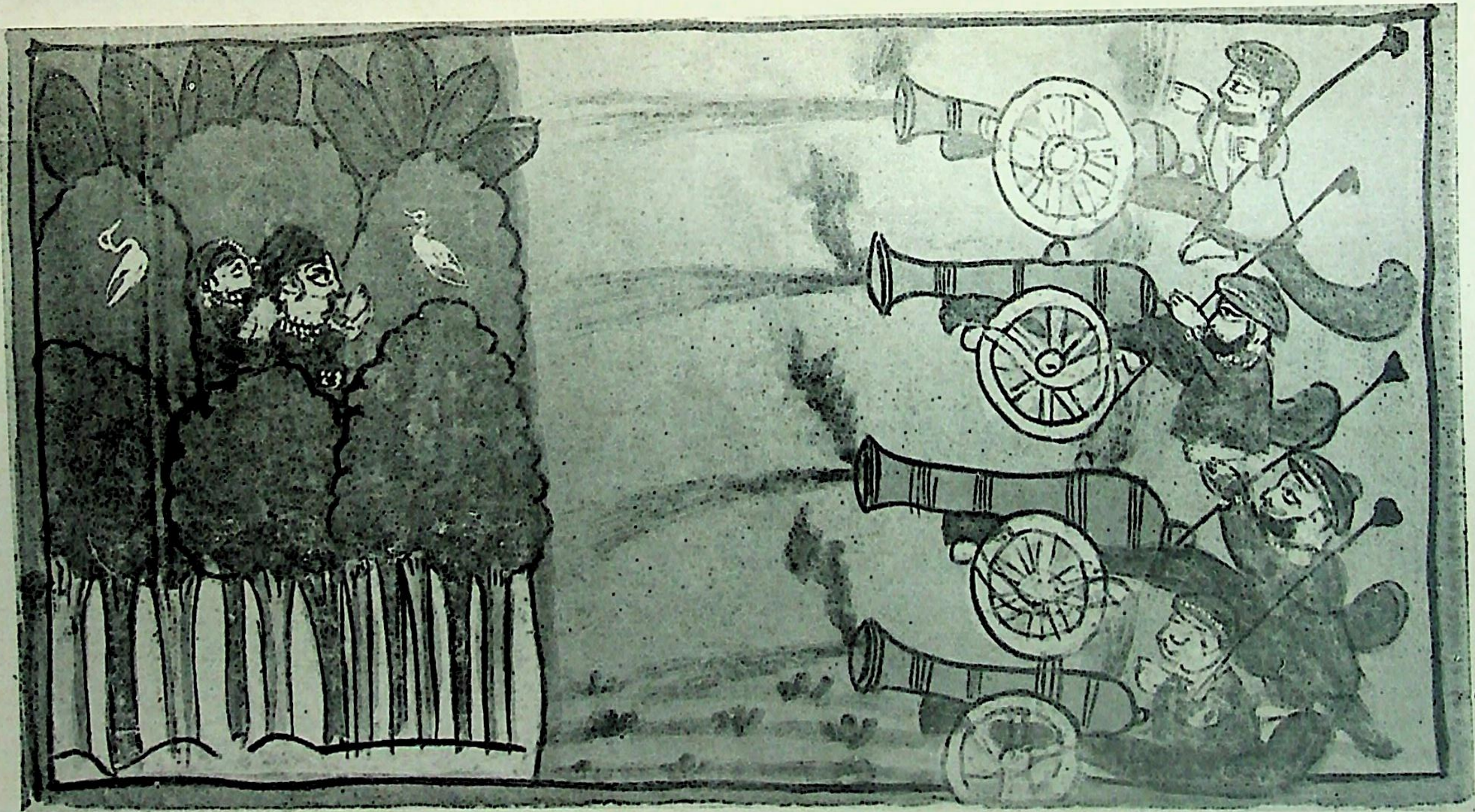
पृष्ठ ९६ – चित्र सं० १९६ परिमाण – ४½'४+६'४ पो.
परिचय – चित्र के एक तरफ ऊपरी बांए भाग में-मालती विचारमुद्रा में बैठी है और नीचे भाग में वही सोकर उठी है। अपने पास में मधु को न देखकर विकल हो रही हो ऐसा भाव है। दाएँ भाग में मधु के साथ सम्पृक्त हुई मालती दिखलाई दे रही है।

पृष्ठ ९७ – चित्र सं० १९७ परिमाण – ५'४+५½
परिचय – सूर्य भगवान् उदित हो रहे हैं। राजा चन्द्रसेन विचार-मग्न हुआ बैठा है।



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–१६१; सूचीपत्राङ्क–८०

ऊपर बैल का तथा नीचे हाथी का चित्र है।



प्रतिक्रमाङ्क-५०८०; चित्रसंख्या-१६३; सूचीपत्राङ्क-८०

सैनिक तोपों से बाग को उजाड़ रहे हैं। मधु-मालती वृक्षों की कुंज में बैठे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क-५०८०; चित्रसंख्या-२०८; सूचीपत्राङ्क-८१
'राजा जेतत भागो मीतरी बुलायो' इस प्रसंग का ही एक भाग है।
[राजा को भगवती चंडी उपदेश दे रही है]



प्रतिक्रमाङ्क–५०८०; चित्रसंख्या–२०८; सूचीपत्राङ्क–८१

राजा जेतत भागो मीतरी बुलायो। [राजा युद्ध से भागा और उसने मंत्रियों को बुलाया]

पृष्ठ ९७ – चित्रसंख्या १९८ परिमाण – ४'२ + ४
शीर्षक – गरुड़ ठाकुरजी अणक गजराज्याह ।

पृष्ठ ९७ – चित्र सं० १९९ परिमाण – ७½'४ + ६½ १ पो.
शीर्षक – गज गरा क क उड़ीयो।

पृष्ठ ९८ – चित्र सं० २०० परिमाण – ४½ + ५½
शीर्षक – प्र० [स]रीक्रस्न वदरंको दुध पीयो ।

पृष्ठ ९८ – चित्र सं० २०१ परिमाण – ३½ + ९'२ पो.
शीर्षक – प्र० कवीर घर वालद आया। पीपा का चंद का चरत राख्या ।

पृष्ठ ९८ – चित्र सं० २०२ परिमाण – ३'३ + ९'२ पो.
शीर्षक – मीरा बाईन ज्हर पीयो ।

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० २०३ परिमाण – २½'३ + ९'३ पो.
शीर्षक – नरसी म्हतान रु(हु)ड़ी दीनी ।

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० २०४ परिमाण – ३½ + ५'२ पो.
शीर्षक – नरसंग होई हरनाकस मारो ।

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० २०५ परिमाण – २'३ + ७'३ पो.
शीर्षक – ध्रुजीह अल[ख]पदी दीनी ।

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० २०६ परिमाण – २½ + ४
शीर्षक – ब्रमाह वेद दीनी ।

पृष्ठ ९९ – चित्र सं० २०७ परिमाण – ३½'४ + ५'२ पो.
शीर्षक – व्रज नखप धारी। कंस पछाड़ो ।

पृष्ठ १०२ – चित्र सं० २०८ परिमाण – ६½'१ + ९'१ पो.
शीर्षक – राजा ज़ेतत भागो मीतरी बुलायो।

पृष्ठ १०३ – चित्र सं० २०९ परिमाण – ५'३ + ४½
परिचय – राजा चन्द्रसेन तारनसाह मंत्री से मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ १०४ – चित्र सं० २१० परिमाण – ६½'३ + ५
शीर्षक – राजान मीतर बुलायो ।

पृष्ठ १०७ – चित्र संख्या २११ परिमाण – ४½+५'४ पोइन्ट
शीर्षक – राजासु तारन कह छ।

पृष्ठ १०८ – चित्र सं० २१२ परिमाण – ४½'१+९
परिचय – घुड़सवार मोची के सामने खड़ा है और मोची ने चमड़
समझ कर ही सर्प को अपने हाथ में पकड़ रखा है।

पृष्ठ १०८ – चित्र सं० २१३ परिमाण – ८'१+९'२ पो.
शीर्षक – स्रप असवारसु वचन भाख।

पृष्ठ १०९ – चित्र सं० २१४ परिमाण – ४'४+५'३ पो.
परिचय – सर्प घोड़े के पेट में बंधे सर्प से बात कर रहा है।

पृष्ठ १०९ – चित्र सं० २१५ परिमाण – ४'३+५½
परिचय – बांबी का सर्प अश्व-सर्प से कुछ कह रहा है। घुड़सवार
चुपचाप उतर कर घोड़े के पीछे खड़ा सुन रहा है।

पृष्ठ ११० – चित्र सं० २१६ परिमाण – ४½'४+५'२ पो.
शीर्षक – प्र० घोडा ऊभरसु कुदो।

पृष्ठ ११२ – चित्र सं० २१७ परिमाण – ७+९
शीर्षक – स्रपह दुध पात्र। उरगना घर।

पृष्ठ ११४ – चित्र सं० २१८ परिमाण – ५½'१+७'२ पो.
शीर्षक – परसंग वोलगनान वेटो लार लीयो।

पृष्ठ ११४ – चित्र सं० २१९ परिमाण – ४½'४+५'४ पो.
शीर्षक – स्रप वोलगनो वेटो।

पृष्ठ ११५ – चित्र सं० २२० परिमाण – ४½+५
शीर्षक – वेटो दुद पावा आयो।

पृष्ठ ११५ – चित्र सं० २२१ परिमाण – ३½'१+९'२ पो.
शीर्षक – प्र० सांपकी लार तेगो वायो। सापन डसीसु मरो।
सांप बाबीम धस्यो।

पृष्ठ ११६ – चित्र सं० २२२ परिमाण – ४½+४½ ३ पो.
शीर्षक – वोलगनान वेटो देख्यो स्रपसु वचन कहे।

पृष्ठ– ११६ चित्र संख्या २२३ परिमाण – ४½ + ५
परिचय – उरगाना एवं सर्प बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ ११७ – चित्र सं० २२४ परिमाण – ५'२ + ९'३ पो.
शीर्षक – प्र० राजाक उरगानाकी वऊ पुकारवा आई छ।

पृष्ठ ११७ – चित्र सं० २२५ परिमाण – ४'१ + ४'२
शीर्षक – उरगनाह दुत बुलावा आयो।

पृष्ठ ११७ – चित्र सं० २२६ परिमाण – ४'३ + ५'१ पो.
शीर्षक – राजान दुत पठायो।

पृष्ठ ११८ – चित्र सं० २२७ परिमाण – ४'३ + ५'२ पो.
परिचय – उरगाना घर के बाहर पैड़ियों में खड़ा है और भीतर उस की स्त्री बैठी है।

पृष्ठ ११८ – चित्र सं० २२८ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – राजा उरगनासु वात कर।

पृष्ठ ११९ – चित्र सं० २२९ परिमाण – ४½ + ४½ ३ पो.
शीर्षक – राजा रानीसु कह।

पृष्ठ ११९ – चित्र सं० २३० परिमाण – ५'१ + ९'२ पो.
शीर्षक – अजीनीको रामको मरसंग।

पृष्ठ १२१ – चित्र सं० २३१ परिमाण – ४½ + ९'३ पो.
परिचय – राज-दरबार तथा अन्तःपुर का दृश्य।

पृष्ठ १२१ – चित्र सं० २३२ परिमाण – ४ + ४½
परिचय – राजा चन्द्रसेन अपनी रानी से क्षमा-याचना की मुद्रा में मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ १२३ – चित्र सं० २३३ परिमाण – ३½'३ + ४'४ पो.
परिचय – राजा चन्द्रसेन तारनसाह मंत्री से सलाह कर रहे हैं।

पृष्ठ १२३ – चित्र सं० २३४ परिमाण – ४½ + ९'३
शीर्षक – मालतीह तेल चढ़। मधुह तेल चढ़।

प्रसङ्गसूची –

१ – राजलोक - वर्णन - प्रसङ्ग – पृष्ठ १ – २

२ – मधु - मालती का गुरु - गृह में विद्याभ्यसन – पृष्ठ २ – ७
(१) मालती का मधु के प्रति प्रणय - निवेदन ।

३ – मृग - सिंहिनी का प्रेमाख्यान – पृष्ठ ७ – ३९
(१) सिंह - वनचर (वानर) का संवाद (२) काक - उल्लूक - वार्ता (३) टिट्टिभ - संवाद (४) काक द्वारा सर्प - मारण (५) शृगाल - मगर - संवाद (६) शशक (सूसा) द्वारा सिंह का कूप - पातन (७) गिलहरी (टालोड़ी) का कूर्म के साथ प्रणय - सम्बन्ध (८) हरिणी - सिंहिनी - संवाद ।

४ – करण - पद्मावती प्रसंग – पृष्ठ ३९ – ४५

५ – सुदर्शन सेठ के शील - व्रत का उपाख्यान – पृष्ठ ४६ – ६०
(१) सुदर्शन को पुरोहित - पत्नी कपिला का अपने प्रेमजाल में फंसाने का असफल - प्रयास (२) सुदर्शन के पुत्र का जन्मोत्सव (३) गौरीश्वर - पूजा (४) सुदर्शन सेठ के शील-व्रत के भङ्गार्थ चम्पावतीपुर की रानी का प्रपञ्च (५) सुदर्शन का शूल्यारोहण तथा अवतरण ।

६ – मालती का चकवी के साथ संलाप – पृष्ठ ६२ – ६३
(१) सद्यः प्रसूत सिंह - शिशु द्वारा गज - मारण ।

७ – जैतमाल - मालती का वार्तालाप – पृष्ठ ६४ – ७९
(१) जैतमाल - शृङ्गार - वर्णन (२) जैतमाल - मधु का वार्तालाप (३) कामदहन - प्रसङ्ग (४) मधु की पूर्वजन्म - स्मृति (५) मालती के शरीर - सौष्ठव का वर्णन (६) मधु का मालती तथा जैतमाल के साथ संवाद ।

८ – उषा - अनिरुद्ध - कथा – पृष्ठ ७९ – ८२

९ – चम्पावती - पुरी के राजकुमार हरचंद तथा मंत्री की पुत्री रूपरेखा का प्रेमाख्यान – पृष्ठ ८५ वाँ

१० – राजा चन्द्रसेन की सेना के साथ मधु का युद्धवर्णन – पृष्ठ ८८ – १०२

(१) भ्रमर - युद्ध (२) मधु - राजदूत का संवाद (३) मालती को जैतमाल द्वारा धैर्य - बन्धन (४) मालती - कृत- श्रीकृष्ण - स्तुति (५) मधु के पक्ष में सिंह, भारण्ड आदि भयानक जन्तुओं का राजसेना से युद्ध ।

११ – राजा चन्द्रसेन की अपने मंत्रियों से मंत्रणा – पृष्ठ १०२ – १०७

(१) चन्द्रसेन तथा मंत्री तारणसाह का वार्तालाप
(२) तारणसाह द्वारा भारण्ड आदि का बन्धन
(३) श्रीगौरी माता का राजाको उपदेश (४) युद्ध-विराम।

१२ – उलगाना पथिक - सर्पकथा – पृष्ठ १०७ – ११९

(१) पथिक - सर्प - संवाद (२) बम्बीस्थ सर्प - उरगाना- संवाद (३) उरगाना का गृह - कलह (४) सर्प दंश से उरगाना के पुत्र की मृत्यु (५) उरगाना की पत्नी द्वारा राजा अमरसेन के सम्मुख उरगाना - सर्प का रहस्योद्घाटन (६) राजा द्वारा सर्प - मारण तथा बम्बीस्थ - धनापहरण ।

१३ – श्रीराम, लक्ष्मण तथा हनुमान् का अञ्जनी से वार्तालाप– पृष्ठ ११९ – १२२

(१) राजा चन्द्रसेन - रानी कनकमाल की मंत्रणा ।

१४ – मधु - मालती का विवाह प्रसङ्ग – पृष्ठ १२२ – १२३

१५ – काम - निवास - प्रसङ्ग तथा कथोपसंहार– पृष्ठ १२४ – १२६

★

९. सचित्र मधु-मालती कथा। क्रमाङ्क—५४५७

कर्त्ता—चतुर्भुजदास, लिपि समय-सं० १८६३ (वि०)

आकार—पुस्तकाकार (खुले पत्र) माप (साइज)-११ + ५'३ पोइन्ट

पृष्ठसंख्या २-८७, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति २८, प्रतिपङ्क्ति अक्षर १५-१८।

पुस्तकदशा—जीर्ण है, कितने ही पत्र कटे-फटे हैं तथा प्रान्त्य-त्रुटित हैं।

पुस्तक का प्रारम्भ

मालति ऐ वात सूण पाई। मधू देपनकू मन लाभइ॥
जो ले मंधू अपने ग्रह रहे। केताक नर ठकांणो ग्रहै॥ १९॥
उण के संजन बंध कछू कहै। केतिक भलि बुरी सीरसा है॥
मन की वात किणने सुनावे। जैसै चातु स्नात कुं ध्यावै॥ २०॥
ऐसै भया दवस दस त्रिस। सुणत तात तब किनि रीस॥
ए वात नृप सुण शुण पाइ। कहो कूंलर सरवर के तीस॥ २१॥

पुस्तक के अन्त में—

क्रष्णदेवको कुंमर काहा प्रद्यूमन कांम अंस मंधू गावै॥
पूत्र कलत्र सब सूष पावै। दूष दालीद्र नही नेरा आवै॥ ९७॥
॥ श्लोक॥ कांमार्थी लभ्यते कांम निरधन लभ्यत धनं।
आपूत्रं लभ्यते पूत्र व्याधि तस्या नही पीडते॥ ९८॥
राजा पढ़ै तो राज नितः, मंत्रि पढै तो बुध।
कांमी कांम विलास रस, ग्यांनी ग्यांन रस बुध॥ ९९॥
संपूरण मंधू-मालति, कलस भयो संपूरण।
व्याक्ता सूरता सवकुं सूषदायक दूष दूर॥ १०७०॥
[1]लपतं गुरजी धनजी अझारारे परगने राजगढ़ मंध्ये सं० १८६३
असाड वदि १० दीनै बुध वासरे लपी छै॥

टिप्पणी—उल्लेखनीय है कि इस प्रति का प्रथम पत्र अप्राप्त है, दूसरा पत्र आधे से अधिक फट जाने से उसका पठनीय अंश प्रायः नष्ट हो गया है, तीसरे पत्र के एक भाग में चित्र तथा दूसरा भाग खाली है, इस लिये चौथे पत्र के आरम्भिक कुछ पद्य ही नमूने के तौर पर ऊपर में उद्धृत किये गये हैं। इस प्रति के सभी पत्र खुले हुए एवं जीर्ण-दशा में हैं,

तथा १, ६६, ७९, एवं ८६ संख्या वाले पत्र अप्राप्त हैं। प्रति के पत्रों पर दाँई ओर एवं पत्राङ्कन की तरफ चार चार लाल रेखाएँ वर्तनी (मार्जन) के रूप में तथा दूसरे पार्श्व में दो दो रेखाएँ खींची हुई हैं। पद्याङ्क, प्रकरण - समाप्ति और प्रारम्भिक - स्थल पर गेरू का प्रयोग किया गया है। लिपि शुद्ध एवं स्पष्ट है तथा इस के मध्यम साइज के सुवाच्य अक्षर ऊपर विवरण में उद्धृत " चिन्हाङ्कित पुष्पिकांश को छोड़कर एक ही कलम द्वारा काली स्याही से लिखे हुए हैं। ग्रन्थ में आरंभ से ३६ पत्र तक तो पत्र - संख्या क्रमानुसार ठीक पड़ी हुई है, आगे किसी किसी पत्र पर दो या तीन भी विभिन्न अंक डाले हुए हैं। इस अपूर्ण प्रति के ८ पत्र ग्रन्थ सं० ७८२३ पर 'पिंगल रो समैयो' नाम से अलग कृति के रूप में बाद में प्राप्त होने से अंकित कर लिये गये थे। वास्तव में यह कथानक (समैयो) इस ग्रन्थ का ही एक अङ्ग है। जैसा कि इस की लिपि, पत्र तथा प्रकरण आदि से स्पष्ट ज्ञात होता है। उक्त आठ पत्रों तथा ग्रन्थस्थ समस्त पत्रों को अर्थानुसन्धान - पूर्वक ठीक मिला कर क्रमानुसार उन पर अब नये अंक लगा दिये गये हैं।

इस प्रति में ८७ चित्र उपलब्ध हैं, इन में ६५ छोटे तथा २२ बड़े आकारवाले हैं। विशुद्ध ग्रामीण - शैली पर बने हुए चित्रों की बनावट में बिलकुल सादे एवं हल्के रंगों का ही उपयोग किया गया है और उन की आधार - भूमि भी किसी प्रकार के रङ्गसे रञ्जित नहीं की गई है। चित्रों का सामान्य विवरण नीचे लिखा जा रहा है।

चित्रसूची –

पृष्ठ २ – चित्र संख्या १ परिमाण – ४½'२ + ४

परिचय – **श्रीगणेशजी का माङ्गलिक चित्र (अर्धभाग खण्डित)।**

पृष्ठ २ – चित्र सं० २ परिमाण – ३½'३ + ४

शीर्षक – **रांमसरोवर नारी पांणी भरे सेहरकी (प्रान्त्य त्रुटित)।**

पृष्ठ ३ – चित्र सं० ३ परिमाण – ९ + ४

शीर्षक – **तारणसाहरा गर बैटाने षेलावै छे।**

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ४ परिमाण – ५'२ + ४

परिचय – **रामसरोवर पर स्त्रियाँ पानी भर रही हैं और मधु गिलोल से पक्षियों की शिकार कर रहा है।**

पृष्ठ ५ – चित्र सं० ५ परिमाण – १०'२ + ४

शीर्षक – **चंद्रसेण राजा तारणसाहा वात करै मालतिने भणवा वैसाड, पंडित आयो, येह पला मधून बैसाण्यौ।**

पृष्ठ ६ – चित्र संख्या ६ परिमाण – ४½'२ + ४
शीर्षक – मंधू मालति भणै ।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० ७ परिमाण – २½ + ४'३ पो.
शीर्षक – मृग सीगने देष भागे ।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० ८ परिमाण – २½'३ + ४
शीर्षक – सिगनी मृग आडी आई ।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० ९ परिमाण – २½'२ + ४
शीर्षक – सायर तीर टीटोरी इ(अं)डा मेल्यौ ।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १० परिमाण – ८'४ + ४'३ पो.
शीर्षक – साय(ग)र रुप कीधो इडा(अंडा) लीधा सो दीध फोज पषीरी आई ।

पृष्ठ १० – चित्र सं.० ११ परिमाण – ८½ + ४
शीर्षक – काग घूघूरे जुध व्हैवै ।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० १२ परिमाण – ३ + ४
शीर्षक – हंस वड माह बेठो कागनै सीष दै ।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० १३ परिमाण – ४½ + ४
परिचय – अरिमर्दन के बुलाने पर एकत्र हुए कौवे उलूकों को जलाने के लिये अग्नि जला रहे हैं ।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० १४ परिमाण – ३½ + ४
परिचय – मृग द्वारा सिंहिनी - सम्भोग ।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० १५ परिमाण – ४ + ८½
परिचय – मृग को मारने के लिये सिंह आ रहा है । सिंहिनी उसे बचा रही है। बीच में वृक्ष पर एक सुआ बैठा है।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० १६ परिमाण – ४ + ७½
शीर्षक – सीघ सेलते आयो मृग देषत सीघनी मूई तोको समीयो ।। सीगनी घणी आडी [आ]ई पण मारचौः ।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० १७ परिमाण – ३ + ४
शीर्षक – सीघ गयो वंन छोड़ि ।



प्रतिक्रमाङ्क–५४५७; चित्रसंख्या–१०; सूचीपत्राङ्क–८८

सायर रुप कीधो, इडा लीधा सो दीध, फौज पंषीरीं आई ।

(सागर ने ब्राह्मण-रूप धर कर अंडे लौटाए)



प्रतिक्रमाङ्क–५४५७; चित्रसंख्या–२०; सूचीपत्राङ्क–८६

तेली पेमचंदनै मूगलको चाकर मारै दीधी, तेलण दूति देषै ।



प्रतिक्रमाङ्क–५४५७;   चित्रसंख्या–२१;   सूचीपत्राङ्क–८६

तेली मूया भूतगत पायो, मूगल दूति दोनु आय तेलणकुं ले गया ।

पृष्ठ १७ – चित्र संख्या १८ परिमाण – ४½'२ + ४
शीर्षक -- सत्रपुर नगर मूगल राज कर लेत(तेल)ण रहै दूती तेलणने देषी दूती वात [क]रे मू[ग]लसूं ।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० १९ परिमाण – ४ + ६
शीर्षक – सत्रपुर नगर तेली तेलण रहै दूति फरे जाया ॥

पृष्ठ १८ – चित्र सं० २० परिमाण – ४ + ८½
शीर्षक – तेली पेमचंदनै मूगलको चाकर मारै दीधी तेलण दूति देषै ॥

पृष्ठ १८ – चित्र सं० २१ परिमाण – ४ + ४'२ पो.
शीर्षक – तेली मूया भूत गत पायोः मूगल दूति दोनु आयो तेल[ण]कुं लेगया ।

पृष्ठ २० – चित्र सं० २२ परिमाण – ३½'१ + ४
शीर्षक – श्रीकिसनजी चंद्रावलीने लेयण आया ।

पृष्ठ २० – चित्र सं० २३ परिमाण – ५ + ४
शीर्षक – श्रीकिसन घरे दर्वासा रिषस्वर आय । गोपी सुकडी लेचाली वीचे जंमना वहै ।

पृष्ठ २० – चित्र सं० २४ परिमाण – ४½ + ४
परिचय – गोपियाँ दही और दूध के बर्त्तन माथे पर रखी हुई हैं ।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० २५ परिमाण – ४ + ८'३ पो.
शीर्षक – दूरवास रिषस्वर । जमान पूर जाय । गोपी सुकडी लेने रिषी पासे आवै । (तीनों भावों का संयुक्त चित्र)

पृष्ठ २२ – चित्र सं० २६ परिमाण – २ + ४
शीर्षक – सुउरे घर कोयल आई ।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० २७ परिमाण – २ + ४
शीर्षक – कोयल कंत सु रुसाणी ।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० २८ परिमाण – २½ + ४
शीर्षक – कोयल सुउरे घर वास ।

पृष्ठ २३ – चित्र संख्या २९ परिमाण – २ + ४
शीर्षक – कोयलो पंछिसू पूकार करै कासी जाय ।

पृष्ठ २३ – चित्र सं० ३० परिमाण – २½ + ४
शीर्षक – छूउटो कोइल भोग करे ।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ३१ परिमाण – ३½४' + ४
शीर्षक – प्ररवत मलीयाचला नांम पंछि हजार पंच मल्या कोइलो
पूकर कीधी फोज चाली ।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ३२ परिमाण – ६½ + ४
शीर्षक – पारधि सवने पकरयो ।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ३३ परिमाण – १०½ + ४
शीर्षक – हथनपुर नगर छै पंडव राज करै ।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ३४ परिमाण – ५ + ४
शीर्षक – केरवके घरे पंडवकू नेत्या मेहल जालायो दगो किधो

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ३५ परिमाण – ४ + ६½
शीर्षक – पंडव मारग जांता कावीरो राषस मल्यौ ।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ३६ परिमाण – ३'३ + ४
शीर्षक – भीम राषसनो पेट फाडीनै भागो ।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ३७ परिमाण – ३ + ४
शीर्षक – हीडोलो भीम गगने चढ़ायो भमती फरै पंछै थोभीयो

पृष्ठ २८ – चित्र सं० ३८ परिमाण – १०½'२ + ४
शीर्षक – मातारो देवल माहे भीम बैठो राषसने भीम मारयौ
मातनै भाईने छोडाया जुध कीदौ ।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० ३९ परिमाण – ६½ + ४
शीर्षक – भीम केरव गरे जीमवा गयो वीष दिधो मूयो ग्या
भाई आया सेहदेवने पूछो है ।। ने कहो गंगा मोहे
प्रवाह दै सो नीचे पीजरो कीदौ ।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० ४० परिमाण – २½ + ४
शीर्षक – भीम मूयो गंगा माहे पीजरो वेह गयो ।।



प्रतिक्रमाङ्क–५४५७; चित्रसंख्या–३८; सूचीपत्राङ्क–६०

मातारा देवलमाहे भीम बेठो राषसने भीम मारचो मात नै भाईनै छोडाया, जुध कीदो।

पृष्ठ ३० – चित्र संख्या ४१ परिमाण – २ + ४ (चित्र के दाईं ओर का १½ इञ्च भाग लम्बाई में १'२ अधिक है)।
शीर्षक – वासगरी कन्या पीजरो गंगा बारे काढ़ो घर ले गई।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ४२ परिमाण – २½ + ४
शीर्षक – कूंड अम्रतरो भीम सब पीगयो रषवालाने मार्‌यो।

पृष्ठ ३१ – चित्र सं० ४३ परिमाण – ४ + ६½ २ पो.
शीर्षक – गोरी रूप गऊको कीयो नाहररूप सीत्र कीयो। भीम हाथसू मूष फाडे नषे रे गोरी केह सब छे।

पृष्ठ ३१ – चित्र सं० ४४ परिमाण – ६½ + ४
शीर्षक – राजा चंदसेन तारणसाह वात करै।

पृष्ठ ३२ – चित्र सं० ४५ परिमाण – २½ + ४
शीर्षक – वल्द नाहर वात करै।

पृष्ठ ३२ – चित्र सं० ४६ परिमाण – ४ + ४
शीर्षक – नाहर वलद विचे चितरो(शे)ट पाडै नै भरमावै॥

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ४७ परिमाण – ३½२' + ४
शीर्षक – नाहर जंबक वात करे वलदकी।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ४८ परिमाण – २½ + ४
शीर्षक – सीयल वलद वात करै।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ४९ परिमाण – ३ + ४
शीर्षक – नाहर वलद भेला चरै।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ५० परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – नाहर सुसल्यो वलद वात करै।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ५१ परिमाण – ४ + ४
शीर्षक – काग सीयाल सीघ वात करै।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ५२ परिमाण – ४ + ४
शीर्षक – वंनमे उट रहै।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ४ + ४½ ३ पो.
शीर्षक – सीह सीयल काग वात करै।

पृष्ठ ३६ — चित्र संख्या ५४ परिमाण — ५ + ४
शीर्षक — नाहर उट मार्‌यो सियाल काग पाये।

पृष्ठ ३८ — चित्र सं० ५५ परिमाण — ४ + ५'३ पो.
शीर्षक — साठ त्रीया छोडी नृपतकवर (करण) नाम।

पृष्ठ ३९ — चित्र सं० ५६ परिमाण — ५½ + ४
शीर्षक — सूरसेन राजा रांणीनै मेहलमे आयो। कुवरी पदमावंत
करण वरै।

पृष्ठ ४० — चित्र सं० ५७ परिमाण — ४ + १०
शीर्षक — राजा करण परणे पदमावंतीनै।

पृष्ठ ४१ — चित्र सं० ५८ परिमाण — ४ + ४
शीर्षक — पदमावंतीरे चेनरेषा पीचकारी पीठमे मारी॥

पृष्ठ ४३ — चित्र सं० ५९ परिमाण — ४ + ६½
शीर्षक — राम सरोवर मधू षेलै सेह[र]की नारि पंणि भरै

पृष्ठ ४३ — चित्र सं० ६० परिमाण — ४ + ६½ ३ पो.
शीर्षक — मंधू रांम सरोवर मालती सषी नै लेनै आय।

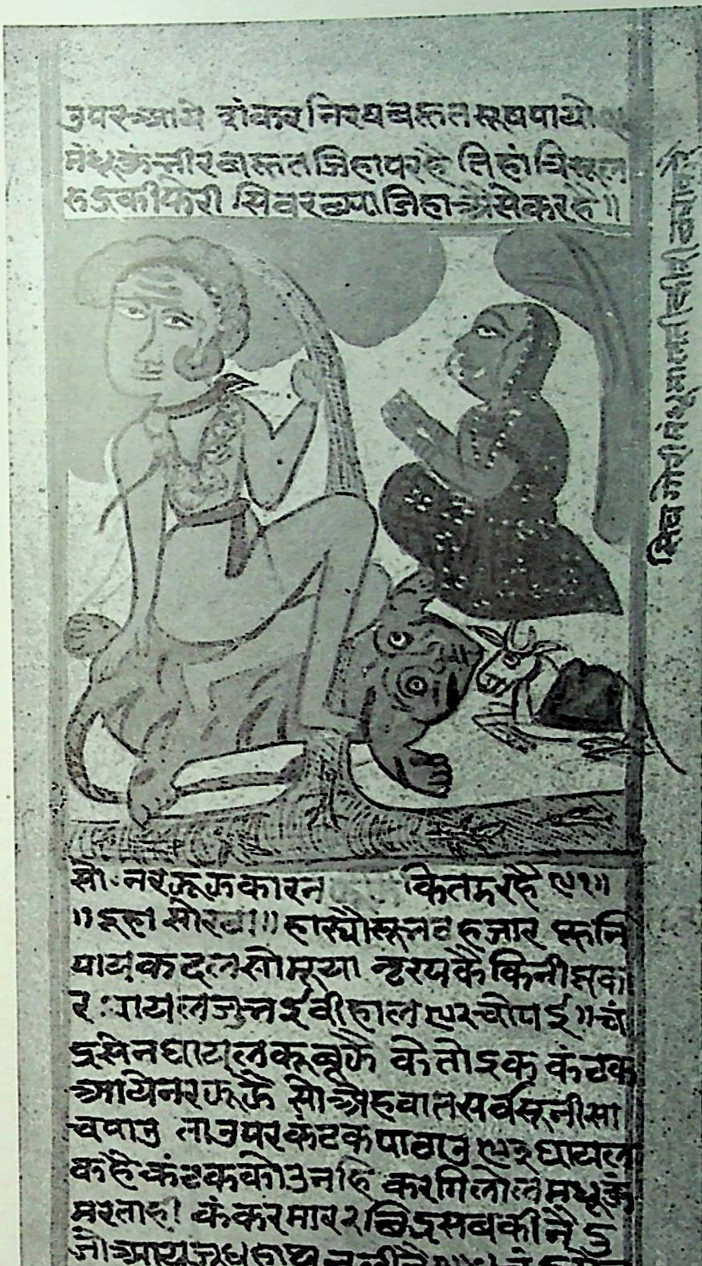
पृष्ठ ४५ — चित्र सं० ६१ परिमाण — २½ + ४
शीर्षक — चकवी चकवा सरप कंट्यौ।

पृष्ठ ४६ — चित्र सं० ६२ परिमाण — ४ + ८
परिचय — सिंहनी का सद्योजात शिशु हाथीकी शिकार कर रह

पृष्ठ ४७ — चित्र सं० ६३ परिमाण — ३½'३ + ४
शीर्षक — मालति जेतमाल वात करे।

पृष्ठ ५७ — चित्र सं० ६४ परिमाण — ४ + ४½ २ पो.
शीर्षक — मधू मालती छंनै परण्यौ माली पूकार गयो राज
जेतमाल परणवै।

पृष्ठ ५७ — चित्र सं० ६५ परिमाण — ९'१ + ४
शीर्षक — राजा चंद्रसेन रांणी कनै आयो वात कहै म
पूकार करैः मंधू उपरे पयादो मेलीयो दूत मे
मरणनै आयो।



प्रतिक्रमाङ्क–५४५७; चित्रसंख्या–७०; सूचीपत्राङ्क–६३

सिव गोरी मंधू मालतीकी रीछया करै।



प्रतिक्रमाङ्क–५४५७; चित्रसंख्या ७१; सूचीपत्राङ्क–६३

राजा मंधू उपर दूजी फोज वदा किधी, भमर छूटा ।

पृष्ठ ५८ – चित्र संख्या ६६ परिमाण – ४ + ४
शीर्षक – रूपरेषा चंदकुवरनै मालण वागमे लाई ।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० ६७ परिमाण – ४ + ७
शीर्षक – चंदकूमर सेझ रंमतो नाहर मार्‍यो वाडीमै ।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० ६८ परिमाण – ४ + ६½
शीर्षक – मधू मालति जेतनै गीलोलरी भतीत दिषावै रांम सरोवर ।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० ६९ परिमाण – ४ + ७½ ३ पो.
शीर्षक – राजारा[पा]यक २ आय आयी मूधूने कहै वनीया ।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० ७० परिमाण – ५ + ४
शीर्षक – सिव गोरी मंधू मालती की रीछ्या करै ।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० ७१ परिमाण – ४½ + ९
शीर्षक – राजा मंधु उपर दूजी फोज विदा किधी भ्रमर छूटा ।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ७२ परिमाण – ४ + ९
शीर्षक – राजा चंद्रसेन हजार दस फोज वंदा कीधिः ।

पृष्ठ ६५ – चित्र सं० ७३ परिमाण – ४ + ५'४ पो.
शीर्षक – राजा दूत मेल्यो मंधू कनै दूत कहै कुमष कंटक कूण आया जागा छोडो ।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० ७४ परिमाण – ४ + ९½
शीर्षक – राजा फोज मेली नाहर भारड आया फोज भागी ।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० ७५ परिमाण – ८ + ४
शीर्षक – राजा चंद्रसेन मंत्री तारणसाहनै मनायो वात मंधूरी पूछैः ।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० ७६ परिमाण – ५½'२ + ४
शीर्षक – अलगणे मोचीरे घरे आय मभाते ओठा करायौ चाल्यौ ।

पृष्ठ ७३ – चित्र संख्या ७७ परिमाण – ४ + ४
शीर्षक – ओलगंणो ने बंबिको सर्प वात करै।

पृष्ठ ७३ – चित्र सं० ७८ परिमाण – ५'३ + ४
शीर्षक – उरगांनो घोडासू कूंद् पड्यो ओडारा सर्पने मारे बिंबीरो सरप वात करै ।

पृष्ठ ७४ – चित्र सं० ७९ परिमाण – ४ + ४
शीर्षक – अरगाणो पांणी तातो करे बंबी पोद द्रव्या काढै।

पृष्ठ ७५ – चित्र सं० ८० परिमाण – २½ + ४ पो.
शीर्षक – उरगांणो सर्प नै दूध पावै मोहर पावै।

पृष्ठ ७५ – चित्र सं० ८१ परिमाण – ३ + ४
शीर्षक – उरगांणो ने बैटो दोउ दूध पावै ॥

पृष्ठ ७६ – चित्र सं० ८२ परिमाण – २'२ + ४
शीर्षक – दूध पीये न्ही हथमै ठींगी दीठी।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० ८३ परिमाण – ३ + ४
परिचय – सर्प को लाठी से मारने पर उरगाने के लड़के को सर्पने डँस लिया है।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० ८४ परिमाण – ३½ + ४
शीर्षक – उरंगाणारा घर विग्रह लागो।

पृष्ठ ७८ – चित्र सं० ८५ परिमाण – १०½ + ४
शीर्षक – राजा चंद्रसेन मंधू मालति प्रगट परणावै।

पृष्ठ ८१ – चित्र सं० ८६ परिमाण – ६'३ + ४
शीर्षक – अंजनी तपस्या करै रांम लछमन सित हनुमन नमसकार करै।

पृष्ठ ८४ – चित्र सं० ८७ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण मंधू मालति पालषीमै वैसाणे मेहल आये।

प्रसङ्गसूची –

१ – मधु - मालती का विद्याध्ययन – पृष्ठ १ – ७

२ – मृग - सिंहिनी - प्रणय - प्रसंग – पृष्ठ ७ – १६
(१) टिंटोरी - वार्ता (२) काग - घूहर - कथा ।

३ – तेलण तथा मुगल का प्रसंग – पृष्ठ १७ – १९

४ – कृष्ण - चन्द्रावली - प्रसंग – पृष्ठ १९ – २१

५ – शुक - पिकी - प्रसंग (समैयो) – पृष्ठ २१ – २५

६ – कौरव - पांडव का प्रसंग (समीयो) – पृष्ठ २५ – २८

७ – भीम - राक्षस का प्रसंग – पृष्ठ २८ – ३१

८ – पिंगल रो समैयो – पृष्ठ ३१ – ३७

९ – करण - पद्मावती - प्रसंग – पृष्ठ ३७ – ४३

१० – जेतमाल - प्रसंग – पृष्ठ ४३ – ५६

११ – चन्दकुंवर - रूपरेखा - प्रसंग – पृष्ठ ५७ – ६०

१२ – मधु का चंद्रसेन की सेना से युद्ध - वर्णन – पृष्ठ ६० – ७२

१३ – सर्प - उरगाना - प्रसंग – पृष्ठ ७२ – ७९

१४ – रामचन्द्र - अंजनी - संवाद (समैयो) – पृष्ठ ८० – ८२

१५ – मधु - मालती का विवाह - वर्णन – पृष्ठ ८२ – ८७
(१) कामनिवास - प्रसंग (२) कथोपसंहार ।

★

६. सचित्र मधु-मालती कथा।   क्रमाङ्क–९२७२

कर्त्ता–चतुर्भुजदास,   लिपिकाल-१८ वीँ शताब्दी (वि०)

आकार–पुस्तकाकार (खुले पत्र)   माप (साइज)-८½ + ६

पृष्ठसंख्या–८६, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति २२, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २०।

पुस्तकदशा–अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण है, तथा पत्र कटे-फटे, त्रुटित हैं।

पुस्तक का प्रारम्भ

........णेशाय नमां ॥ अथ मधुमालती वात्ता[चौ]पई लीष्यते ॥

॥ दूहा ॥ सरस्वती नांम लेकर, ... गणपती जुहार।
कविजन साचा अष्यरी, कहे म[धु] मालती सार ॥ १ ॥
सकल बुधि दीये सरस्वती, वं[दौं] गुरके पाय।
मधुमालती विलास को, केहत चुत्रभु[ज] राय ॥ २ ॥

॥ चोपाई ॥ बर विरंचतनया वर पाउं। संकर पूत गंणपति सिर नाउं ॥
चातूरी हेत चित सहित रीझाउं। सरस मालती-मनोहर गाउं ॥३॥
लीलावती ललीत ऐक देसा। चंद्रसैंन तिहां सुघड नरेसा ॥
....ग धाम तीहां गीगन प्रवेसा। मांनुं मंडप रच्यौ .... ॥ ४ ॥
वसहे नगर पुर जोजन च्यार। चोरासी .... चोवार ॥
अति विचित्र दीसै नर नार। मांतुं .... त्रिभुवन मझार ॥ ५ ॥

पुस्तक के अन्त में–

॥हनूमांनवायक॥ हनमत हिये विचार के, वात कहै सुन ऐक।
माता तुम सत उचरो, बूझूं ऐक विवेक ॥ [१३]२८ ॥
निरा आहार द्वादस वरस, जुध न पूरे कोय।
लछमनकुं अलछंन कह्यौ, ऐह जीव संसा मोहि ॥ २९ ॥

॥अंजनीवायक॥ रांम घरित्र जांनै सबै, भूल गयो[त]न भौंन।
रापि न सक्यौ सीतकुं, और अलिछंन[कौन] ॥ ३० ॥
सीता सूंनी मेलकै, वनमैं फीरीयो जोय।
कठे .... रे रांमकुं, सोजनवालो कोय ॥ ३१ ॥

॥ हनुमांनवा०॥ [स]ती सीत सम ओर कुं, पटंतर दीजै सोय ।
हनुं जंपै[ज]ननी सुंनौ, ऐह जीय संसो मोहि ॥ ३२ ॥

टिप्पणी – यह प्रति अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होने के साथ साथ त्रुटित एवं अपूर्ण है तथा इस में २२, २७, ३१, ३३, ३५, ४४, ४६, ५४, ५५, ६२, ६४, ६८, ७१, ७४, ७५, ७७, ८४ संख्या वाले पत्र अप्राप्त भी हैं। इस प्रति के अधिकांश पत्रों के मध्य एवं अन्त्य-भाग खण्डित हो जाने से उन पर लिखित कथा का पठनीय अंश नष्ट हो चुका है। प्रायः सभी पत्रों पर क्रमाङ्क अङ्कित हैं और जिनके क्रमाङ्क नष्ट हो चुके हैं उन पर पाठानुसन्धानपूर्वक क्रमानुसार नये सिरे से लगा दिये गये हैं। ग्रन्थ के प्रत्येक पत्र पर दोनों ओर वर्त्तनी के रूप में दो दो लाख रेखाएँ अङ्कित हैं, तथा पद्याङ्क के आजू-बाजू में अर्थात् पद्य-पूर्ति एवं आरम्भ में लाल स्याही की दो दो खड़ी पाइयाँ लगी हुई हैं। सन्दर्भ (दोहा, चोपाई आदि) तथा प्रसङ्ग-सूचक शीर्षक लाल स्याही से लिखे गये हैं, शेष सारा प्रबन्ध काली स्याही से ही लिखित है। प्रति में कथा का आरम्भ प्रथम पत्र से ही हुआ है तथा इस के अन्तिम अर्थात ८६ वें पत्र पर हनुमान्-अञ्जनी-संवाद का कुछ अंश ही लिखा हुआ मिलता है। इस लिए हमने भी उक्त अंश के प्राप्त कुछ पद्य ही ऊपर में (ग्रन्थान्त के रूप में) उद्धृत किये हैं।

इस प्रति में प्राप्त ६९ पत्रों में कुल ७० चित्र उपलब्ध हैं, जिन में कितने चित्र अर्द्ध-भाग से, तो कितने ही मध्य से तो कितने ही शीर्ष-भाग से खण्डित एवं त्रुटित हैं। सारांश यह है कि ऐसे बहुत कम चित्र हैं जिन की दशा ठीक कही जासकती है। चित्रों की बनावट जैसलमेरी तथा ग्वालेरी (मध्य-प्रदेशीय) शैली पर आधारित है। इन के चित्रण में विविध रंगों का प्रयोग किया गया है। जहाँ तहाँ अवसरानुकूल सुनहरे एवं चमकीले रंग भी काम में लाए गये हैं, किन्तु चित्र-स्थली प्रायः पीले तथा हल्के हरे रंग से ही रञ्जित की गई है। चित्र सुन्दर एवं भावानुकूल ही बने हुए हैं। इन का शीर्षकात्मक विवरण निम्न प्रकार में प्रस्तुत है –

चित्रसूची –

पृष्ठ १ – चित्र संख्या १ परिमाण – ३½ + ५½ (आधे से अधिक नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक – **अठे श्रीगंणेशजी रिद्ध सिद्ध सहित लषलाभ सुधा वेठा सो भाव।**

पृष्ठ १ – चित्र संख्या २ परिमाण – ३½ + ५½ (आधे से अधिक नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक – अठे राजा चंद्रसेण मेहलांमैं बेठा राण्यां सहेत सो भाव।

पृष्ठ २ – चित्र सं० ३ परिमाण – २½ + ५½ (फटा हुआ)
शीर्षक – अठे मालतीरो जनम हूवो दासी पंषो करे सो भाव।

पृष्ठ २ – चित्र सं० ४ परिमाण – ३ + ५½ (फटा हुआ)
शीर्षक – अठे तारंणसाह बेठो मधु जनम्यो माता षीलाव सो भाव।

पृष्ठ ३ – चित्र सं० ५ परिमाण – ३½ + ५½ (चित्र आधे से अधिक फटा हुआ)
शीर्षक – अठे मधु रांम सरोवर गिलोलांसुं रमे पणीहारयां पाणी भरे सो भाव।

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ६ परिमाण – ३½ + ५½
शीर्षक – अठे तारंणसाहरा मुढा आगे साहूकार पुकार करे सो भाव।

पृष्ठ ५ – चित्र सं० ७ परिमाण – ३ + ५½ (फटा हुआ)
शीर्षक – अठे मधु पंडित कंने पोसालै बेठो भंणै सो भाव।

पृष्ठ ५ – चित्र सं० ८ परिमाण – ३½ + ५½
शीर्षक – अठे राजा रांणी बेठा मालती भंणवारी अरज करे सो भाव।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० ९ परिमाण – ३½ + ५½ (फटा हुआ)
शीर्षक – अठे मधु पंडित तीरें भणे। मालती परेच माहे भणे सो भाव।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० १० परिमाण – ३½ + ५½ (फटा हुआ)
शीर्षक – अठे मालती परेच फाडने मधुरे फुल गेंदरी देवे सो भाव।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० ११ प्ररिमाण – ३½ + ४ (प्रांत्य त्रुटित)
शीर्षक – अठे सूवटा सेंवल रुंपरा सम्यारो भाव।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १२ परिमाण – ३ + ५½ (चित्र अर्ध से अधिक नीचेसे फटा हुआ)
शीर्षक – अठे मृग सिंघणीरे समवाद सिंघणी आडी आई सो भाव।

पृष्ठ १० — चित्र संख्या १३ परिमाण — ३½ + ५½ (चित्रका ऊपरी किनारा कटा हुआ)
शीर्षक — अठे घूघू बेठा सर्व जींनावर मिल घुघुने राज दे काग मतो भांगे सो भाव॥

पृष्ठ १० — चित्र सं० १४ परिमाण — २½ + ५½
शीर्षक — अठे समुद्र उपर टींटोरी ईंडा मेले सो भाव।

पृष्ठ ११ — चित्र सं० १५ परिमाण — २ + ३ (नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक — अठे टींटोरी टींटोरा आगे पुकार करे सो भाव।

पृष्ठ ११ — चित्र सं० १६ परिमाण — २ + ५½ (नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक — अठे गरुड आगे टींटोरो टींटोरी पुकार करे सो भाव।

पृष्ठ १२ — चित्र सं० १७ परिमाण — ३½ + ५½
शीर्षक — अठे गरुड संमुद्र कंने ईंडा लेवा आयो समंद्र व्राह्मणरो रूप कर आयो सो भाव।

पृष्ठ १३ — चित्र सं० १८ परिमाण — ३ + ५'३ पो.
शीर्षक — अठे घुघु रातरा कागलांनै मारे सो भाव।

पृष्ठ १३ — चित्र सं० १९ परिमाण — ३ + ३½ (नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक — अठे मेघवरण मंत्रीयां आगे मसलत करे सो भाव।

पृष्ठ १४ — चित्र सं० २० परिमाण — ३ + ५'३ पो. (चित्र नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक — अठे मेघवरण काग कपट करनें घुघुरे चाकर रेहणनें आयो सो भाव।

पृष्ठ १५ — चित्र सं० २१ परिमाण — २½' + ३'३ पो. (नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक — अठे काग घूघूवांने गुफामें बाले सो भाव।

पृष्ठ १७ — चित्र सं० २२ परिमाण — ३ + ५'३ पो.
शीर्षक — अठे मृग सिंघणीसुं संभोग करे सो भाव।

पृष्ठ १८ — चित्र सं० २३ परिमाण — ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक — अठे सिंघ उभो सिघणी मृघरा सींगां उपर पड मूई वचन राष्यो सो भाव।

पृष्ठ १९ — चित्र सं० २४ परिमाण — २½ + ५'३ पो.
शीर्षक — अठे मधुमालती बेठा करण कंवररी कथा कहे सो भाव।

पृष्ठ २० — चित्र संख्या २५ परिमाण — ३ + ५'३ पो.
शीर्षक — अठे करण कंवर मेहलांमें बेठो पवास मोरछल करे सो भाव ।

पृष्ठ २१ — चित्र सं० २६ परिमाण — ३'२ + ५'३ पो. (चित्र नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक — अठे पदमावती बेठी रांण्यां दास्यां मिलनैं समझावै सो भाव ।

पृष्ठ २४ — चित्र सं० २७ परिमाण — ३½ + ५'३ पो. (कोने पर से फटा हुआ)
शीर्षक — अठे करण कंवर बेठो पदमावतीरी पीठमें चेनरेषा पीचकारी की देवे सो भाव ।

पृष्ठ २५ — चित्र सं० २८ परिमाण — ३½ + ४ (फटा हुआ)
शीर्षक — अठे मधु पोसालसुं घरे जावे मालती फेटो पकडे सो भाव ।

पृष्ठ २६ — चित्र सं० २९ परिमाण — ३½ + ५'३ पो. (फटा हुआ)
शीर्षक — अठे मधु रांम सरोवर गिलोलसुं रमे पणिहारयां पांणी भरें सो भाव ।

पृष्ठ २८ — चित्र सं० ३० परिमाण — २½'३ + २½ ३ पो.
शीर्षक — अठे चकवो चकवी संभोग करे सो भाव ।

पृष्ठ ३४ — चित्र सं० ३१ परिमाण — ३½'३ + ५'३ पो.
शीर्षक — अठे जेतमाल रांम सरोवर मधु कंनै आई वार्त्ता करे सो भाव ।

पृष्ठ ३६ — चित्र सं० ३२ परिमाण — ३'२ + ३'२ पो.
शीर्षक — अठे मालतीरो रूंष प्रजल्यो सो भाव ।

पृष्ठ ४२ — चित्र सं० ३३ परिमाण — ३½'२ + ५'३ पो.
शीर्षक — अठे मधु मालती जेतमाल तीनूं जणां वार्त्ता करे सो भाव ।

पृष्ठ ४३ — चित्र सं० ३४ परिमाण — ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक — अठे लालंनसाह त्रीया मैंनांने परदेस चालणरी कहै सो भाव ।

पृष्ठ ४५ – चित्र संख्या ३५ परिमाण – ३'१ + ३'३ पो.
शीर्षक – अठे मैनां संदरमैं वेठीनैं कंवर देषे सो भाव ॥

पृष्ठ ५० – चित्र सं० ३६ परिमाण – ३ + ५
शीर्षक – अठे लालंनसाह परदेससुं घरां आया दूतीरी वार्त्ता मेंनां कहे सो भाव ।

पृष्ठ ५० – चित्र सं० ३७ परिमाण – ३½ + ५
शीर्षक – अठे दूतीने बुलाय माथो मूंड कालो मूंडो कर गधे चढ़ायनै काढ़ी सो भाव ।

पृष्ठ ५२ – चित्र सं० ३८ परिमाण – २½'३ + ३'३ पो.
शीर्षक – अठे कोयलैं कोयलनैं परी काढी सो भाव ।

पृष्ठ ५२ – चित्र सं० ३९ परिमाग – २½'३ + ३
शीर्षक – अठे सुवटासुं कोयल घरवो करै सो भाव ।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० ४० परिमाण – ३½ + ५'२ पो.
शीर्षक – अठे कोयलै सव पंछीयां कंनै कोयलरी पुकार करी । सब पंछी भेला होय सुवटा उपर कोप कर चढै सो भाव ।

पृष्ठ ५६ – चित्र सं० ४१ परिमाण – ४ + ५'३ पो. (नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक – अठे मधु मालती जेतमाल वाडीमे वेठा । रांणीरी दासी षवर देणने आई सो भाव ।

पृष्ठ ५६ – चित्र सं० ४२ परिमाण – ३ + ५'२ पो. (नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक – अठे चंद कंवर वागमें आय वेठो । मूढा आगे मालंण हाथ जोडने उभी सो भाव ।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० ४३ परिमाण – ३½ + ५'२ पो.
शीर्षक – अठे चंद कंवर रुपरेषा परसपर द्रिष्टसुं मिल्या माहो-माह रुप देष मुरछांणा सो भाव ।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० ४४ परिमाण – ३ + ५
शीर्षक – अठे चंद कंवर रुपरेषा आलिगंन कर संभोग सुष विलास करें सो भाव ।

पृष्ठ ५८ — चित्र संख्या ४५ परिमाण — ३½+५
शीर्षक — अठे चंद कंवर रुपरेषासुं भोग करतां कवांणसुं सिंघनै मारयौ सो भाव।

पृष्ठ ५९ — चित्र सं० ४६ परिमाण — ३½+५'३ पो.
शीर्षक — अठे श्रीसिवपारवतीरो पूजंन मालती करे सो भाव।

पृष्ठ ६० — चित्र सं० ४७ परिमाण — २½+५'३ पो.
शीर्षक — अठे मधु एक गिलोलसुं रुंपरा पत्र सारा झाडिया मालतीने प्रतीत दिषाई सो भाव।

पृष्ठ ६१ — चित्र सं० ४८ परिमाण — ४+५
शीर्षक — अठे मधु राजारा ऐकसो पालांसुं लडाई करे सो भाव।

पृष्ठ ६१ — चित्र सं० ४९ परिमाण — २+५ (प्रान्त्य एवं अधिकांश त्रुटित)
शीर्षक — अठे राजा चंद्रसैंणरा सूंढा आगै पाला राडमैंसुं भागने आया सो भाव।

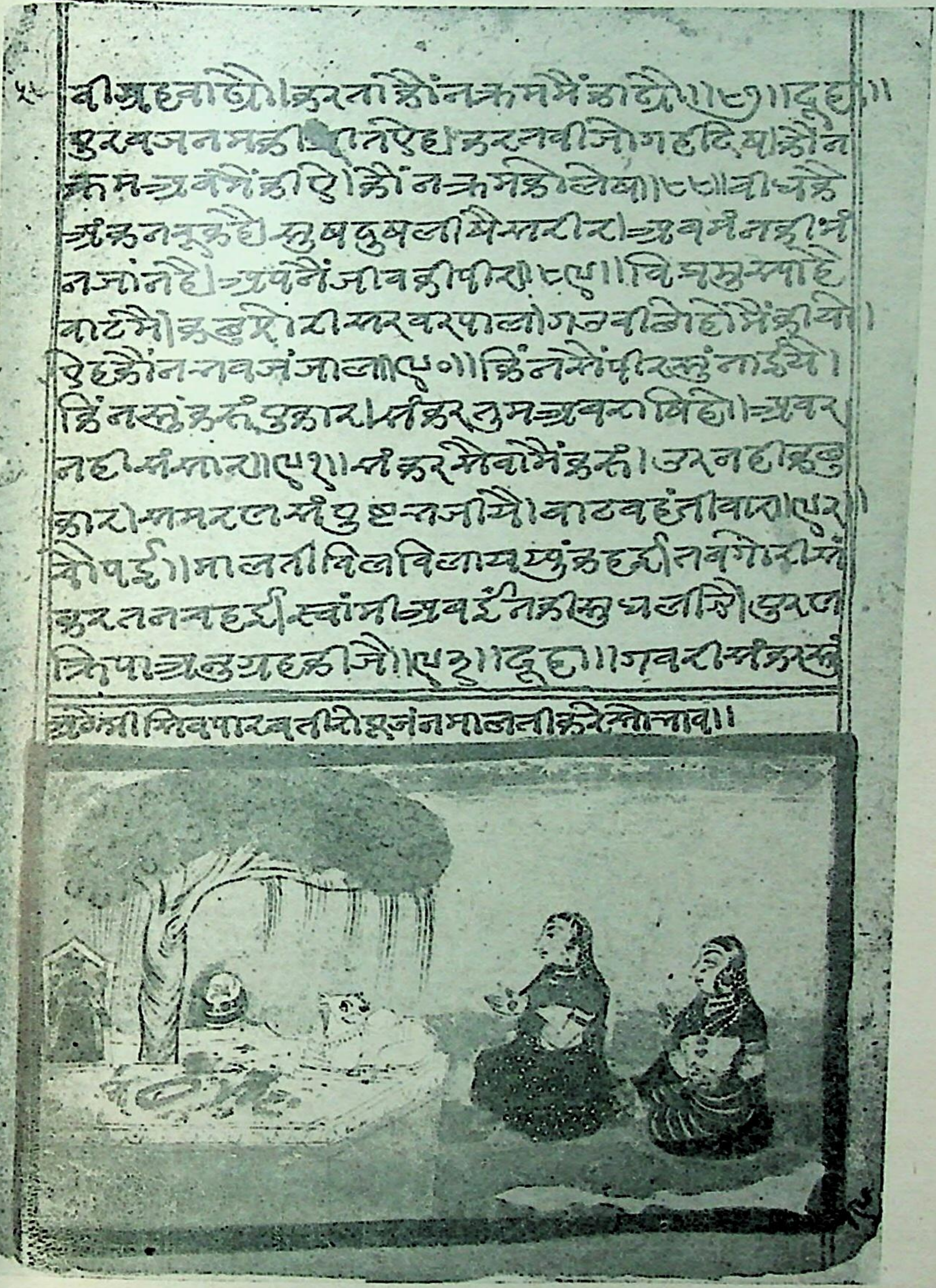
पृष्ठ ६१ — चित्र सं० ५० परिमाण — ३+५
शीर्षक — अठे मधु मालती बेठा जेतमाल मधुनै भंवर आराधंण रो कहै सो भाव।

पृष्ठ ६३ — चित्र सं० ५१ परिमाण — ३+५'३ पो.
शीर्षक — अठे राजारा सूंढा आगै दूजी लडाईरी घायल आयनै पूकार करै सो भाव।

पृष्ठ ६५ — चित्र सं० ५२ परिमाण — ३½'३+५'२ पो. (बीच में फटा हुआ)
शीर्षक — अठे राजारी पांच सहसर फोजसुं भमर जुद्ध करे सो भाव।

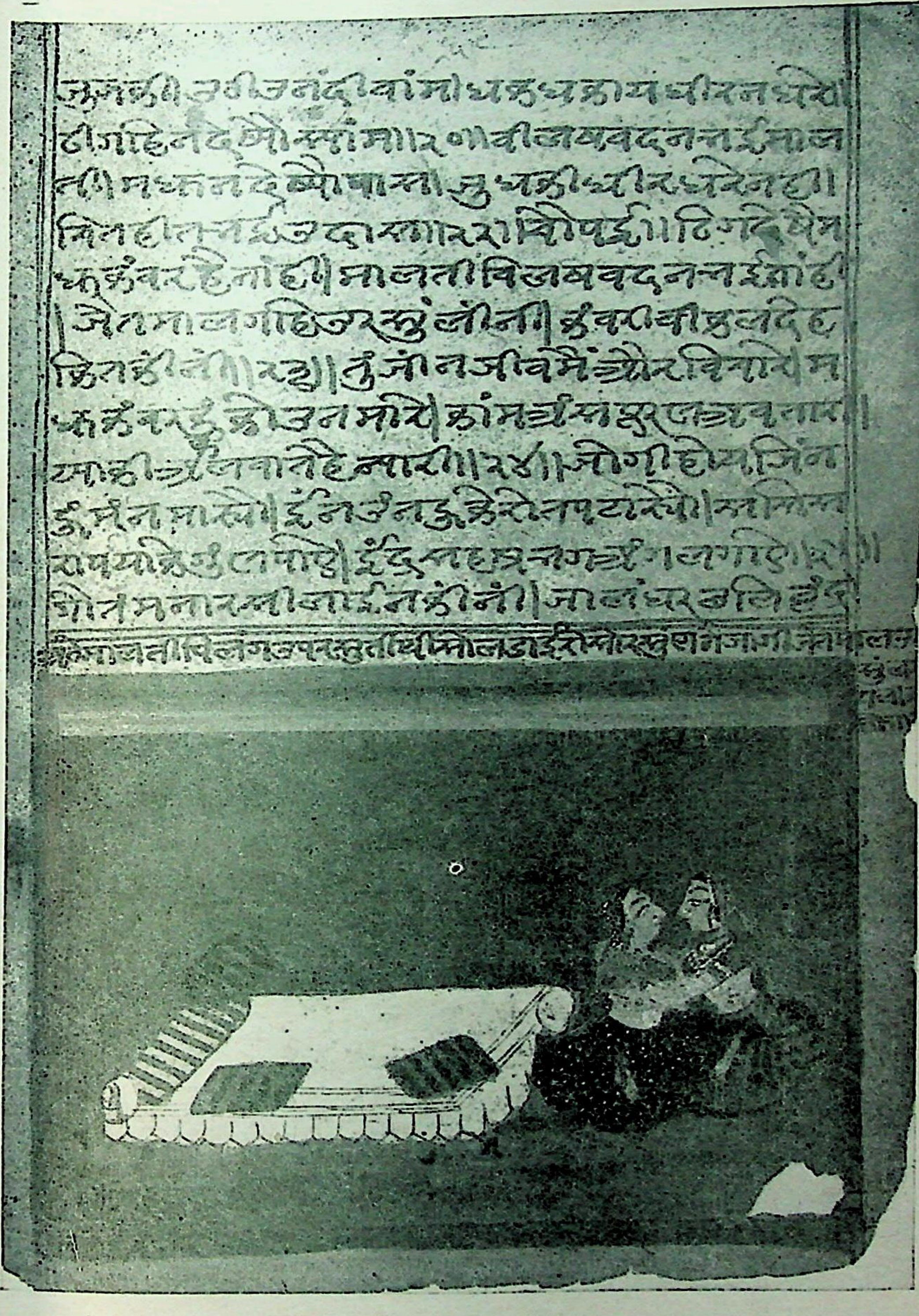
पृष्ठ ७५ — चित्र सं० ५३ परिमाण — ३'३+३½ १ पो. (फटा हुआ)
शीर्षक — अठे राजा कंने भमर लडाईरी घायल पूकार करे सो भाव।

पृष्ठ ६६ — चित्र सं० ५४ परिमाण — ३½'२+५'३ पो.
शीर्षक — अठे मधु मालती जेतमाल वाडीमैं बेठा तठे राजारो दूत संवाद करे सो भाव।



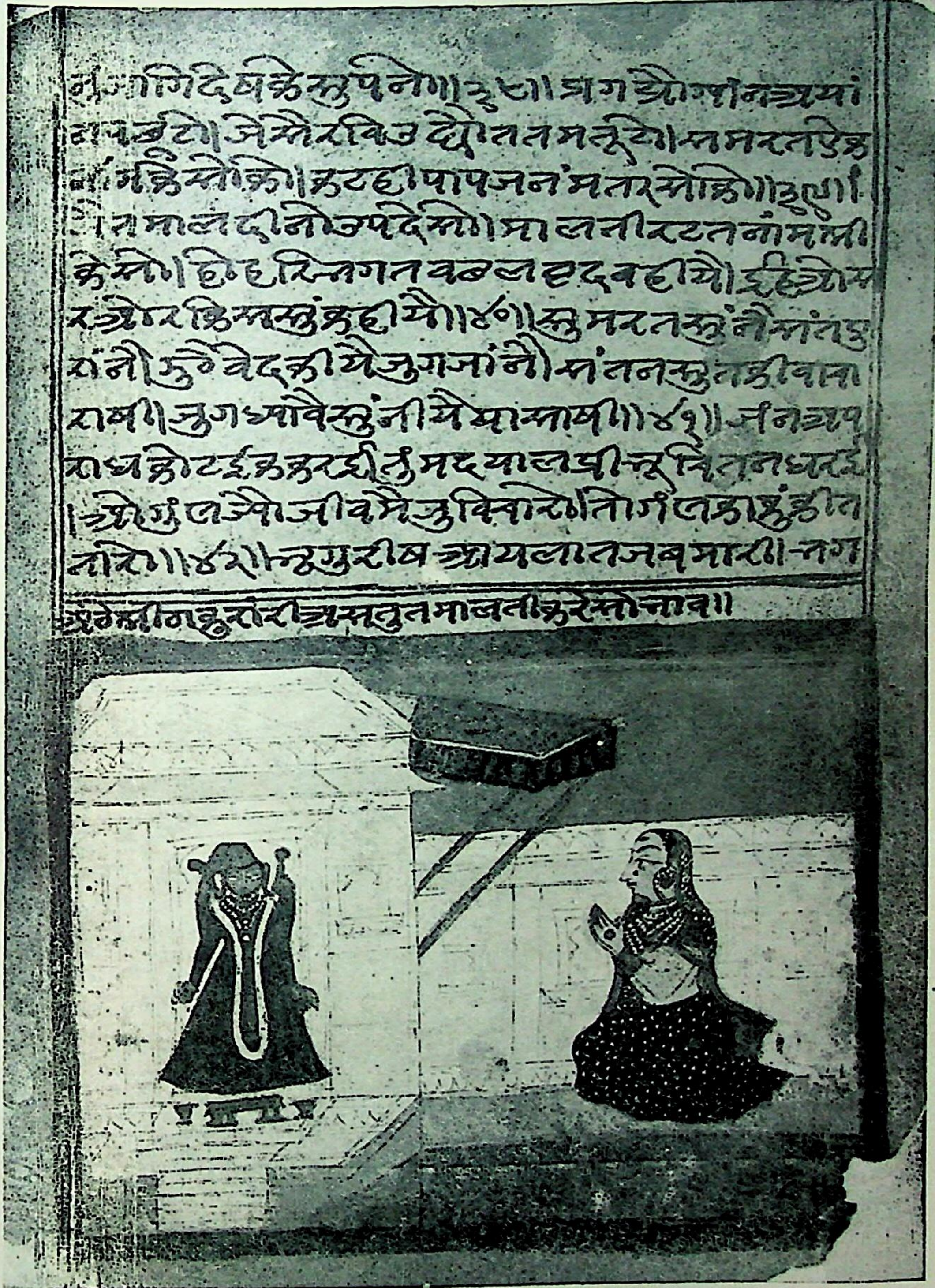
प्रतिक्रमाङ्क–९२७२; चित्रसंख्या–४६; सूचीपत्राङ्क–१०२

अठे श्रीसिव-पारबतीरो पूजंन मालती करे सो भाव ।



प्रतिक्रमाङ्क–६२७२; चित्रसंख्या–५७; सूचीपत्राङ्क–१०३

अठे मालती पिलंग उपर सुती थी सो लड़ाईरो सोर सुंणने जागी, जेतमाल उरसुं लगाय लीनी सो भाव ।



प्रतिक्रमाङ्क–६२७२; चित्रसंख्या–५८; सूचीपत्राङ्क–१०३

अठे श्रीठाकुरांरी असतुत (स्तुति) मालती करे सो भाव।

पृष्ठ ६७ – चित्र संख्या ५५ परिमाण – ३ + ३½
शीर्षक – अठे राजा कंनै दूत मधु मालतीरी वार्त्ता कहै सो भाव।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० ५६ परिमाण – ५ + ५'३ पो.
शीर्षक – अठे राजा चंद्रसैंण फोज लेनैं मधु उपर कोप करने चढ़ीया सो भाव।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० ५७ परिमाण – ४ + ५'३ पो. (फटा हुआ)
शीर्षक – अठे मालती पिलंग उपर सुतीथी सो लडाईरो सोर सुंणनै जागी जेतमाल उरसुं लगाय लीनी सो भाव।

पृष्ठ ७० – चित्र सं० ५८ परिमाण – ४ + ५'३ पो.
शीर्षक – अठे श्रीठाकुरांरी असतुत मालती करे सो भाव।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० ५९ परिमाण – ४ + ५½ (नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक – अठे राजा चंद्रसैंण पैत छोड फोज समेत वंनमैं आय उभो सो भाव।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० ६० परिमाण – ३'२ + ५'३ पो. (नीचे से फटा हुआ)
शीर्षक – अठे राजा आपरा मंत्रीयां प्रधानांसुं मसलत सला करै सो भाव।

पृष्ठ ७८ – चित्र सं० ६१ परिमाण – ३'३ + ५'३ पो.
शीर्षक – अठे बंबी सर्परे नैं उरगांनारे संवाद वार्त्ता हूवै सो भाव।

पृष्ठ ७९ – चित्र सं० ६२ परिमाण – ३ + ५½
शीर्षक – अठे राजा सूतो मंत्री घोडो पकडीयां कंनै बेठो उदर सर्प बंबी सर्प संवाद सो भाव।

पृष्ठ ७९ – चित्र सं० ६३ परिमाण – ३'२ + ५½
शीर्षक – अठे राजानैं मंत्री चुंनाराईरो ओषद कटोरामैं भरनैं पावै सो भाव।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० ६४ परिमाण – ३ + ५½
शीर्षक – अठे राजा हरीदतरा मंत्री सर्परी बंबीमैं तेल नाष माल सारो षोद ले जावै सो भाव।

पृष्ठ ८१ – चित्र संख्या ६५ परिमाण – ३½'३ + ३'४ पो.
शीर्षक – अठे सर्पनै उरगांनो दूध पावै सो भाव।

पृष्ठ ८२ – चित्र सं० ६६ परिमाण – ३½ + ५'४ पो.
शीर्षक – अठे उरगांनो लरिकानै साथै लेनै सर्पनै दूध पावण
आयो सो भाव।

पृष्ठ ८३ – चित्र सं० ६७ परिमाण – ३'२ + ५'४ पो.
शीर्षक – अठे उरगांनारै बेटेनुं सर्प डस्यौ कंनै दुध कटोर
डिंगो परचौ सो भाव।

पृष्ठ ८३ – चित्र सं० ६८ परिमाण – ३'२ + ३½
शीर्षक – अठे उरगानो अस्त्रीने बेटानुं सर्प डस्यांरो कहै
सो भाव।

पृष्ठ ८५ – चित्र सं० ६९ परिमाण – ५ + ३½ (चित्र नीचे एवं बगल से फटा है
शीर्षक – अठे राजा चंद्रसेण रांणी कनकमाल मेहलांमैं बेठ
वार्त्ता करै सो भाव।

पृष्ठ ८६ – चित्र सं० ७० परिमाण – ३½ + ५'२ पो.
शीर्षक – अठे श्रीरांमचंद्रजी सीतांजी लछमंणजी हनुंमांनजी
लंका फते कर श्रीअंजणीमाता कंने आया सो भाव।

प्रसङ्गसूची –

१ – लीलावती - राज्यवर्णन – पृष्ठ १ – ८

(१) मधु - मालती - जन्म (२) रामसरोवरशोभा - वर्णन,
(३) मधु - मालती का गुरु - गृह में पठन तथा उनकी
प्रणय - वार्ता का समारम्भ।

२ – मृग - सिंहिनी की प्रणय - कथा – पृष्ठ ८ – १९

(१) मृगोदित काकोलूक - प्रसङ्ग (२) काक - कथित-
टिट्टिभ - प्रसङ्ग (३) मृग - सिंहिनी - संवाद (४) मधु
तथा मालती का वार्तालाप।

३ – मालती-कथित करण-पद्मावती-प्रसङ्ग – पृष्ठ १९ – २६
(१) मधु-मालती-संलाप तथा उनका गुरु-गृह से स्वस्वगृहागमन।

४ – रामसरोवर-प्रसङ्ग – पृष्ठ २६ – ३०
(१) मधु का वनभ्रमण (२) मालती का भृंगी तथा चकवी से संवाद।

५ – जैतमाल-प्रसङ्ग – पृष्ठ ३० – ४२
(१) मालती-जैतमाल का वार्तालाप (२) मधु-जैतमाल-संवाद (३) जैतमाल द्वारा कथित कामदहन-प्रसङ्ग से मालती को अपने पूर्वभव का आभास होना (४) मालती के अपूर्व सौन्दर्य का वर्णन (५) मधु के साथ जैतमाल तथा मालती का संलाप।

६ – लालनसाह की पत्नी मैना के सतीत्व का आख्यान – पृष्ठ ४३ – ५०
(१) मधु-मालती का संवाद।

७ – शुक-पिकी (कोयल) की प्रेमकथा – पृष्ठ ५१ – ५३

८ – चन्दकुमार-रूपरेखा का प्रणयाख्यान – पृष्ठ ५६ – ५९
(१) मधु-मालती-संलाप।

९ – मधुकुमार का राजा चन्द्रसेन की सेना से युद्ध – पृष्ठ ६० – ७३
(१) भ्रमर-युद्ध, मधु-राजदूत-संलाप (२) राजा चन्द्रसेन द्वारा मधु पर चढ़ाई (३) जैतमाल द्वारा मालती को धैर्य-बन्धन (४) चन्द्रसेन की अपने मंत्रि-गण से मंत्रणा।

१० – मंत्री तारणसाह द्वारा कथित उरगाना तथा सर्पका आख्यान – पृष्ठ ७६ – ८३
(१) उरगाना की स्त्री द्वारा उरगाना एवं सर्पका राजा अमरसेन के सम्मुख रहस्योद्घाटन।

११ – राजा चन्द्रसेन-रानी कनकमाल का वार्तालाप – पृष्ठ ८५ – ८६
(१) हनुमान्-अञ्जनी का संवाद।

★

७. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क—१०२५८

कर्त्ता—चतुर्भुजदास, लेखन समय-१८ वीं शताब्दी (वि०)

आकार—पत्राकार (जिल्दबंध गुटका) माप(साइज)-९½ + ८'३ पोइन्ट

पृष्ठसंख्या—६३, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति १६, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २४-२६।

पुस्तकदशा—ठीक नहीं है, पृष्ठों के प्रांत्य तथा बीच में कई पन्ने भी फटे एवं त्रुटित हैं।

पुस्तक का प्रारम्भ

॥ ९० ॥ श्रीसारदाय नमः ॥ श्री गवरीनंदायनमः ॥ ९० ॥

॥ अथ श्रीमधुमालतीरी वारता लिष्यतिं ॥ बुद्धि अनुसारे तुं ॥

॥ दुहा ॥ सरसतीसुं प्रणमी करी, गनपति चरण पपाल ।
चोपइ ईह मधुमालती, सुंनतां टले जंजाल ॥ १ ॥

॥ चोपइ ॥ वर विरंचतनया वर पाउँ । संकरसुत गनपत सिर नाउँ ॥
चातुर हित ..... रिझाउँ । सरस मालती-मनोहर गाउँ ॥ २ ॥
लीलावती ललित इक देसा । चंद्रसेन तहां सुघड नरेसा ॥
सुभग धाम धुज्ज गगन प्रवेसा । मानुं मंडप रच्यो महिसा ॥ ३ ॥
वसहि नयर पुर जोजन च्यार । चोरासी चोहटां विस्तार ॥
अति विचत्र दीसे नर नार । मानु तिलक नर भुवन मझार ॥ ४ ॥
करेहि सेव नृपकुल छतीस । चढे सहस दश नांवे सीस ॥
अति मेमंत कुंजर कर चीसा । चंद्रसेन नृप हे सब इसा ॥ ५ ॥

॥ दूहरा सोरठा ॥ हेंदल अंत न पार, कुंजर कारे मेघ ज्यु ।
कुली छतीस हजार, चढे लार नृप चंदके ॥ ६ ॥

॥ चोपइ ॥ मन्त्री बुध प्राक्रम तांम । तारणसाह तासके नांम ॥
निसदन सांम धर्मसु कांम । नृपत न तजे घरी पल जाम ॥ ७ ॥
नृपके गेह अंतेउर च्यार । संतत एक मालती कुमार ॥
वरनु कहा हे रूप अपार । मांनुं उरवसी लीयो अवतार ॥ ८ ॥
उपमा कउन पटंतर लहुं । गुंन अनेक छिब पार न लहुं ॥
दिन दिन रूप अनोपम चढे । एसी नांहिं विधाता घडे ॥ ९ ॥
गज कपोत हरी बिंब प्रवाल । भृंगी मधुकर मीन मराल ॥
कदली कनक कीर पक सोय । ए सब सोभा तनकी होय ॥ १० ॥

ज्या देष्यां चित चले महिसा । देषत धरणी डारे सेसा ॥
सुर भुलै जीय धरे अंदेसा । वासी भूलो डोले महेसा ॥ ११ ॥
राजलोक वरनन का कहुं । थोरीसी मंत्रीकी लहुं ॥
थोरे मांझ वहोत रस होउं । अत लावन जन राचो कोउ ॥ १२ ॥
तारनसाह सुघर गुनसार । त्रीया पंच अरु एक कुंवार ॥
ताको नाम मनोहर धरचो । मांनु कांम तेज ले अवतरचो ॥ १३ ॥
मधु मधु कही षेलावे तात । वाढइ कला मनु निजगात ॥
घरी दिवस पष मासे उर । ज्यो वसंत किसले दलकोर ॥ १४ ॥
भयो वरस दश द्वै के संध । देषत त्रीया हुइ कामंध ॥
तन मन धन सुधि विसरी गेह । भृंगी भइ मनु गत तेह ॥ १५ ॥
जित तित कुंमर करे कहु सेल । ढोरी फिरे त्रीया भिहुं गेल ॥
कवहूक रामसरोवर जाय । भृंगी जूथ मनू चाह भुलाय ॥ १६ ॥

पुस्तक के अन्त में—

॥राजावचनं॥ प्राणंतर ढिग कांम वतायो । एतो भेद सवे सुन पायो ॥
जोति सरुप सवे जुग कहीए । लिपे न छिपे न न्यारो रहीए ॥ २५ ॥
जांने नही न कोउ दरसे । सहू संसार सरगही फरसे ॥
इह समझाय कहो मो आगे । तो मो मनको संसो भागे ॥ २६ ॥

॥ मधुवाच ॥ ससी उद्योत सरग ही जांने । इहां जलकुंभ सहस भर आंने ॥
सवहीमि प्रतिविंव प्रकासे । यो प्रभू जोत पिंडमि भ्यासे ॥ २७ ॥
उत देषीइ तो एक ही इंदा । घट देषे तो सहसक चंदा ॥
लिपे न छिपे न सब जुग जापइ । अलप निरंजन आप ही आपे ॥२८॥
हम ही कांम अंश अवतारी । एक हे नेकी कछु कछु न्यारी ॥
समझ होय सो समझे जांने । अणसमझे कछु अकथ कहांने ॥ २९ ॥

इति कांमनिवास जोतिसरूपचरित-संवाद संपूर्ण ॥

॥कविस्वरोवाच॥दूहरा॥ कायथ निंगम कुल इह, नाथा सुत अभीरांम ।
तनय भुजचत्र तासके, कथा प्रकासी तांम ॥ ३० ॥
अलपवुधी अनाद एह, कांम प्रबंध प्रकास ।
कवियन सुंन कर जोरके, कहत चतुरभुजदास ॥ ३१ ॥

वनसपती में अंबफल, रस माहि रससंत ।
कथा मध्य मधुमालती, ज्युं अमृत मझ वार ॥ ३२ ॥

॥ चोपइ ॥ राजनीतकी यामिं साषी । पंचाष्यान बूध इह भाषी ॥
चरनाई चातुरी बनाइ । थोरी थोरी सब ही ल्याइ ॥ ३३ ॥
फुनिं वसंतराज रस गायो । ज्यामिं इश्वर कांम दझायो ॥
....इह लीला विसतारी । रचिक नर सन श्रवन सुपकारी ॥ ३४ ॥
रचिक होय नव रसकु चाहे । अध्यातम आतम अवगाहे ॥
चातुर पूरुष होय हे जोउ । इह रस कला समझ हे सोउ ॥ ३५ ॥

॥ श्लोका ॥ कामार्थी लभ्यते कांमं निर्धनी लभ्यते धनं ॥
अपूत्रो लभ्यते पूत्रं व्याधि तस्य न पीडति ॥ ३६ ॥

॥ चोपइ ॥ कामारथी काम रस साधे । निरधनके बहु धन वाधे ॥
पूत्रहीन सो सूता पावे । व्याध तणी पीडा टल जावे ॥ ३७ ॥
कृष्णदेवको कुंअर कहावे । प्रदूमन कांम अंस मधु गावे ॥
पूत्र कलत्र सबे सूष पावे । दूष दालिद नेरो नही आवे ॥ ३८ ॥

॥ दूहरा ॥ राजा पढे तो राज गत, मंत्री पढे तो बूध ।
कांमी कांम विलासके, ग्यांनी ग्यांन स सुध ॥ ३९ ॥
संपूरन मधूमालती, सकल कथा संपूर ।
श्रोता वकता सबनकु, सुषदायक दूष दूर ॥ ४० ॥

इति मधुमालती कथा संपूरणं ॥ श्रीकल्यांणमस्तुं ॥

टिप्पणी—इस प्रति के प्रत्येक पत्र के दोनों ओर (दाँए, बाँए) हांसियों के मध्यभाग में तरह तरह के वेलबूंटे अङ्कित हैं। ग्रन्थगत लेखभूमि के दाईं बांई ओर लाल रंग की तीन २ रेखाएँ खिंची हुई हैं। प्रबन्ध (प्रकरण) काली स्याही से तथा सन्दर्भ (दोहा, चौपाई सोरठा आदि) एवं पद्याङ्क लाल स्याही से लिखित है। यत्र तत्र दोहा एवं श्लोक का प्रकरण भी लाल स्याही से लिखा हुआ है। अक्षर स्थूल एवं सुन्दर हैं। पुस्तक के प्रकरण को देखने से यह प्रतीत होता है कि प्रति के अनुमानतः ८, ९ पृष्ठ नष्ट हो चुके हैं और विद्यमान पृष्ठों को भी कहीं कहीं उलट-पुलट कर जिल्द में जोड़ दिया गया है, परिणाम स्वरूप पुस्तक त्रुटित तथा तद्गत प्रकरण असम्बद्ध हो गया है। पुस्तक के आजू बाजू के प्रांत्य एवं मध्य भाग के कट-फट जाने से उन पर



प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–२; सूचीपत्राङ्क–१०६
मंत्री तारनसाह अपनी पांच पत्नियों के साथ बैठे हैं और कुमार मधु खड़ा है।



प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–३; सूत्रीपत्राङ्क–१०६

मधु गुरु से पढ़ता है। राजा मंत्री से बात कर रहे हैं।

अङ्कित वेलबूंटे आदि तो अर्द्धनाश को प्राप्त हुए ही हैं, पुस्तक की सुन्दरता को भी भारी क्षति पहुंची है तथा पत्राङ्क तो कहीं पर भी दृष्टि गत नहीं होते हैं।

इस पुस्तक में सचित्र पृष्ठों की संख्या ४२ है तथा चित्रों की संख्या ५५ है। १० चित्रों को छोड़ कर अवशिष्ट चित्र प्रायः बड़े तथा स्वल्पान्तर-परिमाण के हैं। चित्रण में साधारण रंगों तथा साधारण कलम का ही उपयोग किया गया है। चित्रों के चेहरे बनाने में किशनगढ-शैली और उनकी वेशभूषा के निर्माण में जोधपुर तथा जैसलमेर की शैली का आश्रय लिया गया है। चित्रों के बोर्डर चारों ओर से लाल रंग से रंजित हैं तथा चित्र भूमि काली रेखा से वेष्टित है।

सारांशतः चित्र साधारण सुन्दर हैं। किसी भी चित्र पर शीर्षलेख लिखा हुआ नहीं है। अतः यहाँ पर बोर्डर के साथ लिये गये परिमाग एवं प्रसङ्गोपात्त परिचय के साथ चित्रों की सूची निम्नाङ्कित रूप में प्रस्तुत की जा रही है।

चित्रसूची –

पृष्ठ १ – चित्र संख्या १ परिमाण – $६\frac{१}{२}$ + $६\frac{१}{२}$

परिचय – **प्रासाद एवं नगर पथ का दृश्य है। उस पथ से घोड़े पर चढ़ा हुआ राजा गुजर रहा है और उसके पीछे दो सिपाही जा रहे हैं। राजा के सामने दो मनुष्य खड़े होकर अपनी कुछ पुकार (अर्ज़) कर रहे हैं।**

पृष्ठ २ – चित्र सं० २ परिमाग – $२\frac{१}{२}$'२ + ६'३ पोइन्ट

परिचय – **मंत्री तारनसाह अपनी ५ पत्नियों के साथ बैठे हैं और कुमार मधु खड़ा है।**

पृष्ठ ३ – चित्र सं० ३ परिमाण – $२\frac{१}{२}$'२ + ६'३ पो.

परिचय – **मधु गुरु से पढ़ता है। राजा मंत्री से बात कर रहे हैं।**

पृष्ठ ३ – चित्र सं० ४ परिमाण – ३'२ + ३'२ पो.

परिचय – **राजा रानी बात कर रहा है।**

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ५ परिमाण – ३'३ + ६'२ पो.

परिचय – **मालती गुरु के पास पढ़ रही है।**

पृष्ठ ५ – चित्र सं० ६ परिमाण – २'२ + ४'२ पो.

परिचय – **मधु-मालती पढ़ रहे हैं, और परस्पर निहार रहे हैं।**

पृष्ठ ५ — चित्र संख्या ७ परिमाण — २½'१ + २
परिचय — आम्रवृक्ष पर सूवा बैठा है।

पृष्ठ ६ — चित्र सं० ८ परिमाण — २½ + ६'४ पो.
परिचय — सागर के तट पर टीटोड़ा-टीटोड़ी ने अंडे धरे हैं।

पृष्ठ ७ — चित्र सं० ९ परिमाण — २½ + २½ १ पो. (चित्रका मध्य भाग त्रुटित है)
परिचय — राजा सर्पों को मार रहा है।

पृष्ठ ७ — चित्र सं० १० परिमाण — २½ + ६'४ पो.
परिचय — टीटोड़ा को साथ लेकर गरुड़ सागर के पास गया है। वहाँ ब्राह्मण-रूपधारी सागर उसे टिट्टिभ के अंडो के साथ एक हार भी प्रदान कर रहा है।

पृष्ठ ८ — चित्र सं० ११ परिमाण — २'४ + ६'४ पो.
परिचय — घूघू-काक-युद्ध।

पृष्ठ ८ — चित्र सं० १२ परिमाण — १½ + ६'४ पो.
परिचय — कौए एकत्रित हो कर मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ९ — चित्र सं० १३ परिमाण — ३ + ६'४ पो. (चित्र बीच से त्रुटित है)
परिचय — समुद्रतट पर स्थित वृक्षों पर बैठे हुए हंसों को वधिक (वहेलिया) पकड़ रहा है।

पृष्ठ ९ — चित्र सं० १४ परिमाण — २½ + ६'२ पो.
परिचय — मेघवरण एवं काक-पक्षी बैठे हैं।

पृष्ठ १० — चित्र सं० १५ परिमाण — २'४ + ३'४ पो.
परिचय — कौए उलूकों को गुफा में डाल कर जला रहे हैं।

पृष्ठ ११ — चित्रसं० १६ परिमाण — २'४ + ६'४ पो.
परिचय — सिंहिनी और मृग एक साथ बैठे हैं।

पृष्ठ १२ — चित्र सं० १७ परिमाण — २'४ + ६'३ पो.
परिचय — सिंह के चरणों में सिंहिनी अपना शिर रख रही है। मधु, मालती देख रहे हैं।

पृष्ठ १५ — चित्र सं० १८ परिमाण — ३ + ६½
परिचय — जेतमाल और मधु बैठे हैं।



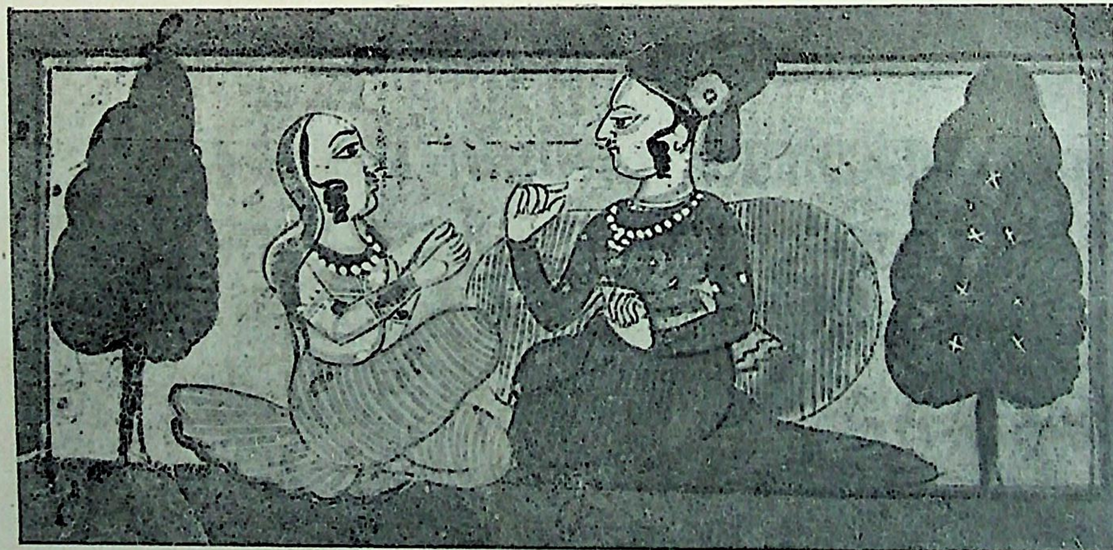
प्रतिक्रमाङ्क-१०२५८; चित्रसंख्या-१६; सूचीपत्राङ्क-११०

सिंहिनी और मृग एक साथ बैठे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–१७; सूचीपत्राङ्क–११०

हरिण के रक्षणार्थ सिंहिनी सिंह के चरणों में अपना शिर रख रही है। मधु-मालती देख रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क-१०२५८; चित्रसंख्या १८; सूचीपत्राङ्क-११०

जैंतमाल और मधु बैठे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–१६; सूचीपत्राङ्क–१११

मधु, मालती और जैतमाल बैठे बात कर रहे हैं ।



प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–२५; सूचीपत्राङ्क–१११
पद्मावती-करण का प्रेमालिङ्गन।

पृष्ठ १६ – चित्र संख्या १९ परिमाण – ३½'२ + ६'३ पो.
परिचय – मधु, मालती और जेतमाल बैठे बात कर रहे हैं।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० २० परिमाण – ५½ + ६'३ पो.
शीर्षक – रांमसरोवर के तीर पर मधु मालती को व्याह धांम हुवै छे।

पृष्ठ २० – चित्र सं० २१ परिमाण – ३'२ + ६'३ पो.
परिचय – सिंह ने मृग को मार डाला, सिंहिनी बैठी देख रही है।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० २२ परिमाण – २'२ + ६'३ पो.
परिचय – पद्मावती अपनी दासी से कह रही है कि मैं करण के साथ व्याह करूंगी और दासी उसका यह संदेश उसके पिता राजा सूरसेन को कह रही है।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० २३ परिमाण – ४½ + ४'१ पो.
परिचय – पद्मावती का पिता अपनी रानी एवं परिवार के साथ मंत्रणा कर रहा है।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० २४ परिमाण – ४'२ + ३½ २ पो. (चित्र का बांई ओर का हिस्सा लम्बाई में करीब १ इंच कम है)
परिचय – राजा-रानी बात कर रहे हैं और नीचे दरवाजे पर दासी खड़ी है।

पृष्ठ २३ – चित्र सं० २५ परिमाण – ३½'२ + ६'४ पो.
परिचय – पद्मावती एवं करण के भोगविलास का अश्लील नग्न-चित्र तथा प्रेमालिङ्गन-चित्र है।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० २६ परिमाण – ६½'२ + ६½ ३ पो.
परिचय – पनिहारियां रामसरोवर पर पानी भर रही हैं, और मधु गिलोल से पक्षियों का शिकार कर रहा है।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० २७ परिमाण – ३½'२ + ६'३ पो.
परिचय – दूती मालती को यह खबर दे रही है कि मधु रामसरोवर पर आया हुआ है।

पृष्ठ ३१ – चित्र संख्या २८ परिमाण – ४'२ + ६'३ (चित्र का दाईं ओर का ऊपरी भाग करीब २ इंच अधिक है)

परिचय – मधु - मालती कुंज की वहार ले रहे हैं, एक तरफ से आती हुई फौज को देख कर मालती दौड़ कर मधु के कंठ से लिपट गई है।

पृष्ठ ३२ – चित्र सं० २९ परिमाण – ३'३ + ६'४ पो. (चित्र के बांई ओर का १ इंच का ऊपरी हिस्सा करीब ४ पोइन्ट कम है)

परिचय – युद्ध में बचे हुए दो तीन मनुष्य राजा को यह खबर दे रहे हैं कि सारी सेना भँवरों द्वारा खाई जा चुकी है। राजा यह सुन-कर मुख में अंगुली डाल रहा है।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ३० परिमाण – ४ + ६'४ पो.

परिचय – राजा अपने चार दूतों को कुछ संकेत दे रहा है।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ३१ परिमाण – ७ + ६'४ पो.

परिचय – फोज (कटक) का दृश्य।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ३२ परिमाण – ८ + ६'४ पो.

परिचय – रामसरोवर बाग का सुन्दर दृश्य है। बाग के बाहर सड़क पर १ हाथीसवार १ ऊंटसवार, और दो घुड़सवार खड़े हैं। जेतमाल, मालती और मधु बाग में होली खेल रहे हैं।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ३३ परिमाण – ३'४ + ६'४ पो.

परिचय – क्रुद्ध हुआ राजा दूतों को रामसरोवर को चारों ओर से घेर लेने की आज्ञा दे रहा है।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ३४ परिमाण – ८ + ६'५ पो. (चित्र बीचमें से कट गया है)

परिचय – मधु फौज से रामसरोवर बाग में अकेला ही लड़ रहा है।

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ३५ परिमाण – २'१ + ५½ ३ पो.

परिचय – जैतमाल यदुवंश की कथा सुना कर मालती को धीरज बंधाती हुई उसे पूर्वभव का स्मरण दिला रही है।

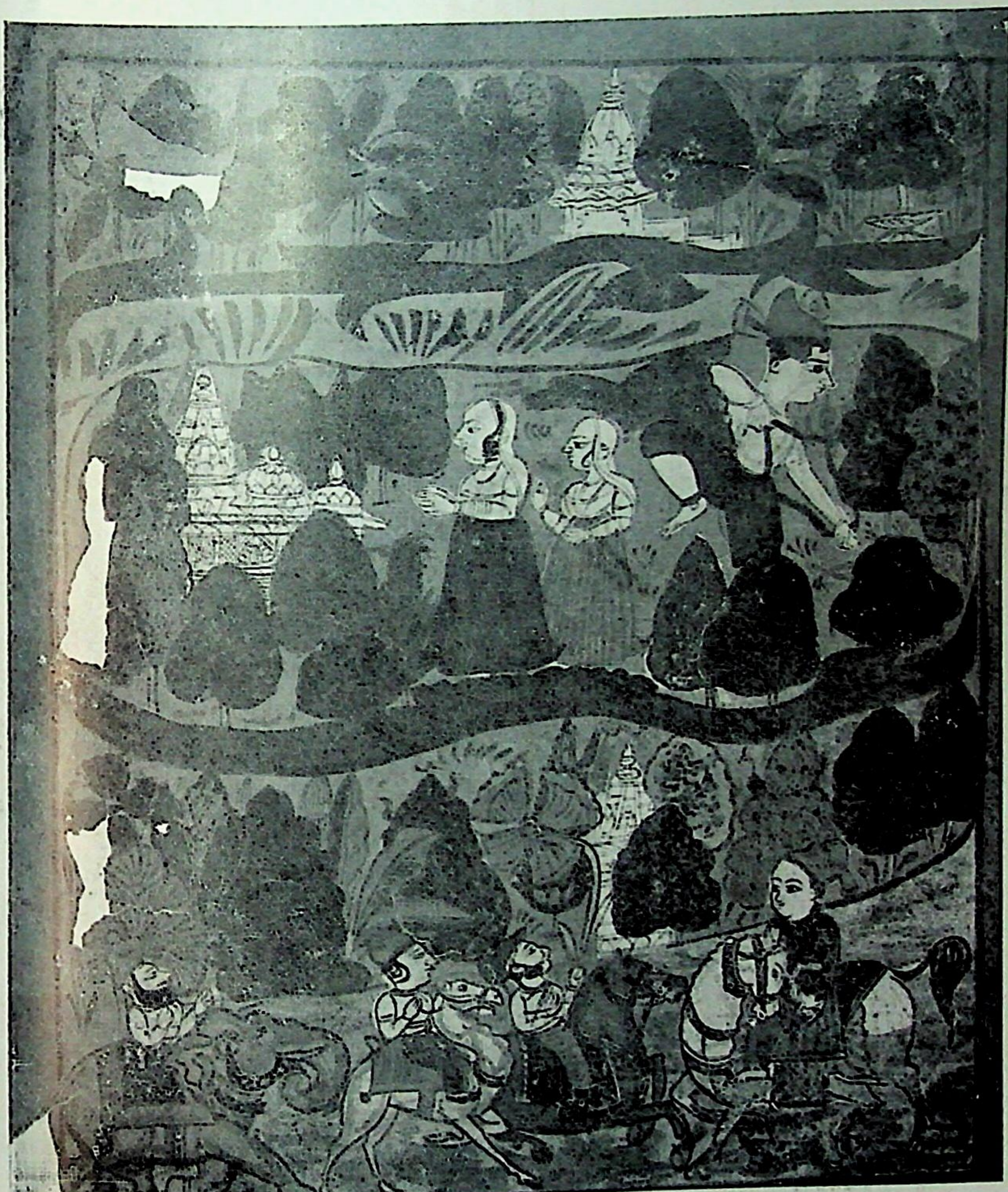


प्रतिक्रमाङ्क-१०२५८; चित्रसंख्या-२८; सूचीपत्राङ्क-११२

एक तरफ से आती हुई फौज को देख मालती दौड़ कर मधु के गले लग रही है।



प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–३०; सूचीपत्राङ्क–११२
राजा अपने दूतों को कुछ संकेत दे रहा है।



प्रतिक्रमाङ्क-१०२५८; चित्रसंख्या-३२; सूचीपत्राङ्क-११२
रामसरोवर बाग का सुन्दर दृश्य ।

पृष्ठ ४० — चित्र संख्या ३६ परिमाण — ३'१ + ४'४ पो.
परिचय — राजा चंद्रसेन-मंत्री तारणसाह बैठे मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ४२ — चित्र सं० ३७ परिमाण — २½'३ + ६'२ पो.
परिचय — राजा चंद्र-मंत्री तारण मंत्रणा कर रहे हैं। एक सेवक (सिपाही) राजा के पीछे खड़ा हैं।

पृष्ठ ४३ — चित्र सं० ३८ परिमाण — ३½'३ + ६'३ पो.
परिचय — मधु-मालती का गांधर्व-विवाह हो रहा है। यह खबर बाग का माली राजा को दे रहा है। ये दोनों भाव चित्र में दिखलाए गये हैं।

पृष्ठ ४३ — चित्र सं० ३९ परिमाण — ४'३ + ६'२ पों. (बांई ओर का २½ इंच का ऊपरी भाग ४ पो. कम लंबा है, चित्र का पन्ना कटा हुआ है)
परिचय — रानी कनकमाल दूती को कह रही है कि मधु-मालती को जाकर कहो — वे इस देश एवं स्थान को छोड़ दें, अन्यथा राजा से प्राणहानि होने का भय है। मधु-मालती बैठे हैं।

पृष्ठ ४४ — चित्र सं० ४० परिमाण — ४ + ६'४ पो. (चित्र कट फट रहा है)
परिचय — चंद कुमार चंपावती शहर के बाग की वृद्धा मालिन से यह कह रहा है कि इस बाग में ऐसी कोटरी बनाओ, जो कि जूही की लता-कुंज से आवेष्टित हो, इस का तुम्हें पुरस्कार दूंगा।

पृष्ठ ४४ — चित्र सं० ४१ परिमाण — ३'१ + ३½ १ पो.
परिचय — कोटड़ी (अथवा मंदिर) में चंदकुमार देख रहा है।

पृष्ठ ४५ — चित्र सं० ४२ परिमाण — ५ + ६'४ पो.
परिचय — रूपरेखा अपनी सेहेलियों के साथ उस बाग में कुंज की ओर जा रही है। उनके पीछे २ चंदकुमार आ रहा है, मालन उसे अपनी बनाई हुई कुंज को दिखलाने के लिए बुला रही है, किन्तु रूपरेखा भ्रमवश उस मालन की ओर आगे बढ़ रही है।

पृष्ठ ४५ – चित्र संख्या ४३ परिमाण – ३'४ + ६'४ पो.

परिचय – चंदकुमार एवं रूपरेखा का मिलन। दोनों बैठे हैं।

पृष्ठ ४६ – चित्र सं० ४४ परिमाण – ३'१ + ६'५ पो.

परिचय – मधु, मालती बैठे हुए बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ ४६ – चित्र सं० ४५ परिमाण – १'२ + ६'४ पो.

परिचय – मधु, मालती बैठे बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ४६ परिमाण – ३ + ६'३ पो.

परिचय – मधु बाग के वृक्षों के पत्तों को गिलोल द्वारा कंकरों की मार से झाड़ रहा है, मालती उसके पीछे खड़ी है। बाग के दो पायक दूर से यह नजारा देख रहे हैं।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ४७ परिमाण – ४'२ + ६'३ पो. (चित्र का बांई ओर का १½ का ऊपरी हिस्सा लंबाई में ४ पोइन्ट कम है)

परिचय – बाग में जेतमाल, मालती और मधु को फौज ने घेर लिया है। जेत, मालती बैठी हैं। मधु खड़ा अपनी गिलोल चला रहा है।

पृष्ठ ४८ – चित्र सं० ४८ परिमाण – ३½ + ६'२ पो. (चित्र का आधा· इञ्च का ऊपरी हिस्सा लम्बाई में ३ पोइन्ट कम है)

परिचय – मधु गिलोल चला रहा है। सामने की वृक्षावली की ओट में दो सिपाही अपने प्राण बचाए खड़े हैं।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ४९ परिमाण – २½'२ + ६'३ पो. (चित्र का नीचे का किनारा कटा हुआ है तथा बांई ओरका ऊपरी कुछ हिस्सा लम्बाई में २ पोइन्ट कम है)

परिचय – जेतमाल, मालती के साथ मधु बैठा है।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ५० परिमाण – ६'३ + ६'४ पो. (चित्र के बांई ओर के दोनों प्रांत्य नष्ट हो चुके हैं। उस पर अंकित दृश्य भी त्रुटित हो गया है)

परिचय – रामसरोवर बाग का दृश्य है । जेतमाल, मालती बैठी हैं, मधु खड़ा है। नीचे में बाई ओर दो सैनिक भागते हुए दिखलाई दे रहे हैं।

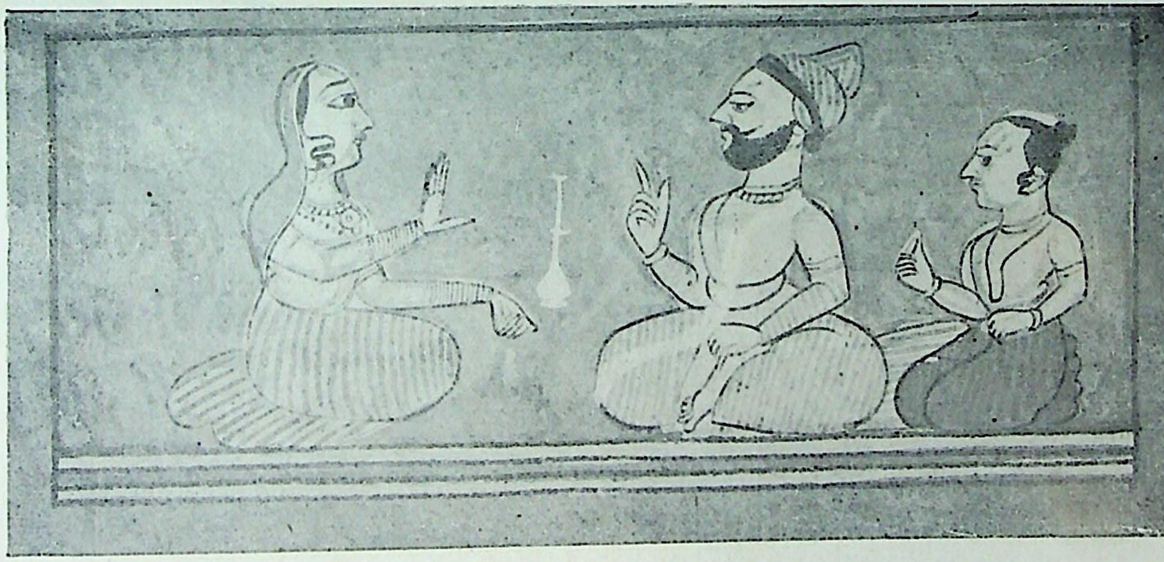


प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–५३; सूचीपत्राङ्क–११५

मधु मालती पालखी में बैठ कर बड़ी सज-धज के साथ महल की ओर जा रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–५५; सूचीपत्राङ्क–११५
ब्राह्मण मण्डप में जेतमाल तथा मालती के साथ मधु का विवाह करा रहा है।



प्रतिक्रमाङ्क–१०२५८; चित्रसंख्या–५२; सूचीपत्राङ्क–११५

उरगाना अपनी पत्नी को समझा रहा है। उसके पीछे उसका पुत्र बैठा है।

पृष्ठ ५३ – चित्र संख्या ५१ परिमाण – ३½'१ + ६'३ पो.
परिचय – उरगाना अपने लड़के के हाथ में दूध का कटोरा रख कर सर्प के पास पहुँचा है।

पृष्ठ ५४ – चित्र सं० ५२ परिमाण – ३ + ६'४ पो.
परिचय – उरगाना अपनी पत्नी को समझा रहा है। उस के पीछे उसका पुत्र बैठा है।

पृष्ठ ५५ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ५'४ + ६'४ पो.
परिचय – मधु मालती पालखी में बैठ कर बड़ी सजधज के साथ महल की ओर जा रहे हैं।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० ५४ परिमाण – ३'४ + ६'२ पो.
परिचय – हनुमान्जी अंजनी माता से आज्ञा ले रहे हैं।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० ५५ परिमाण – ४½ + ६'४
परिचय – मण्डप में पण्डित ब्राह्मण जेतमाल तथा मालती के साथ मधु का विवाह करवा रहा है।

प्रसङ्गसूची –

१ – लीलावती-पुर-वर्णन-प्रसङ्ग – पृष्ठ १ – ५
(१) मधु-मालती की उत्पत्ति (२) रामसरोवर-शोभावर्णन (३) मधु-मालती का गुरु-गृह में विद्याध्ययन तथा उनके प्रणय का सूत्रपात (४) मधु-कथित शुकोदाहरण।

२ – टिट्टिभ-टिट्टिभी-संवाद – पृष्ठ ६ – ७
(१) काक द्वारा सर्प-मारण (२) सागर-गरुडसंवाद।

३ – काक-उलूक-वार्ता – पृष्ठ ७ – १०
(१) हंस-बधिक-निदर्शन।

४ – मृग-सिंहिनी का प्रणयालाप – पृष्ठ १० – १२

५ – मधु-मालती-जैतमाल संवाद – पृष्ठ १३ – २०
(१) जैतमाल द्वारा मधु का पूर्वभव-स्मरण (२) मालती का सौन्दर्य-वर्णन (३) मधु-मालती का गान्धर्व-विवाह।

६ – करण-पदमावती-प्रसङ्ग – पृष्ठ २१ – २३

७ – रामसरोवर - प्रसङ्ग – पृष्ठ २३ – ३०
(१) मधु - मालती - संवाद (२) मालती - चकवी - संवाद (३) जैतमालती - मालती - संवाद (४) जैतमाल - मधु - संलाप ।

८ – मधु का राजसेना से युद्धवर्णन – पृष्ठ ३१ – ४०
(१) भ्रमर - युद्ध (२) मधु का राजदूत से वार्तालाप (३) मधु को अपने पास न देखकर विकल हुई मालती को जैतमाल-कथित यदुवंश की कथा से आत्मबोध (४) मालतीकृत श्रीकृष्ण-स्तुति से मधु की सहायतार्थ प्राप्त भारण्ड, सिंह आदि का राजसेना से युद्ध (५) राजा चंद्रसेन का युद्धस्थल से पलायन एवं उसकी अपने मंत्रियों से मंत्रणा (६) मंत्रियों द्वारा तारणसाह को पुनः प्रधान पद पर प्रतिष्ठापन करने का राजा को सुझाव ।

९ – राजा चंद्रसेन तथा मंत्री तारणसाह का वार्तालाप – पृष्ठ ४० – ४२
(१) तारणसाह द्वारा अपनी मांत्रिक - शक्ति से सिंह, भारण्ड आदि का बन्धन (२) श्रीगौरी माता का राजा को उपदेश (३) युद्ध - विराम (४) चंद्रसेन - तारणसाह की मंत्रणा ।

१० – माली द्वारा मधु - मालती की प्रणयलीला का चंद्रसेन के सम्मुख रहस्योद्घाटन – पृष्ठ ४३ वाँ

११ – चंदकुमार - रूपरेखा का प्रेमाख्यान – पृष्ठ ४४ – ४६

१२ – मधु - युद्ध - वर्णन – पृष्ठ ४६ – ४९

१३ – तारणसाह - कथित पथिक उरगाना तथा सर्प का उपाख्यान– पृष्ठ ५० – ५५
(१) उरगाना का गृह - कलह (२) उरगाना के पुत्र का सर्पदंश से मरण (३) पत्नी द्वारा उरगाना - सर्प का राजा अमरसेन के आगे भण्डाफोड़ एवं राजा द्वारा सर्प को मारकर बंबी से धनापहरण ।

१४ – मधु - मालती के विवाह का वर्णन – पृष्ठ ५५ – ६२
(१) राजा चन्द्रसेन तथा रानी कनकमाल का वार्तालाप (२) अञ्जनी से श्रीराम, हनुमान् का संवाद (३) राजा-रानी का संलाप । (४] चन्द्रसेन - मधु संलाप ।

१५ – काम - निवास - प्रसङ्ग एवं कथोपसंहार – पृष्ठ ६२ – ६३

★

८. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क – १०४७७

कर्त्ता – चतुर्भुजदास, लिपि समय – १९ वीं शताब्दी (वि०)

आकार – पुस्तकाकार (खुले पत्र) माप (साइज) – ८½ + ५½

पृष्ठसंख्या – ९, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति २२, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २२ ।

पुस्तकदशा – साधारणतया ठीक है, किन्तु प्रति त्रुटित एवं सर्वथा अपूर्ण है ।

पुस्तक का प्रारम्भ

ऐसी मनमै चिता करे । फुंनि वीचार क [छु वो] रै धरै ॥
पढवै कारण वीलंवी रहै । तोलु वर ढूंढुं [नृ] प कहै ॥ ६१ ॥

॥ दुहा ॥ प्रीतम पाणी आपणो, ज्युं [जाणे] त्यु रष ।
पेके पाणी ऊतरे, वोहर चढै नव लष ॥ ६२ ॥

॥ चोपाई ॥ पट परेच बंदो नृप कहै । भीतर [कंवर] मालती रहै ॥
पंडितके ढीग मंत्रीको बाल । रहै पढै पढ पट साल ॥ ६३ ॥
मंत्रीकुवर नांम [ज] व कहै । सुणत मालती हीरदे सुष लहै ॥
ज्याकै मन मीलवकी तीस । मनसाको दाता जगदीस ॥ ६४ ॥

॥ श्लोक ॥ गीरै कीलापी गगेन च मेघा, लष्यं च नांतुं जले च पद्मं ॥
दोय लष्य सोमो कमदस्य तोयं, जो जस्य प्रीती न कदापी दूरे ॥६५॥

॥ दूहा ॥ कमोदनी जलहर वसे, चंदो वसे आकास ।
जो जाही के मन वसे, त त्याहींकै पास ॥ ६६ ॥

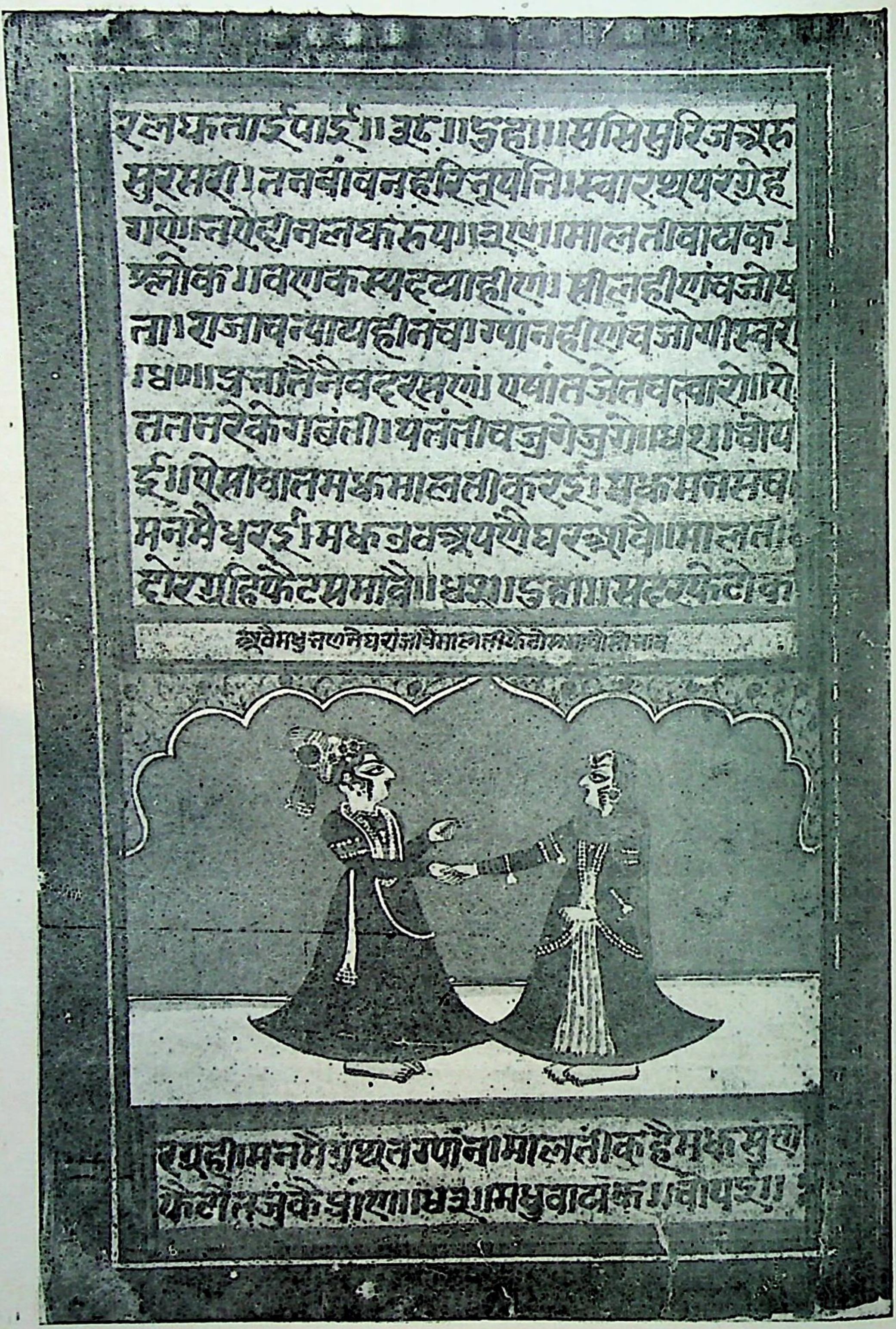
पुस्तक के अन्त में –

मन मालण सोच अत करइ । सकै तो सीत भयौ दोउ मरइ ॥
पीपर वांटणकुं ग्रेह दोरी । भयो प्रसंग कछु ओर ही ओरी ॥ ५२ ॥
वपु संभार आप उठी बैठे । मांनुं मैंन-बांन तन पेठे ॥
कुंवरी चेत चबुक मुसकांनी । चंदकुंवर सब जीवकी जांनी ॥ ५३ ॥
गही भुज अंक उरही उर फरसी । मांनु छट गइ मत् करसी ॥
तन मन प्रांण भऐ इक होउं । कहीयै कौन भांतसुं सोउ ॥ ५४ ॥
रुपरेष मन प्रीत जनावै । चंदकुंवरकै बोल सुंनावै ॥
वीरह बांन लागत हैं मोहिं । सांचो नेह जणावत सोहि ॥ ५५ ॥

॥ दुहा ॥ वीरह बांन तन वेदही, कौन फीरे वसीठ ।
नेह बंधनै नां मिलै, आप ही आ .... ॥

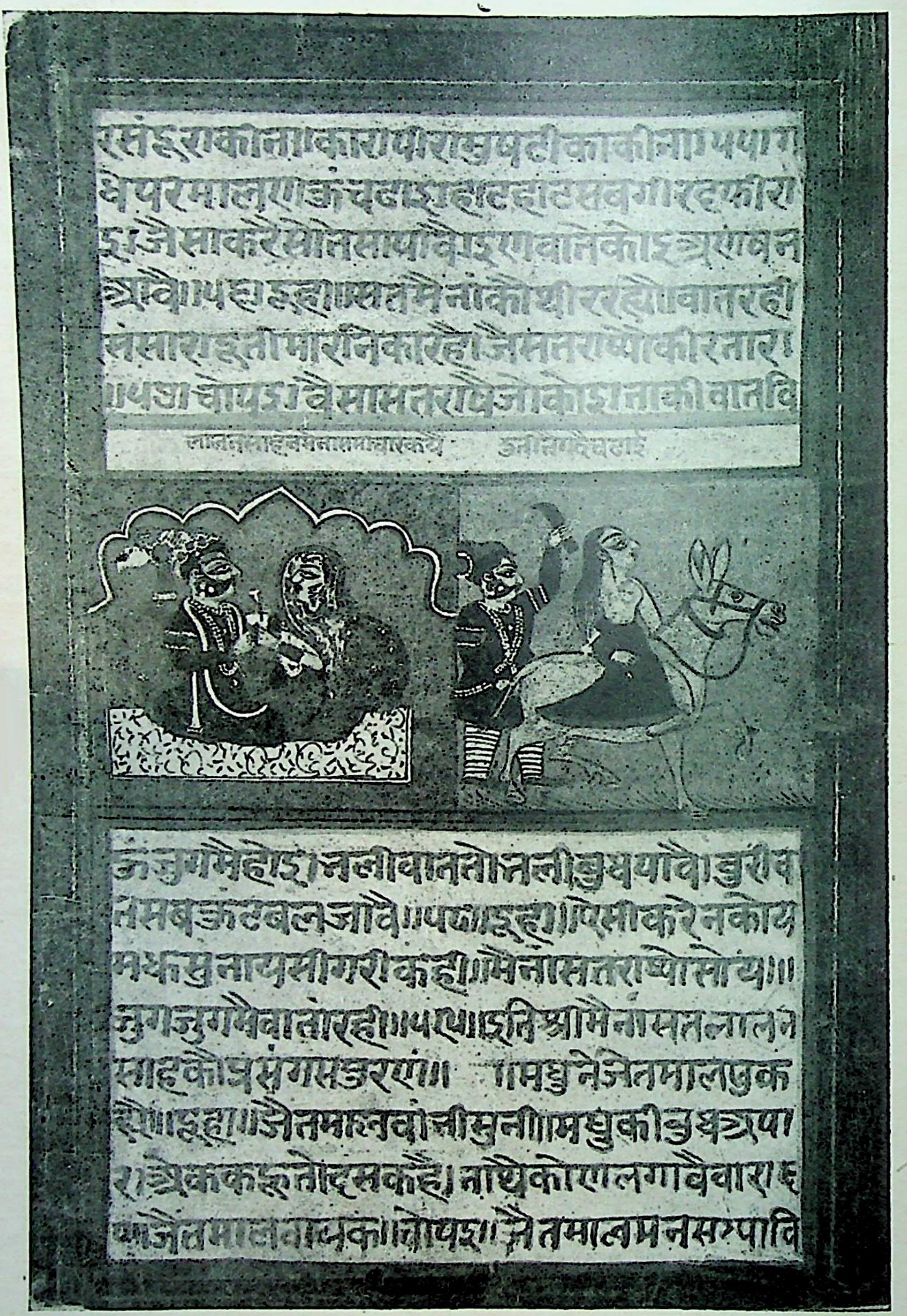
टिप्पणी — उल्लेखनीय है कि ६ठे तथा ५३ वें पृष्ठ पर लिखित मधुमालतीकथा – प्रबन्ध के क्रमशः आद्यन्त अंश के ही कुछ पद्य नमूने के तौर पर ऊपर में (ग्रन्थारम्भ एवं ग्रन्थान्त के रूप में) उद्धृत किये गये हैं। क्यों कि उक्त कथा की इस प्रति के वे प्रकीर्ण ९ पत्र ही केवल प्राप्त हुए हैं जिन पर क्रमशः ६, १९, २४, २९ (?), ३१, ३२, ४१ (?) ५१ (?) तथा ५३ संख्याएं अङ्कित हैं। इन पत्रों को देखने से यह प्रतीत होता है कि जिस प्रति के ये प्रकीर्ण पत्र हैं वह प्रति निश्चय ही बड़े परिश्रम से सुन्दर रूप में तय्यार की गई होगी। जैसा कि इस प्रति के चमकीली काली स्याही से सुन्दर लिपि में लिखित सुवाच्य अक्षरों तथा बोर्डर आदि में उपयुक्त भड़कीले रंगो से प्रमाणित होता है। प्रति के प्रत्येक पत्र पर प्रबन्ध के आजू बाजू में लाल स्याही की दो दो रेखाएँ खींच कर उन (रेखाओं) के बीच में पीला रंग भरा हुआ है। प्रबन्ध का लेखन काली स्याही से तथा सन्दर्भ (चौपई, दूहा आदि) एवं प्रसङ्ग का लेखन लाल स्याही से किया गया है। पद्याङ्क एवं पद्यों के प्रत्येक पाद लाल स्याही की दो दो विराम-रेखाओं (खड़ी पाई) से आबद्ध है। जिन पत्रों पर प्रबन्ध एवं चित्र, दोनों ही अङ्कित हैं, उन में यह विशेषता रखी गई है कि प्रबन्ध - भूमि के चारों ओर करीब आधा इञ्च परिमाण - भाग पर लाल रंग को पोतकर पत्रों के प्रान्त्यों (किनारों) पर १ काली सूक्ष्म रेखा अङ्कित की गई है तथा उसी (प्रबन्ध) भूमि के सन्निकट में ही समानान्तर पर तीन वारीक रेखाएँ क्रमशः लाल, काली और सफेद रंग की बना कर लाल और काली रेखाओं के बीच में पीला, एवं काली और सफेद के बीच में लाल रंग भर दिया गया है। इस से पत्रों की शोभा और भी खिल उठी है।

इन प्राप्त ९ पृष्ठों पर १० चित्र अङ्कित हैं। इन के चित्रण में स्थानानुकूल सामयिक नानाविध उत्तम रंगों का उपयोग किया गया है। चित्रों की बनावट को देखने से यह प्रतीत होता है कि चित्रकार ने एक ओर जहाँ बीकानेर - जोधपुर की उत्कृष्ट शैली का आश्रय लेकर उन (चित्रों) की आकृतियों को वेष - भूषा आदि साज सज्जा से विभूषित कर सुन्दर एवं सुडौल बनाने का सफल प्रयास किया है। वहाँ दूसरी ओर उन (चित्रों) में प्रसङ्गानुकूल भावों का अभिव्यञ्जन करने में अपनी उत्कृष्ट कलाभिज्ञता का भी परिचय दिया है। यही कारण है कि सभी चित्र भावपूर्ण, नयनाभिराम एवं मनोहर बन पड़े हैं। शीर्षलेख के अनुसार चित्रों का विवरण निम्न प्रकार है।



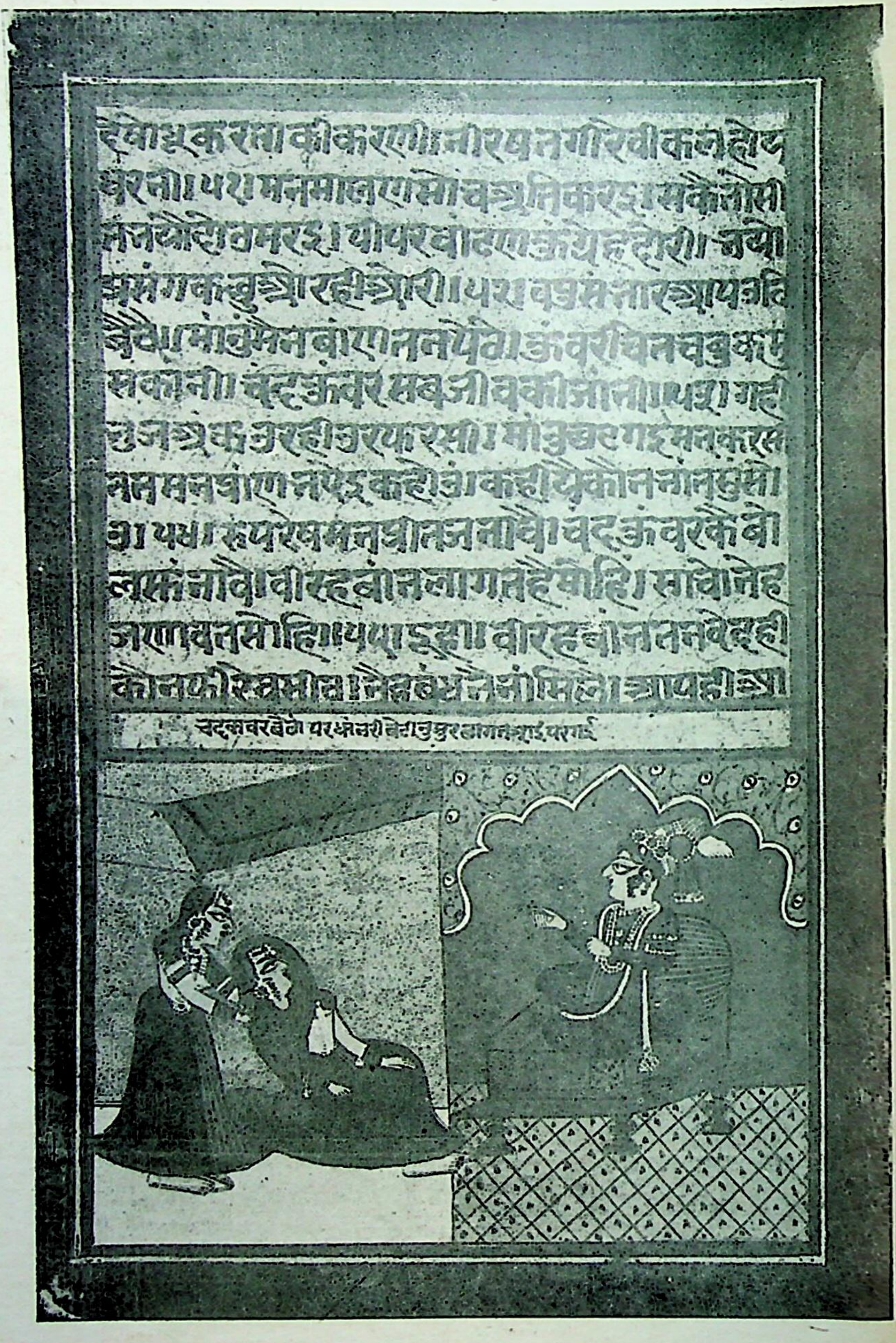
प्रतिक्रमाङ्क-१०४७७; चित्रसंख्या-३; सूचीपत्राङ्क-११६

अथ मधु चलण नै घरां जावै मालती फेटी समायो सो भाव ।



प्रतिक्रमाङ्क–१०४७७; चित्रसंख्या–७; सूचीपत्राङ्क–११६

लालनसाहनै मैना समाचार कयै (कहे) दुतीनै गढ चढाई।



प्रतिक्रमाङ्क–१०४७७; चित्रसंख्या–१०; सूचीपत्राङ्क–११६

चंदकवर बैठो परधानरी बेटीनु मुरछागत आई पर गई ।

चित्रसूची –

पृष्ठ ६ – चित्र संख्या १ परिमाण – ३'२ + ४'४ पोइन्ट
शीर्षक – पंडित बेठो मुधु भणै। मालती भणवा आई परेचमे भणै छै।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० २ परिमाण – ३'२ + ४'३ पो.
शीर्षक – अठे मालती बेठी भणै। मधु भणतो कथा कहै सो भाव।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ३ परिमाण – ३ + ४½
शीर्षक – अठै मधु भणने घरां जावै फैटो सभावौ सो भाव।

पृष्ठ २९(?)– चित्र सं० ४ परिमाण – २'२ + ४½
शीर्षक – मालती जेतमाल दोनु संवादो।

पृष्ठ ३१ – चित्र सं० ५ परिमाण – २'२ + ४½
शीर्षक – मालतीनु जेतमाल मधुरी वात कहै दुती समाचार कहै छै उभी।

पृष्ठ ३२ – चित्र सं० ६ परिमाण – २½ + ४½
शीर्षक – जेतमाल सनांन करे सीणगार करे छै।

पृष्ठ ४१(?)– चित्र सं० ७ परिमाण – २'२ + ४½
शीर्षक – लालनसाहने मेना समाचार कयै। दुतीनै गढ्ढे चढाई।

पृष्ठ ५१(?)– चित्र सं० ८ परिमाण – २'२ + ४½ (चित्र का रंग कुछ उड़ गया है)
शीर्षक – पारधी सरब पंछी जालमै पकडीया।

पृष्ठ ५१(?)– चित्र सं० ९ परिमाण – २२ + ४½ (चित्र का रंग कुछ उड व फैल जाने से चित्र खराब हो गया है)
शीर्षक – मधु मालती छांनै परनीया जेतमालती वेठी माली छांनै देषै छै।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० १० परिमाण – ३'३ + ४½
शीर्षक – चंदकवर वैठो परधांनरी बेटीनु मुरछागत आई परगई।

प्रसङ्गसूची

१ – मधु-मालती का गुरु के घर में विद्याभ्यास – पृष्ठ ६ ठा

२ – नृपतिकुमार करण तथा सूरसेनकुमारी पद्मावती का प्रसङ्ग – पृष्ठ १९ वाँ

३ – मधु-मालती का प्रणय-संवाद तथा उनका गुरु-गृह से स्वस्वगृहागमन। पृष्ठ २४ वाँ

४ – मालती-जैतमाल का संवाद – पृष्ठ २९(?) वाँ

५ – मालती-जैतमाल संवादानन्तर जैतमाल का शृङ्गारवर्णन तथा उसका मधु से वार्तालाप – पृष्ठ ३१ – ३२

६ – लालनसाह की पत्नी मैना के सतीत्व का प्रसङ्ग – पृष्ठ ४१(?) वाँ

७ – शुक-पिकीप्रसङ्गान्तर्गत पारधी का प्रसंग तथा मधु-मालती का गान्धर्व विवाह – पृष्ठ ५१(?) वाँ

८ – चन्दकुमार-रूपरेखा-मिलन-प्रसङ्ग – पृष्ठ ५३ वाँ

★

९. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क—१०७००

कर्त्ता—चतुर्भुजदास, लिपि समय-१८३३ विक्रम संवत्

आकार—गुटकाकार (खुले पत्र) माप (साइज)-५'१ + ८

पृष्ठसंख्या—७६, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति ११-१२, प्रतिपङ्क्ति अक्षर ३२ ।

पुस्तकदशा—साधारण अच्छी है, किन्तु कतिपय पृष्ठ अर्द्धत्रुटित एवं खण्डित हैं ।

पुस्तक का प्रारम्भ

श्री गण.................लती लिष्यते ॥

॥ चौपई ॥ स्तुति ॥ .... तनया वर पाउ । .... सिर नांऊं ॥
चातुर हित चिंत सहित .... । सरस मालती-मनोहर गांऊं ॥१॥
लीलावती ललित एक देसा । चंद्रसे [न ति] हां सुगड नरेसा ॥
सुभग धाम धुज गगनि प्रवेसा । मांनहुं मंडप रच्यौ महेसा ॥ २ ॥
वसै नगर पुर जोजन च्यारि । चौंरासी चौहटै चौवारि ॥
अति विचित्र दीसैं नर नारि । मांनहुं तिलक भवन मैंझारि ॥ ३ ॥
करैं सेव नृप कुल छतीस । चढैं सहस दस नायें सीस ॥
झरैं मत्त कुंजर करैं चीस । चंद्रसेन ईसनको ईस ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ चढत संग नृप चंदकैं, कुल छतीस हिसार ।
कुंजर कारे मेघ ज्यौं, ह [य दल अं] त न पार ॥ ५ ॥

॥ चौपई ॥ मंत्री देषि पराक्रम तांम । तारनसहा तासकौ नांम ।
निस दिन स्वांम धरमसौं कांम । नृप तैज न घरी पल जांम ॥ ६ ॥
नृप [की व्याहैतर त्रि] य च्यारि । संचित येक मालती कुमारि ।
वरलौं कहांलौं रूप अपार । मानहुं उरवसी लयौ वौतार ॥ ७ ॥
उ[प]मा कौंन पटंतर कहुं । गुन अनेक छवि पार न लहुं ॥
दिन दिन रूप अनोपम चढै । ऐसी नही वोर विधि गढै ॥ ८ ॥
गज कपोल(त) हरी प्रवाल । भ्रंगी मधुकर मीन मराल ॥
कदली कनक .... री पें सोइ । ऐसी सोभा फीकी होइ ॥ ९ ॥

जा देषैं चित चलै मुनेस । देषें धरनी डारैं सेस ।
मानहुं छांह परी ता देस । सुर भूले जीव धरे अंदेस ॥ १० ॥

॥ इति राजलोकवर्णन । अथ मंत्री भवन वर्णनं ॥

॥ चौपई ॥ राजलोक वरनु कितीक कहुं थोरी सी मंत्रीकी लहुं ॥
थोरे मांझ वोहोत रस होय । अति लावन्य जिनि राचौ कोय ॥११॥

तारनसाह सुघड गुनसार । त्रिया एककैं पुत्र कुंमार ॥
ताकौ नांम मनोहर धर्यौ । मांनौ कांमरूप अवतर्यौ ॥ १२ ॥

मधु मधु कहै पिलावै तात । वाढैं मानु कलानिधि गात ।
घरी दिवस पष मासन [वोर] ज्यां वसंतकीसलता कोर ॥ १३ ॥

पुस्तक के अन्त में—

॥ राजावाच ॥ चौपई ॥ प्रानेस्वर जब काम दझायौ । यो तो भेद सबै सुनि लीयौ ॥
तीजो सरूप सबै तन करइ । लीपे न छीपे न न्यारौ रहिइ ॥ ८८६ ॥

जानै नही जो को ऊदरसै । कहुं संसरगन कवहूं परसै ॥
यौं समझाय कहौ यौ आगै । तब मो मनको सांसौ भागै ॥ ८८७ ॥

॥ मधुवायक ॥ दोहा ॥ सस उद्योत सरगही जानै, इहां जलकुंभ सहस वरि ठानै ।
सवहीमै प्रतिविंव प्रकासे, ज्यौं प्रभुजोत पीडमै भासे ॥ ८८८ ॥

इत देषू तौ एकही अंदा । घ........................... चंदा ॥
लिपै न छिपै न सब जगमै व्यापै । अलष निरंजन........ ॥ ८८९ ॥

हम है कांम अंस अवतारी । ये कछु कहै सुनैं की न्यारी ॥
...............य तो समझै जानी । :अन समझेकूं कहत कहांनी ॥८९०॥

॥ ....निवाश जोती स्वरोवाच ॥

॥ दोहा ॥ कायथ नयगम कुल रहै, नाथ सुत [अभि] राम ।
तनया चत्रुर्भुज तासकौं, कथा प्रकासी ताम ॥ ८९१ ॥
अलप वुधि [कठोर] दई, कांमप्रवंध प्रकास ।
कवियनसूं कर जोरिकैं, कहै चतुर्भुजदास ॥ ८९२ ॥
कामप्रवंधप्रकास फुनि, मधु—मालती विलास ।
प्रद्युमन लीला यहै, कहत चत्रभुजदास ॥ ८९३ ॥

वनसपतिमैं अंत्र फल, रसमैं ऊप(ष) रसंत ।
कथा मध्य मधुमाल[ती] पट रितु मध्य वसंत ॥ ८९४ ॥
लता मध्य पनग लता, सौंधेमैं घनसार ।
कथा मध्य मधुमालती, आभूपनमैं हार ॥ ८९५ ॥

॥ चौपई ॥ राजनीतिकी यामी सापी । पंचाध्यानवंध यह भापी ॥
चरनाइक चातुरनि वता[इ] । ········ सवहुं आइ ॥ ८९६ ॥
कृष्णदेवको कुंवर कहावै । प्रद्युम्न का ·········· ॥
पुत्र कलत्र सवै सुप पावै । दुप दलद्र नेरौ नही आवै ॥ ८९७ ॥

॥ श्लोक ॥ कामार्थी लभ्यते कामं निर्धनो धन प्रापते ।
अपुत्रो लभते[पुत्रं वा]········ धा तस्यां न जायते ॥ ८९८ ॥

॥ दोहा ॥ राजा पढै तौ राजनीत, मंत्री पढै तो वुध्य ।
कांमी कांमविलास रस, ग्यानी ग्यानसुं बुध्य ॥ ८९९ ॥
[संपू]र्ण मधुमालती, कलसही भयौ संपूर ।
सुरता वकता सवनकूं, सुपदा[यक दु]प दूरि ॥ ९०० ॥
॥ इति श्रीमधुमालतीरसग्रंथ संपूर्ण शुभं मस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥

संवत द्र(दि)ग देवी भुजा, अरु(अंक) तेतीस वपानि ।
कातिग वदि शिव वरत हो, मंद वार है जांनि ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ पोथी नंदकिसोरनैं, लिपी बुधि परवान ।
मोहनलाल सुजान तुम, दीजो बुधि प्रवान ॥ २ ॥
नगर करौलीमै लिपी, मानिकपालको राज ।
चित दैकै याकौं पढौ, यह प्रवीनकौ काज ॥ ३ ॥

टिप्पणी—इस प्रति में प्रस्तुत कथा का प्रारम्भ प्रथम पृष्ठ से तथा उस की समाप्ति ७६ वें पृष्ठ पर होती है। इन पृष्ठों में ७१ एवं ७२ संख्या के पृष्ठ अनुपलब्ध हैं। प्रतिगत प्रबन्धभूमि के चारों ओर समानान्तर पर लालस्याही की दो सूक्ष्म रेखाएं खींची हुई हैं तथा उस के बाद का भाग अर्थात् पृष्ठ का १ इञ्च परिमाण का प्रान्त्य भाग (बोर्डर) पीले, लाल एवं काले रङ्ग से रञ्जित किया हुआ है। यद्यपि उक्त भाग को रंगने में अधिकतर पीले रङ्ग का ही उपयोग किया गया है, किन्तु इस के अतिरिक्त जहां पर काले रङ्ग का उपयोग हुआ है, वहां यह अन्तर रखा गया है कि प्रबन्धभूमि को आवेष्टित करने वाली रेखाएं लाल रंग से न बना कर वे सफेद रंग से ही

बनाई गई हैं। प्रबन्ध का लेखन बढ़िया काली स्याही से सुन्दर एवं सुस्पष्ट अक्षरों में किया गया है तथा सन्दर्भ एवं प्रसङ्ग आदि के शिरोलेख लाल स्याही से ही लिखे गये हैं। पद्यार्द्ध (अर्द्धाली) एवं पद्य समाप्ति पर लाल स्याही की दो विराम रेखाएं अङ्कित की गई हैं।

प्रति में कुल चित्र ४४ उपलब्ध हैं। इन में पूरे चित्रों की संख्या २७ एवं अर्द्ध पत्राङ्कित चित्रों की संख्या १७ है। चित्रों की बनावट व्रज एवं कोटा-बून्दी की शैली के माध्यम पर आधारित है। इन के चित्रण में उत्तम विविध रङ्गों का ही उपयोग किया गया है। चित्रों की सुन्दरता एवं तद्गत प्रसङ्गानुकूल, अश्लीपता रहित हावभावादि की अभिव्यक्ति को तथा महल, पनघट तथा उपवन आदि के चित्रण को देखने पर हमें यह स्पष्ट आभास होता है कि चित्रकार केवल आकृतिनिर्माता ही नहीं, अपि तु वह एक अनुभवी आदर्श कलाकार था और उसकी अभिरुचि स्थापत्यकला की ओर भी विशेष रूप से थी। यही कारण है कि प्रतिगत चित्रों में मनोमोहकता एवं सजीवता स्पष्टतः परिलक्षित होती है। चित्रों का विवरण निम्न प्रकार प्रस्तुत है —

चित्रसूची —

पृष्ठ १ — चित्र संख्या १ परिमाण — ३½'३ + ६½ (चित्र ऊपर से अर्द्धत्रुटित है)

परिचय — **लीलावतीपुर के राजा चन्द्रसेन अपने अन्तःपुर में अपने परिवार के साथ विराजमान हैं।**

पृष्ठ २ — चित्र सं० २ परिमाण — ४ + ६'३ पो.

परिचय — **एक तरफ मसनद के सहारे बैठे मन्त्री तारणसाह अपने पुत्र मधु को बुला रहे हैं। मधु उनके सामने खड़ा है और उस के पीछे उस की माता उस के कन्धे पर हाथ रखी हुई बैठी है।**

पृष्ठ ३ — चित्र सं० ३ परिमाण — ३½'३ + ६'३ पो.

परिचय — **एक तरफ रामसरोवर की सीढियों में मधु गिलोल लिये खड़ा है। दूसरी ओर सीढियों में खड़ी तीन पनिहारियां तो उसे निहार कर अपनी सुधि भूल गई हैं तथा तालाब की बीच की सीढ़ी में एक अबला मूर्छित होकर गिर पड़ी है।**

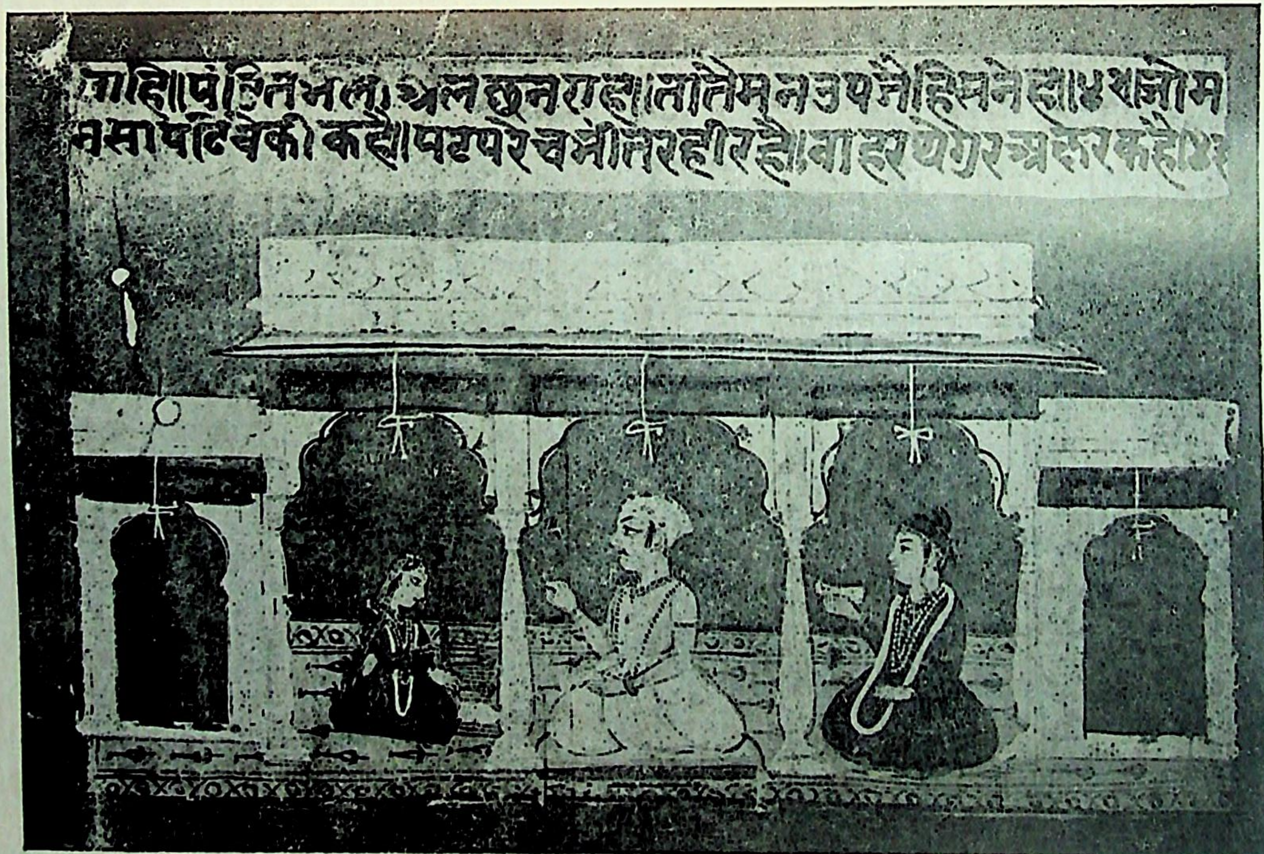


प्रतिक्रमाङ्क–१०७००;   चित्रसंख्या–३;   सूचीपत्राङ्क–१२४

मधुकुमार रामसरोवर पर गिलोल साधे खड़ा है। पनिहारियाँ उसे देख अपनी सुधि भूल गई हैं।

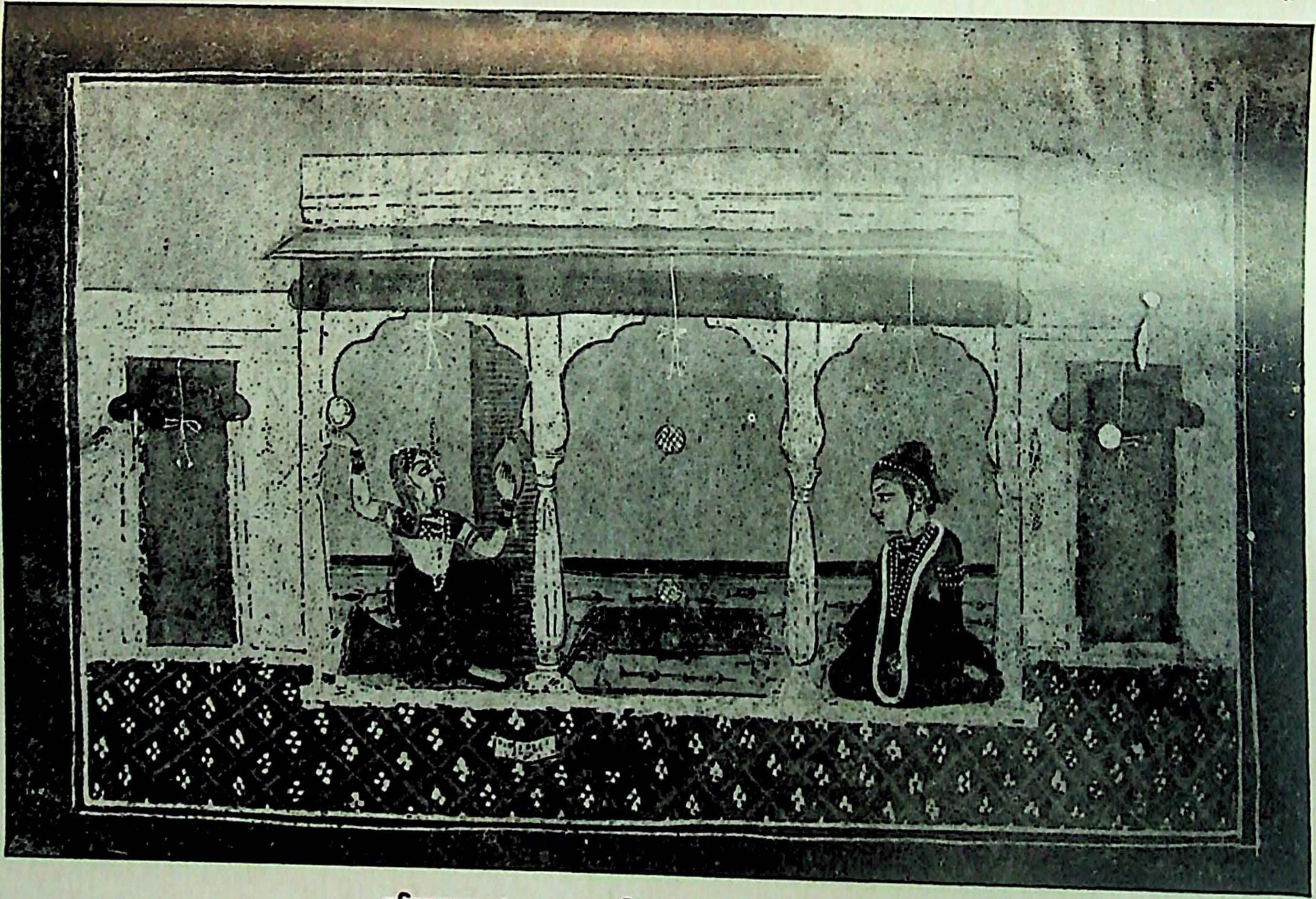


प्रतिक्रमाङ्क–१०७००; चित्रसंख्या–५; सूचीपत्राङ्क–१२६
राजा चंद्रसेन मालती के अध्ययनार्थ रानी कनकमाल से मंत्रणा कर रहे हैं ।



प्रतिक्रमाङ्क-१०७००; चित्रसंख्या-६; सूचीपत्राङ्क-१२५

नन्द पुरोहित मालती एवं मधु को पढ़ा रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–१०७००; चित्रसंख्या–७; सूचीपत्राङ्क–१२५
मालती पट-परेव को फाड़ कर फूल का गेंद मधु के ऊपर फेंक रही है।

पृष्ठ ४ – चित्र संख्या ४ परिमाण – ३½'४ + ३½ ४ पोइन्ट

परिचय – मंत्री तारणसाह नंद पुरोहित से मधु को पढ़ाने का आग्रह कर रहे हैं।

पृष्ठ ५ – चित्र सं० ५ परिमाण – ३½'४ + ४

परिचय – राजा चन्द्रसेन मालती को पढ़ाने के विषय में रानी कनकमाल से मंत्रणा कर रहे हैं, मालती कनकमाल की गोद में बैठी है।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० ६ परिमाण – ३ + ६'१ पो.

परिचय – नंद पुरोहित अपने घर में मालती और मधु को पढ़ा रहे हैं। उन के एक तरफ पटान्तर में मालती बैठी है और दूसरी तरफ मधु बैठा है।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० ७ परिमाण – ३½'४ + ६'२ पो.

परिचय – अरण्य की ओर गुरु नंद के चले जाने पर मालती पट परेच को फाड़ एवं फूल की गेंद बना कर मधु पर फेंक रही है।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० ८ परिमाण – ३½'४ + ६'२ पो.

परिचय – इन्द्रायणवृक्ष पर बैठे हुए एक शुक का दृश्य।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० ९ परिमाण – २½'४ + ६½ १ पो.

परिचय – सिंहिनी जाते हुए मृग-युग्म को रास्ते में ही रोक कर मृग से अपना प्रणय निवेदन कर रही है।

पृष्ठ १० – चित्र सं० १० परिमाण – ३'१ + ३½ ४ पो.

परिचय – सारे पक्षी घूघू को अपना राजा बनाने के लिये एक स्थान पर एकत्रित हुए हैं।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० ११ परिमाण – २½ + ३½

परिचय – टिट्टिभ-टिट्टिभी समुद्र की पाल पर अंडे धर रहे हैं।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० १२ परिमाण – ३½'३ + ६½

परिचय – ब्राह्मणवेषधारी सागर गरुड़ को टिट्टिभी के अंडों के साथ में एक हार भी प्रदान कर रहा है।

पृष्ठ १३ – चित्र संख्या १३ परिमाण – ३½'२ + ४'२ पोइन्ट
परिचय – वृक्षों पर बैठे हुए कौओं को घूघू मार रहे हैं।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० १४ परिमाण – ३½'२ + ३½ २ पो.
परिचय – कौए उलूकों को स्वनिर्मित घास फूस के गढ़(आवास) में डाल कर जला रहे हैं।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० १५ परिमाण – ३ + ६½ २ पो.
परिचय – सिंहिनी मृग को अनेक प्रकार से रिंझा रही है।

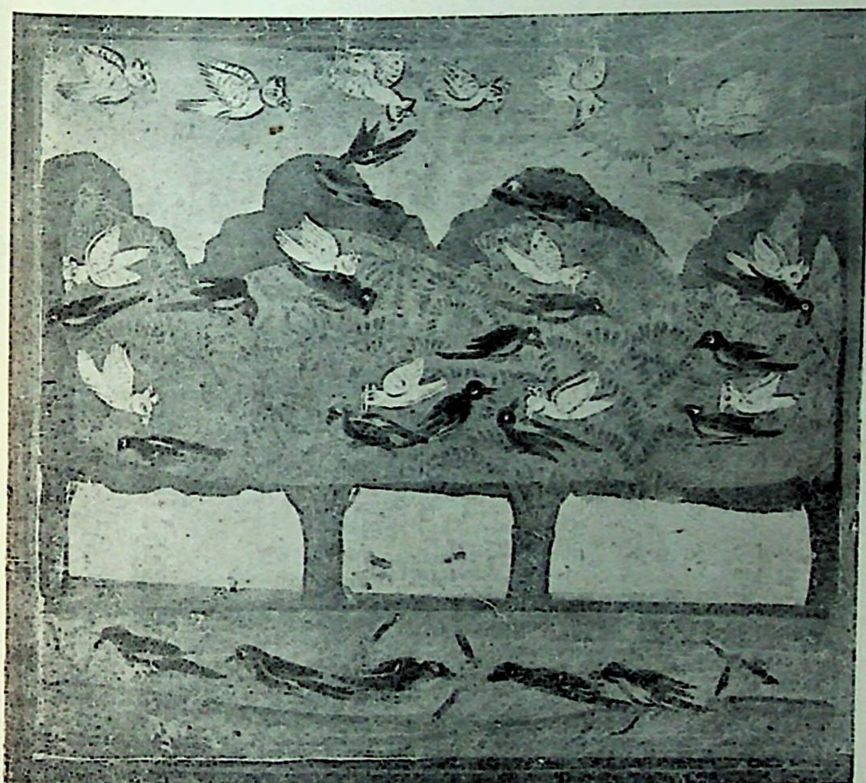
पृष्ठ १६ – चित्रसं० १६ परिमाण – ३'१ + ४'३ पो.
परिचय – सिंहिनी एवं मृग रसकेलि में निरत हैं।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० १७ परिमाण – ३ + ६½ १ पो.
परिचय – सिंह मृग को मार रहा है और सिंहिनी मृग के सींगों पर पड़ कर अपने प्राणों का अन्त कर रही है।

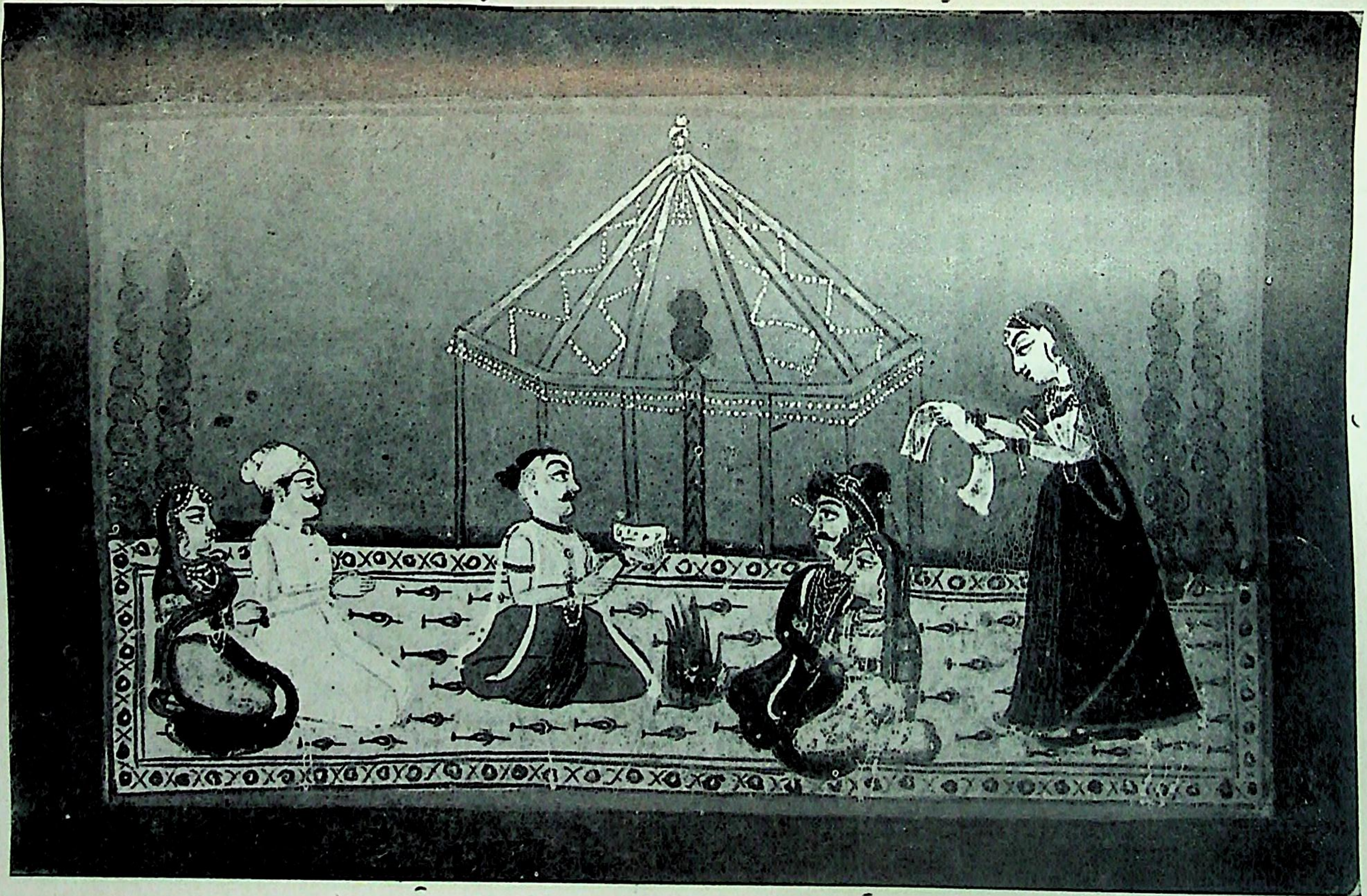
पृष्ठ २० – चित्र सं० १८ परिमाण – ३½'२ + ६½ १ पोइन्ट
परिचय – चित्र के एक तरफ राजा सूरसेन अपनी पुत्री पद्मावती को समझा रहे हैं और दूसरी ओर भी पद्मावती को उस की माता यह कह रही है कि बेटी! तूं राजा करण के साथ में विवाह करने का अपना विचार छोड़ दे।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० १९ परिमाण – २½'५ + ३
परिचय – राजपुरुष, राजा सूरसेन द्वारा भेजा गया वाग्दान-स्वरूप श्रीफल (नारियल) करण को दे रहा है।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० २० परिमाण – ४ + ७
परिचय – मण्डप में परस्पर एक दूसरे का कर ग्रह किये हुए करण-पद्मावती का विवाह एक ब्राह्मण करवा रहा है। ब्राह्मण के पीछे रानी एवं राजा तथा सामने वर-वधू बैठे हैं एवं उन के पीछे एक सुहागिन नारी खड़ी है।

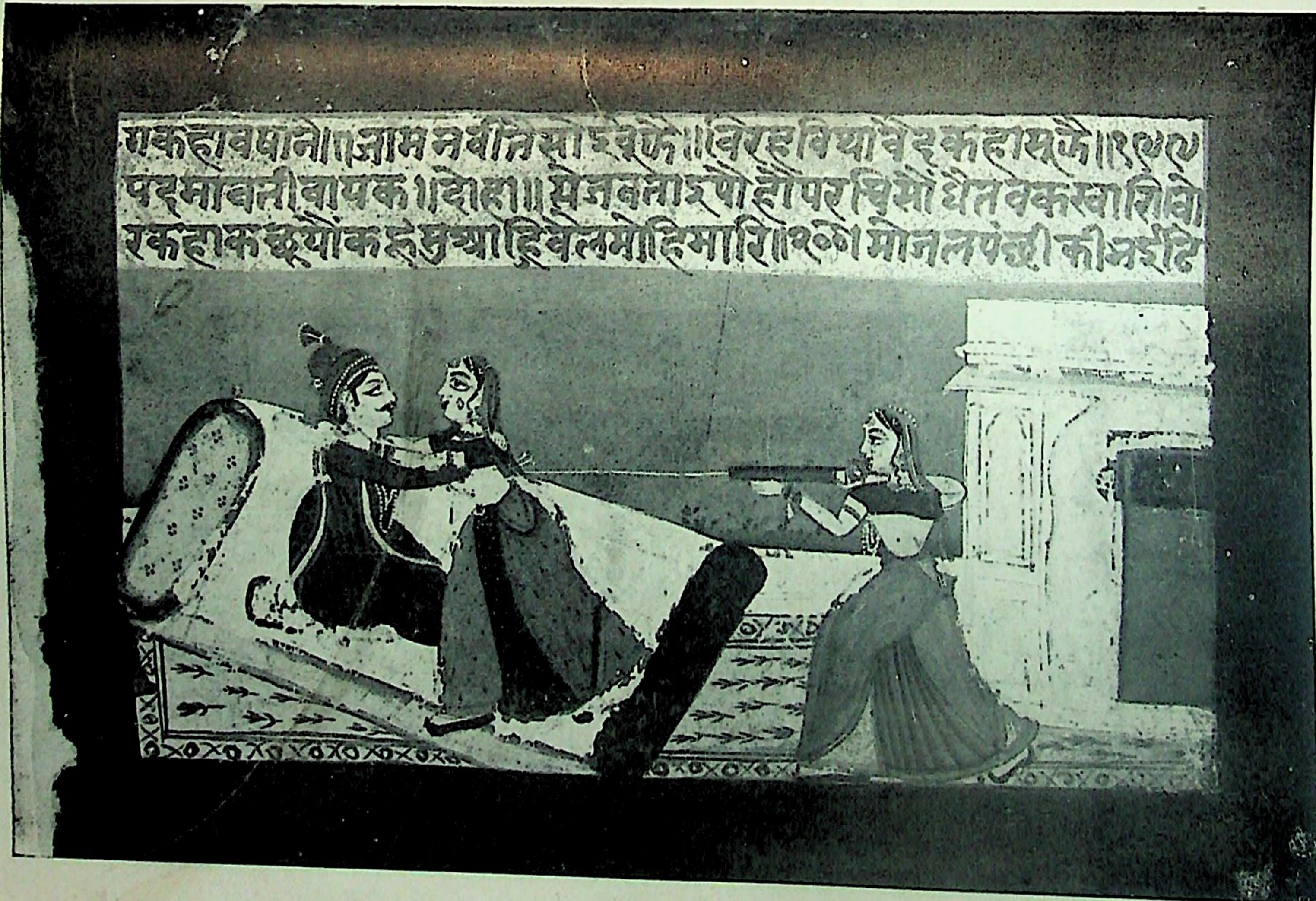


प्रतिक्रमाङ्क–१०७००; चित्रसंख्या–१३; सूचीपत्राङ्क–१२६
वृक्षों पर बैठे हुए कौओं को घूघू (उलूक) मार रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–१०७००; चित्रसंख्या–२०; सूचीपत्राङ्क–१२६

करण-पद्मावती का विवाह-संस्कार



प्रतिक्रमाङ्क–१०७००; चित्रसंख्या–२१; सूचीपत्राङ्क–१२७

सखी चंनरेखा पद्मावतीकी पीठ पर अचानक पिचकारी छोड रही है; पद्मावती चौंक कर



प्रतिक्रमाङ्क–१०७००; चित्रसंख्या–२२; सूचीपत्राङ्क–१२७
रामसरोवर के तट पर अपनी तीन सहेलियों के साथ खड़ी मालती मधु के आने की बाट जो रही है।

पृष्ठ २३ – चित्र संख्या २१ परिमाण – ३ + ६½

परिचय – पद्मावती की सखी चैनरेखा पद्मावती की पीठ पर अचानक जल से भरी पिचकारी छोड़ रही है। इस से चमक कर पद्मावती अपने पार्श्व में उपविष्ट करण पर गिर रही है और करण उसे अपने दोनों बाहुओं में थांभ रहा है।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० २२ परिमाण – ४ + ६½ ३ पो.

परिचय – रामसरोवर के तट पर मालती अपनी तीन सहेलियों के साथ खड़ी हो कर मधु की वाट जो रही है।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० २३ परिमाण – ३ + ६½

परिचय – सद्योजात सिंहशावक हाथी के मस्तक पर जा चढ़ा है।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० २४ परिमाण – ३ + ६½ ३ पो.

परिचय – मालती रामसरोवर बाग में बने हुए दो भवनों के बीच के लान (मैदान) में खड़ी जैतमाल के चरणों को छूकर उस से यह प्रार्थना कर रही है कि हे जैत! अब तो तुम ही मेरी इच्छा की पूर्त्ति कर सकती हो। जैत उसे आश्वासन दे रही है।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० २५ परिमाण – ४ + ६½ १ पो.

परिचय – एक वृक्ष के नीचे व्याघ्रचर्मासन पर बैठे हुए भगवान् शिव कामदेव को जला रहे हैं, उन के सामने बैठी हुई पार्वती काम के नखप्रमाण शरीर को बचा रही है। उन दोनों के आस-पास क्रमशः नन्दी एवं सिंह बैठे हैं। शिव की जटा से गङ्गा का स्रोत बह रहा है।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० २६ परिमाण – ४ + ४

परिचय – मालती के पास बैठी हुई जैतमाल अपने सामने बैठे हुए मधुकुमार को भ्रमर-मालती का संवाद सुना रही है।

पृष्ठ ४० — चित्र संख्या २७ परिमाण — ३½'३ + ६½
परिचय — रामसरोवर बाग में बने हुए एक चौपाल (तिवारी) की छत पर बैठे हुए मधु के समक्ष मालती एवं जैतमाल बैठी हैं।

पृष्ठ ४० — चित्र सं० २८ परिमाण — ३'२ + ३½ २ पो.
परिचय — बाग का माली राजा चन्द्रसेन को मधु-मालती के सुख-विलास की सूचना दे रहा है।

पृष्ठ ४३ — चित्र सं० २९ परिमाण — ३ + ६½
परिचय — रूपरेखा को अपने बाहुपाश में आवद्ध कर भोग-विलास में निरत चंदकुमार सम्मुखस्थ सिंह का बाण द्वारा हनन कर रहा है।

पृष्ठ ४५ — चित्र सं० ३० परिमाण — ३½'४ + ६½ ३ पो.
परिचय — मधुकुमार जैतमाल एवं मालती को अपने सधे हुए अस्त्र रूप गिलोल की चोट से वृक्षों के पत्ते झाड़ कर यह विश्वास दिला रहा है कि तुम डरो मत; मैं इसी तरह से विपक्षसेना का भी संहार कर डालूंगा।

पृष्ठ ४६ — चित्र सं० ३१ परिमाण — ३½'३ + ६½ १ पो.
परिचय — मधुकुमार राजा के पैदल सैनिकों पर अपनी गिलोल चलाकर उन्हें आहत कर रहा है। इस दृश्य को तिवारे की छत पर बैठी मालती एवं जैतमाल देख रही हैं।

पृष्ठ ४८ — चित्र सं० ३२ परिमाण — ३½'२ + ६½
परिचय — रामसरोवर बाग में निर्मित एक भवन की छत पर खड़े मालती, जैतमाल एवं मधु, भ्रमरदंशाहत भागते हुए सैनिकों को देख रहे हैं।

पृष्ठ ५४ — चित्र सं० ३३ परिमाण — ४ + ६½ ३ पो.
परिचय — मधु एवं उस की सहायतार्थ ईश्वर द्वारा प्रेषित भारण्ड, सिंहादि वन्य जन्तु गजारूढ राजा चन्द्रसेन तथा उस के सैनिकों से युद्ध कर रहे हैं। इस दृश्य को छत पर बैठी मालती एवं जैतमाल देख रही हैं।



प्रतिक्रमाङ्क-१०७००; चित्रसंख्या-२६; सूचीपत्राङ्क-१२८

विलासरत चंद्रकुमार बाण द्वारा सम्मुखस्थ सिंह का हनन कर रहा है ।

पृष्ठ ५८ – चित्र संख्या ३४ परिमाण – २’३ + ३’४ पो.

परिचय – राजा चन्द्रसेन अपने प्रधानमंत्री तारणसाह से मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० ३५ परिमाण – ३½’३ + ६½ ३ पो.

परिचय – अश्वारूढ उरगाना पथिक वन में से गुजर रहा है। घोड़े के कमरपट्टे में बंधे हुए सर्प को देख कर वन-वम्बीस्थ सर्प उसे कुछ कह रहा है।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० ३६ परिमाण – ३ + ४½

परिचय – उरगाना अपने हाथों में थंभाये हुए कटोरे से सर्प को दूध पिला रहा है।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ३७ परिमाण – २½’३ + ३½ ३ पो.

शीर्षक – उरगानौं वैटाहै ल्यायौं।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ३८ परिमाण – २½ + ४’१ पो.

शीर्षक – उरगानै कौ वेटौ पायौ।

पृष्ठ ६५ – चित्र सं० ३९ परिमाण – २½’३ + ३½

शीर्षक – मधुनै नारेल झिलावै।

पृष्ठ ६८ – चित्र सं० ४० परिमाण – ३½’४ + ६½ ३ पो.

शीर्षक – प्रसंग राम अंजनी को।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० ४१ परिमाण – २½’१ + ३½ २ पो.

परिचय – राजा चन्द्रसेन अपनी रानी कनकमाल से मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ७० – चित्र सं० ४२ परिमाण – ४ + ६½ ३ पो.

परिचय – महलरूप मंडप में जैतमाल और मालती के सामने बैठे हुए मधु की ओर चार सुवासिनी स्त्रियां मधु के तिलक करने के लिए आगे बढ़ रही हैं।

पृष्ठ ७३ – चित्र सं० ४३ परिमाण – २½’३ + ३½ २ पो.

परिचय – राजा चन्द्रसेन अपने राज्य के भार को मधु के अधीन करने की इच्छा से मधु से प्रार्थना कर रहा है।

पृष्ठ ७५ – चित्र संख्या ४४ परिमाण – ३½'३ + ६½ २ पो.
परिचय – मधु एवं मालती पलङ्ग पर विलासमुद्रा में बैठे हैं।

प्रसङ्गसूची

१ – लीलावती - राजलोकवर्णन – पृष्ठ १ – ३
(१) मंत्री - भवन - वर्णन (२) रामसरोवरवर्णन ।

२ – मधु - मालती का गुरु - गृह में विद्याभ्यास – पृष्ठ ३ – ९
(१) मालती द्वारा मधु के प्रति प्रणयवार्ता का उपक्रम,
(२) मधु कथित इन्द्रायणवृक्ष पर लुब्ध एक शुक का निदर्शन ।

३ – मधुकथित मृग - सिंहिनी का प्रेमाख्यान – पृष्ठ ९ – १८
(१) मृगगदित काकोलूकप्रसङ्गवर्णन (२) काककथित टिट्टिभ - प्रसङ्ग (३) मृग - सिंहिनी - संलाप (४) मधु - मालती का वार्त्तालाप ।

४ – मालतीकथित नृपतिकुमार करण एवं पद्मावती का प्रसङ्ग – पृष्ठ १९ – २३
(१) मधु - मालती का गुरुगृह से स्वस्वावासगमन ।

५ – रामसरोवरप्रसङ्ग – पृष्ठ २४ – २८
(१) मधु का वनपरिभ्रमण (२) मालती का भृंगी एवं चकवी के साथ संलाप (३) चकवी द्वारा कथित जाति - स्वभाव पर सिंह तथा हस्ती का निदर्शन ।

६ – जैतमाल - प्रसङ्ग – पृष्ठ २८ – ४२
(१) मालती एवं जैतमाळ का वार्तालाप (२) जैतमाल के षोडश श्रृङ्गारों का वर्णन (३) जैतमाल एवं मधु के प्रश्नोत्तर, (४) जैतमालकथित कामदहन का प्रसङ्ग एवं भ्रमर - मालती की उत्पत्ति (५) मालती के रूपसौन्दर्य का वर्णन (६) मधु के साथ जैतमाल तथा मालती का वार्तालाप (७) मधु - मालती का गान्धर्व विवाह ।

७ – मधुकथित मलयन्दनृपति के कुमार चंद एवं मंत्रिसुता रूपरेखा की प्रणयवार्ता – पृष्ठ ४२ – ४४

८ – भावी युद्ध की विभीषिका से विकल मालती का मधु के समक्ष कारुण्य प्रदर्शन एवं मधु द्वारा उसे आश्वासन – पृष्ठ ४४ – ४५

९ – मधु का राजा चन्द्रसेन की सेना से युद्ध – पृष्ठ ४५ – ५५
(१) जैतमाल - मधु मंत्रणा (२) भ्रमरयुद्ध (३) मधु - दूत संवाद (४) मधु को अपने पास न देख कर उन्निद्र मालती को जैतमाल द्वारा कथित यदुवंश की कथा से आत्मबोध (५) मालतीकृत श्रीकृष्णस्तुति से मधु की रक्षार्थ समागत भारण्ड, सिंह आदि वन्य जन्तुओं द्वारा राजसेना का संहार (६) युद्धस्थल से पलायित राजा चन्द्रसेन की अपने मंत्रियों से मंत्रणा (७) मंत्रियों द्वारा तारणसाह मंत्री को पुनः बुलाने का राजा को सुझाव।

१० – तारणसाह एवं राजा की परस्पर मंत्रणा – पृष्ठ ५६ – ५८
(१) तारणसाह द्वारा श्रीदुर्गाम्बा की स्तुति तथा मंत्रशक्ति से भारण्ड, सिंह आदि का स्तंभन (२) श्रीगौरी माता का राजा को उपदेश एवं मधु - मालती के पूर्वभव का परिचय (३) युद्धविराम। मंत्री तारणसाह एवं राजा चन्द्रसेन का वार्तालाप।

११ – तारणकथित उरगाना एवं सर्प का प्रसङ्गवर्णन – पृष्ठ ५९ – ६५
(१) अश्वकटिबद्ध सर्प एवं बंबीस्थ सर्प का संवाद (२) बंबीस्थ सर्प एवं उरगाना का संवाद (३) उरगाना का गृहकलह (४) सर्पदंश से उरगाना के पुत्र की मृत्यु (५) राजा अमरसेन के समक्ष उरगाना की स्त्री द्वारा उरगाना - सर्परहस्योद्घाटन (६) राजा द्वारा बंबीस्थधनापहरण।

१२ – राजा चन्द्रसेन द्वारा सादर समाहूत मधु, मालती तथा जैतमाल का स्वस्वावासगमन तथा राजा एवं कनकमाल रानी की मंत्रणा – पृष्ठ ६५ – ६६

१३ – श्री रामचन्द्र - अञ्जनी संवाद – पृष्ठ ६६ – ६९
(१) रानी कलनकमाल से राजा का वार्तालाप।

१४ – मधु - मालती का विवाह – पृष्ठ ७० – ७४

१५ – मधुकथित कामनिवासप्रसङ्ग एवं कविकुलवर्णन के साथ कथोपसंहार। पृष्ठ ७४ – ७६

★

१०. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क-१०८३५

कर्त्ता-चतुर्भुजदास, लिपि समय-१८४५ विक्रम संवत्

आकार-गुटकाकार (सजिल्द) माप (साइज)-६½ + ८½

पृष्ठसंख्या-७२, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति १३, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २८।

पुस्तकदशा-जीर्ण है और कतिपय पत्र कटे फटे हैं।

पुस्तक का प्रारम्भ

..............................री लगी फीरै त्रीया गैल ॥

कबहु क रांमसरोवर जाय । भृगीजूथ मांनु चोक भुलाय ॥१५॥

॥ दुहा ॥ रांमसारोवर तलावकी, सोभा कहि न जाय ।

स्वेतवरन पंकज जीहा, भ्रुन जीन रहे लुभाय ॥ १६ ॥

॥ चोपइ ॥ सोभा कोण सरोवर कहै । कीतीएक तीहां विहंगम रहै ॥

प्रफुलत वास कवल महि महै । ओपमा मांनुसरोवर कहै ॥ १७ ॥

अवला कीतीएक पांणी भरै । चीतवत कलस सीसतै गिरै ॥

रीते कलस हाथतै परै । मांनु विना मोत द्दत मरै ॥ १८ ॥

मालती एहा वात सुण पाइ । मधुकु देषण मनसा ध्याइ ॥

मनमै काहु कहै न सुनावै । जैसे चात्रक स्वातकु ध्यावै ॥ १९ ॥

जब लग मधु अपनै ग्रह रहै । कीतीएक नार ठीकांणो ग्रहै ॥

उनके सजन पीवकु कहै । कीतीएक भली बुरी सब सहै ॥ २० ॥

ऐसी भए दिवस दस विस । सुणी तात तब कीधी रीस ॥

ऐसी वात सुणी नृप इस । तब मधुकुवरकु कीधो सीस ॥ २१ ॥

पुस्तक के अन्त में—

कवीसुर कहै— कायथ निगम जु कुलद है, नाथासुत भइयारांम ।

तनय चतुर्भुज तासके, कथा प्रकासी तांम ॥ ६७ ॥

अलपबुध धेठो दइ, कांमप्रबंध प्रकास ।

कंवीयणसु कर जोडकै, कहै चतुरभुजदास ॥ ६८ ॥

वनसपतीमै अंब फल, रसमै उतपत संत ।

कथा मांही मधुमालती, पट रुत माह वसंत ॥ ७० ॥

लता मांह पंनगलता, सुधामैं घनसार ।
कथां मांह मधुमालती, आभुषणमैं हार ॥७१॥

॥ चोपै ॥ राजनीतकी यामैं सापी । पंच्याष्यान बुध ए भापी ॥
चाणयक चातुरी वताई । थोरी थोरी सब ही आइ ॥७२॥

फुनि वसंतराजा रस गावै । जामैं इश्वर कांम दझावै ॥
ताकी एह लीला वीस्तारी । रसकन श्रवणकु सुषकारी ॥७३॥

रसक होय सोइ रस चाहैं । अध्यातम आगम आगाहैं ॥
चातुर पुरष होयहै कोउ । इह रसकला समझहै सोउ ॥७४॥

कृष्णदेवको पुत्र काहावै । प्रद्युम्न कांम अंस [म]धु गावै ॥
पुत्र कलत्र सवै सुष पावै । दुष दारद न नैडो आवै ॥७५॥

॥ वायव्य ॥ कांमार्थ लभते कांमा नीर्द्धनं लभते धन ।
अपुत्रं लभते पुत्रं व्यांध तस्या न पंडतं ॥७६॥

॥ दुहा ॥ राजा पढै तीही राजगत, मीत्री पढै तो बुध ।
कांमी कांम विलास रस, ध्यांनी ध्यांनं सुसीध ॥७७॥

ईती मधुमालतीकी कथा संपुरणः संवत् १८४५ मीती पोस सुद १। अरकवारेः लीषतं मथेन सीवरामः पालीमध्येः वास वीकानेररो छैः वाचै भाणनु राम राम छे ॥

टिप्पणी—इस सजिल्द गुटकाकार प्रति में १, ३ एवं ६६ संख्या वाले पृष्ठों के अप्राप्त होने के कारण विद्यमान पृष्ठों की संख्या ७२ ही रह गई है। दूसरे पृष्ठ के पूर्व भाग पर चित्र अङ्कित है तथा उसके उत्तर भाग पर प्रकरण लिखा हुआ है। उसी प्रकरण के कुछ पद्य ऊपर में 'पुस्तक का प्रारम्भ' के रूप में उद्धृत किये गये हैं। प्रति का प्रत्येक पृष्ठ अलग अलग रूप में विविध रंगों से बने १ इञ्च परिमाण के बोर्डर (परिधि) से सुशोभित है, अर्थात् किसी पृष्ठ पर काले, तो किसी पर पीले, तो किसी पर लाल रङ्ग का बोर्डर बना हुआ है। बोर्डर एवं लेखस्थल के बीच में चारों ओर समानान्तर पर लाल स्याही की दो सूक्ष्म रेखाएं अङ्कित की हुई हैं। कहीं कहीं पर उक्त रेखाएं सफेद एवं काली भी दृष्टि गोचर होती हैं। अधिकतर पृष्ठों पर लाल रङ्ग का ही बोर्डर है। काले एवं पीले बोर्डर पर साधारण बेल की भी रचना की हुई है। इस प्रकार जहां लिपिकार ने इस प्रति को यथासाध्य सुन्दर बनाने का प्रयास किया है, वहां जिल्द-

कार अथवा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बोर्डर आदि पर कागज आदि चिपका कर उस प्रति को विकृत भी बना दिया गया है। इस से प्रति की शोभा तो नष्ट हुई ही है, साथ में प्रतिगत पृष्ठों पर अङ्कित पत्राङ्कों का दर्शन भी दुर्लभ हो गया है। प्रति के कतिपय पत्र जिल्द से उखड़ कर जर्जरित, कितने अर्द्धत्रुटित तथा कितने ही आदि-मध्यावसानभाग से खंडित भी हो चुके हैं। इस प्रति में प्रस्तुत कथा का प्रकरण काली स्याही से तथा प्रसङ्ग, सन्दर्भ, एवं पद्याङ्क लाल स्याही से लिखे गये हैं। पद्य के प्रत्येक पाद को लाल स्याही की १ विरामरेखा से तथा पद्याङ्कों को दो दो विराम-रेखाओं से आबद्ध किया हुआ है। प्रति की लिपि साधारण होने पर भी इसके अक्षर स्थूल, अपेक्षाकृत शुद्ध एवं सुवाच्य हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रत्येक चित्र के ऊपर काली स्याही से लिखित शीर्षलेख भी अङ्कित किये हुए हैं। जिन में कतिपय शिरोलेख ऐसे भी हैं जो प्रसङ्ग के प्रतिकूल प्रतीत होते हैं। इन शिरोलेखों के अनुसार प्रति में ७० चित्र उपलब्ध हैं। इन में पूरे अर्थात् पूर्ण पत्र पर अङ्कित २६ एवं अर्द्धपत्राङ्कित ४४ चित्र हैं, चित्रों की आधारभूमि विविध रंगों से रञ्जित है तथा उन के चित्रण में भी विभिन्न प्रकार के उत्तम रंगों को ही काम में लिया गया है। यद्यपि चित्रों के आकार-प्रकार एवं उनकी वेष-भूषा आदि के निर्माण में विशेषतया जैसलमेरी पद्धति का ही प्रभाव परिलक्षित होता है; किन्तु कहीं कहीं पर बीकानेरी शैली भी सामान्यतया दृष्टिगोचर होती है। यों तो प्रतिगत सभी चित्र भावानुकूल एवं सुन्दर हैं, किन्तु घोड़े, हाथी आदि वन्यजन्तुओं का चित्रण इस प्रति में विशेष रूप से अवलोकनीय है। चित्रों का शीर्षकात्मक विवरण निम्नाङ्कित है—

चित्रसूची –

पृष्ठ २ – चित्र संख्या १ परिमाण – ५ + ७ (बीच से फटा हुआ)

शीर्षक – **मधु सरवर उपरा पाणीहारीरा घडानु गीलोला वावै छै।**

पृष्ठ ४ – चित्र सं० २ परिमाण – ४½'२ + ३'२ पोइन्ट

शीर्षक – **राजासु राणीसु मालती पढण की बात कहै छै।**

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ३ परिमाण – ४½'२ + ३'२ पो.

शीर्षक – **मधु भणै छै गुरां कनै।**

पृष्ठ ५ – चित्र संख्या ४ परिमाण – ३'२ + ७
शीर्षक – मालती भीतर [परेचमें] भणै। मधु गुरां कनै भणै छै।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० ५ परिमाण – ३ + ७
शीर्षक – मालती मधुरै दड़ी (गेंद) वाई।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० ६ परिमाण – ३ + ३½
शीर्षक – मालती मधुरै दड़ीकी पाछी दई।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० ७ परिमाण – ५ + ३
शीर्षक – मालती मधुनु वातां कहै छै।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० ८ परिमाण – ४½'३ + ३½
शीर्षक – मृग संघनी वातां करै छै सनेह बाधो।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० ९ परिमाण – ४½'४ + ३½
शीर्षक – जीनावर सरव भेला हुआ।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १० परिमाण – ४½'३ + ३½
शीर्षक – साय (ग)र टीटोरीरा ईडा (अंडा) वुहाय जीनावर बेठा।

पृष्ठ १० – चित्र सं० ११ परिमाण – ३½ + ३'१ पो.
शीर्षक – भगवान कनै पुकारीयो।

पृष्ठ १० – चित्र सं० १२ परिमाण – २½'१ + ३'२ पो.
शीर्षक – टीटोरी गुरड कनै आयो।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० १३ परिमाण – १½ + ६½ ३ पो.
शीर्षक – घुघु पंछी सरव भेलै हुवा।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० १४ परिमाण – २½'२ + ६½ ३ पो.
शीर्षक – कागांनै घुघू मारै छै रातरा।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० १५ परिमाण – ४½'३ + ३
शीर्षक – कागा सरव भेला हुआ छै घुघुवांनु मारो।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० १६ परिमाण – ४½'३ + ३
शीर्षक – घुघुरी चाकरी कागा करै छै।

पृष्ठ १३ – चित्र संख्या १७ परिमाण – ४½'२ + ३'३ पोइन्ट
शीर्षक – घुघुनु गुफामै घाल नै कागो वार दीया।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० १८ परिमाण – ४½'३ + ३½
शीर्षक – सिंघनी मृगनै वचन दीयो।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० १९ परिमाण – ४½'३ + ३
शीर्षक – मधु मालती वातां करै छै।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० २० परिमाण – ५ + ३'३ पो.
शीर्षक – सिंघ संघणी संवादां।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० २१ परिमाण – ३'२ + ६½ १ पो.
शीर्षक – मृग संघनी संवादो। मृग संघनी सुवा दोउ।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० २२ परिमाण – ४½'४ + ३'३ पो. (चित्र भाग के अतिरिक्त पत्रार्द्ध विनष्ट है)

शीर्षक – मधु मालती वातां करै छै।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० २३ परिमाण – ३'२ + ६½ ३ पो.
शीर्षक – पदमावती सषीनु कहै छै। दुती अरज करै छै।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० २४ परिमाण – ३½'२ + ६½ ३ पो.
शीर्षक – राजा कबीलो भेलो कीयो छै।

पृष्ठ २० – चित्र सं० २५ परिमाण – २½'१ + ३'२ पो.
शीर्षक – पदमावती सषीनै कहै।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० २६ परिमाण – ४½'३ + ३'४ पो.
शीर्षक – [करण पदमावतीनै] परणीजै छै।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० २७ परिमाण – ५ + ३½
शीर्षक – चैनरेषा अरज करै छै।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० २८ परिमाण – ३'२ + ४
शीर्षक – पदमावतीरी पीठमै पीचकारी दीवी मधुसु (करणसु) जाय झुवी।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० २९ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक – मधु सरोवर उपर गीलोला मारै पणीहारी चीरत देषै।

पृष्ठ २५ – चित्र संख्या ३० परिमाण – ५ + ३½ २ पोइन्ट
शीर्षक – मालती कनै अरड पुकारीयो ।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ३१ परिमाण – ५ + ३’१ पो.
शीर्षक – मालती कनै चकवी आई ।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ३२ परिमाण – ५ + ३½
शीर्षक – मालती सषीनु कहै छै ।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ३३ परिमाण – ४½’३ + ३
शीर्षक – मधु मालती बेठा जेतमालती देषे ।

पृष्ठ ३१ – चित्र सं० ३४ परिमाण – २½’२ + ७
शीर्षक – मधु बेठो, जेतमालती सेवती वातां कहै ।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ३५ परिमाण – ५ + ३’३ पो.
शीर्षक – जैतमालती मधुनु समझावै छै ।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ३६ परिमाण – २’४ + ६½ २ पो. (पत्र फटा हुआ)
शीर्षक – मधु मालती बोलाई सषी बेठी छै ।

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ३७ परिमाण – ५ + ३½
शीर्षक – मधु मालतीरो रूप नीरषै ।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० ३८ परिमाण – ४½’४ + ३’३ पो.
शीर्षक – राजासु रांणी अरज करै छै ।

पृष्ठ ३९ – चित्र सं० ३९ परिमाण – ४½’३ + ३½ १ पो.
शीर्षक – रूपरेषा वाघ कुंजमै उभी ।

पृष्ठ ३९ – चित्र सं० ४० परिमाण – ३ + ६½
शीर्षक – कवर रूप देष नै मुरझांरां ।

पृष्ठ ४० – चित्र सं० ४१ परिमाण – ३ + ६½
शीर्षक – चंदकुमर रूपरेषा दोउ रमै नाहर वारै आयो ।

पृष्ठ ४१ – चित्र सं० ४२ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक – पायक लडै छै सीव देषै छै ।

पृष्ठ ४२ – चित्र संख्या ४३ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक– पायक लडै छै मधु गीलोला वावै छै मालती जेतमालती उभी ।

पृष्ठ ४३ – चित्र सं० ४४ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक– पायक भागा, भमरा छूटा, पायक लरै मधु मालती दोउ ।

पृष्ठ ४४ – चित्र सं० ४५ परिमाण – ५ + ४'२ पो.
शीर्षक– राजा कनै पाछा आया भागा नाठा ।

पृष्ठ ४५ – चित्र सं० ४६ परिमाण – ४ + ३
शीर्षक– मधु मालती जेतमालती बेठा ।

पृष्ठ ४५ – चित्र सं० ४७ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक– पायक भागा मधु मालती जेतमालती लडै ।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ४८ परिमाण – ४½'३ + ३½
शीर्षक– राजा कनै पायक पुठा आया ।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ४९ परिमाण – ५ + ३½
शीर्षक– राजा वीसटीलै (दूत) मेलीया मधु मालती जेतमालती बैठा ।

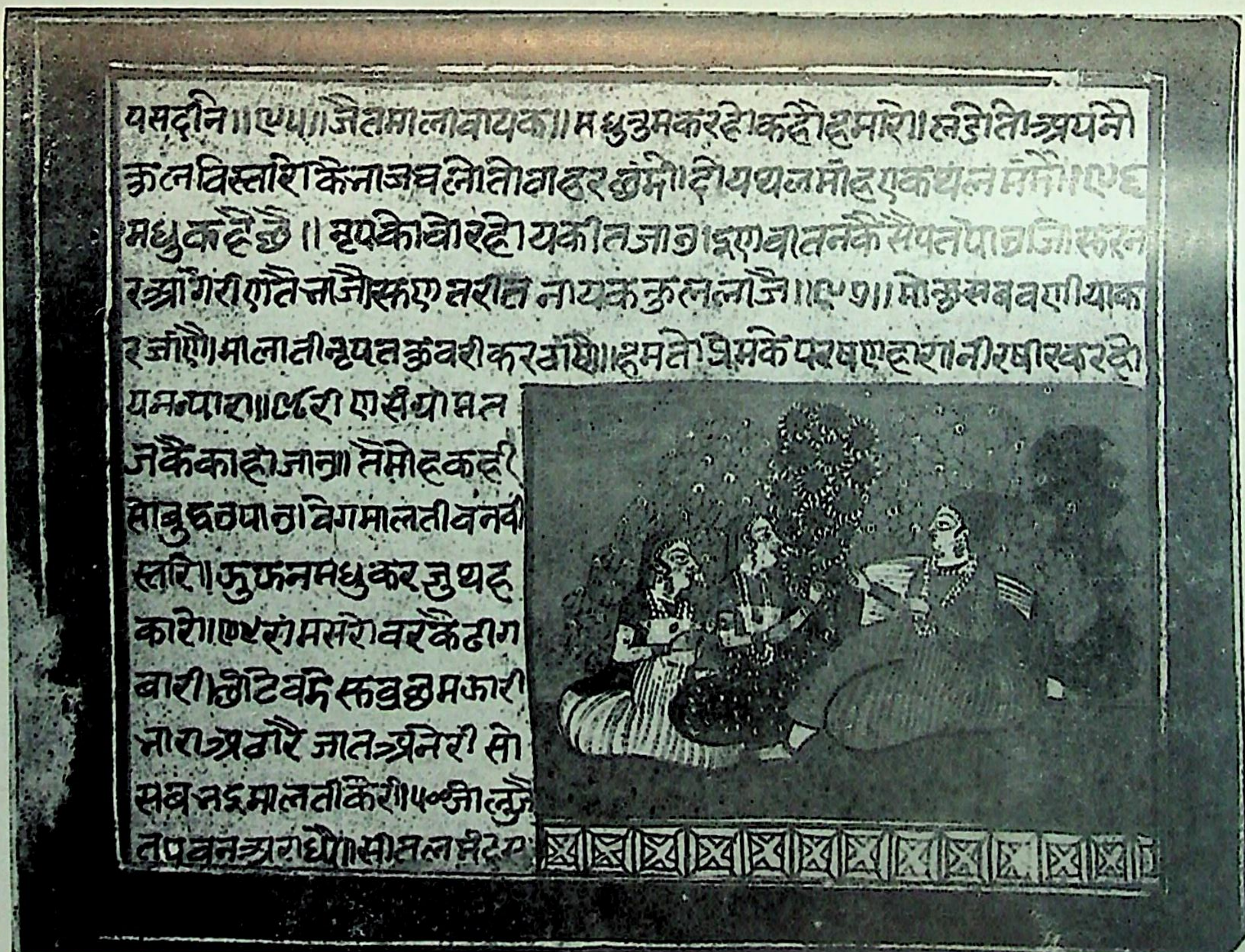
पृष्ठ ४८ – चित्र सं० ५० परिमाण – ४ + ५
शीर्षक– मधु कनै दुत आयौ ।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ५१ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक– राजा फोजां लै चढ़ियो ।

पृष्ठ ५० – चित्र सं० ५२ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक– मधु मालती जेतमालती लरै ।

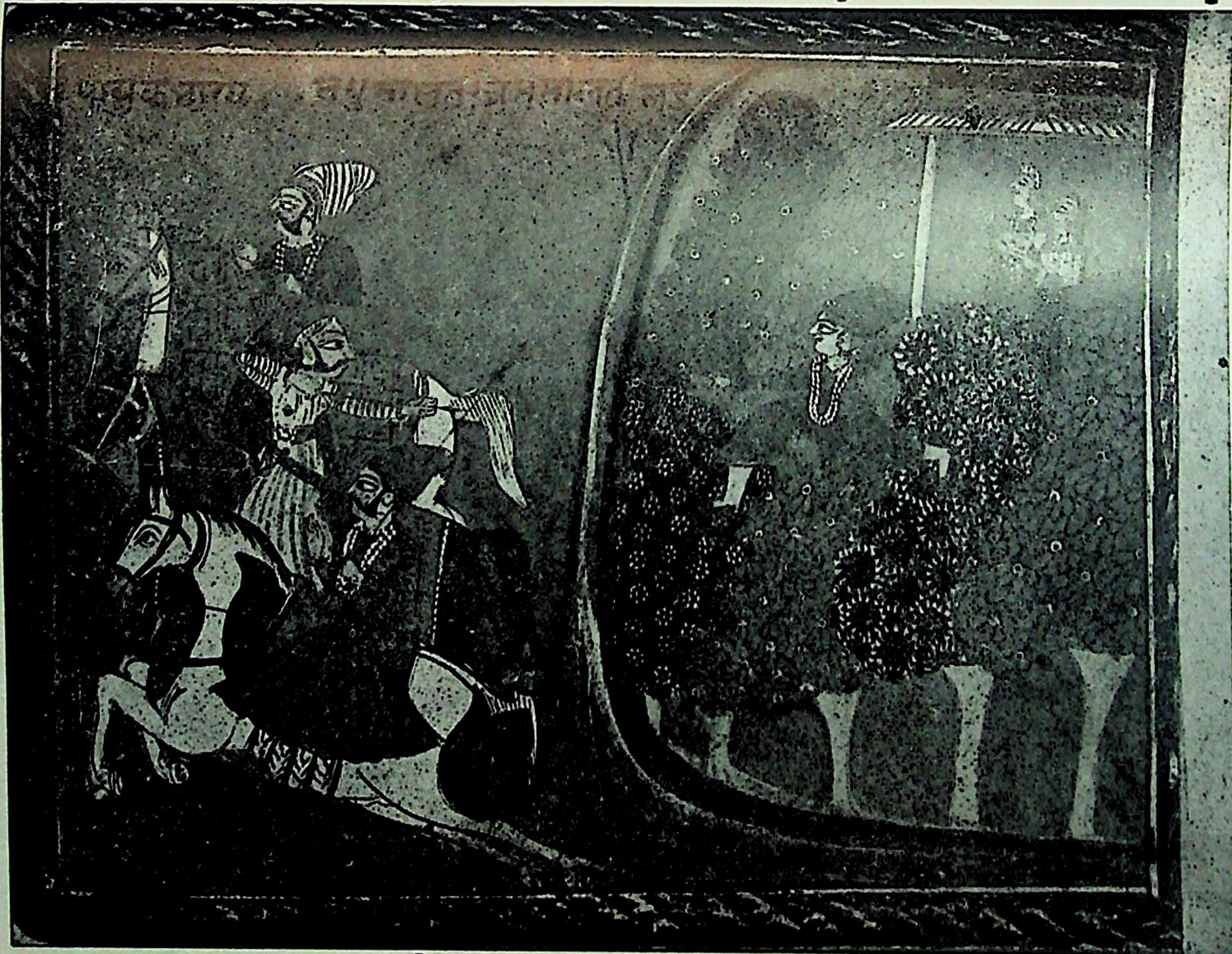
पृष्ठ ५२ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक– पायक नाठा मुधु गीलोला वावै ।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० ५४ परिमाण – २½'३ + ६½ ३ पो.
शीर्षक– राजासु मीत्री वातां करै छै ।



प्रतिक्रमाङ्क–१०८३५;   चित्रसंख्या–४६;   सूचीपत्राङ्क–१३८

मधु मालती जेतमालती वैठा ।



प्रतिक्रमाङ्क–१०८३५; चित्रसंख्या–४७; सूचीपत्राङ्क–१३८

पायक (सैनिक) भागा; मधु मालती जेतमालती लडै।

पृष्ठ ५४ – चित्र संख्या ५५ परिमाण – २'२ + ७

शीर्षक – राजा तारणनुं कहै छै नाहर नाठो आवै छै ।

पृष्ठ ५५ – चित्र सं० ५६ परिमाण – ३'२ + ७

शीर्षक – मातासु राजा अरज करै छै मधु कुण छै ।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० ५७ परिमाण – ५ + ३½

शीर्षक – उरगांणै घोरो मंगायो ।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० ५८ परिमाण – २½'१ + ४'१ पो.

शीर्षक – सरप कनै आया ।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० ५९ परिमाण – ५ + ३'२ पो.

शीर्षक – उरगांणारी असत्री पुछै ।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० ६० परिमाण – ४'३ + ३½ ३ पो.

शीर्षक – उरगांरां दुध पावै छै सरपनु ।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० ६१ परिमाण – ४½'३ + ३'३ पो.

शीर्षक – सरपरै माथेमै दीवी सरप झाट वाई उलगांरां मुवो ।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० ६२ परिमाण – ४½'२ + ३'४ पो.

शीर्षक – अरगांररां वाप मा उभा छै ।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ६३ परिमाण – ३'३ + ६½ ३ पो.

शीर्षक – राजा कनै उलगांरारी वउ पुकारी ।

पृष्ठ ६४ – चित्र सं० ६४ परिमाण – ४½'२ + २½ ३ पो.

शीर्षक – राजानु तारण मीती सुमझावै ।

पृष्ठ ६४ – चित्र सं० ६५ परिमाण – ४½'३ + २½ ३ पो.

शीर्षक – रांणी सष्यैनु बात कहै ।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० ६६ परिमाण – ५ + ३'१ पो.

शीर्षक – राजानु रांणी कहै छै ।

पृष्ठ ६८ – चित्र सं० ६७ परिमाण – ४ + ६½ ३ पो.

शीर्षक – राजा रांणी आपरी बेटी दीवी ।

पृष्ठ ६९ – चित्र संख्या ६८ परिमाण – ५ + ७
शीर्षक – मधु पणनीजण आयै छै ।

पृष्ठ ७१ – चित्र सं० ६९ परिमाण – ४½"२ + ६½ ३ पो.
शीर्षक – मधुनु राजा राजतीलक दीयो ।

पृष्ठ ७४ – चित्र सं० ७० परिमाण – ५ + ५
शीर्षक – मधु सुष भोगवै ।

प्रसङ्गसूची –

१ – रामसरोवर वर्णन एवं मधु-मालती का गुरुगृह में विद्याभ्यसन तथा उन की प्रणयवार्ता का सूत्रपात – पृष्ठ २ – ७

२ – मधुकथित मृग-सिंहिनी का उपाख्यान – पृष्ठ ७ – १८
(१) मृगकथित काकोलूकसंवाद (२) काककथित टिट्टिभ-टिट्टिभीसंवाद (३) मृग एवं सिंहिनी का वार्तालाप (४) मधु-मालती का संलाप ।

३ – मालतीकथित नृपतिकुमार करण एवं राजा सूरसेन की पुत्री पद्मावती का विवाहप्रसङ्ग – पृष्ठ १८ – २३
(१) मधु-मालती का गुरुगृह से स्वस्वावासगमन ।

४ – रामसरोवरप्रसङ्ग – पृष्ठ २३ – २६
(१) मधु का वनपरिभ्रमण (२) मालती का भृंगी एवं चकवी के साथ संलाप ।

५ – जैतमालप्रसङ्ग – पृष्ठ २७ – ३८
(१) मालती तथा जैतमाल का वार्तालाप (२) जैतमाल के षोडश शृंगारों का वर्णन (३) जैतमाल एवं मधु के प्रश्नोत्तर (४) जैतमालकथित कामदहनप्रसङ्ग से मधु को अपने पूर्व भव का स्मरण होना (५) मधु का मालती एवं जैतमाल के साथ संवाद । (६) जैतमालकथित मालती के रूपसौष्ठव का वर्णन (७) मधु-मालती का गान्धर्वविवाह ।

६ – राजकुमार चंद्र एवं रूपरेखा का प्रणयाख्यान – पृष्ठ ३८ – ४०

७ – मधु एवं राजा चन्द्रसेन का युद्धप्रसङ्ग – पृष्ठ ४१ – ५३

(१) मधु द्वारा मालती एवं जैतमाल के विश्वासार्थं अपने अस्त्ररूप गिलोल का चालन (२) मधु तथा राजसेना का युद्ध (३) भ्रमरयुद्ध (४) मधु तथा राजदूत का संवाद (५) उन्निद्र मालती को जैतमाल द्वारा धैर्यबन्धन तथा उसे यदुवंश की कथा से पूर्वभवस्मारण (६) मालतीकृत विष्णु-स्तुति से मधु के सहायतार्थ प्राप्त भारण्ड, सिंह आदि वन्य - जन्तुओं का राजसेना से युद्ध (७) युद्धस्थल से पलायित राजा चन्द्रसेन की अपने मंत्रियों से गुप्त मंत्रणा (८) मंत्रियों द्वारा प्रधानमंत्री तारणसाह का आह्वान।

८ – राजा चन्द्रसेन एवं तारणसाह की मंत्रणा – पृष्ठ ५३ – ५७

(१) तारणसाह द्वारा स्वमंत्रशक्ति से सिंहादि का स्तंभन (२) श्रीदुर्गा माता का राजा को उपदेश एवं मधु - मालती का परिचय (३) युद्धविराम (४) राजा - मंत्री का संवाद।

९ – तारणकथित अश्वारूढ उरगाना - सर्प का संवाद – पृष्ठ ५७ – ६३

(१) अश्वबद्ध सर्प तथा वनबम्बीस्थ सर्प का संवाद (२) उरगाना - सर्पसंवाद (३) गृहकलह (४) सर्पदंश से उरगाना के पुत्र की मृत्यु (५) उरगाना की स्त्री द्वारा राजा अमरसेन के सम्मुख उरगाना - सर्परहस्योद्घाटन (६) राजा द्वारा सर्पमारण एवं तद्वंबीस्थधनापहरण।

१० – राजा चन्द्रसेन एवं रानी कनकमाल का संवाद – पृष्ठ ६४ – ६८

(१) राजा द्वारा सादर समाहूत मधु, मालती तथा जैतमाल की स्वस्वावासनिवृत्ति। (२) श्री रामचन्द्र तथा अञ्जनी का प्रसङ्ग, राजा एवं रानी की परस्पर मंत्रणा।

११ – मधु - मालती का विवाह प्रसङ्ग – पृष्ठ ६८ – ७४

(१) मधुकथित कामनिवासवर्णन, कविकुलवर्णन एवं कथोपसंहार।

★

११. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क—११६०८

कर्त्ता—चतुर्भुजदास, लिपि समय-१८ वीं शताब्दी (वि०)

आकार—गुटकाकार (जिल्दबंध) माप (साइज)-८ + ९

पृष्ठसंख्या—१०१, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति १७, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २८ ।

पुस्तकदशा—जीर्ण-शीर्ण, प्रान्त्य भाग से खण्डित एवं त्रुटक है ।

पुस्तक का प्रारम्भ

........................, सौभा वरणी न जाय ।
स्वेत अरून पंकज तिहां, मुनिवर रहै लोभाय ॥ १९ ॥

॥ चौपई ॥ सौभा कौंन रामसर लहै । बहौंतक तिहां विहंगम रहै ॥
प्रफुलित वास कमल महमहै । उपमा मांनु मांनसर कहै ॥ २० ॥
अवला जेतिअक पांनी भरई । चितवत्त कुंभ सिरतै ढरई ॥
रीते करस हाथतै परई । भुलि मांन विना मृत धरई ॥ २१ ॥

पुस्तक के अन्त में—

॥राजावायक॥चौपई॥ प्रांण सिर ढिग कांम वतायौ । इह तो भेद सवे सुनि पायो ॥
ज्यौ तन रूप सवे तन कहई । लपें न छपै न न्यारे रहई ॥ १४३५ ॥
जांनें नही न कौ उदरसै । कौउ संसर्ग न कौउ फरसै ॥
इह समझाय कहो मोहि आगै । तो मो मनको सांसो भागैः ॥१४३६॥

॥मधुवायकः॥ ससि उद्योत सर गहि जांनो । जलकुंभ सरस भरि आंणो ॥
सव हि मो प्रतिविंव प्रकासै । ऐह विजोत पिडमै भ्यासै ॥ १४३७ ॥
उत देषै मो(तो) ऊत ही अंदा । घट देषेहुं तो सहसै चंदा ॥
लिपै न छपै न सवे गुंण व्यापै । अला अलष निरंजन आपै आपै ॥१४३८॥

टिप्पणी—यह प्रति जीर्ण, त्रुटित एवं आद्यन्तांशरहित है तथा इस में १, ३, ४, ५, ६, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, ३८, ७५, ९९ एवं १०० संख्या वाले पत्रों का अभाव है । अतः दूसरे एवं १०१ संख्या वाले पत्र पर उल्लिखित प्रस्तुतकथांश के ही कुछ पद्य निदर्शनार्थ ऊपर में उद्धृत किये गये हैं । प्रति के प्रायः पृष्ठों के प्रान्त्यभाग कट-फट गये हैं तथा कितने ही पृष्ठ जिल्द से उखड़ कर जीर्ण भी हो चुके हैं । प्रतिगत पृष्ठों पर विलिखित प्रबन्धभूमि के

दाईं बाईं ओर सन्निकट में लाल स्याही की डबल रेखाएं अङ्कित हैं तथा पृष्ठ का शेष भाग चारों ओर बराबर रिक्त छोड़ा गया है – अर्थात् प्रतिगत सभी पृष्ठों का १ इञ्च परिमाण का प्रान्त्य भाग वर्त्तनी के रूप में रखा गया है। प्रबन्ध (प्रकरण) को लिखने में काली स्याही तथा प्रसङ्ग एवं सन्दर्भादि के लिखने में लाल स्याही उपयोग में लाई गई है और प्रबन्धगत पद्यों के प्रत्येक पाद भी लाल स्याही की विरामरेखाद्वय से आवेष्टित हैं। प्रति की लिपि सुन्दर एवं इस के अक्षर स्थूल, सुवाच्य तथा सुस्पष्ट हैं।

प्रस्तुत प्रति में प्राप्त ८० पृष्ठों में ८५ चित्र समुपलब्ध हैं, जो कि ६० पृष्ठों में अङ्कित किये गये हैं। चित्रस्थली के चारों ओर काली अथवा लाल रंग की दो रेखाएं खींच कर, उन में पीला रंग भर दिया गया है और उन रेखाओं से सटती हुई लाल रंग की परिधि बनाई गई है। परिधि के बाहर चित्र-शीर्षक काली स्याही से लिखे गये हैं। सिरोही एवं मध्यप्रान्तीय शैली के आधार पर बने इन चित्रों के चित्रण में यद्यपि स्थूल एवं साधारण लेखनी तथा साधारण रंगों का ही उपयोग हुआ है फिर भी चित्र सुन्दर, चित्ताकर्षक, एवं सजीव से बने हुए हैं। प्रतीत होता है कि चित्रकार ने इन चित्राकृतियों में प्रसङ्गानुकूल यथापात्र एवं समयोचित भाव-भङ्गिमा को अभिव्यञ्जन करने में अपने सधे हुए हस्तकौशल तथा उत्तम कलाचातुर्य का पूर्ण परिचय दिया है। सघन वृक्षावली के दृश्य भी चित्रकार की कलाभिरुचि के प्रतीक हैं। चित्रों का विवरण निम्न रूप में दिया जा रहा है –

चित्रसूची –

पृष्ठ २ – चित्र संख्या १ परिमाण – ५'३ + ७½

परिचय – **मधु की बाल्यावस्था का चित्र। तारणसाह अपनी पत्नी की गोद में बैठे हुए मधु को ले रहे हैं, उन के आस-पास दो परिचारिकाए खड़ी हैं।**

पृष्ठ २ – चित्र सं० २ परिमाण – ७½'४ + ७'४ पो.

शीर्षक – **राजा चंद्रसेन मंदिर।**

पृष्ठ ७ – चित्र सं० ३ परिमाण – ८ + ७½

शीर्षक – **राजा मालतीने पूछै भणवाकी वात। तारणमंत्री पूछै मधुने भणवाकी वात।**

पृष्ठ ८ — चित्र संख्या ४ परिमाण — ३½ + ७'४ पोइन्ट
शीर्षक — पंडित मालती मधुकुं भणावै ।

पृष्ठ ९ — चित्र सं० ५ परिमाण — ३ + ७
शीर्षक — मालती परेच फाड ने मधुकुं देपै ।

पृष्ठ ९ — चित्र सं० ६ परिमाण — ३ + ७
शीर्षक — मालती मधुकै गैंदकी द्यैः ।

पृष्ठ १० — चित्र सं० ७ परिमाण — २½'२ + ३
शीर्षक — सैवर फुल्या आसकरण सुवटो बैठो ।

पृष्ठ १० — चित्र सं० ८ परिमाण — २½'२ + ७
शीर्षक — सीघनी मृगनो संवादः प्रथमः ।

पृष्ठ ११ — चित्र सं० ९ परिमाण — २'२ + ४
शीर्षक — अरीमर्दन राजा घुघु सब पंछी तीरे बैठै ।

पृष्ठ ११ — चित्र सं० १० परिमाण — ३ + ४
शीर्षक — मेघवरण काग आयौ सब पंछीसुं कहै ।

पृष्ठ २३ — चित्र सं० ११ परिमाण — २½ + ७
शीर्षक — राजा करणकुं नालेर वीप्र ले आयौ ।

पृष्ठ २३ — चित्र सं० १२ परिमाण — ७½ + ७
शीर्षक — राजा करण तोरण वंदै ।

पृष्ठ २४ — चित्र सं० १३ परिमाण — ३½'३ + ७'४ पो.
शीर्षक — पदमावती चैनरेषा संवाद । राजा करण प्रथम सुण हेरे ।

पृष्ठ २५ — चित्र सं० १४ परिमाण — २½ + ७½
शीर्षक — जल-पंथी भाव (नदी, सरप, पंथी, छछुदरी, सर्प-छछुदरी गल)

पृष्ठ २६ — चित्र सं० १५ परिमाण — ३½'१ + ८'२ पो.
शीर्षक — चैंनरेषाइं पचकारी पदमाव [ती] कै पीठमै मारी ।

पृष्ठ २६ — चित्र सं० १६ परिमाण — ३'३ + ७½
शीर्षक — मालती दस आंगुली धरै ।



प्रतिक्रमाङ्क–११६०८; चित्रसंख्या–२३; सूचीपत्राङ्क–१४४

राजा करण तोरण वंदै । पदमावती राजा करण परणैं ।



प्रतिक्रमाङ्क–११६०८; चित्रसंख्या–२४; सूचीपत्राङ्क–१४५

रामसरोवरं मालती-भृंगी-चकवीसंवाद ।

पृष्ठ २७ – चित्र संख्या १७ परिमाण – ४'१ + ८'१ पो.
शीर्षक – मालती फैंटो सावेरही मधुको ।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० १८ परिमाण – ६ + ७'३ पोइन्ट
शीर्षक – गुरु ग्रहे मधु मालती संवाद करः मधु घरे गयौ। ब्राह्मण संवाद करै ।

पृष्ठ २८ – चित्र सं० १९ परिमाण – २'३ + २½ ४ पो.
शीर्षक – दो मुषको पंषी (भारंड)

पृष्ठ २९ – चित्र सं० २० परिमाण – ८ + ८
शीर्षक – राम सरोवरै मधु षेलै तठै अखी रूप देषणकुं भली दुती मालतीकी ।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० २१ परिमाण – ५'१ + ४'१ पो.
शीर्षक – मधु घोड़े चढी घरे चाला ल्यौं ।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० २२ परिमाण – ३½'१ + ३'३ पो.
शीर्षक – दुती आय मधुकी षवर दीधी रामसरोवरै ।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० २३ परिमाण – २'४ + ४½
शीर्षक – मृग पारधी घाव ।

पृष्ठ ३१ – चित्र सं० २४ परिमाण – ७ + ५
शीर्षक – राम सरोवरैः मालतीः चकवी संवाद ।

पृष्ठ ३२ – चित्र सं० २५ परिमाण – ५'१ + ७'४ पो.
शीर्षक – सीघनी सुतनै कुंजर घेरचौ ।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० २६ परिमाण – ३½ + ४
शीर्षक – जैतमाल मालती संवाद ।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० २७ परिमाण – ३'१ + ३½ १ पो.
शीर्षक – मालती जेतमालकै पगे लागी ।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० २८ परिमाण – ४½'१ + ४
शीर्षक – दुती आंण मालती जैतमालसु कहै मधुकी वात रामसरोवर षेलै ।

पृष्ठ ३६ — चित्र संख्या २९ परिमाण — ४'२ + ७½
शीर्षक — जैतमाल स्नान करै, जैतमाल सीणगार सजै ।

पृष्ठ ३६ — चित्र सं० ३० परिमाण — ५½ + ७½
शीर्षक — रामसरोवरै जैतमाल संवाद ।

पृष्ठ ३९ — चित्र सं० ३१ परिमाण — ४'१ + ४'४ पो.
शीर्षक — पाडल रात्रकै स्म्यै मालती होइः भमर मधु होइः रैणकै स्म्यै सुष त्रिलास करै ।

पृष्ठ ४६ — चित्र सं० ३२ परिमाण — ५'३ + ७½
शीर्षक — रामसरोवरै मधु मालती जैतमालसुं मैनांकी वात कहै छै ।

पृष्ठ ४६ — चित्र सं० ३३ परिमाण — ५ + ७'४ पो.
शीर्षक — राजा धरमसेन नगर वरनापुरी ।

पृष्ठ ४७ — चित्र सं० ३४ परिमाण — ४'३ + ५
शीर्षक — लालनसाह मंदीर छै ।

पृष्ठ ४८ — चित्र सं० ३५ परिमाण — ४ + ७½
शीर्षक — मेनां गोषै बैठी राजारो कुवर सीकार नीकल्यो सो मेनां देषी ।

पृष्ठ ४८ — चित्र सं० ३६ परिमाण — ४ + ४½ ३ पो.
शीर्षक — मेनां मंदीर दुती रतनां मांलन आवी वात करै ।

पृष्ठ ५२ — चित्र सं० ३७ परिमाण — ४½'२ + ४½
शीर्षक — लालन मैनां आसन ।

पृष्ठ ५३ — चित्र सं० ३८ परिमाण — ५'२ + ७½
शीर्षक — रामसरोवरै वारता करै मधु मालती जैतमाल ।

पृष्ठ ५६ — चित्र सं० ३९ परिमाण — २½ + ४'२ पो.
शीर्षक — सुवटा मंदीर कोयलो आयो ।

पृष्ठ ५६ — चित्र सं० ४० परिमाण — १½'३ + ७'२ पो.
शीर्षक — ठाकुरे सुवटाकी पत राषी-सब पंछी सुवटा उपर चढे आया ।

पृष्ठ ५७ – चित्र संख्या ४१ परिमाण – ३ + ७'३ पोइन्ट
शीर्षक – व्याधी जनावर मारे ।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० ४२ परिमाण – ४'३ + ४½ ४ पो.
शीर्षक – मृग कपोत स्मयो ।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० ४३ परिमाण – ६½'४ + ७'३ पो.
शीर्षक – मधु मालतीनै परणै रामसरोवरै ।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० ४४ परिमाण – ३½'२ + ७'३ पो.
शीर्षक – राजा चंद्रसेन आगल माली पुकार करै ।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० ४५ परिमाण – ५ + ७'४ पो.
शीर्षक – रामसरोवरै मधु तीरै चेरी कहै ।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० ४६ परिमाण – ३½'३ + ७'३ पो.
शीर्षक – राजा म[ल]यचंद मंदीर ।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० ४७ परिमाण – ३'४ + ४'३ पो.
शीर्षक – नेंनसवादी मालनसुं चंदकुवर कहै ।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० ४८ परिमाण – ४'२ + ७'३ पो.
शीर्षक – चंदकुमर आसनै नाहर मार्‍यो ।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ४९ परिमाण – ४'२ + ७'४ पो.
शीर्षक – महारुद्र पारवती अरज करै रामसरोवरै मधु गलो-
लनसुं वृछकै पांन पाडै मालतीकुं देषावै ।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ५० परिमाण – ७ + ४
शीर्षक – प्रथम लडाई सामंत राजाका ।

पृष्ठ ६४ – चित्र सं० ५१ परिमाण – ३'४ + ४½ २ पो.
शीर्षक – राजा आगल पायक पुकार करै ।

पृष्ठ ६५ – चित्र सं० ५२ परिमाण – ६'४ + ७'४ पोइन्ट
शीर्षक – लड़ाई दुजी ।

पृष्ठ ६६ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ३½'४ + ३½ २ पो.
शीर्षक – घायल राजासुं कहै ।

पृष्ठ ६७ – चित्र संख्या ५४ परिमाण – ५$\frac{१}{२}$'३ + ७'४ पोन्इट
शीर्षक – भमरसमुह लडाई ।

पृष्ठ ६८ – चित्र सं० ५५ परिमाण – ४ + ३$\frac{१}{२}$ ४ पो.
शीर्षक – राजा आगल पुकार करै ।

पृष्ठ ७० – चित्र सं० ५६ परिमाण – ८ + ७$\frac{१}{२}$
शीर्षक – दुत संवाद मधुसुं, दासी दुतकै मुहडै थाप लगावै ।

पृष्ठ ७० – चित्र सं० ५७ परिमाण – ३'४ + ७'४ पो.
शीर्षक – राजासुं [दुत] वात कहै ।

पृष्ठ ७१ – चित्र सं० ५८ परिमाण – ८ + ७$\frac{१}{२}$
शीर्षक – लडाई भमरजुथकी ।

पृष्ठ ७३ – चित्र सं० ५९ परिमाण – ५'२ + ४$\frac{१}{२}$ २ पो.
शीर्षक – कृष्ण गुरुडसुं वात कहै ।

पृष्ठ ७४ – चित्र सं० ६० परिमाण – ८ + ७$\frac{१}{२}$
शीर्षक – मधु लडै भगवान भीरे गरूड भीरे भारंड भीरे ।

पृष्ठ ७८ – चित्र सं० ६१ परिमाण – ४'२ + ७$\frac{१}{२}$
शीर्षक – राजा चंद्रसेन तारण संवाद करै ।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० ६२ परिमाण – ४$\frac{१}{२}$'४ + ७$\frac{१}{२}$
शीर्षक – देवी राजा प्रतै कहै राजा चंद्रसेन मंत्री तारण ।

पृष्ठ ८१ – चित्र सं० ६३ परिमाण – ५'१ + ७$\frac{१}{२}$
शीर्षक – राजा चंद्रसेन मंत्री वात करै प्रस्तावै समजावै ।

पृष्ठ ८२ – चित्र सं० ६४ परिमाण – ३'४ + ७$\frac{१}{२}$
शीर्षक – चमारमंदीर उरगानो उंढो देवाडै ।

पृष्ठ ८२ – चित्र सं० ६५ परिमाण – ३'४ + ४$\frac{१}{२}$ २ पो.
शीर्षक – उरगांनो पंथै चालै बीवी सरप कहै उढाका सरपकुं ।

पृष्ठ ८२ – चित्र सं० ६६ परिमाण – ३$\frac{१}{२}$ + ७$\frac{१}{२}$
शीर्षक – उरगांनो घोडासुं कुंद परचो ।



प्रतिक्रमाङ्क–११६०८;   चित्रसंख्या–६०;   सूचीपत्राङ्क–१४८

मंधु लड़ै, भगवान भीरै, गरूड भीरै. भारंड भीरै ।

पृष्ठ ८४ – चित्र संख्या ६७ परिमाण – ३'३ + ७½
शीर्षक – वींवी (वांवी) सरप वातां कहै उरगांनो सांभलै।

पृष्ठ ८४ – चित्र सं० ६८ परिमाण – ५'४ + ७½
शीर्षक – मलयापुर नगर छै राजा हरीदत लुतो मुहमाहै सापणको प(व)चडो पैठो।

पृष्ठ ८५ – चित्र सं० ६९ परिमाण – ५½'३ + ७½
शीर्षक – राजा हरीदत सीकार नीकल्यो।

पृष्ठ ८६ – चित्र सं० ७० परिमाण – ६½ + ७½
शीर्षक – हरीदत राजा सुतो मुषमैथी साप नीकल्यो। वड-मैथी साप नीकल्यो सो संवाद। सो मंत्री सुणै है।

पृष्ठ ८७ – चित्र सं० ७१ परिमाण – २½'१ + ७½
शीर्षक – सरप मोहर दे। उरगांनो घोडो [उभो]

पृष्ठ ८७ – चित्र सं० ७२ परिमाण – ३'३ + ४'२ पो.
शीर्षक – उरगांनो सांपकुं दुध पावै।

पृष्ठ ८८ – चित्र सं० ७३ परिमाण – ४½'१ + ७'४ पो.
शीर्षक – उरघांणा मंदीर लडाई करै बहूंसुं।

पृष्ठ ८९ – चित्र सं० ७४ परिमाण – ३½'३ + ७½
शीर्षक – पंनग माथो डोलावौ-उरगांनो बेटो दोइ दुध पावा आया।

पृष्ठ ९० – चित्र सं० ७५ परिमाण – ३'२ + ७½
शीर्षक – सरप पग पकड्यो वोरगणांकौ।

पृष्ठ ९० – चित्र सं० ७६ परिमाण – ३½'२ + ७½
शीर्षक – उरगांनौको वेटो मुउं सो सर्प संवाद।

पृष्ठ ९१ – चित्र सं० ७७ परिमाण – ३½ + ७½
शीर्षक – उरगांनो रंडी संवाद। रंडी घर वाहीर नीकली।

पृष्ठ ९१ – चित्र सं० ७८ परिमाण – ३½'४ + ७'३ पो.
शीर्षक – राजा आगल पुकार आया उरगांनो रंडी।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० ७९ परिमाण – २½'१ + ४½
शीर्षक – उरगांनो गंगा लेगयो सरपनै ।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० ८० परिमाण – ३½'४ + ७½
शीर्षक – राजा अमरसेन बीवी पोढावै ।

पृष्ठ ९३ – चित्र सं० ८१ परिमाण – ४½ + ७'४ पो.
शीर्षक – राजा चंद्रसेन लगन लीषावै ब्रामण बेठौ ।

पृष्ठ ९४ – चित्र सं० ८२ परिमाण – ३½४ + ७'४ पो.
शीर्षक – राजा राणी संवाद ।

पृष्ठ ९५ – चित्र सं० ८३ परिमाण – ८ + ७'४ पो.
शीर्षक – अंजनी बैठीः राम लछमन सीता हडुमांन पगे लागै तद सबसुं अपमांन दीधो तपस्या करै ।

पृष्ठ ९७ – चित्र सं० ८४ परिमाण – ४'२ + ७½
शीर्षक – रामचंद्र लछमन सीता हडुमांन चलै ।

पृष्ठ ९८ – चित्र सं० ८५ परिमाण – ३½'४ + ७½
शीर्षक – राजा रांणी मंत्री संवाद ।

प्रसङ्गसूची –

१ – रामसरोवरवर्णन एवं मधु - मालती का विद्याभ्यास – पृष्ठ २ – ८

२ – मधु के प्रति मालती का प्रणयनिवेदन – पृष्ठ ९ – १०
(१) मधुकथित इन्द्रायणवृक्ष पर लुब्ध एक शुक का उदाहरण ।

३ – मधुगदित मृग - सिंहिनी का प्रेमाख्यान – पृष्ठ १० – ११
(१) मृगकथित काकोलूकवार्ता (२) काककथित टिट्टिभसंवाद ।

४ – मालतीकथित करण - पद्मावतीप्रसङ्ग – पृष्ठ २४ – २८
(१) मधु - मालतीसंवाद तथा उन का स्वस्वगृहगमन ।

५ – रामसरोवरप्रसङ्ग – पृष्ठ २८ – ३२
(१) मधु का वनोपवनभ्रमण (२) मालती का भृंगी एवं चकवी के साथ संवाद (३) मृग - पारधी निदर्शन (४) सहजस्वभाव पर चकवीकथित सद्यःसूत सिंहशिशुहतगज का उदाहरण ।

६ – जैतमाल-प्रसङ्ग – पृष्ठ ३२ – ४५

(१) जैतमाल एवं मालती का संवाद (२) जैतमाल के षोडश शृङ्गारों का वर्णन (३) मधु-जैतमाल का संवाद (४) जैतमालकथित कामदहनप्रसङ्ग से मधु को पूर्वभव-स्मरण (५) मालती का वपुसौन्दर्यवर्णन (६) मधु, मालती जैतमाल का वार्तालाप।

७ – मधुवर्णित लालनसाह की पत्नी मैना के सतीत्व का आख्यान – पृष्ठ ४६ – ५३

(१) वरनापुरीवर्णन (२) मैनाविरह-वर्णन (३) मैना का राजकुमार द्वारा प्रेषित मालिन रतना दूती के साथ षड्ऋतु-वर्णनात्मक संवाद (४) रतना दूती का देशनिर्वासन।

८ – मधु-मालती का गान्धर्व विवाह – पृष्ठ ५३ – ५८

(१) मालतीकथित शुक-पिकी का प्रेमाख्यान (२) राजा चंद्रसेन के समक्ष बाग के माली द्वारा मधु-मालती के सुख-विलास का रहस्यप्रकाश एवं क्रुद्ध राजा द्वारा उनके मारणार्थ अपने सैनिकों को आदेश।

९ – राजकुमार चन्द्र एवं मंत्रिसुता रूपरेखा की विलासलीला का प्रसङ्ग – पृष्ठ ५९ – ६२

१० – मधु एवं राजसेना का युद्धप्रसङ्ग – पृष्ठ ६२ – ७८

(१) मधु द्वारा भावी युद्ध के भय से विकल मालती को धैर्यबन्धन (२) मधु-सैनिकयुद्ध (३) भ्रमरयुद्ध (४) राजदूत एवं मधु का संवाद (५) राजा चन्द्रसेन की मधु पर चढ़ाई (६) सदलबल समागत राजा एवं मधु का युद्ध तथा जैतमालती द्वारा मधु को न देख कर विकल उन्निद्र मालती को यदुवंश की कथा से पूर्वभवस्मारण (७) मालती-कृत श्रीकृष्णस्तुति से समागत भारण्ड-सिंहादि हिंसक जन्तुओं द्वारा राजसेना का संहार (८) युद्धस्थल से पलायित राजा द्वारा स्वमंत्रियों की मंत्रणा से मंत्री तारणसाह का पुनराह्वान।

११ – राजा चंद्रसेन एवं तारणसाह की मंत्रणा –   पृष्ठ ७८ – ८०

(१) तारण द्वारा मंत्रबल से सिंहादि का स्तंभन (२) श्री-गौरी माता द्वारा राजा को उपदेश तथा मधु-मालती के पूर्वभव का परिचय।

१२ – तारणकथित पथिक उरगाना एवं सर्प का उपाख्यान –   पृष्ठ ८१ – ९३

(१) अश्वोदरबद्ध सर्प एवं वनस्थ सर्प का संवाद (२) सर्प-उरगाना संवाद (३) वनस्थ सर्प एवं उरगाना का संलाप (४) सर्पकथित मलयपुरनृपति हरिदत्त का आख्यान (५) उरगाना का गृहकलह (६) सर्पदंश से उरगाना के पुत्र की मृत्यु (७) उरगाना की स्त्री द्वारा राजा अमरसेन के समक्ष सर्प एवं उरगाना के रहस्य का उद्घाटन (८) राजा द्वारा सर्पमारण एवं तद्बम्बीस्थधनापहरण (९) युद्धविराम एवं मधु-मालती का स्वस्वगृहागमन।

१३ – राजा चन्द्रसेन एवं रानी कनकमाल की मंत्रणा –   पृष्ठ ९३ – ९४

१४ – चन्द्रसेनकथित श्रीराम तथा अञ्जनी का संवाद –   पृष्ठ ९४ – ९७

१५ – मधु-मालतीविवाहप्रसङ्ग –   पृष्ठ ९७ –१०१

(१) राजा-रानी का संवाद (२) मधुकथित कामनिवासप्रसङ्ग।

★

१२. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क–११६३३

कर्त्ता–चतुर्भुजदास, लिपि समय-१९ वीं शताब्दी (वि०)

आकार–पुस्तकाकार, माप(साइज)-९½ + ७

पृष्ठसंख्या–१९७, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति १६, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २० ।

पुस्तकदशा–साधारणतया ठीक है, किन्तु प्रति आदि से त्रुटक है ।

पुस्तक का प्रारम्भ

[नृप] क अंतेवर त्रिया च्यारि । संतत यक मालती कुवार ॥
वरनऊ कहा रुप अपार । मानु ऊरवसी लीय्यो वोतार ॥ १० ॥

वोपमा कोंन पटंतर कहुं । गुण अनेक छवे पार न लहुं ॥
दिन दिन रूप अनुपम चढ । असी नाही विधाता घड़ ॥ ११ ॥

चतुर होय चातुर यु भाक । गुन सव पुरन करी क दाष ॥
गज कपोत हरी वी महिवाल । भ्रंगी मधुकर मीन मराल ॥ १२ ॥

कदली कनक कीर पीक सोय । इंद्रसभा सव फीकी होय ॥
ज्या देखे चत चल मुनीस । देखत धरनी डार सेस ॥ १३ ॥

मानु हं ताहंछा (ताहं छांह) पड़ी ता देस । सो भुले जीव धरे अंदेस ॥
राजलोक वरनन काहां लौ कहुं । थोरी सी मंत्रीकी कहु ॥ १४ ॥

थोरे माझ वहोत रस होइ । अती लावन जन राच सोही ।
तारणसहा सुघड़ गुनसार । त्रीय्या एक तहा येक कुवार ॥ १५ ॥

ताको नाम मनोहर धऱ्यो । मानु कामतेज अवतऱ्यो ॥
मधु मधु कह षिलाव मात । वाढ मानु कलानिध गात ॥ १६ ॥

घड़ी दिवस मास फुने वोर । ज्युं ज्युं वसंतकीसी लता कोर ॥
भय्या वरस दस मासक संद । देखी त्रीय्या होय काम अंध ॥ १७ ॥

तन मन धन विसर ग्रेह । भ्रंगी भय मानु गत तेह ॥
जित जित कवर कर कहु सेल । दोरी फिरे त्रीया ती गेल ॥ १८ ॥

कवहु रामसरोवर ज्याय । भ्रंगीजुथ मानु वाह भुलाय ॥
देखत तंन सुख सव भुल । वावरी भई सु संग नीत डोल ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥ रामसरोवर तालकी, सोभा कही न ज्याय ।
स्वेत अरुण पंकज तीहा, मुनी जन रहे लुभाय ॥ २० ॥

पुस्तक के अन्त में —

॥ दोहा ॥ कामवंध प्रकास फुनी, मधुमालती वीलास ।
स्रवन सुने सुख पाईय, कहत चतुरभुजदास ॥ ९ ॥

कामवीलासकी यह कथा, चतुर सुन चीत लाय ।
सुगत सुनय गद गद, नीर्गुन सै सै कीयो न ज्योय ॥ १० ॥

कायसथमें गमकुल यह, नाथासुत अभीराम ।
जनय चतुरभुज तासके, कथा प्रकासी ताम ॥ ११ ॥

अल्पवुध अनाद ही, काम प्रवंद प्रकास ।
कवीजनसु करी जोरीक, कह चतुरभुजदास ॥ १२ ॥

वनासपतीम अंव फल, रसम वोख दसंत ।
कथामध्य मधूमालती, खट रत माही वसंत ॥ १३ ॥

लता मधी पनगलता, सोधमे घनसार ।
कथामध्ये मधूमालती, आभुखनम सार ॥ १४ ॥

॥ कवीश्वरोवाच ॥ राजनीतकी याम साखी । पंचाख्यान वुध यह भाकी ॥
चारनाईका चातुर वनाई । थोरी थोरी सव ही आई ॥ १५ ॥

फुनि वसंतराजरस गायो । जाम व(म)हश्वर काम दीखा(ज्ञा)यो ॥
ताकी लीला यह वसतारी । रसक नर स्रवन सुखकारी ॥ १६ ॥

रसक नर होय सु याकु चाह । अध्यातंम आतम अवगाह ॥
चातुर पुरख होय है ज्योदी । यह रसकला समझीहे सोही ॥ १७ ॥

क्रष्णदेवको कल कुहाव । प्रद्युमन काम अंस मधू गाव ॥
पुत्र कलीत्र स्रव स्रख पाव । दुख दालीद्र नीरो नही आव ॥ १८ ॥

॥ श्लोक ॥ कामार्थी लभते कामं नीरधनो लभते धनं ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रं व्याध त्रष्णा न पीड़ते ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥ राजा पढ तो राजनीत, मींत्री पढ तो वुधी ।
कामी कामवीलास रस, ग्यानी ग्यान समुद ॥ २० ॥

ग्यानी सब को अधीक ह, हु फुनी ताको दास ।
कवीयनसु करी जोरीक, कह चतुरभुजदास ॥ २१ ॥
कामवीलासकी य कथा, चोपई य संपुर ।
वकता सुरता सवनकुं, सुखदायक दुख दुर ॥ २०२२ ॥
इती मधुमालती रसवीलासकी कथा संपूर्ण समापतं ॥
श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥

टिप्पणी—प्रस्तुत प्रति में मधुमालती कथा का प्रारम्भ १० वें पद्य से तथा उसका समापन प्रति के अन्तिम पृष्ठ अर्थात् १९७ वें पृष्ठ पर लिखित अन्तिम पद्याङ्क २०२२ पर होता है। जैसा कि आपको ऊपर में उद्धृत पद्यों से विदित होगा। इस प्रति में १ व २ संख्या वाले पत्र अप्राप्त हैं तथा इस के कतिपय पृष्ठों के प्रान्त्य भाग खण्डित हैं। प्रति की लिपि महाजनी (कामदारी) होने के कारण इस के अक्षर दुरूह एवं दुर्वाच्य हैं। प्रबन्ध का लेखन काली स्याही से तथा प्रसङ्ग एवं सन्दर्भ (दोहा, चौपई आदि) का लेखन लाल स्याही से किया गया है। प्रत्येक पद्य की पादपूर्ति पर दो दो विराम रेखाएं तथा प्रबन्धस्थल के दाईं बाईं ओर उक्त ऊर्द्ध रेखाएं भी लाल स्याही से बनी हुई हैं। उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत प्रति में प्रायः वे सभी अवान्तर कथाएं तो संकलित हैं ही, जो मधुमालती - कथा की अन्यप्रतियों में न्यूनाधिक रूप में वर्णित हैं। इन के अतिरिक्त 'पिङ्गलकदमनक तथा भीमहिडिम्बा' नामक कथा को छोड़ कर एक - दो विशेष कथाएं भी इस प्रति में देखने को मिलती हैं।

जिस प्रकार इस प्रति में कथाओं का आधिक्य दृष्टिगत होता है, उसी प्रकार इस में चित्रों का बाहुल्य भी विशेष रूप से दिखलाई देता है। क्यों कि कथोपकथानक के प्रत्येक प्रसङ्ग पर चित्र निर्मित किये गये हैं। उन चित्रों का कुलयोग ३०२ है। इन में ३ चित्र वे भी सम्मिलित हैं, जो प्रक्षिप्त रूप में प्रति के अन्त में उपलब्ध हैं। यद्यपि चित्रकार द्वारा हाड़ोती शैली पर आधारित इन चित्रों के चित्रण में विभिन्न रंगों के साथ सुनहले रङ्ग एवं वारीक कलम का उपयोग किया गया है तथा उनकी आकृतियों को भावानुकूल सुन्दर बनाने की चेष्टा की गई है, किन्तु फिर भी इन में प्रोज्ज्वलता एवं निखार का अभाव सा ही दृष्टिगोचर होता है। इस का एक कारण तो यह है कि चित्र-स्थली को रंजित करने में ऐसे गहरे रङ्ग का उपयोग हुआ है, जिस के सामने अन्य रङ्ग मलिन एवं फीके से प्रतीत होते हैं। दूसरा कारण यह भी है कि चित्रस्थली को किसी भी रंग से बनी परिधि से विभूषित नहीं किया गया है, फलस्वरूप चित्र खोये खोये से प्रतीत होने लगे हैं। संभव था कि यदि चित्रस्थली को सामयिक रंग से निर्मित परिधि से विभूषित किया

जाता तो विद्यमान रङ्ग बाधक न हो कर चित्रों की शोभा को बढ़ाने में सहायक ही सिद्ध होता। जैसा कि परिधिभूषित कतिपय चित्रों को देखने से विदित होता है। अस्तु, कुछ भी हो, इस से यह बात तो स्पष्ट है कि कलाकार ने रङ्गों के चुनाव में सावधानी एवं सूझ-बूझ से काम न ले कर केवल आकृतियों को सुन्दर बनाना मात्र ही एक अपना लक्ष्य समझा। यही कारण है कि मानवाकृतियों, अश्वादि वाहनपशुओं, सिंहादि वन्य जन्तुओं एवं भवनादि का चित्रण सुन्दर रूप में हुआ है। प्रतिगत ५-७ चित्रों के अतिरिक्त सभी चित्रों की दशा ठीक है। चित्रों का परिचयात्मक विवरण निम्न प्रकार में उद्धृत है—

चित्रसूची—

पृष्ठ ३ — चित्र संख्या १ परिमाण — ५'४ + ४½
परिचय — राजा की शाही सवारी का दृश्य। चन्द्रसेन हाथी पर सवार है। उस के सामने वेश्याएँ नाच रही हैं।

पृष्ठ ३ — चित्र सं० २ परिमाण — २'२ + २'१ पो.
परिचय — तीन राजमहिषियां बैठी हैं।

पृष्ठ ३ — चित्र सं० ३ परिमाण — २'२ + १½ २ पो.
परिचय — राजा चंद्रसेन कनकमाल रानी के साथ बैठे मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ ४ — चित्र सं० ४ परिमाण — ३'३ + २'३ पो.
परिचय — कनकमाल रानी सिंहासन पर बैठी हुई है। नीचे मालती हाथजोड़े बैठी है।

पृष्ठ ४ — चित्र सं० ५ परिमाण — ३'२ + २
परिचय — मुग्ध हुई दो ललनाएँ मधु का पीछा कर रही हैं।

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ६ परिमाण — ४½'२ + ४½
परिचय — रामसरोवर ताल पर पनिहारियां खड़े हुए मधु को एकटक दृष्टि से देख रही हैं। मधु के पीछे एक वृक्ष के नीचे एक महात्मा बैठे हैं।

पृष्ठ ५ — चित्र सं० ७ परिमाण — २½ + ४½
परिचय — राजा चंद्रसेन रानी कनकमाल एवं मालती से कुछ कह रहे हैं। सभी बैठे हैं।

पृष्ठ ६ – चित्र संख्या ८ परिमाण – २½ + ४½
परिचय – राजा चंद्रसेन मंत्री तारणसाह से कुछ कह रहे हैं।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० ९ परिमाण – २'२ + ४½
परिचय – पण्डितजी से मालती कुछ पूछ रही है।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० १० परिमाण – २'३ + ४½
परिचय – राजा चंद्रसेन मालती से बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० ११ परिमाण – २'१ + ४½
परिचय – मधु के सामने एक स्त्री बैठी और एक स्त्री पीछे खड़ी है। मधु टेढ़ी गरदन किये उसे देख रहा है।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १२ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – राजा चंद्रसेन पंडितजी से कुछ कह रहे हैं और मालती पंडितजी के पीछे हाथ जोड़े बैठी है।

पृष्ठ १० – चित्र सं० १३ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – मालती भीतर पढ़ रही है, बाहर पण्डितजी मधु को पढ़ा रहे हैं।

पृष्ठ १० – चित्र सं० १४ परिमाण – २'२ + ४½
परिचय – मालती खड़ी होकर भीतर से पढ़ते हुए मधु पर फूल की गेंद बना कर फेंक रही है।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० १५ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – मालती भीतर खड़ी है तथा बाहर बैठे हुए मधु पर फूल-गेंद फेंक रही है।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० १६ परिमाण – २½ + ४½
परिचय – भीतर से पड़दा उठा कर मालती फूल की गेंद मधु पर फेंक रही है और मधु मालती को देख रहा है।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० १७ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – मालती फिर मधु पर गेंद फेंक कर उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रही है।

पृष्ठ १२ – चित्र संख्या १८ परिमाण – २ + ४½
परिचय – मधु मालती से इंद्रायण वृक्ष पर मंडराते हुए सूवे की बात कर रहा है। दोनों एक दूसरे के सामने बैठे हैं।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० १९ परिमाण – २½ + ४½
परिचय – इन्द्रायण वृक्ष पर सूआ बैठा है।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० २० परिमाण – २'२ + ४½
परिचय – मधु मालती को सिंहिनी और मृग के प्रेम की बात सुना रहा है।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० २१ परिमाण – १½'३ + ४½
परिचय – मालती मधु से आगे की कहानी पूछ रही है।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० २२ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – सिंह और सिंहिनी आमने-सामने खड़े हैं।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० २३ परिमाण – १½'३ + ४½
परिचय – मधु मालती को बात सुना रहा है।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० २४ परिमाण – २ + ४½
परिचय – मृग पर विमुग्ध हुई कामार्त्त सिंहिनी मृग से अनुनय-विनय कर रही है।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० २५ परिमाण – २½ + ४½
परिचय – सिंह वृक्ष पर बैठे वानर से कुछ कह रहा है।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० २६ परिमाण – २½'२ + ४½
परिचय – वानर सिंह को उत्तर दे रहा है।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० २७ परिमाण – १½'४ + ४½
परिचय – मृग को सिंहिनी रिझा रही है।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० २८ परिमाण – २ + ४½
परिचय – सिंह के चरणों में वानर गिर रहा है।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० २९ परिमाण – १½'४ + ४½
परिचय – सिंह वानर को अपने मुख में डाल रहा है।

पृष्ठ १८ – चित्र संख्या ३० परिमाण – २½ + ४½

परिचय – वानर अपने भाग्य से सिंह के मुख से निकल कर फिर वृक्ष पर जा चढ़ा। वह सिंह हताश हो उसकी ओर निहार रहा है।

पृष्ठ १८ – चित्र सं० ३१ परिमाण – १½’४ + ४½

परिचय – वानर सिंह को उत्तर दे रहा है।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० ३२ परिमाण – २’३ + ४½

परिचय – सिंहिनी मृग से काक और घूघू की बात पूछ रही है।

पृष्ठ २० – चित्र सं० ३३ परिमाण – २½’३ + ४½

परिचय – सागर का दृश्य है। सागर की पाल पर टीटोड़ा एवं टीटोड़ी बैठी हैं। पक्षियों का समाज घूघू को अपना राजा बनाने के लिए एकत्रित हुआ है। एक काक इसका विरोध कर रहा है और उन्हें कहता है कि अपना राजा गरुड़ ही है। इसी प्रसंग में वह उन्हें टीटोड़े की कहानी सुना रहा है।

पृष्ठ २० – चित्र सं० ३४ परिमाण – १½’४ + २’२ पो.

परिचय – उलूक (घूघू) बैठे हुए मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ २० – चित्र सं० ३५ परिमाण – ½’४ + ४½

परिचय – समुद्र की पाल पर बैठा टिट्टिभयुग्म बातें कर रहा है।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० ३६ परिमाण – ½’३ + २

परिचय – टिट्टिभ अपनी पत्नी को राम और सीता के वियोग की कथा सुना रहा है।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० ३७ परिमाण – ३’२ + ४½

परिचय – सम्मिलित चित्र–ऊपर के आधे भाग में-सीता कुटी से निकल कर साधुवेषधारी रावण को भीख दे रही है। नीचे के भाग में-मधु तथा मालती बैठे वार्ता कर रहे हैं।

पृष्ठ २२ — चित्र संख्या ३८ परिमाण — १½'२ + ४'४ पो.

परिचय — सम्मिलित चित्र-चित्र के एक तरफ टिट्टिभयुग्म उड़ रहा है, और वही दूसरी तरफ बैठा हुआ है।

पृष्ठ २२ — चित्र सं० ३९ परिमाण — (१) १'१ + १½ २ (२) १½'१ + २½ १

परिचय — टिट्टिभ पत्नी को सर्प द्वारा खाये गये कौए के अंडों की कहानी सुनाता है। भुजङ्ग वृक्ष पर चढ़ कर कौए के अंडे खा रहा है।

पृष्ठ २३ — चित्र सं० ४० परिमाण — २'३ + २'२ पो.

परिचय — काकयुग्म वृक्ष पर बैठा है तथा सर्प को मारने का उपाय सोच रहा है।

पृष्ठ २३ — चित्र सं० ४१ परिमाण — (१) २'२ + २½ ३ (२) २'२ + १'४ पो.

परिचय — वृक्ष पर कागली बैठी है, कौआ उड़ रहा है। टिट्टिभ पत्नी को कहानी कह रहा है।

पृष्ठ २३ — चित्र सं० ४२ परिमाण — २'२ + ४½

परिचय — राजाने स्नान करते समय नदी के तीर पर अपनी सांकल कंठ से निकाल कर रखी और वह स्नान करने लगा। कौआ सांकल को उठा कर उड़ गया। उस का पीछा राजा का सिपाही कर रहा है।

पृष्ठ २३ — चित्र सं० ४३ परिमाण — (१) २'१ + २'१ (२) २'१ + २'२ पो.

परिचय — वृक्ष पर कागली बैठी है तथा कौआ हार को वृक्ष की खोह में डाल रहा है। राजा का सिपाही उस खोह में से हार को निकालने के लिए हाथ डालता है किन्तु उसे वहां सर्प दिखलाई देता है।

पृष्ठ २४ — चित्र सं० ४४ परिमाण — १½'१ + २'४ पो.

परिचय — करोती तथा वसोला लिये हुए दो खाती खड़े हैं।

पृष्ठ २४ — चित्र सं० ४५ परिमाण — २ + २'१ पो.

परिचय — राजा दूत को आज्ञा देता है कि खाती को बुलाओ।

पृष्ठ २४ – चित्र संख्या ४६ परिमाण – २'३ + २½ २ पो.

परिचय – खाती राजा से मुजरा कर रहा है। राजा ने उसे आज्ञा दी कि उस वृक्ष को काट कर, सर्प को मारो तथा उस वृक्ष के कुहर से मेरा हार निकाल कर लाओ।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ४७ परिमाण – १½'३ + १½ १ पो.

परिचय – टिट्टिभयुग्म बैठा है।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ४८ परिमाण – २'४ + ४'४ पो.

परिचय – वृक्ष कटा हुआ पड़ा है। उस से निकल कर भागते हुए सर्प को सुथार मार रहा है।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ४९ परिमाग – १½'१ + १'३ पो.

परिचय – टिट्टिभयुग्म यह सलाह कर रहा है कि समुद्र से वापिस अंडे लेने के लिए गरुड़ के पास चलें।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ५० परिमाण – २'४ + २'४ पो.

परिचय – टिट्टिभयुग्म गरुड़ से प्रार्थना कर रहा है।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ५१ परिमाण – ३ + ४½

परिचय – गरुड़ अपनी पक्षियों की सेना लेकर सागर के पास पहुंचा है। सागर ब्राह्मणवेष धारण कर उसे अंडे व उपहारस्वरूप हार भेंट कर रहा है।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ५२ परिमाण – १'३ + ४½

परिचय – टिट्टिभयुग्म सागर की पाल पर सानन्द बैठा है और दूसरा टिट्टिभयुग्म सागर के जल में स्नान कर रहा है।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ५३ परिमाण – २ + ४½

परिचय – सिंहिनी तथा मृग बैठे हैं।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ५४ परिमाण – १½'३ + १½ ३ पो.

परिचय – उलूक कौओं के मारणार्थ मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ५५ परिमाण – ३'४ + ४½

परिचय – उलूक वृक्षस्थित कौओं को मार रहे हैं।

पृष्ठ २८ – चित्र संख्या ५६ परिमाण – २ + ४½

परिचय – सागर के तीर पर सियार खड़ा है। सागर के भीतर रहा मगर सियार से बातें कर रहा है। सियार के सामने १ वृक्ष है।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० ५७ परिमाण – २½'१ + ४½

परिचय – मगर सियार को अपनी पीठ पर चढ़ा कर अपनी पत्नी के पास अथाह जल में ले जा रहा है और उसे यह कह रहा है कि पत्नी ने तुझे तुम्हारा कलेजा खाने के लिये बुलाया है।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ५८ परिमाग – १½'४ + ४½

परिचय– मगर सियार के यह कहने पर कि कलेजा तो मैं वृक्ष पर ही रखता हूँ अतः वहां से ले आऊँ, वापिस उसे तीर की ओर ले जा रहा है।

पृष्ठ ३१ – चित्र सं० ५९ परिमाण – १¾'१ + ४½

परिचय– सियार सागर के तीर पर आकर मगर को खोटी-खरी सुना रहा है।

पृष्ठ ३१ – चित्र सं० ६० परिमाण – २½'१ + ४½

परिचय– सिंह मृग एवं शशकों (सुसिया) का पीछा कर रहा है।

पृष्ठ ३२ – चित्र सं० ६१ परिमाण – २'४ + ४½

परिचय– सिंहिनी-मृग वार्तालाप में मग्न हैं। दो पक्षी सिंहिनी के पीछे बैठे हैं।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ६२ परिमाण – २'२ + ४½

परिचय– सियार (शशक) सिंह को कूए पर ले जा कर कहता है कि इस में देखिये यह वह सिंह है, जिसने हमें तुम्हारे पास आने के लिए रोका था। सिंह कूपजल में अपनी परछाईं को ही अन्य सिंह समझ कर क्रुद्ध हो कूए में कूद रहा है।

पृष्ठ ३३ – चित्र संख्या ६३ परिमाण – २ + २’२ पो.
परिचय – दो हंस सागरतट पर स्थित वृक्ष पर बैठे हैं।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ६४ परिमाण – २½’१ + २
परिचय – बहेलिया ने वृक्षस्थित पक्षियों को अपने जाल में फंसा लिया है।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ६५ परिमाण – २½ + २½
परिचय – बहेलिया (व्याध) वृक्ष पर चढ़ रहा है। उस वृक्ष पर हंस बैठे हैं।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ६६ परिमाण – २½’३ + २’४ पो.
परिचय – वृक्ष पर चढ़ा हुआ व्याध हंसों को पकड़ रहा है।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ६७ परिमाण – ३ + ४½
परिचय – संयुक्त चित्र है–बाएँ भाग में वृक्ष पर चढ़ कर हंसों को पकड़ते हुए व्याध को हंस उसे ही जाल में फांस कर समुद्र में गिराने का प्रयास कर रहे हैं। दाहिनी ओर–ऊपर उलूक बैठे हैं। उसके नीचे में उलूक एवं वायस बैठे हुए हैं।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ६८ परिमाण – १½’३ + २½ २ पो.
परिचय – वायस (काक) उलूकों की शरण में गये हैं।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ६९ परिमाण – १½’२ + ४½
परिचय – कौए तिनके एकत्रित कर रहे हैं।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ७० परिमाण – २ + ४½
परिचय – कौए सपरिवार उलूकों को तिनकों के महल में ले जा कर जला रहे हैं।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० ७१ परिमाण – १½’१ + ४½
परिचय – कामार्त सिंहिनी मृग को मना रही है। मृग उसे कूर्म और गिलहरी की बात सुना रहा है।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० ७२ परिमाण – २½ + ४½
परिचय – सागरतटस्थित कूर्म, पानी पीने के लिए वृक्ष से पाल पर आई हुई गिलहरी को देख कर हर्षित हो रहा है।

पृष्ठ ३९ — चित्र संख्या ७३ परिमाण — २ + ४½
परिचय — सागर की पाल पर बैठी दो स्त्रियाँ कूर्म और गिलहरी (टालकड़ी) की प्रेमलीला देख रही हैं।

पृष्ठ ३९ — चित्र सं० ७४ परिमाण — २ + ४½
परिचय — गिलहरी अपनी पीठ पर कूर्म को बैठा कर वृक्ष की ओर जा रही है।

पृष्ठ ३९ — चित्र सं० ७५ परिमाण — २'२ + २'४ पो.
परिचय — वृक्ष पर पक्षी बैठे हैं। टालकड़ी नीचे पाल पर बैठी है।

पृष्ठ ४१ — चित्र सं० ७६ परिमाण — २ + ४½
परिचय — कामार्त सिंहिनी मृग से वादा कर रही है।

पृष्ठ ४२ — चित्र सं० ७७ परिमाण — (१) २ + ४½ (२) २ + ४½
परिचय — कामार्त्त सिंहिनी के सामने हरिण बैठा है। पीछे से आकर हरिणी हरिण को यह समझा रही है कि देखो, परस्त्री के कारण इन का क्या हाल हुआ — श्रीराम और लक्ष्मण के सामने सुग्रीव बाली को मार रहा है। द्रौपदी का चीर दुश्शासन खींच रहा है।

पृष्ठ ४२ — चित्र सं० ७८ परिमाण — ४'१ + ४½
परिचय — लंका में रावण अपने दरबार में बैठा है। श्रीरामचंद्र वानरों की सेना के साथ लंका पर चढ़ाई कर रहे हैं। श्रीराम रथ पर आरूढ हैं।

पृष्ठ ४३ — चित्र सं० ७९ परिमाग — १½'३ + ४½
परिचय — मृग के और हरिणी के बीच में सिंहिनी बैठी है। हरिणी बारंबार उसे यह समझा रही है कि परस्त्री से प्रेम करना उचित नहीं है।

पृष्ठ ४४ — चित्र सं० ८० परिमाण — १½ + ४½
परिचय — सिंहिनी-मृग प्रेमालाप में मग्न हैं।

पृष्ठ ४५ — चित्र सं० ८१ परिमाण — २'४ + ४½
परिचय — शङ्कित मृग को सिंहिनी रिझा रही है।

पृष्ठ ४६ – चित्र संख्या ८२ परिमाण – २ + ४½
परिचय – सिंहिनी और मृग के रतिविलास का अश्लील चित्र।

पृष्ठ ४६ – चित्र सं० ८३ परिमाण – २½'१ + ४½
परिचय – रसालाप में निमग्न सिंहिनी और मृग।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ८४ परिमाण – २'२ + ४½
परिचय – मृग एवं सिंहिनी स्वच्छन्द घूम रहे हैं।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ८५ परिमाण – २½ + ४½
परिचय – मृग को देख कर सिंह उसे मारना चाह रहा है किन्तु सिंहिनी उसे बचा रही है।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ८६ परिमाण – १½'३ + ४½
परिचय – मधु मालती बैठे हुए हैं। मालती मृग के परिणाम की कथा मधु से पूछ रही है।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ८७ परिमाण – २ + ४½
परिचय – मृग दौड़ रहा है और सिंहिनी देख रही है।

पृष्ठ ४८ – चित्र सं० ८८ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – बैठे हुए मृग को सिंह देख रहा है। सिंहिनी भी सिंह के पास खड़ी है।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ८९ परिमाण – २½'२ + ४½
परिचय – सिंहिनी के पास मृग बैठा है और शेर उसे देख रहा है।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ९० परिमाण – २½ + ४½
परिचय – शेर मृग पर झपटता है शेरनी उसे बचाने के लिए आडी आती है, किन्तु मृग व शेरनी दोनों ही शेर द्वारा मारे जाते हैं।

पृष्ठ ५० – चित्र सं० ९१ परिमाण – २ + ४½
परिचय – मधु मालती को समझा रहा है कि प्रीति करना अच्छा नहीं है।

पृष्ठ ५२ – चित्र संख्या ९२ परिमाण – २½'२ + ४½

परिचय – सूरसेन (सोरठनरेश) को उसके दूत आकर कन्हौज के राजकुमार करण के विषय में कह रहे हैं कि उसने ६० स्त्रियों को व्याह कर एक दिन भी उन (स्त्रियों) से वार्तालाप तक नहीं किया और उन्हें विना अपराध के छोड़ दिया। राजा उसके दुश्चरित्र पर खेद व दुःख प्रकट कर रहा है।

पृष्ठ ५२ – चित्र सं० ९३ परिमाण – २½'१ + ४½

परिचय – राजा सूरसेन को पद्मावती की दासी आ कर यह कह रही है कि पद्मावती की इच्छा करण के साथ विवाह करने की है अन्यथा वह मर जावेगी।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० ९४ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – संयुक्त चित्र-बाईं ओर एक दाढ़ीवाला वीर बैठा है। दाहिनी ओर अपने महल में बैठी सूरसेन की पुत्री पद्मावती सखियों से बातें कर रही है।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० ९५ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – खड़ी हुई मालती बैठे हुए मधु को करण-पद्मावती का अग्रिम वृत्तान्त सुना रही है।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० ९६ परिमाण – २½'१ + ४½

परिचय – सूरसेन पद्मावती को समझा रहे हैं कि बेटी! तूं ऐसे निष्करुण करण के साथ विवाह करने का अपना विचार छोड दे, तुम्हें सुख न होगा।

पृष्ठ ५४ – चित्र सं० ९७ परिमाण – २½'३ + ४½

परिचय – पद्मावती को रानी एवं पारिवारिक स्त्रियां समझा रही हैं कि करणकुमार के साथ विवाह करना ठीक नहीं है। कारण कि वह ६० स्त्रियों को छोड़ चुका है।

पृष्ठ ५५ – चित्र सं० ९८ परिमाण – ४'३ + ४½

परिचय – सजे हुए मण्डप में करण-पद्मावती का विवाह हो रहा है।

पृष्ठ ५५ – चित्र संख्या ९९ परिमाण – २½'२ + ४½

परिचय – महल में करण एवं पद्मावती शय्या पर अवाक् से बैठे हैं और चैनरेखा दासी पिचकारी हाथ में ली हुई बाहर से देख रही है।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० १०० परिमाण – २'४ + ४½

परिचय – एक दृश्य - इस में यह भाव प्रदर्शन किया गया है- जल में एक युवती डूब रही है और डूबने से बचने के लिए वह लकड़ी को पकड़ना चाहती है किन्तु लकड़ी में सर्प लिपटा हुआ है, वह सोच रही है कि क्या करूँ, दोनों तरफ मौत ही है। इस दृश्य के साथ छुछूंदरी को पकड़े हुए सर्प का भी चित्र है।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० १०१ परिमाण – २½ + ४½

परिचय – मानों पद्मावती-करण शय्या पर पहले पृथक् पृथक् बैठे हों और बाद में चैनरेखा द्वारा पीठ पर छोड़ी गई पिचकारी की मार से चौंकी हुई पद्मावती करण की गोद में हठात् चढ़ कर उससे संश्लिष्ट हो गई हो, जिससे कि अवाक् करण निशंक हो कर ही प्रेमालिङ्गन में प्रवृत्त हुए हों।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० १०२ परिमाण – २ + ४½

परिचय – मधु मालती को सुदर्शन सेठ के शीलव्रत की कथा सुना रहा है।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० १०३ परिमाण – २½'४ + ४½

परिचय – चम्पावती का राजा और सुदर्शन सेठ बैठे हैं।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० १०४ परिमाण – २½'२ + ४½

परिचय – मूषकवाहन गणेश और हंसवाहिनी वीणावादिनी श्रीशारदाम्बा का चित्र।

पृष्ठ ६१ – चित्र संख्या १०५ परिमाण – २$\frac{१}{३}$'१ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – संयुक्तचित्र - बांई और वियोगिनी पुरोहितस्त्री कपिला अपनी दासी से कह रही है कि किसी तरीके से भी तूं सुदर्शन सेठ को घर पर ला। दांई ओर- दासी सुदर्शन सेठ को अपनी बातों में उलझा रही है।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० १०६ परिमाण – २ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – संयुक्तचित्र - एक ओर दासी सुदर्शन को अपने आगे कर कपिला के पास ले जा रही है। दूसरी ओर - कपिला अपनी नाड़ी सुदर्शन सेठ को दिखला रही है।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० १०७ परिमाण – २ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – कपिला ने नाड़ी दिखाने के बहाने से सुदर्शन का हाथ जोर से पकड़ लिया है और वह अपने हाथ को छुड़ाना चाह कर खड़ा हो समझा रहा है।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० १०८ परिमाण – १$\frac{१}{२}$'३ + ४

परिचय – जाती हुई द्रौपदी का चीर कीचक खींच रहा है, उस के पीछे गदाधारी भीम दौड़ रहा है।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० १०९ परिमाण – २'२ + ४$\frac{१}{२}$

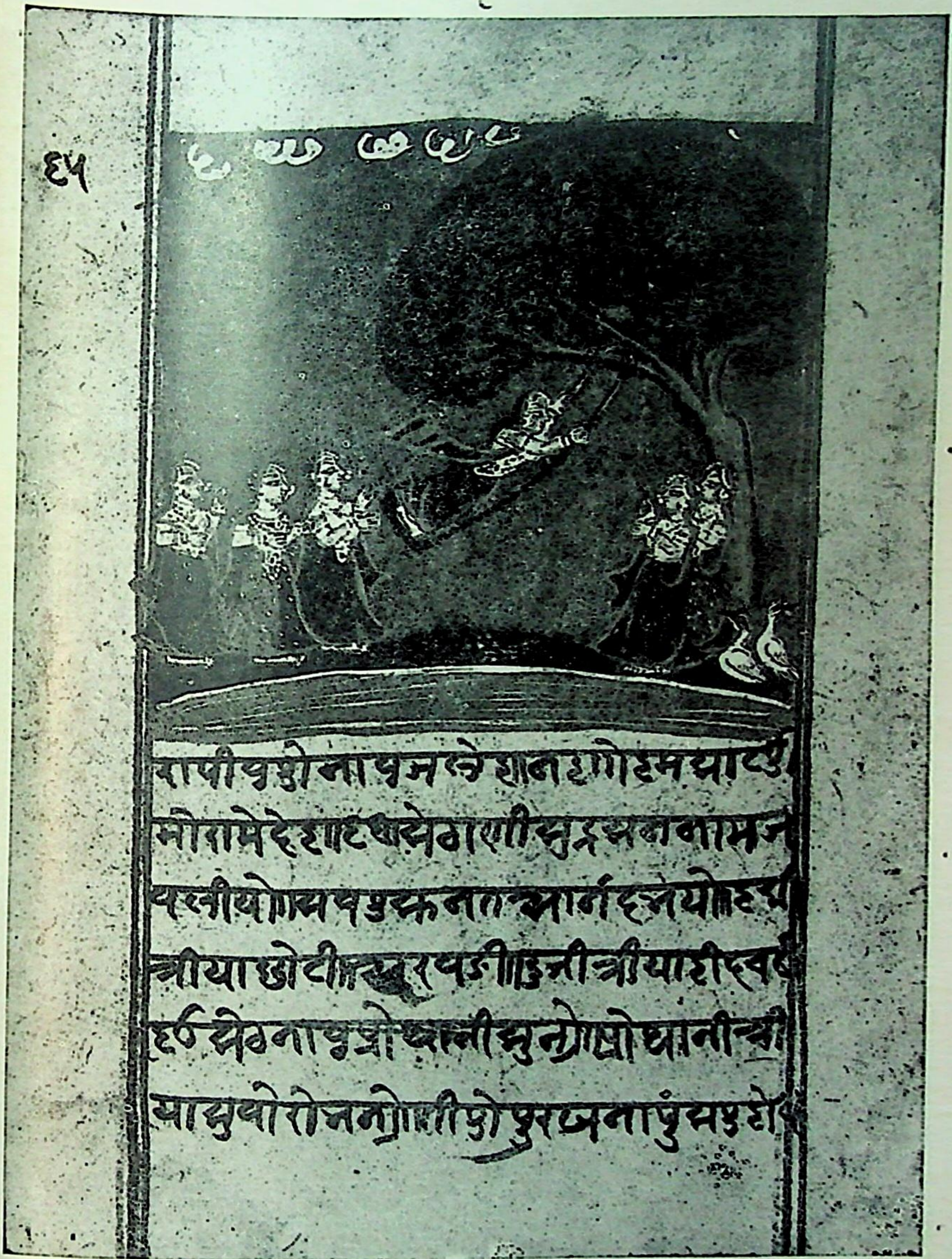
परिचय – वाली और सुग्रीव लड़ रहे हैं। लक्ष्मण के साथ खड़े हुए राम पीछे से वाली पर वाण चला रहे हैं। भीम कीचक को मार रहा है।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ११० परिमाण – १$\frac{१}{३}$ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – सुदर्शन सेठ पुरोहितपत्नी कपिला को समझा रहा है कि परस्त्री से संभोग करना महापाप एवं मृत्युप्रद है।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० १११ परिमाण – २ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – जाते हुए सुदर्शन को हताश बैठी हुई कपिला देख रही है।



प्रतिक्रमाङ्क–११६३३; चित्रसंख्या–११३; सूचीपत्राङ्क–१६६

चैत्र शुक्ल ३ (गणगौरी) का त्यौहार मनाने के लिये बाग में स्त्रियाँ हिंडोले पर हींड रही हैं।

पृष्ठ ६४ – चित्र संख्या ११२ परिमाण – १½ + ४½

परिचय – मधु मालती खड़े हैं। मधु उसे सेठ का आगे का वृत्तान्त सुना रहा है।

पृष्ठ ६५ – चित्र सं० ११३ परिमाण – ४'३ + ४½

परिचय – चैत्र शुक्ल ३ तीज का त्यौहार मनाने के लिए स्त्रियाँ बाग में हिंडोला हींड रही हैं।

पृष्ठ ६६ – चित्र सं० ११४ परिमाण – २'½१ + ४½

परिचय – मधु एवं मालती बैठे हैं तथा उनके आसपास में दो स्त्रियाँ खड़ी हैं।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० ११५ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, इन्द्र–अहिल्या का चित्र।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० ११६ परिमाण – १½'४ + ४½

परिचय – रानी अपनी धाय पड़ता को बुलाने के लिए दूत को भेज रही है।

पृष्ठ ६८ – चित्र सं० ११७ परिमाण – २'३ + ४½

परिचय – बलिराजा वामन भगवान् को पृथ्वीदान दे रहे हैं। शुक्र मना कर रहा है। राजा हरिश्चन्द्र माथे पर घड़ा रखा हुआ खड़ा है। दशकंधर रावण खड़ा है।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० ११८ परिमाण – २ + ४½

परिचय – कृष्ण बैठे हुए हैं, पाण्डव हाथ जोड़े हुए खड़े हैं। जगदेव अपना सीस काट कर कंकाली को भेंट कर रहा है।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० ११९ परिमाण – १½'३ + ४½

परिचय – पड़ता धाय बैठे हुए सुदर्शन सेठ को रानी का संदेश सुना रही है। दाईं ओर रानी उनकी तरफ पीठ की हुई सेठ की बाट जो रही है।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० १२० परिमाण – १½'४ + ४½

परिचय – सुदर्शन सेठ पोसह बैठा हुआ जिनेश्वर की पूजा में निरत है। चारों ओर दीपक जल रहे हैं।

पृष्ठ ७० – चित्र संख्या १२१ परिमाण – १½'२ + ४½
परिचय – पड़ता धाय चाक पर बैठे हुए कुंभार को सात पूतले शीघ्र ही बना कर देने का आदेश दे रही है। कुंभार बैठी हुई पड़ता धाय को बनाया हुआ पूतला दिखला रहा है।

पृष्ठ ७० – चित्र सं० १२२ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – पूतले को ले जाती हुई पड़ता को महल का द्वारपाल रोक रहा है।

पृष्ठ ७१ – चित्र सं० १२३ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – सेज पर बैठे हुए सुदर्शन को रानी अनेक हावभावों से रिंझाने का प्रयास कर रही है। पड़ता देख रही है।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० १२४ परिमाण – २'१ + ४½
परिचय – सुदर्शन सेठ और रानी बैठे हुए हैं, सेठ की तरफ से हताश हुई रानी अपनी धाय की तरफ मुख कर के सेठ को सापमान बाहर निकलवाने के लिए धाय को इशारा कर रही है।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० १२५ परिमाण – २'१ + ४½
परिचय – राजा को दूत खबर दे रहे हैं कि सुदर्शन सेठ रानी के महल के दरवाजे से निकल रहा था। यह सुनकर राजा उन्हें हुक्म दे रहा है कि सेठ को शूली पर चढ़ा दिया जाय।

पृष्ठ ७३ – चित्र सं० १२६ परिमाण – (१) २ + २½'१ (२) ४'१ + १½'४
परिचय – दो दूत सेठ को पकड़ कर शूली के पास ले जा रहे हैं। सेठ को शूली पर चढ़ा दिया गया है किन्तु उसके शीलव्रत के प्रभाव से शूली सिंहासन बन गई।

पृष्ठ ७४ – चित्र सं० १२७ परिमाण – (१) १½ + २½'१ (२) ४'३ + १½ २ पो.
परिचय – एक ओर-सुदर्शन सेठ को उसकी पत्नी अतिहर्षित हो अभिवादन कर रही है। दूसरी ओर-शूली का दृश्य है।

पृष्ठ ७६ – चित्र संख्या १२८ परिमाण – २'२ + ४½
परिचय – मधु मालती को समझा रहा है।

पृष्ठ ७६ – चित्र सं० १२९ परिमाण – २'१ + २½ २ पो.
परिचय – जाते हुए मधु का पल्ला पकड़ कर मालती कह रही है कि मुझे छोड़कर मत जावो। उसे वह कह रहा है कि मालती ! नादानी मत करो और अपने शील को न छोड़ो।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० १३० परिमाण – ३'४ + ४½
परिचय – गिलोलधारी मधु रामसरोवर की पाल पर खड़ा है। पनिहारियाँ मंत्रमुग्ध सी हुईं उसे देख रही हैं।

पृष्ठ ७८ – चित्र सं० १३१ परिमाण – ३'३ + ४½
परिचय – घोड़े पर सवार हुए मधु को दो स्त्रियां निहार रही हैं।

पृष्ठ ७९ – चित्र सं० १३२ परिमाण – ३½ + ४½
परिचय – मधु की खबर पाकर मालती और जैतमाल उसे देखने को रामसरोवर पर आई हैं। मधु जा रहा है और वे उसका पीछा कर रही हैं।

पृष्ठ ७९ – चित्र सं० १३३ परिमाण – २'२ + ४½
परिचय – मालती कूए की ओर कुछ देख रही है।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० १३४ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – पारधी (शिकारी) वृक्ष की ओट ले मृग पर वाण छोड़ रहा है।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० १३५ परिमाण – ३ + ४½
परिचय – मालती और उसकी सखी चकवा-चकवी को देख रही हैं। मालती चकवी से कुछ कह रही है।

पृष्ठ ८१ – चित्र सं० १३६ परिमाण – २½ + ४½
परिचय – चकवी मालती को सहज स्वभाव के विषय में सद्योजात सिंहिनी के बच्चे द्वारा गज की शिकार करने का उदाहरण सुना रही है।

पृष्ठ ८२ – चित्र संख्या १३७ परिमाण – २'३ + ४$\frac{1}{2}$
परिचय – आसन्नप्रसवा सिंहिनी बैठी हुई है।

पृष्ठ ८२ – चित्र सं० १३८ परिमाण – ३'२ + ४$\frac{1}{2}$
परिचय – राजा हाथी पर चढ़ कर अपने घुडसवार एवं पैदल सिपाहियों के साथ सिंहिनी की शिकार करने के लिये आया है।

पृष्ठ ८३ – चित्र सं० १३९ परिमाण – ३$\frac{1}{2}$ + ४$\frac{1}{2}$
परिचय – सिंहिनी का सद्यःप्रसूत बच्चा हाथी के मस्तक पर जा चढ़ा है।

पृष्ठ ८४ – चित्र सं० १४० परिमाण – २'३ + ४$\frac{1}{2}$
परिचय – जैतमाल के साथ बैठी मालती बात कर रही है।

पृष्ठ ८७ – चित्र सं० १४१ परिमाण – २ + ४$\frac{1}{2}$
परिचय – मधुकुमार को जैतमाल अपने वाग्जाल में मोहिनी-मंत्र द्वारा फंसाने की चेष्टा कर रही है। बैठे हुए मधु के पीछे थोड़ी दूर पर मालती बैठी है। जैतमाल मधु के सामने खड़ी है।

पृष्ठ ८७ – चित्र सं० १४२ परिमाण – २'४ + २'३ पो.
परिचय – जैतमाल हाथ जोड़े खड़ी है।

पृष्ठ ८७ – चित्र सं० १४३ परिमाण – १$\frac{1}{2}$'२ + ४$\frac{1}{2}$
परिचय – जैतमाल दर्पण को हाथ में ले कर शृङ्गार कर रही है और अपना मुख दर्पण में देख रही है।

पृष्ठ ८८ – चित्र सं० १४४ परिमाण – २$\frac{1}{2}$ + २
परिचय – शृङ्गार की हुई जैतमाल मधु को रिंझाने के लिए जा रही है।

पृष्ठ ८९ – चित्र सं० १४५ परिमाण – ३'२ + ४$\frac{1}{2}$
परिचय – जैतमाल मालती को साथ लेकर रामसरोवर की पाल पर खड़े मधु के सामने आ कर खड़ी है और हाथ जोड़ कर उस से कुछ कह रही है।

पृष्ठ ९० – चित्र संख्या १४६ परिमाण – २'२ + ४½

परिचय – जैतमाल मधु को उसके पूर्वभव के चरित्र का स्मरण दिला रही है। दोनों सम्मुखीन खड़े हैं।

पृष्ठ ९१ – चित्र सं० १४७ परिमाग – ६'१ + ४½

परिचय – संयुक्तचित्र-भस्मासुर दैत्य को भोले शंकर वरदान दे रहे हैं। भस्मासुर प्राप्तवरदान के प्रभाव को उन्हीं पर आजमाना चाहता है। शिवजी यह जान कर भग रहे हैं और वह दैत्य उनका पीछा कर रहा है। शिव गुफा में घुस कर विष्णु का स्मरण कर रहे हैं। विष्णु दैत्य के सामने मोहिनीरूप में आ कर उसे मुग्ध कर रहे हैं।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० १४८ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – मोहिनीरूप द्वारा वशीभूत एवं कामार्त भस्मासुर मोहिनी के सामने नाच रहा है और उसके कथनानुसार अपने मस्तक पर हाथ धर रहा है, किन्तु वह यह भूल जाता है कि मस्तक पर हाथ धरते ही मैं भस्मसात् हो जाऊंगा।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० १४९ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – महादेव विष्णु को हाथ जोड़ रहे हैं। विष्णु कह रहे हैं कि मैंने इस मोहिनी रूप को धारण कर भस्मासुर दैत्य को जला दिया है।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० १५० परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – महादेव मोहिनीरूप को देख कर मुग्ध हो उठे हैं और कामार्त हो कर उसे पाने की इच्छा से उसके पीछे दौड़ रहे हैं।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० १५१ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – विष्णु का प्रकृत रूप देख कर महादेव उनके सामने लज्जित हो रहे हैं।

पृष्ठ ९३ – चित्र संख्या १५२ परिमाण – २ + ४½

परिचय – शंकर कामदेव को जला रहे हैं। जलते हुए काम को देख कर गौरी आई, और उन के सामने बैठ कर हाथ जोड़ कहने लगी कि यह आपने क्या किया! ऐसे गौरी के वाक्य सुन कर शङ्कर नरव-भर काम को जलने से बचा रहे हैं।

पृष्ठ ९४ – चित्र सं० १५३ परिमाण – ३½ + ४½

परिचय – वृक्षावली का दृश्य।

पृष्ठ ९४ – चित्र सं० १५४ परिमाण – २½'३ + ४½

परिचय – वृक्षावली का दृश्य।

पृष्ठ ९५ – चित्र सं० १५५ परिमाण – ३'१ + ४½

परिचय – वृक्षावली का दृश्य।

पृष्ठ ९६ – चित्र सं० १५६ परिमाण – २½'१ + ४½

परिचय – मधु को जैतमाल समझा रही है।

पृष्ठ ९७ – चित्र सं० १५७ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – मालती एवं जैतमाल को मधुकुमार उत्तर दे रहे हैं।

पृष्ठ ९७ – चित्र सं० १५८ परिमाण – २'२ + ४½

परिचय – जैतमाल-मधु का वार्तालाप।

पृष्ठ १०० – चित्र सं० १५९ परिमाण – २½'२ + ४½

परिचय – मधु जैतमाल और मालती को यह समझा रहे हैं कि कुलाङ्गनाओं को लज्जा नहीं छोड़नी चाहिए।

पृष्ठ १०१ – चित्र सं० १६० परिमाण – २½ + ४½

परिचय – जैतमाल मधु के वाक्यों का उत्तर दे रही है। मालती उस के पीछे खड़ी है।

पृष्ठ १०१ – चित्र सं० १६१ परिमाण – २½ + ४½

परिचय – मधुकुमार मालती के सुन्दर रूप को निरख कर मन ही मन मुग्ध हो जैतमाल की बातों को ध्यान से सुन रहा है।

पृष्ठ १०४ – चित्रसंख्या १६२ परिमाण – ३'२ + ४½

परिचय – मधुकुमार मालती और जैतमाल को मैना के सतीत्व की कहानी सुना रहा है।

पृष्ठ १०५ – चित्र सं० १६३ परिमाण – ४½ + ४½

परिचय – वरनापुरी का दृश्य। मैना अपने महल में बैठी है।

पृष्ठ १०६ – चित्र सं० १६४ परिमाण – ३½ + ४½

परिचय – पुरी के महाजन लोग लालनसाह शेठ से मिल कर उसे यह कह रहे हैं कि हमें परदेश चल कर अधिक द्रव्य उपार्जन करना चाहिए, अतः आप हमारे साथ चलें। महल (अटारी) में मैना बैठी हुई है।

पृष्ठ १०६ – चित्र सं० १६५ परिमाण – ३½'२ + ४½

परिचय – लालनसाह महल में बैठी मैना के पास में बैठ कर उस से जाने की आज्ञा चाह रहे हैं तथा जल्दी ही अपने लौट जाने का उस को वचन भी दे रहे हैं। लालनसाह एवं उनके अन्य साथी घोड़ों पर सवार हो कर परदेश जा रहे हैं।

पृष्ठ १०७ – चित्र सं० १६६ परिमाण – ५ + ४½

परिचय – पतिवियोगिनी मैना अपने महल में उदासीन बैठी है। उसके महल के नीचे राजपथ (नगरपथ) से वरणापुरीनरेश के राजकुमार हाथी पर चढ़े मय लवाजमे के गुजर रहे हैं। एकाएक राजकुमार की दृष्टि मैना पर पड़ गई है और उसके अनुपम रूप पर वह मुग्ध हो गया है।

पृष्ठ १०८ – चित्र सं० १६७ परिमाण – १½'१ + ४½

परिचय – राजकुमार अपने साथी के सामने मैना के रूप-लावण्य का वर्णन कर रहा है और कह रहा है कि मैं उस से जैसे तैसे भी हो मिल पाऊं, तुम ऐसा उपाय करो।

पृष्ठ १०८ – चित्रसंख्या १६८ परिमाण – २ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – एक तरफ-दूत रतना मालिन को कह रहा है कि तुम्हें राजकुमार बुला रहे हैं। दूसरी तरफ–रतना राजकुमार के सामने आ हाथ जोड़ कर पूछ रही है-क्या हुक्म है? कुमार उसे मैना को अपने वश में कराने का आदेश दे रहा है।

पृष्ठ १०८ – चित्र सं० १६९ परिमाण – १$\frac{१}{२}$'४ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – मालती मधु से मैना के विषय में आगे का वृत्त पूछ रही है।

पृष्ठ १०८ – चित्र सं० १७० परिमाण – १$\frac{१}{२}$'४ + २

परिचय – मालिन रतना फूलों की टोकरी हाथ में लिए खड़ी है।

पृष्ठ १०९ – चित्र सं० १७१ परिमाण – २$\frac{१}{२}$'४ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – रतना मालिन टोकरी को ली हुई मैना के महल की ओर जा रही है। महल में मैना बैठी है।

पृष्ठ ११० – चित्र सं० १७२ परिमाण – १$\frac{१}{२}$'४ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – बैठी हुई मैना को फुसला कर पुष्पों का हार प्रदान कर रही है।

पृष्ठ ११० – चित्र सं० १७३ परिमाण – २'१ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – एक तरफ-उदासीन मैना बैठी है। दूसरी तरफ-मैना को निर्वस्त्र कर मालिन रतना स्नान करा रही है।

पृष्ठ १११ – चित्र सं० १७४ परिमाण – २'२ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – रतना मालिन मैना को सतीत्वधर्म से विचलित करने के लिये बात का उपक्रम कर बारह मासों का क्रमबद्ध वर्णन कर रही है।

पृष्ठ ११३ – चित्र सं० १७५ परिमाण – २'१ + ४$\frac{१}{२}$

परिचय – विरहिणी मैना रतना द्वारा कहे गये कामोद्दीपन के प्रसंगों का उत्तर दे रही है।

पृष्ठ ११४ — चित्र संख्या १७६ परिमाण — ४½'१ + ४½

परिचय — रतना मालिन महल में बैठी हुई मैना को दीपावली के उत्सव पर शृङ्गारित स्त्रियों का वर्णन करती हुई यह कह रही है कि तुझे शृङ्गारहीन देख कर मुझे दुःख होता है। महल के छत की दीवारों पर दो स्त्रियां दीपक जला रही हैं।

पृष्ठ ११४ — चित्र सं० १७७ परिमाग — १½ + ३'४

परिचय — रतना मालिन पौषमास की ठंड का वर्णन कर मैना से कह रही है कि इस ठंड का एक इलाज पुरुष ही है; अतः कहो तो····। मैना उसका उत्तर दे रही है। दोनों बैठी हैं और उनके बीच में सिगड़ी जल रही है।

पृष्ठ ११६ — चित्र सं० १७८ परिमाण — ५ + ४½

परिचय — नर-नारी परस्पर होली खेल रहे हैं। मैना और रतना मालिन महल में बैठी प्रश्नोत्तर में लीन हैं।

पृष्ठ ११६ — चित्र सं० १७९ परिमाण — ४½'४ + ४½

परिचय — नारियाँ गौरी पूजा के निमित्त बाग में जा रही हैं। रतना और मैना महल में वार्तालाप कर रही हैं।

पृष्ठ ११७ — चित्र सं० १८० परिमाण — ३ + ४½

परिचय — रतना जेठ महीने की गरमी का प्रसंग छेड़ रही है। उसके उत्तर में मैना कह रही है कि मेरे लिए लालनसाह के बिना सब ऋतुएं निरर्थक हैं। दोनों बैठी हैं और दासियाँ आसपास में खड़ी उन पर पंखा कर रही हैं।

पृष्ठ ११८ — चित्र सं० १८१ परिमाण — ३½'१ + ४½

परिचय — मैना महल में बैठी घोड़ों पर चढ़े हुए अपने साथियों के साथ आते हुए लालनसाह को देख रही है।

पृष्ठ ११९ — चित्र सं० १८२ परिमाण — २'२ + ४½

परिचय — लालनसाह मैना के साथ बैठे हैं। लालनसाह मैना द्वारा कहे गये रतना के चरित्रको सुन कर दासी को कह रहे हैं कि उसे पुरुषों द्वारा पकड़वा कर यहाँ लाओ।

पृष्ठ ११९ – चित्र संख्या १८३ परिमाण – २'३ + ४½
परिचय – एक तरफ-दो आदमी रतना मालिन को उसके दोनों हाथ पकड़ कर खींच रहे हैं। दूसरी तरफ-साह मालिन को फटकार रहा है और दूतों से कह रहा कि इसे गधे पर चढ़ा कर देशनिकाला दो।

पृष्ठ ११९ – चित्र सं० १८४ परिमाण – १½'३ + ४½
परिचय – लालनसाह और मैना बैठे हुए हैं। साह उसे यात्रा का हाल सुना रहे हैं।

पृष्ठ ११९ – चित्र सं० १८५ परिमाण – २'३ + ४½
परिचय – पुरवासी लोग दुश्चरित्र रतना मालिन को उसका काला मुख कर तथा उसे गधे पर चढ़ा देश से निकाल रहे हैं।

पृष्ठ १२० – चित्र सं० १८६ परिमाण – २'४ + ४½
परिचय – मधु के सामने मालती, जैतमाल बैठी हैं। जैतमाल मोहनमंत्र मन में पढ़ती हुई मधु को उषा-अनिरुद्ध का आख्यान कह कर समझा रही है।

पृष्ठ १२१ – चित्र सं० १८७ परिमाण – १½'१ + २½
परिचय – बाणासुर का चित्र।

पृष्ठ १२१ – चित्र सं० १८८ परिमाण – १'४ + ४½
परिचय – उषा शय्या पर सोयी हुई है। उसे स्वप्न में एक कामावतार राजकुमार के दर्शन एवं स्पर्शन हो रहे हैं। उसके थोड़ी दूर पर ही बाहर उस की सखी चित्रलेखा बैठी है।

पृष्ठ १२२ – चित्र सं० १८९ परिमाण – २'२ + ४½
परिचय – सो कर उठी हुई उषा उदास हो काम से व्यथित हो रही है और अपनी सखी चित्रलेखा से स्वप्न का वृत्त कह रही है। चित्ररेखा उसे स्वप्नदृष्ट चित्र दिखला कर यह कह रही है कि वह कुमार श्रीकृष्ण का पुत्र अनिरुद्ध है।

पृष्ठ १२३ – चित्र संख्या १९० परिमाण – २½'३ + ४½

परिचय – चित्ररेखा अनिरुद्ध से उषा की दशा का वर्णन कर यह प्रार्थना कर रही है कि पहले आपने स्वप्न में उषा के साथ अपनी लीला की, अब आप प्रत्यक्ष रूप में उस के पास चलें और उषा की कामतृष्णा को शान्त करें, अन्यथा वह तुम्हारे वियोग में मर जाएगी।

पृष्ठ १२४ – चित्र सं० १९१ परिमाण – २½'२ + ४½

परिचय – मण्डप में उषा एवं अनिरुद्ध का गान्धर्व विवाह हो रहा है। चित्ररेखा उन के पास कर जोड़े खड़ी है।

पृष्ठ १२४ – चित्र सं० १९२ परिमाण – २'२ + ४½

परिचय – जब क्रुद्ध बाणासुर ने ब्रह्मपाश से अनिरुद्ध को पकड़ कर कैद कर दिया उस समय नारद कहीं से आगये हैं और बाणासुर को समझा रहे हैं।

पृष्ठ १२५ – चित्र सं० १९३ परिमाण – २ + ४½

परिचय – चित्ररेखा नारद का मिलाप अनिरुद्ध से करा रही है। अनिरुद्ध उन्हें देख कर उन से अपने बंदी होने का समाचार द्वारिका में जाकर श्रीकृष्ण को तुरंत देने की प्रार्थना कर रहा है।

पृष्ठ १२५ – चित्र सं० १९४ परिमाण – ४ + ४½

परिचय – नारद द्वारिका के प्रासाद में रुक्मिणी के साथ बैठे हुए श्रीकृष्ण को अनिरुद्ध के बंदी होने के समाचार कह रहे हैं।

पृष्ठ १२६ – चित्र सं० १९५ परिमाण – ४'१ + ४½

परिचय – श्रीकृष्ण और बाणासुर की लड़ाई हो रही है।

पृष्ठ १२६ – चित्र सं० १९६ परिमाण – ३½'३ + ४½

परिचय – भक्त बाणासुर के रक्षार्थ आये हुए महादेव का श्रीकृष्ण के साथ भयंकर युद्ध हो रहा है। बाणासुर के दो हाथों को छोड़ कर सभी हाथ श्रीकृष्ण ने काट डाले हैं।

पृष्ठ १२७ – चित्र संख्या १९७ परिमाण – ३½'३ + ४½

परिचय – महादेव को यह जब ज्ञात हो गया कि श्रीकृष्ण पूर्ण पुरुष पुरुषोत्तम हैं, तब वे वाणासुर और उषा अनिरुद्ध को अपने साथ में ले कर श्रीकृष्ण से क्षमा-याचना कर रहे हैं तथा उनसे वाणासुर के दो हाथों सहित जीवितदान की प्रार्थना कर उषा–अनिरुद्ध को उन्हें सौंप रहे हैं।

पृष्ठ १२७ – चित्र सं० १९८ परिमाण – २½ + ४½

परिचय – उषा-अनिरुद्ध को साथ में ले कर श्रीकृष्ण द्वारिका जा रहे हैं।

पृष्ठ १२८ – चित्र सं० १९९ परिमाण – २'२ + ४½

परिचय – एक वृक्ष पर कोयल और तोता बैठे हैं।

पृष्ठ १२९ – चित्र सं० २०० परिमाण – ३'२ + २½ ३ पो.

परिचय – वृक्ष पर पिक बैठा है और कोयल उससे नाराज होकर उड़ गई है।

पृष्ठ १२९ – चित्र सं० २०१ परिमाण – २½'४ + २½

परिचय – कोयल सूवा से यह प्रार्थना कर रही है कि मुझे तुम अपनी बना लो।

पृष्ठ १२९ – चित्र सं० २०२ परिमाण – २½ + २'२

परिचय – वृक्ष पर स्थित कोयल-तोता का प्रश्नोत्तर हो रहा है।

पृष्ठ १३० – चित्र सं० २०३ परिमाण – २'३ + ४½

परिचय – एक वृक्ष पर पिकी और शुक अपने विलास में मग्न हो रहे हैं। दूसरे वृक्ष पर पिक उदासीन एवं क्रुद्ध हो रहा है।

पृष्ठ १३१ – चित्र सं० २०४ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – एक वृक्ष पर शुक तथा पिकी अपनी विलासिता में लीन हैं और दूसरे वृक्ष पर बैठा हुआ जयतारण पिक उन के इस चरित्र को देख कर क्रुद्ध हो, शुक से पिकी को छुड़ाने का उपाय करने कहीं उड जाने का प्रयास कर रहा है।

पृष्ठ १३१ – चित्र संख्या २०५ परिमाण – २½ + ४½

परिचय – पिक अपने वृक्ष (पूर्वनिवास) पर जा कर, उड़ रहे अपने साथी पक्षियों से यह कह रहा है कि मेरी पत्नी को सूवे ने रख लिया है, अतः तुम मेरे साथ चलो तथा सूवे को मार कर उस से पत्नी को छुटकारा दिलाओ ।

पृष्ठ १३२ – चित्र सं० २०६ परिमाण – ३½'१ + ४½

परिचय – पक्षियों ने पिकी और शुक को घेर लिया है और शुक अपने मन में श्रीराम का स्मरण कर कह रहा है कि हे राम ! मुझ निर्दोष को बचाओ ।

पृष्ठ १३२ – चित्र सं० २०७ परिमाण – २'१ + २'१

परिचय – हाथ में जाल लिया हुआ व्याध खड़ा है ।

पृष्ठ १३२ – चित्र सं० २०८ परिमाण – ३ + ४½

परिचय – व्याध द्वारा वृक्ष पर फेंके हुए जाल में सारे पक्षी फंस गये हैं । प्रभु की कृपा से केवल पिकी और शुक ही फंसने से बचे हैं ।

पृष्ठ १३२ – चित्र सं० २०९ परिमाण – २½'२ + ४½

परिचय – व्याध फेंके हुए अपने जाल को वापस खींच रहा है । वृक्ष पर सानन्द पिकी और शुक बैठे हैं ।

पृष्ठ १३३ – चित्र सं० २१० परिमाण – २'४ + ४½

परिचय – मधुकुमार जैतमाल के मोहनमंत्र द्वारा वशीभूत हो कर उसे कह रहा है कि गांधर्व विवाह की तय्यारी करो । मालती जैतमाल के पीछे खड़ी है ।

पृष्ठ १३४ – चित्र सं० २११ परिमाण – ३½'३ + ४½

परिचय – मंडप में खड़ी हुई जैतमाल मालती-मधु का गांधर्व विवाह करा रही है और वही सामयिक मंगलाचरण भी कर रही है ।

पृष्ठ १३४ – चित्र संख्या २१२ परिमाण – २'२ + ४½

परिचय – रामसरोवर बाग में मधु-मालती के भोग-विलास का अश्लील चित्र है। कुञ्ज के बाहर जैतमाल उनकी चौकसी में खड़ी है। गुप्त बारी से एक लंगड़ा माली भी यह कृत्य देख रहा है।

पृष्ठ १३४ – चित्र सं० २१३ परिमाण – १½'३ + ४½

परिचय – राजा चंद्रसेन मधु-मालती के रति-विलास की सूचना माली द्वारा पा कर क्रुद्ध हो, अपनी रानी कनकमाल को यह कह रहे हैं कि दोनों की गरदन उड़ा दूंगा।

पृष्ठ १३५ – चित्र सं० २१४ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – रानी कनकमाल हाथ जोड़ कर राजा को समझा रही है कि आप कन्या को मारने का पाप न कर केवल उन्हें देश से निर्वासित कर दें। किन्तु क्रुद्ध राजा उस के इस विचार से सहमत नहीं हो रहा है।

पृष्ठ १३५ – चित्र सं० २१५ परिमाण – २ + ४½

परिचय – राजा चंद्रसेन अपने दो सिपाहियों को मधु तथा मालती के मारणार्थ आज्ञा दे रहे हैं।

पृष्ठ १३६ – चित्र सं० २१६ परिमाण – २ + ४½

परिचय – व्यथित रानी कनकमाल अपनी दूती से यह कह रही है कि रामसरोवर बाग में जा कर मधु-मालती को कहो कि तुम अब यहाँ से कहीं दूसरे देश चले जाओ, अन्यथा मारे जाओगे।

पृष्ठ १३६ – चित्र सं० २१७ परिमाण – २'२ + ४½

परिचय – शय्या पर जैतमाल, मालती और मधु बैठे हैं जैतमाल पंखा झल रही है। मालती पास में खड़ी दूती से भयावह समाचार सुन मधु के गले लग कर उसे कह रही है कि अब हम अन्यत्र कहीं चले चलें। मधु उसे रूपरेखा और चंद्र कुमार का प्रसंग सुना कर धैर्य बंधा रहा है।

पृष्ठ १३७ – चित्र संख्या २१८ परिमाण – ३ + ४½

परिचय – पुष्पावती नगर का राजकुमार चंद्र घोड़े पर सवार हो बाग में आया है तथा बाग की मालिन को कह रहा है कि यहाँ पर एक कुटिया बनाओ और उसे बेलों से ढ़क दो। मालिन हाथ जोड़े खड़ी है। रूपरेखा कुंज में बैठी है।

पृष्ठ १३७ – चित्र सं० २१९ परिमाण – ३ + ४½

परिचय – माली और मालिन कुंज में कुटी बना रहे हैं।

पृष्ठ १३८ – चित्र सं० २२० परिमाण – ३'१ + ४½

परिचय – मालिन राजकुमार को बनी हुई कुटी की सूचना देने जा रही है, किन्तु वहाँ रूपरेखा के साथ सोये हुए राजकुमार को देख, शङ्कित हो चुपचाप वापस अपना मार्ग पकड़ रही है।

पृष्ठ १३८ – चित्र सं० २२१ परिमाण – २½'१ + ४½

परिचय – चंद्रकुमार और रूपरेखा कुटी को देख रहे हैं।

पृष्ठ १३९ – चित्र सं० २२२ परिमाण – ३ + ४½

परिचय – कामासन में आबद्ध रूपरेखा अपने सामने आते हुए एक सिंह को देख कर भयभीत हो चंद्रकुमार का ध्यान उस की ओर आकृष्ट कर रही है। (अश्लील चित्र)

पृष्ठ १३९ – चित्र सं० २२३ परिमाण – २'३ + ४½

परिचय – कामासनस्थ चंद्रकुमार निकटवर्ती शेर को देख कर अपना धनुष उठा रहे हैं। (अश्लील चित्र)

पृष्ठ १३९ – चित्र सं० २२४ परिमाण – २'१ + ४½

परिचय – पूर्वासन में स्थित चंद्रकुमार उपस्थित सिंह पर बाण छोड़ रहे हैं। (अश्लील चित्र)

पृष्ठ १४० – चित्र सं० २२५ परिमाण – २ + ४½

परिचय – पलङ्ग पर जैतमाल-मालती और मधुकुमार बैठे हैं। मालती मन ही मन मधु के रक्षणार्थ प्रभु का स्मरण कर रही है।

पृष्ठ १४१ – चित्र संख्या २२६ परिमाण – २½'२ + ४
परिचय – जैतमाल-मालती और मधु पलंग पर बैठे हैं और जैतमाल के पास नीचे मालिन हार लिये खड़ी है। मधु मालती को अपने आयुध गिलोल का महत्व सुना कर धैर्य बंधा रहा है।

पृष्ठ १४२ – चित्र सं० २२७ परिमाण – २'३ + ४½
परिचय – मधु मालती को गिलोल का प्रभाव, वृक्षों पर उसे चला कर के प्रत्यक्ष रूप में दिखला रहा है।

पृष्ठ १४२ – चित्र सं० २२८ परिमाण – २'२ + ४½
परिचय – गिलोल की चोट से बचा हुआ एक सिपाही राजा चंद्रसेन को मधु की आश्चर्यजनक वीरता का बयान कर कह रहा है कि सारे सिपाही गिलोल के वारों से मारे गये।

पृष्ठ १४४ – चित्र सं० २२९ परिमाण – २½ + ४½
परिचय – राजा सेनापति को आज्ञा दे रहा है कि पहले से अधिक सेना ले जाओ और उस बनिया मधु को मार डालो।

पृष्ठ १४४ – चित्र सं० २३० परिमाण – ३'२ + ३½
परिचय – जैतमाल-मालती बैठी हैं। मधु सेना पर अपनी गिलोल के वार पर वार कर रहा है।

पृष्ठ १४५ – चित्र सं० २३१ परिमाण – २ + ४½ १ पो.
परिचय – राजा चन्द्रसेन एक घायल सिपाही से बात कर रहे हैं।

पृष्ठ १४६ – चित्र सं० २३२ परिमाण – २½'१ + ४½ १ पो.
परिचय – जैतमाल, मालती बैठी हैं और खड़े हुए मधु घुड़सवार सैनिकों से लड़ रहा है।

पृष्ठ १४६ – चित्र सं० २३३ परिमाण – २½'२ + ४½ १ पो.
परिचय – मधु-मालती मश्व पर बैठे हैं और जैतमाल उन की तरफ अपनी गर्दन मोड़े कहीं जाने की मुद्रा में खड़ी है।

पृष्ठ १४७ – चित्र संख्या २३४ परिमाण – ४'१ + ४½ १ पोइन्ट

परिचय – मधु, मालती और जैतमाल बैठे वार्तालाप कर रहे हैं।

पृष्ठ १४८ – चित्र सं० २३५ परिमाण – २½'३ + ४½ १ पो.

परिचय – मधु अश्वारोही सैनिकों से लड़ रहे हैं। जैतमाल एवं मालती बैठी हैं।

पृष्ठ १४९ – चित्र सं० २३६ परिमाण – ५½ + ४½ १ पो.

परिचय – चित्र के ऊपरी भाग में - चंद्रसेन दूत से वार्तालाप कर रहा है। नीचे के भाग में - मधु अश्वारूढ सिपाहियों से लड़ रहा है।

पृष्ठ १५० – चित्र सं० २३७ परिमाण – २'३ + ४½

परिचय – राजा चन्द्रसेन सैनिक दूत को कुछ हुक्म दे रहा है।

पृष्ठ १५२ – चित्र सं० २३८ परिमाण – ६½ + ४½ २ पो.

परिचय – पूरी सेना का दृश्य।

पृष्ठ १५२ – चित्र सं० २३९ परिमाण – ६½ + ४½ १ पो.

परिचय – नरपति चन्द्रसेन स्वयं हाथी पर सवार हो कर सेना के साथ मधु पर चढ़ाई करने जा रहा है।

पृष्ठ १५४ – चित्र सं० २४० परिमाण – ४½'४ + ४½

परिचय – जैतमाल - मालती बैठी हैं। मधु खड़े खड़े, आये हुए किसी दूत से बात कर रहा है।

पृष्ठ १५६ – चित्र सं० २४१ परिमाण – ६½'४ + ४½ २ पो.

परिचय – मधु राजा चन्द्रसेन से युद्ध कर रहा है।

पृष्ठ १५७ – चित्र सं० २४२ परिमाण – ७ + ४½

परिचय – मधु के रक्षार्थ परम कृपालु भगवान् द्वारा भेजे गये भारण्ड पक्षी एवं वन्यजन्तु सेना से लड़ रहे हैं।

पृष्ठ १५८ – चित्र सं० २४३ परिमाण – ६½'३ + ४½

परिचय – सेना का एक दृश्य।

पृष्ठ १४१ – चित्र संख्या २२६ परिमाण – २½'२ + ४

परिचय – जैतमाल-मालती और मधु पलंग पर बैठे हैं और जैतमाल के पास नीचे मालिन हार लिये खड़ी है। मधु मालती को अपने आयुध गिलोल का महत्व सुना कर धैर्य बंधा रहा है।

पृष्ठ १४२ – चित्र सं० २२७ परिमाण – २'३ + ४½

परिचय – मधु मालती को गिलोल का प्रभाव, वृक्षों पर उसे चला कर के प्रत्यक्ष रूप में दिखला रहा है।

पृष्ठ १४२ – चित्र सं० २२८ परिमाण – २'२ + ४½

परिचय – गिलोल की चोट से बचा हुआ एक सिपाही राजा चंद्रसेन को मधु की आश्चर्यजनक वीरता का बयान कर कह रहा है कि सारे सिपाही गिलोल के वारों से मारे गये।

पृष्ठ १४४ – चित्र सं० २२९ परिमाण – २½ + ४½

परिचय – राजा सेनापति को आज्ञा दे रहा है कि पहले से अधिक सेना ले जाओ और उस बनिया मधु को मार डालो।

पृष्ठ १४४ – चित्र सं० २३० परिमाण – ३'२ + ३½

परिचय – जैतमाल-मालती बैठी हैं। मधु सेना पर अपनी गिलोल के वार पर वार कर रहा है।

पृष्ठ १४५ – चित्र सं० २३१ परिमाण – २ + ४½ १ पो.

परिचय – राजा चन्द्रसेन एक घायल सिपाही से बात कर रहे हैं।

पृष्ठ १४६ – चित्र सं० २३२ परिमाण – २½'१ + ४½ १ पो.

परिचय – जैतमाल, मालती बैठी हैं और खड़े हुए मधु घुड़सवार सैनिकों से लड़ रहा है।

पृष्ठ १४६ – चित्र सं० २३३ परिमाण – २½'२ + ४½ १ पो.

परिचय – मधु-मालती मञ्च पर बैठे हैं और जैतमाल उन की तरफ अपनी गर्दन मोड़े कहीं जाने की मुद्रा में खड़ी है।

पृष्ठ १४७ – चित्र संख्या २३४ परिमाण – ४'१ + ४½ १ पोइन्ट

परिचय – **मधु, मालती और जैतमाल बैठे वार्तालाप कर रहे हैं।**

पृष्ठ १४८ – चित्र सं० २३५ परिमाण – २½'३ + ४½ १ पो.

परिचय – **मधु अश्वारोही सैनिकों से लड़ रहे हैं। जैतमाल एवं मालती बैठी हैं।**

पृष्ठ १४९ – चित्र सं० २३६ परिमाण – ५½ + ४½ १ पो.

परिचय – **चित्र के ऊपरी भाग में-चंद्रसेन दूत से वार्तालाप कर रहा है। नीचे के भाग में-मधु अश्वारूढ सिपाहियों से लड़ रहा है।**

पृष्ठ १५० – चित्र सं० २३७ परिमाण – २'३ + ४½

परिचय – **राजा चन्द्रसेन सैनिक दूत को कुछ हुक्म दे रहा है।**

पृष्ठ १५२ – चित्र सं० २३८ परिमाण – ६½ + ४½ २ पो.

परिचय – **पूरी सेना का दृश्य।**

पृष्ठ १५२ – चित्र सं० २३९ परिमाण – ६½ + ४½ १ पो.

परिचय – **नरपति चन्द्रसेन स्वयं हाथी पर सवार हो कर सेना के साथ मधु पर चढ़ाई करने जा रहा है।**

पृष्ठ १५४ – चित्र सं० २४० परिमाण – ४½'४ + ४½

परिचय – **जैतमाल-मालती बैठी हैं। मधु खड़े खड़े, आये हुए किसी दूत से बात कर रहा है।**

पृष्ठ १५६ – चित्र सं० २४१ परिमाण – ६½'४ + ४½ २ पो.

परिचय – **मधु राजा चन्द्रसेन से युद्ध कर रहा है।**

पृष्ठ १५७ – चित्र सं० २४२ परिमाण – ७ + ४½

परिचय – **मधु के रक्षार्थ परम कृपालु भगवान् द्वारा भेजे गये भारण्ड पक्षी एवं वन्यजन्तु सेना से लड़ रहे हैं।**

पृष्ठ १५८ – चित्र सं० २४३ परिमाण – ६½'३ + ४½

परिचय – **सेना का एक दृश्य।**

पृष्ठ १५९ – चित्र संख्या २४४ परिमाण – ६½'३ + ४½ १ पोइन्ट

परिचय – मधु द्वारा पराजित सेना भाग रही है।

पृष्ठ १६० – चित्र सं० २४५ परिमाण – २½'१ + ४½

परिचय – राजा मंत्री से मंत्रणा कर रहा है।

पृष्ठ १६२ – चित्र सं० २४६ परिमाण – ३'१ + $४_{२}$

परिचय – तारणसाह मंत्री से राजा चन्द्रसेन मंत्रणा कर रहा है। उसके पीछे सिंह और भारण्ड पक्षी खड़े हैं।

पृष्ठ १६२ – चित्र सं० २४७ परिमाण – ३ + ४½ १ पो.

परिचय – मंत्री तारणसाह अपने मंत्रबल के प्रभाव से सिंह आदि का स्तम्भन कर रहा है। उसके पीछे राजा बैठा है।

पृष्ठ १६३ – चित्र सं० २४८ परिमाण – २½ + ४½

परिचय – राजा चन्द्रसेन तारणसाह से सलाह कर रहे हैं। साह उन्हें उरगाना का संवाद सुना रहा है।

पृष्ठ १६५ – चित्र सं० २४९ परिमाण – २½ + ४½ २ पो.

परिचय – मोची सर्प को चमड़ा समझ कर अपने हाथ में पकड़े बैठा हुआ है।

पृष्ठ १६६ – चित्र सं० २५० परिमाण – २½ + ४½ १ पो.

परिचय – उरगाना मोची से बात कर रहा है।

पृष्ठ १६६ – चित्र सं० २५१ परिमाण – २'३ + ४½ १ पो.

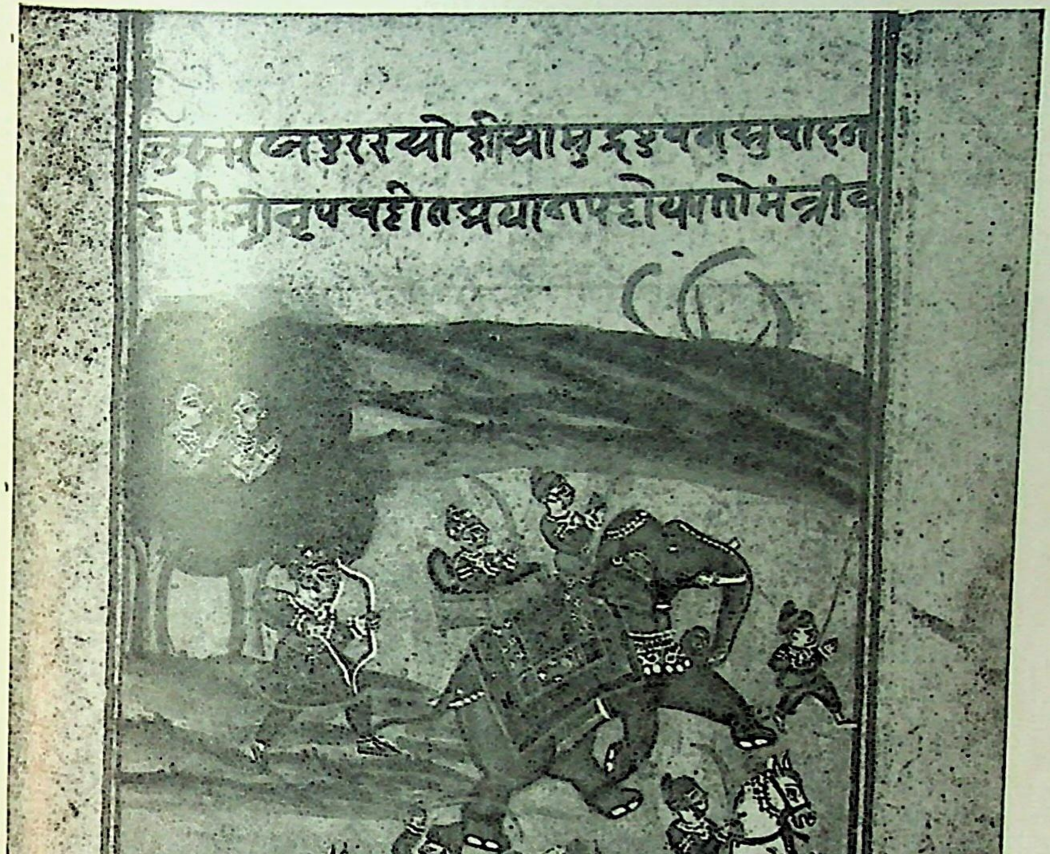
परिचय – मोची घोड़े की काठी पर सर्प का पट्टा लगा रहा है।

पृष्ठ १६६ – चित्र सं० २५२ परिमाण – २'२ + ४½ १ पो.

परिचय – उरगाना घोड़े पर सवार हो वन की ओर जा रहा है। वहाँ वंबी से निकल कर एक सर्प उसे देख रहा है।

पृष्ठ १६७ – चित्र सं० २५३ परिमाण – २'३ + ४½ २ पो.

परिचय – वंबीस्थ सर्प घोड़े की पीठ में चमड़े की एवज में वंधे हुए सर्प से कुछ कह रहा है।



प्रतिक्रमाङ्क–११६३३; चित्रसंख्या–२४४; सूचीपत्राङ्क–१८६

मधु द्वारा पराजित सेना भाग रही है।

पृष्ठ १६७ – चित्र संख्या २५४ परिमाण – २'२ + ४$\frac{१}{२}$ २ पोइन्ट
परिचय – उरगाना घोड़े से उतर कर उन दोनों सर्पों का वार्तालाप सुन रहा है।

पृष्ठ १६७ – चित्र सं० २५५ परिमाण – २'३ + ४$\frac{१}{२}$ ३ पो.
परिचय – सर्पद्वय का संवाद।

पृष्ठ १६७ – चित्र सं० २५६ परिमाण – १$\frac{३}{४}$'२ + ४$\frac{१}{२}$ ३ पो.
परिचय – उरगाना-सर्पसंवाद।

पृष्ठ १६८ – चित्र सं० २५७ परिमाण – २'२ + ४$\frac{१}{२}$ १ पो.
परिचय – उरगाना सर्प को दूध पा रहा है।

पृष्ठ १६९ – चित्र सं० २५८ परिमाण – २'२ + ४$\frac{१}{२}$
परिचय – मलयापुर का राजा अमरदत्त वन में शय्या पर सो रहा है तथा उस के पास ही भूमि पर उसका मंत्री उस के शिर पर हाथ धरे बैठा है। राजा के मुख पर बैठा सर्प वंबी के सर्प से बात कर रहा है।

पृष्ठ १७० – चित्र सं० २५९ परिमाण – २'४ + ४$\frac{१}{२}$ २ पो.
परिचय – तारणसाह राजा चंद्रसेन को समझा रहा है।

पृष्ठ १७१ – चित्र सं० २६० परिमाण – २ + ४$\frac{१}{२}$
परिचय – राजा अमरदत्त का मंत्री सर्प से बातें कर रहा है।

पृष्ठ १७१ – चित्र सं० २६१ परिमाण – २'४ + ४$\frac{१}{२}$ १ पो.
परिचय – अमरदत्त राजा के सिपाही सर्प को जला रहे हैं।

पृष्ठ १७१ – चित्र सं० २६२ परिमाण – २$\frac{१}{२}$ + ४$\frac{१}{२}$ १ पो.
परिचय – राजदूत के साथ आया हुआ खाती वृक्ष को काट रहा है।

पृष्ठ १७२ – चित्र सं० २६३ परिमाण – २$\frac{१}{२}$ + ४$\frac{१}{२}$ ३ पो.
परिचय – उरगाना सर्प को दूध पा रहा है। उसके पीछे घोड़ा खड़ा है।

पृष्ठ १७३ – चित्र सं० २६४ परिमाण – २ + ४$\frac{१}{२}$ १ पो.
परिचय – उरगाना सर्प को दूध पा रहा है।

पृष्ठ १७४ – चित्र संख्या २६५ परिमाण – २'२ + ४½ २ पोइन्ट

परिचय – उरगाना अपने पुत्र एवं स्त्री के बीच में खड़ा है। स्त्री उस से पूछ रही है कि तुम ये स्वर्णमुद्राएँ कहाँ से लाते हो।

पृष्ठ १७५ – चित्र सं० २६६ परिमाण – २'३ + ४½

परिचय – उरगाना अपने लड़के के हाथों सर्प को दूध पिला रहा है।

पृष्ठ १७५ – चित्र सं० २६७ परिमाण – १½'२ + ४½ २ पो.

परिचय – उरगाना का पुत्र एक हाथ में दूध का कटोरा और दूसरे हाथ में डंडा थाँभ कर सर्प को दूध पा रहा है।

पृष्ठ १७५ – चित्र सं० २६८ परिमाण – १½ + ४½ २ पो.

परिचय – उरगाना का पुत्र और सर्प सावधान होकर एक दूसरे को देख रहे हैं।

पृष्ठ १७६ – चित्र सं० २६९ परिमाण – २'२ + ४½ २ पो.

परिचय – उरगाना का लड़का सर्प पर लाठी का प्रहार कर रहा है और सर्प उसके पैर में डंस रहा है।

पृष्ठ १७६ – चित्र सं० २७० परिमाण – १½'४ + ४½ ३ पो.

परिचय – लड़का मूर्च्छित अवस्था में पड़ा है और सर्प भी अत्यन्त आहत हुआ बैठा है।

पृष्ठ १७७ – चित्र सं० २७१ परिमाण – २½'२ + ४½ २ पो.

परिचय – लड़का मरा हुआ पड़ा है। उरगाना सर्प को दूध पा रहा है।

पृष्ठ १७८ – चित्र सं० २७२ परिमाण – २ + ४½ १ पो.

परिचय – राजा के सामने उरगाना की स्त्री अपने पति की शिकायत कर रही है। उरगाना उसके पीछे खड़ा है।

पृष्ठ १७८ – चित्र सं० २७३ परिमाण – १½'२ + ४½ १ पो.

परिचय – राजा का मंत्री सर्प को दूध पिला रहा है और उरगाना अपने वचनानुसार मृत सर्प को गंगा में बहाने के लिए ले जा रहा है।

पृष्ठ १७८ – चित्र संख्या २७४ परिमाण – १½'४ + ४½ १ पोइन्ट

परिचय– सर्प की बंबी को राजा के सिपाही खोद रहे हैं।

पृष्ठ १७८ – चित्र सं० २७५ परिमाण – १½'१ + ४½ १ पो.

परिचय– उरगाना सर्प को नदी में बहा रहा है।

पृष्ठ १७९ – चित्र सं० २७६ परिमाण – ५'४ + ४½ २ पो.

परिचय– मधु - मालती को लवाजमे के साथ बड़े सम्मान से अलग २ पालखी में बैठा कर राजभवन में ले जाया जा रहा है।

पृष्ठ १८० – चित्र सं० २७७ परिमाण – ६½'२ + ४½ १ पो.

परिचय– राजभवन में मधु - मालती का लवाजमा प्रवेश करने वाला ही है, ऐसा भाव है।

पृष्ठ १८२ – चित्र सं० २७८ परिमाण – २'३ + ४½ १ पो.

परिचय– राजा चंद्रसेन एवं रानी कनकमाल वार्तालाप कर रहे हैं।

पृष्ठ १८३ – चित्र सं० २७९ परिमाण – १½'४ + ४½ २ पो.

परिचय– रानी कनकमाल एवं चन्द्रसेन का वार्तालाप।

पृष्ठ १८४ – चित्र सं० २८० परिमाण – २½'३ + ४½ १ पो.

परिचय– अञ्जनी के सामने हनूमान्, राम, लक्ष्मण और सीता हाथ जोड़े हुए खड़े हैं। उन्हें देख कर अञ्जनी ने अपना मुख दूसरी ओर फेर लिया है।

पृष्ठ १८५ – चित्र सं० २८१ परिमाण – ३ + ४½ १ पो.

परिचय– अञ्जनी से हनूमान् कुछ पूछ रहे हैं और राम, लक्ष्मण और सीता उस के पीछे खड़े हैं।

पृष्ठ १८५ – चित्र सं० २८२ परिमाण – २ + ४½ १ पो.

परिचय– हनूमान् अञ्जनी माता के पैरों में गिर कर उसे दण्डवत्प्रणाम कर रहे हैं। उन के पीछे रामादिक खड़े है।

पृष्ठ १८५ – चित्र संख्या २८३ परिमाण – २ + ४½ १ पोइन्ट

परिचय – राजा चंद्रसेन अपने मंत्री तारणसाह के सामने उन के पुत्र मधुकुमार के साथ अपनी लड़की मालती का विवाह करने का प्रस्ताव कर रहे हैं।

पृष्ठ १८७ – चित्र सं० २८४ परिमाग – २'१ + ४½ १ पो.

परिचय – राजा चंद्रसेन रानी कनकमाल से सलाह कर रहे हैं।

पृष्ठ १८८ – चित्र सं० २८५ परिमाग – २'२ + ४½ १ पो.

परिचय – राजा अपने कर्मचारियों को विवाह की तय्यारी करने का आदेश दे रहा है।

पृष्ठ १८९ – चित्र सं० २८६ परिमाण – ५'२ + ४½ १ पो

परिचय – नगर में मधु-मालती की छींकी (वरनोली) घूम रही है। वे दोनों पालखी में एक साथ बैठे हुए हैं।

पृष्ठ १८९ – चित्र सं० २८७ परिमाण – २'४ + ४½ १ पो.

परिचय – राजा एवं तारणसाह बैठे बातें कर रहे हैं।

पृष्ठ १९० – चित्र सं० २८८ परिमाण – ३½'४ + ४½ १ पो.

परिचय – पुरवासी लोग मधु-मालती के रूपलावण्य से विमुग्ध हो अपनी सुधि ही भूल रहे हैं।

पृष्ठ १९० – चित्र सं० २८९ परिमाग – ५'४ + ४½ १ पो.

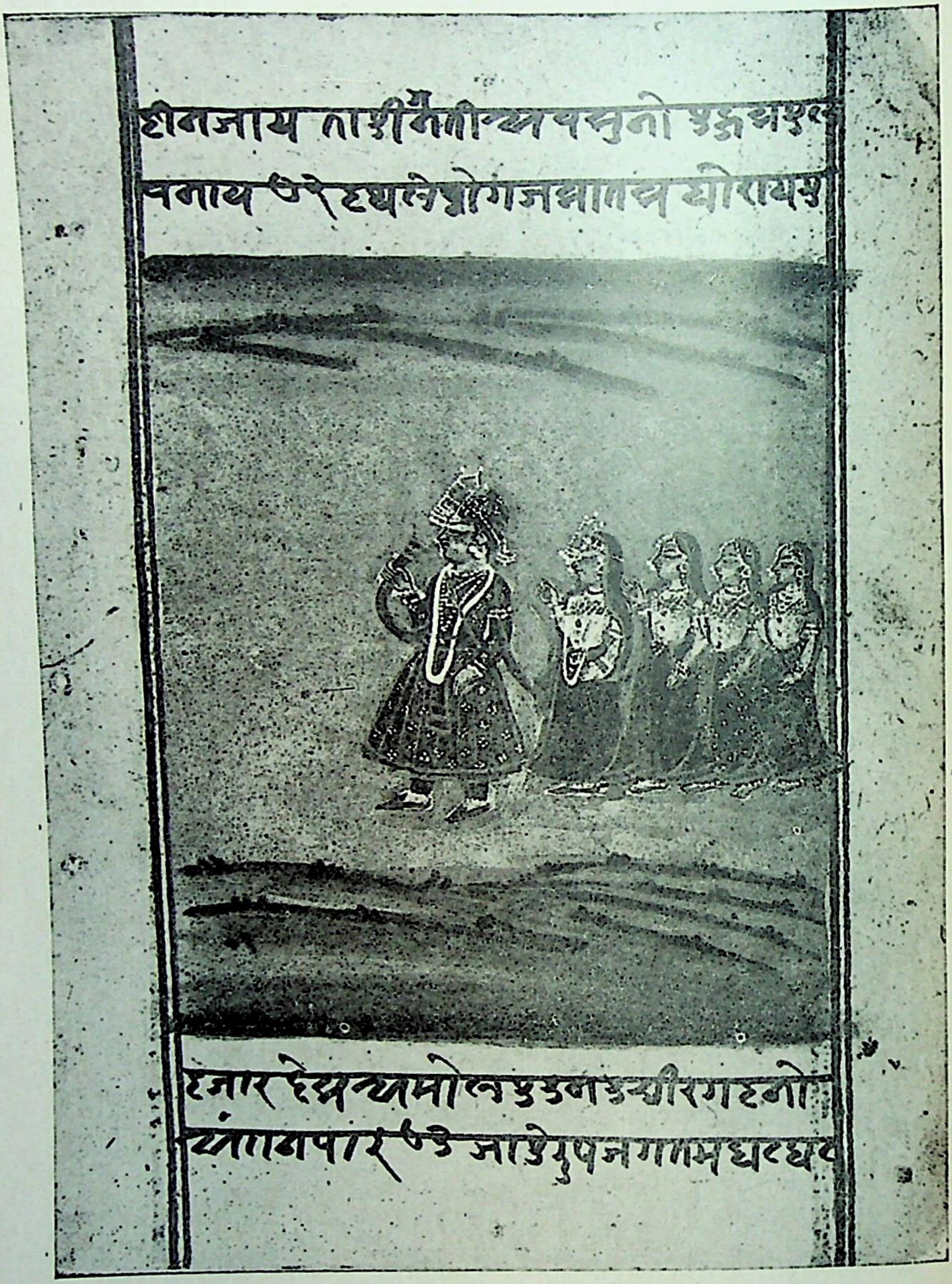
परिचय – राजा चंद्रसेन अपने महल में बैठे हैं। उन्हें दो राजपुरुष वर के आने की सूचना दे रहे हैं।

पृष्ठ १९१ – चित्र सं० २९० परिमाण – ५½'४ + ४½ १ पो.

परिचय – पण्डितजी मधु के मस्तक पर तिलक कर रहे हैं। राजा उनके पीछे खड़ा है और उसके पीछे बैठी तीन स्त्रियाँ मङ्गल-गीत गा रही हैं।

पृष्ठ १९१ – चित्र सं० २९१ परिमाग – ६½'१ + ४½ २-पो.

परिचय – मधु हाथी पर सवार हो लवाजमे के साथ तोरण मारने के लिए राजभवन की ओर जा रहे हैं।



प्रतिक्रमाङ्क–११६३२; चित्रसंख्या–२६४; सूचीपत्राङ्क–१६१

मधु मालती के साथ गठबन्धन कर विदा हो रहे हैं।

पृष्ठ १९२ – चित्र संख्या २९२ परिमाण – ६'४ + ४½ २ पोइन्ट

परिचय – वर मधुकुमार राजभवन के द्वार पर खड़े हैं। माथे पर जलकुम्भ रखी हुई सुहागिन स्त्रियां नेग-चार कर रही हैं।

पृष्ठ १९२ – चित्र सं० २९३ परिमाण – ५½'१ + ५

परिचय – मण्डप में दो ब्राह्मण मधु-मालती का विवाह करा रहे हैं। सुहागिन नारियाँ मङ्गल-गीत गा रही हैं।

पृष्ठ १९३ – चित्र सं० २९४ परिमाण – ५'३ + ४½ २ पो.

परिचय – मधु मालती के साथ गठबन्धन कर विदा हो रहे हैं। उनके पीछे मालती की तीन सखियां भी जा रही हैं।

पृष्ठ १९३ – चित्र सं० २९५ परिमाण – २'४ + ४½ १ पो.

परिचय – राजा चंद्रसेन और तारणसाह बैठे हैं।

पृष्ठ १९४ – चित्र सं० २९६ परिमाण – २'४ + ४½ १ पो.

परिचय – रानी के सामने दो राजपुरुष बैठे हैं।

पृष्ठ १९५ – चित्र सं० २९७ परिमाण – २½ + ४½ १ पो.

परिचय – मधु राजा चन्द्रसेन को कामनिवास का प्रसङ्ग समझा रहे हैं।

पृष्ठ १९७ – चित्र सं० २९८ परिमाण – २½ + ४½ १ पो.

परिचय – मधु-मालती को कुछ समझा रहा है।

पृष्ठ १९७ – चित्र सं० २९९ परिमाण – ३'१ + ४½ ३ पो.

परिचय – मधु एवं राजा चंद्रसेन वार्ता कर रहे हैं। मधु बैठा है एवं उस के सामने राजा हाथ जोड़े हुए खड़ा है।

पृष्ठ ९१ – चित्र सं० ३०० परिमाण – ७'२ + ५

परिचय – सजे हुए हाथी एवं घोड़ों का एक दृश्य है।

पृष्ठ ९२ – चित्र सं० ३०१ परिमाण – ७'२ + ५

परिचय – महल में मधु-मालती संभोगरत हैं। बाहर दो पहरेदार सैनिक बैठे हैं।

पृष्ठ ९२ – चित्र संख्या २०२ परिमाण – ७'२ + ५
परिचय – मधु बैठा है और उसके सामने वेश्या नाच रही है। तीन वादक वेश्या के पीछे खड़े हुए वाद्य बजा रहे हैं।

प्रसङ्गसूची –

१ – राजलोकवर्णन तथा मधु - मालती का परिचय – पृष्ठ ३ - ४

२ – रामसरोवर - शोभावर्णन – पृष्ठ ४ - ७

(१) पुरवासियों द्वारा मंत्री तारणसाह के सम्मुख मधु की शिकायत (२) मधु के प्रति तारणनिर्दिष्ट विद्याविषयक उपदेश।

३ – मधु तथा मालती का गुरुगृह में विद्याभ्यसन – पृष्ठ ७ - १३

(१) मालती द्वारा मधु के प्रति प्रणयनिवेदन (२) मधु-गदित शुकोदाहरण।

४ – मधुवर्णित मृग - सिंहिनी का प्रेमाख्यान – पृष्ठ १३ - ५१

(१) मृगगदित सिंह - वानरसंवाद (२) काकोलूक - वार्ता, काककथित टिट्टिभ - टिट्टिभी संवाद (४) टिट्टिभकथित काक द्वारा राजा के हाथों सर्पमारण का निदर्शन (५) काककथित मगर - सियारसंवाद (६) शशक - सिंहसंवाद (७) व्याध - हंसोदाहरण (८) मृगकथित कूर्म तथा गिलहरी (टालोड़ी) का प्रणयसंवाद (९) हरिणी का हरिण तथा सिंहिनी के साथ संलाप (१०) मधु - मालतीसंवाद।

३ – मधुनिगदित करण - पद्मावतीप्रसङ्ग – पृष्ठ ५१ - ५८

(१) पद्मावती का अपनी सखी चैनरेखा के साथ वार्तालाप।

६ – मधुकथित सुदर्शन शेठ के शीलव्रत का आख्यान – पृष्ठ ५९ - ७७

(१) चम्पावतीपुरवर्णन (२) काम - लोलुप कपिला तथा सुदर्शन का संवाद (३) सुदर्शन के घर पुत्र जन्मोत्सव (४) कपिला एवं रानी का संवाद (५) शेठ को अपने कामजाल में फंसाने के निमित्त रानी एवं परता धाय का प्रपञ्च (६) रानी एवं शेठ का संवाद (७) सेठ का शूल्यारोहण एवं उस से निर्विघ्न अवतरण (८) मधु - मालती का गुरुगृह से स्वस्वावासगमन।

७ – रामसरोवरप्रसङ्ग – पृष्ठ ७७ – ८३
(१) मधु का वनोपनवभ्रमण (२) मालती का भृंगी तथा चकवी के साथ संलाप (३) चकवीकथित सिंहशिशुहतगजोदाहरण।

८ – जैतमालप्रसङ्ग – पृष्ठ ८३ –१०५
(१) जैतमाल-मालती का संलाप (२) जैतमाल के सोलह शृंगारोंका वर्णन (३) जैतमाल-मधुसंवाद (४) जैतमाल कथित भ्रमरमालत्युपत्तिवर्णनात्मक कामदहनप्रसङ्ग (भस्मासुरकथा) (५) जैत द्वारा मधु को पूर्वभवस्मारण (६) जैतकथित मालतीवपुसौन्दर्यवर्णन (७) मधु-मालतीसंलाप।

९ – मधुकथित लालनसाह की पत्नी मैना के सतीत्व का समाख्यान – पृष्ठ १०५–१२०
(१) वरनापुरीवर्णन (२) लालनसाह का परदेशगमन (३) मैना का विरह-वर्णन (४) मैना के वश्यार्थ राजकुमार द्वारा दूती रतना मालिन का समायोजन (५) दूती रतना एवं मैना का षड्तुवर्णनात्मक संवाद (६) लालनसाह का आगमन तथा उस के द्वारा दूती रतना का सापमान देशनिर्वासन, (७) जैतमाल, मालती तथा मधु का संवाद।

१० – जैतकथित उषा-अनिरुद्धकथा – पृष्ठ १२० – १२७

११ – मालतीप्रोक्त शुक-पिकी का प्रेमाख्यान – पृष्ठ १२८ – १३३

१२ – मधु-मालती का गान्धर्व विवाह – पृष्ठ १३३ – १३६
(१) राजा चंद्रसेन के समक्ष माली द्वारा मधु-मालती की विलासलीला का रहस्योद्घाटन (२) क्रुद्ध राजा द्वारा मधु-मालती के मारणार्थ सैनिकों को आदेश।

१३ – मधुकथित चंद्रकुमार एवं रूपरेखा का प्रणयाख्यान – पृष्ठ १३६ – १४२
(१) भावी युद्ध से संत्रस्त मालती के आश्वासनार्थ मधु द्वारा सञ्चालित गिलोलास्त्र का प्रभावप्रदर्शन।

१४ – मधु तथा राजा चन्द्रसेन का युद्धप्रसङ्ग – पृष्ठ १४२ – १५७
(१) मधु-सैनिकयुद्ध (२) मधु की मालती तथा जैतमाल से मंत्रणा (३) जैतमाल-मधुरचित मालतीवनविस्तार एवं भ्रमरसृजन (४) भ्रमर-सैनिकयुद्ध (५) मधु तथा राजदूत का संवाद (६) राजा चन्द्रसेन की मधु पर चढ़ाई का वर्णन,

(७) सेना के कोलाहल से उन्निद्र मालती को जैतमाल द्वारा धैर्यबन्धन एवं उसे जैतकथित यदुवंश की कथा से अपने पूर्वभव का आत्मबोध (८) मालतीकृत श्रीकृष्णस्तुति (९) मधु के सहायतार्थ प्रभुप्रेरित भारण्ड एवं सिंहादि हिंसक जन्तुओं द्वारा राजसेना का संहार।

१५ – युद्धस्थल से पलायित राजा चन्द्रसेन की स्वमंत्रियों से मंत्रणा – पृष्ठ १५८ – १६४

(१) राजा द्वारा तारणसाह की प्रधानमंत्रीपद पर पुनर्नियुक्ति (२) तारण - चन्द्रसेनसंवाद (३) तारण द्वारा स्वमंत्रबल से सिंहादि का स्तंभन (४) श्रीपार्वती माता द्वारा राजा को मधु - मालती के प्रकृतरूप का परिचयदान एवं सदुपदेश।

१६ – तारणकथित अश्वारूढ उरगाना - सर्पाख्यान – पृष्ठ १६५ – १७८

(१) अश्वबद्ध सर्प तथा वनबम्बीस्थ सर्प का संवाद (२) उरगाना - सर्पसंवाद (३) वम्बीस्थ सर्प - उरगानासंवाद (४) सर्पकथित राजा अमरदत्त का प्रसङ्ग (५) अमरदत्तमुखस्थ सर्प एवं वनस्थ सर्प का संवाद (६) उरगानागृहकलह (७) सर्पदंश से उरगानापुत्रमरण (८) उरगाना पत्नी द्वारा राजा के समक्ष उरगाना - सर्परहस्योद्घाटन (९) राजा द्वारा सर्पमारण तथा तद्वंबीस्थ धनापहरण।

१७ – राजा चन्द्रसेन एवं मंत्री तारण का संवाद – पृष्ठ १७९ – १८१

(१) युद्धविराम एवं राजा द्वारा ससम्मान समाहृत मधु-मालती का स्वस्वावासनिवर्त्तन (२) राजा चन्द्रसेन तथा रानी कनकमाल का संवाद।

१८ – चन्द्रसेनकथित श्रीराम - अञ्जनी का प्रसङ्ग – पृष्ठ १८१ – १८५

१९ – मधु - मालती का विवाहप्रसङ्ग – पृष्ठ १८५ – १९४

(१) चन्द्रसेन एवं कनकमाल रानी का वार्तालाप (२) मधु-मालती का शाही सवारी के साथ नगरपरिभ्रमण (बनोली) (३) मधु का मालती तथा जैतमाल के साथ विवाह।

२० – मधुकथित कामनिवासप्रसङ्ग – पृष्ठ १९४ – १९६

२१ – कविकुलवर्णन एवं कथोपसंहार – पृष्ठ १९६ – १९७

*

१३. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क-१२२३०

कर्त्ता–चतुर्भुजदास, लिपि समय-१८५३ विक्रम संवत्

आकार–पुस्तकाकार, (सजिल्द) माप (साइज)-१० + ७½

पृष्ठसंख्या–८८, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति २२, प्रतिपङ्क्ति अक्षर २० ।

पुस्तकदशा–साधारणतया अच्छी है, किन्तु कुछ पृष्ठ जिल्द से उखड़ चुके हैं ।

पुस्तक का प्रारम्भ

॥ ६० ॥ अथ मधु-मालतीरी वार्ता लिष्यते ॥ गाहा ॥

वर विरंचतनया वर पाउं । संकरसुत गणपति सिर नाउं ॥
चातुर हितसुं चित रींझाउं । सरस मालती-मनोहर गाउं ॥१॥

लीलावती ललित एक देश । चन्द्रसेन तिहां सुघड नरेस ॥
सुभग धाम धुज गगन प्रवेश । मांनहु मंडप रच्यो महेश ॥२॥

वसहि नगरि पुर जोजन च्यारुं । चौरासी चोहाटा चोवारुं ॥
अति विचित्र दीसें नर नारि । मांनहुं तिलक भुवन मझार ॥३॥

करे सेव नृपकुल छत्रीस । चढहि दस सहस नशयो (वायो) सीस ॥
झरहि मद कुंजर करही चीस । चन्द्रसेन राजनको ईस ॥४॥

॥ सोरठो ॥ हैदल अंत न पार, कुंजर काले मेघ ज्युं ।
कुल छत्रीस हजार, चढै दुवार नृप चंदकै ॥५॥

॥ चोपई ॥ मंत्री बुद्धि पराक्रम तांम । तारणसाह तासको नांम ।
निस दिन सांम धरमसुं कांम । नृप नहि तजै घरी पल जांम ॥६॥

नृपकै अंतेवर त्रीया च्यार । संतत एक मालती कुमार ॥
वरनुं कहा रूप अपार । मांनहु ऊरवस लीयो अवतार ॥७॥

उपमा कोन पटंतर कहूं । गुण अनेक छवि पार न लहूं ॥
दिन दिन रूप अनोपम वढै । ऐसी नारि ओर विधाता घडै ॥८॥

गज कपोत केहरि कटवाल । भृंगि मधुकर मीन मराल ॥

कदली कनक पीकसी सोई । इंद्रसभा सब फीकी होई ॥९॥

जा देषै चित चले है मुनेस । देषै धरनी डारै सेस ॥
मानुहुं छांह परीसा देश । मनसा चले किंनरनरेश ॥ १० ॥

राजलोकवरण केतीक कहुं । थोरीसी मंत्रीकी लहुं ॥
थोरै माझ बहुत रस होइ । अती अभिलावण्य जिन राच्यो कोई ॥११॥

तारणसाह सुगुण गुणसागर । त्रीया एक तसु (सुत) गुणके आगर ।
ताको नांम मनोहर धरयो । मानुंहु कामदेव अवतरयो ॥ १२ ॥

मधु मधु कही लेषा (षेला) वै तात । मांनुं चढै कला नित गात ।
घरी दिवस पष मास जे ओर । ज्यूं वसंतसी लताकोर ॥ १३ ॥

भयो बरस दस मासकै संध । देषै त्रीया होय कामंध ॥
तन मन धन वीसरे येह । भृंगी भई मानहु गति तेह ॥ १४ ॥

जित जित कुंअर करै कहुं सैल । दौनी त्रीया फिरै वहु गैल ॥
कवहु रामसरोवर जाय । भृगीजूथ मांन चहसूं आय ॥ १५ ॥

॥दोहरा॥ रांमसरोवर तालकी, सोभा वरनी न जाय ।
स्वेत अरुन पंकज तिहां, मुनिवर रहै लुभाई ॥ १६ ॥

पुस्तक के अन्त में —

॥ दोहा ॥ राजा पढै ताहि राजगति, मंत्री पढै तो बुद्ध ।
कांमी कांमविलास रस, ग्यांनी ग्यान हि सुद्ध ॥ १९ ॥
संपूरण मधु-मालती, कलस भयो संपूर ।
सुरता वकता सवनकूं, सुषदायक दुष दूर ॥ २० ॥

॥ दुहा ॥ रांम बांण नागह शशि, जेठ मास शनिवार ।
शुक्ल पक्ष तेरस दिनै, लिष्यो ग्रंथ मधुसार ॥ २१ ।.

इति श्री मधु-मालती कथा चोपई संपूरणम् ॥

टिप्पणी—प्रस्तुत पुस्तक में यद्यपि बहुत से पृष्ठ हैं, किन्तु प्रस्तुत कथाप्रबन्ध आदि के ८८ पृष्ठों में ही लिखा गया है तथा इन पृष्ठों में ही क्रमवद्ध पृष्ठाङ्क भी अङ्कित किये हुए हैं। शेष पृष्ठ बिलकुल खाली अर्थात् अलिखित हैं। किन्तु कथाभाग के आगे के अर्थात् ८९ वें पृष्ठ जिस पर कि संख्या १ अङ्कित है, पर 'कोकशास्त्र' का प्रारम्भिक कुछ अंश निम्न प्रकार लिखा हुआ है —

"॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कोकशास्त्र वारतावंध्र लिख्यते ॥ रिणथंभोर नामा परबत रिणथंभोर नगरी ॥ तठै भैरवसेन राजा राज करै छै तिणरै वडी राजधांनी ॥ भोज राजा सरीषी ॥ तिण राजारै च्यारसै वजीर ॥ तिण वजीरांरा नाम कहै छै ॥ प्रथम सुभट सोभागहंस ॥१॥ हंस ॥२॥ मदन ॥३॥ कामंतराज ॥४॥ पदमसेन ॥५॥ बाहादर सेन ॥६॥ सुरजन ॥७॥ चंद्रकांता ॥८॥ कोकदेव ॥९॥ कमललोचन ॥१०॥ दयानंदकुमार ॥११॥ मोहन ॥१२॥ इसडा ॥४००॥ वजीरांरा नाम छै तिके कह्या छै ॥ तिण राजारै भैरवसेनरे ॥७००॥ पटरांणी ॥ तिहां मांहे पटरांणीयांरा नाम कहै छै ॥ प्रथम कांमसेना ॥१॥ चंद्राऊली ॥२॥ पदमनी ॥३॥ कांमकंदला ॥४॥ चंद्रवदनी ॥५॥"

इस पृष्ठ के पूर्वोत्तर भाग में बीच का हिस्सा चित्र के लिए सुरक्षित रखा हुआ है और इसके ऊपर, नीचे के भाग में क्रमशः ४ एवं तीन पंक्तियां अङ्कित की हुई हैं, इस अंश की कुल पंक्तियों की संख्या १४ है। चौथी पंक्ति के नीचे चित्र का शीर्षक भी अङ्कित किया हुआ है जैसे – 'रिणथंभोर परवतरो भाव' 'राजा भैरवसेनरी रांणीयांरो मैहलांरो भाव छै'। इस से यह बात तो स्पष्ट है कि लिपिकार इस प्रति में 'कोकशास्त्र' को लिखना चाहता था, किन्तु वह किसी कारणवश उक्त अंश मात्र ही लिख पाया। अस्तु।

प्रस्तुत प्रति की दशा सुन्दर है और यह अच्छे ढंग से लिखी हुई है। इस के प्रत्येक पृष्ठ पर वर्त्तनी (मार्जिन) रखी हुई है और उस के बीच में प्रबन्ध लिखा गया है। प्रबन्धस्थल के आजू-बाजू में उस से सटती हुई लालस्याही की दो दो ऊर्द्ध्वरेखाएं खींची हुई हैं। प्रति के लिखने में बढ़िया काली स्याही का ही उपयोग किया गया है किन्तु प्रसङ्ग, सन्दर्भ-(दोहा चोपई आदि) सूचक शिरोलेख एवं पद्याङ्क लालस्याही से लिखे गये हैं। प्रबन्धगत प्रत्येक पद्यों के अन्त में एवं उक्त प्रसङ्गादि के दोनों ओर लालस्याही की दो दो विरामरेखाएं भी अङ्कित की हुई हैं। प्रति की लिपि अपेक्षाकृत शुद्ध तथा इस के अक्षर स्थूल, सुन्दर एवं सुस्पष्ट हैं।

इस पुस्तक में लिखित मधुमालती-कथा से सम्बन्धित ८८ पृष्ठों में १३५ चित्र समुपलब्ध हैं। इन पृष्ठों के जिस स्थल में चित्र अङ्कित किये गये हैं, वह स्थल यथोचित नानाविध रंग से अभिलिप्त किया गया है तथा उसके चारों ओर सूक्ष्म रेखाएं खींच कर आधा इञ्च परिमाण का बोर्डर (परिधि) बनाया गया है, इससे चित्रों की छटा और भी खिल उठी है। चित्रकार ने चित्रों के चित्रण में समयानुकूल फबते हुए उत्तम रंगो का प्रयोग कर, उनमें उत्कृष्ट लावण्य, सुन्दर वेषाभूषा का आकलन एवं प्रासङ्गिक

भावभङ्गिमा का अभिव्यञ्जन करने में उत्कृष्ट बीकानेरी शैली का आश्रय लेकर, अपनी विशिष्ट कलानैपुण्य एवं सधे हुए अपने हस्तकौशल का पूर्ण परिचय दिया है। यही कारण है कि प्रतिगत सभी चित्र अति सुन्दर, चित्ताकर्षक एवं नयनाभिराम तो हैं ही, साथ में उक्त उत्कृष्ट शैली के भी प्रतीकस्वरूप भी हैं। चित्राकृतियों के विशिष्ट सौन्दर्य, तद्गत हाव-भावादि की कल्पना तथा प्राकृतिक दृश्यावली की छटा को देखने पर ऐसा आभास होता है कि कलाओं में चित्रकला भी एक ऐसी कला है जो कि मानव के अन्तस्तल को हठात् अपनी ओर आकृष्ट करने तथा उसे आनन्द विभोर बनानेमें वस्तुतः क्षमता रखती है। चित्रों का शीर्षकात्मक विवरण निम्न प्रकार प्रस्तुत है—

चित्रसूची—

पृष्ठ १ — चित्र संख्या १ परिमाण — ५ + ५'३ पोइन्ट
शीर्षक — **सरस्वतिचित्र, गणपतिचित्र, महादेवचित्र, ब्रह्माचित्र, विष्णुचित्र।**

पृष्ठ १ — चित्र सं० २ परिमाण — ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक — **नगरवरणन राजा चंद्रसेन को सरूप मालती।**

पृष्ठ १ — चित्र सं० ३ परिमाण — ३ + ५'३ पो.
शीर्षक — **प्रधान का घर प्रधान सरूप।**

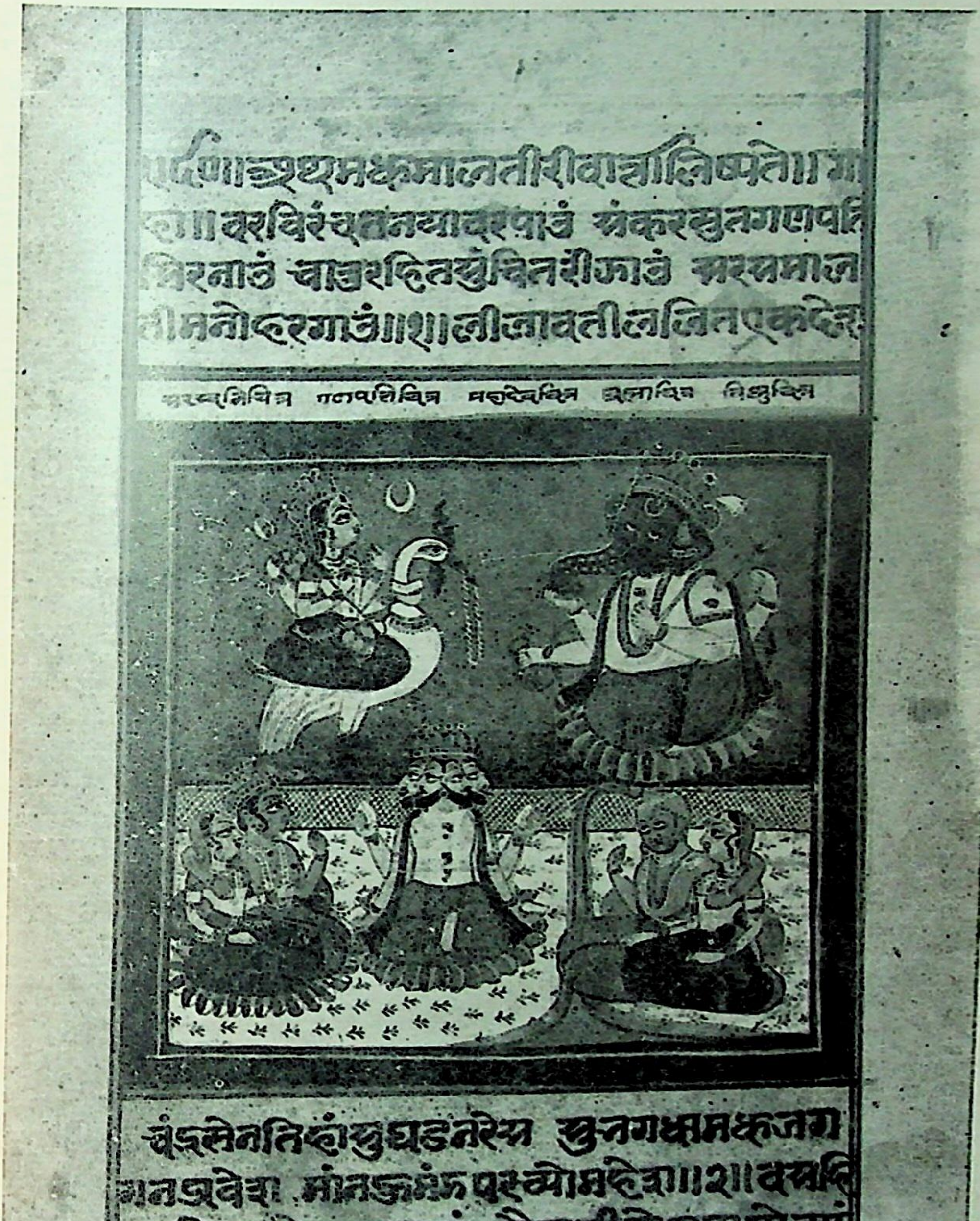
पृष्ठ २ — चित्र सं० ४ परिमाण — ३ + ५'३ पो.
शीर्षक — **तारणसाह को बेटो मधु का सरूप।**

पृष्ठ २ — चित्र सं० ५ परिमाण — ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक — **रामसरोवरमांहै कमल पणिहारी पाणी भरै मधु उभो छै।**

पृष्ठ ३ — चित्र सं० ६ परिमाण — ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक — **तारणसाह वेटानें कहैं।**

पृष्ठ ३ — चित्र सं० ७ परिमाण — ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक — **तारणसाह नंद मोहितनें बुलायो हाथ माहैं पोथी।**

पृष्ठ ४ — चित्र सं० ८ परिमाण — २½'४ + ५'३ पो.
शीर्षक — **मधु विद्या भणै छै।**



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–१; सूचीपत्राङ्क–१९८

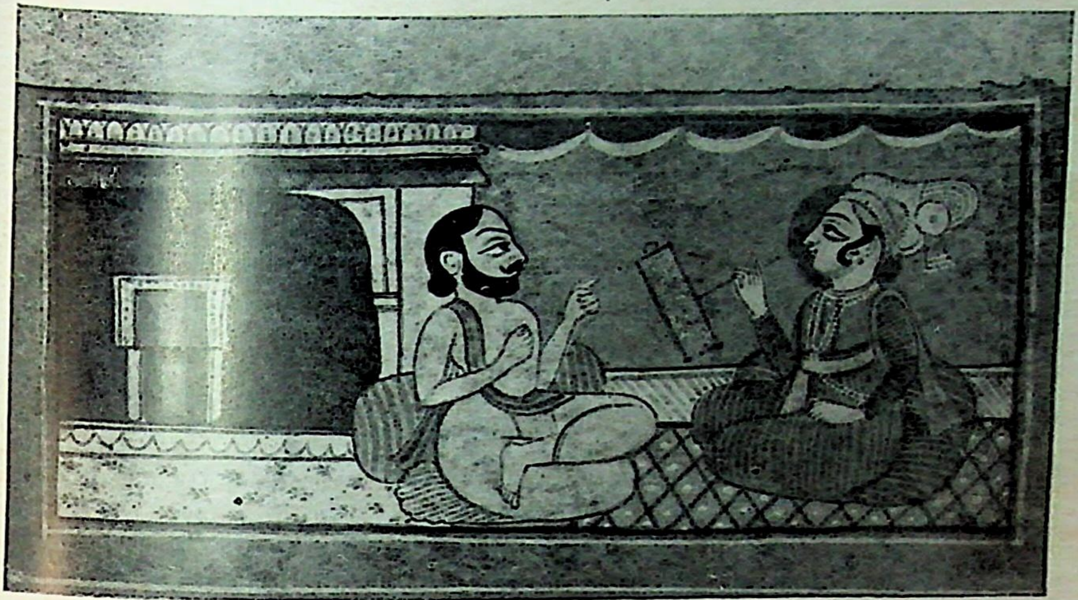
सरस्वती, गणपति, सश्रीक विष्णु, ब्रह्मा एवं उमासहित शङ्कर।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–४; सूचीपत्राङ्क–१६८
तारणसाहको वेटो मधुका सरूप।

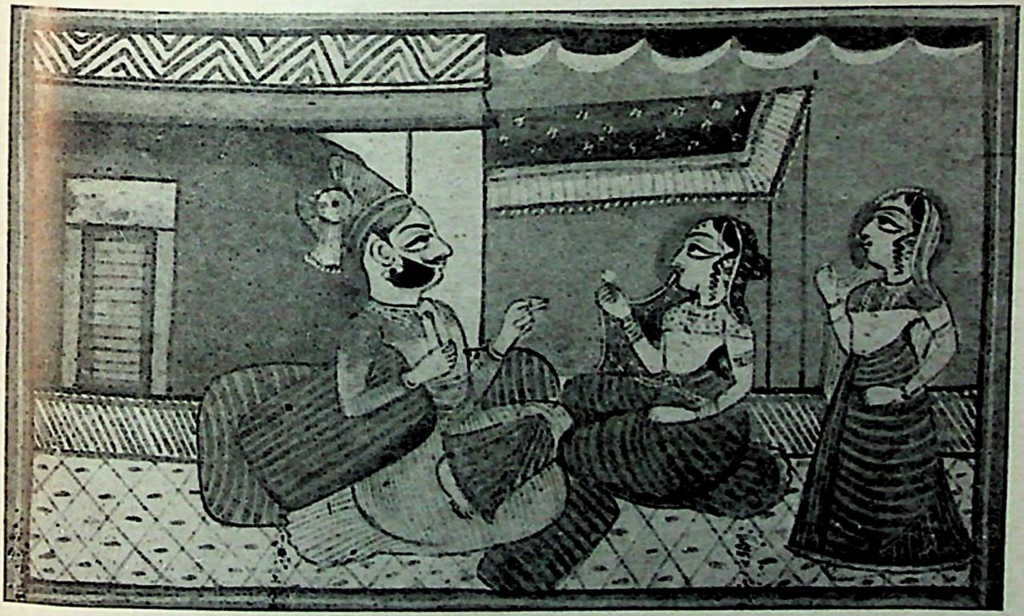


प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–७; सूचीपत्राङ्क–१६८
तारणसाह नंद प्रोहितनें बुलायो हाथमाहें पोथी



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–८; सूत्रीपत्राङ्क–१९८

मधु विद्या भणें छै ।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–१०; सूचीपत्राङ्क–१९९

राजा कनकमालतीनें पूछै, मालती ऊभी छै ।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–११; सूचीपत्राङ्क–१९९
राजा चंद्रसेन मालतीनें पूछै है।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–१२; सूचीपत्राङ्क–१९९
मालती भणवा बैठी पंडित भणावै छै हाथमैं पाटी छै परंचकें ग्रांतरै मधु छै।



प्रतिक्रमाङ्क-१२२३०; चित्रसंख्या १३; सूचीपत्राङ्क-१९९
मालती परेच फाड मधुनै देख फूल गेंदरी मारी ।



प्रतिक्रमाङ्क-१२२३०; चित्रसंख्या-१९; सूचीपत्राङ्क-१९९
सब पंछी मिल घूहरनें राज देवा लागा जितरें एक काग आयो ।

पृष्ठ ४ – चित्र संख्या ९ परिमाण – २'३ + ५'३ पोइन्ट
शीर्षक – राजा प्रधाननें पूछ्यो ।

पृष्ठ ४ – चित्र सं० १० परिमाण – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – राजा कनकमालतीनें पूछै मालती ऊभी छै ।

पृष्ठ ५ – चित्र सं० ११ परिमाण – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – राजा चंद्रसेन मालतीनें पूछे है ।

पृष्ठ ५ – चित्र सं० १२ परिमाण – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – मालती भणवा बैठी पंडित भणावै छै हाथमें पाटी छै परेचकें आंतरै मधु छै ।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० १३ परिमाण – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – मालती परेच फाड मधुनें देष फुल गेंदरी मारी ।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० १४ परिमाग – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – मालती फेर मधुकें गेंदकी मारी ।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० १५ परिमाग – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – सुवो सैवर उपर बेंठो देह पिंजरा सम थई ।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० १६ परिमाग – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – मृग सिंघणीको चित्र मृग भागो सिंघणी आडी आई ।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० १७ परिमाण – ३½'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – मृग सिंघनीसु कहै हुं तो ताहरुं चार छुं ।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० १८ परिमाण – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – घुघु कागक सम्यो ।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १९ परिमाण – ३½'४ + ५'३ पो.
शीर्षक – सब पंछी मिल घुहरनें राज देवा लागा जितरें एक काग आयो ।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० २० परिमाण – ३'१ + ५'३ पो.
शीर्षक – सायरमै टींटोडी इंडा मेल्या तिकणरो चित्र ।

पृष्ठ १० – चित्र सं० २१ परिमाण – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – समुद्र इंडानें लेगयो तद टींटोरासुं कहै ।

पृष्ठ १० – चित्र संख्या २२ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – टींटोरी टींटोरानें कहै माहरा इंडा दिवावो नही तो प्रांण त्यागुं ।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० २३ परिमाण – ४½ + ५'३ पो.
शीर्षक – वायस इंडा वृक्ष ऊपरै मेल्या सर्प आवी भष्यण करया ।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० २४ परिमाण – ३'४ + ५'३ पो.
शीर्षक – टिंटोरो गुरड पास गयो गुरड आयो ।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० २५ परिमाण – ४ + ५'३ पो.
शीर्षक – सब पंछी मिल समुद्र भरवा लागा सायर बांभणरो रूप करि आयो हार दीधो इंडा दीधा ।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० २६ परिमाण – ४'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – घुहर अपनों परिवार बुलायो मतो करवा लागा ।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० २७ परिमाण – ४'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – काग घुहररै राड हुइ हजार च्यार काग मारे घुहर जीते ।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० २८ परिमाण – ४½'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – काग भेला हुयनें मतो कीनो ।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० २९ परिमाण – ४½'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – काग घुहर पास मिलवा आया माहोमांहें मिल्या ।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० ३० परिमाण – ४'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – काग गुफा मुंदै घुहरनें वाल्या रो सम्यो ।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० ३१ परिमाण – ४'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – सिंघन मृग सुं कहै ।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० ३२ परिमाण – ४'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – मृग सिंघन पास आयो विसवास कीधो ।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० ३३ परिमाण – ४'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – मृग सिंघनसुं भोग करै ।



प्रतिक्रमाङ्क-१२२३०; चित्रसंख्या-४२; सूचीपत्राङ्क-२०१
नृपतकुमररो चित्र पिलंग ऊपर बैठो थको हेठै स्त्रीयां बैठी थकी इमो सम्यो ।



प्रतिक्रमाङ्क-१२२३०; चित्रसंख्या-४४; सूचीपत्राङ्क-२०१
राजा सूरसेन राजलोकमें आयो सगलो परवार मुहडा आगै ऊभो इसो चित्र ।

पृष्ठ १६ – चित्र संख्या ३४ परिमाण – ४'२ + ५'३ पोइन्ट
शीर्षक – वनमैं सिंघन मृग फिरता फिरै ।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० ३५ परिमाण – ४ + ५'३ पो.
शीर्षक – एक अपूर्व सिंह आयो सीहनी सीह ।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० ३६ परिमाण – ४'४ + ५'३ पो.
शीर्षक – सिंह मृगनें मारयो ।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० ३७ परिमाण – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – मालती कहै युं नही मारयो ।

पृष्ठ १८ – चित्र सं० ३८ परिमाण – ५ + ५'३ पो.
शीर्षक – सिंह आयो जद मृगनें दुरो कीधो सिंह सिंहणी नदी तठै आया जद मृगनै दूरो वैठो दीठो ।

पृष्ठ १८ – चित्र सं० ३९ परिमाण – ४½ + ५'३ पो.
शीर्षक – सिंह मृग ऊपरें दोडे सिहन मृग ऊपरा जाय पडी सीग फूट पार नीकल्या ।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० ४० परिमाण – ४½ + ५'३ पो.
शीर्षक – सिंह मृगनें मारयो ।

पृष्ठ १९ – चित्र सं० ४१ परिमाण – ४½ + ५'३ पो.
शीर्षक – मालती मधुनें कहे ।

पृष्ठ २० – चित्र सं० ४२ परिमाण – ५½ + ५'३ पो.
शीर्षक – नृपतकुमररो चित्र पिलंग ऊपर वैठो थको हेठै स्त्रीयां वैठी थकी इसो सम्यो ।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० ४३ परिमाण – ४ '३ + ५'३ पो.
शीर्षक – पद्मावती राजा सूरसेन पासे सषी मेली राजासुं सषी जवाव करै इसो चित्र करणो ।

पृष्ठ २२ – चित्र सं० ४४ परिमाण – ५½'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – राजा सूरसेन राज लोक में आयो सगलो परवार मुंहडा आगै ऊभो इसो चित्र ।

पृष्ठ २३ – चित्र सं० ४५ परिमाण – ६'३ + ५'३ पो.
शीर्षक – राजा करणकी जांन (बरात) आइ इसो सम्यो ।

पृष्ठ २३ — चित्र संख्या ४६ परिमाण — ६ + ५'३ पोइन्ट
शीर्षक — परणवाको सम्यो चवरी मंडप चित्र ।

पृष्ठ २४ — चित्र सं० ४७ परिमाण — ५½'३ + ५½
शीर्षक — महिलमांहें पदमावती सेझ रचे नै पास वैठी छें सेझ ऊपर करण राजा बैठो छै । चेनरेषा किमाड वार उभी तमासो देषे छै ।

पृष्ठ २४ — चित्र सं० ४८ परिमाण — ५'३ + ५'४ पो.
शीर्षक — चेनरेषा सषी पदमावतीसुं कहै छै ।

पृष्ठ २५ — चित्र सं० ४९ परिमाण — ५½ + ५½
शीर्षक — पदमावती ऊपरें चैनरेषा पिचकारी छोडी पदमावती चमक नें करन राजा ऊपर जाय पडी ।

पृष्ठ २६ — चित्र सं० ५० परिमाण — ५'२ + ५'४ पो.
शीर्षक — मधुमालती माहोमाहें वातां करै छै ।

पृष्ठ २७ — चित्र सं० ५१ परिमाण — ५ + ५½
शीर्षक — अठे मधु रांमसरोवर वैठो पणहारींयां पांणी भरै ।

पृष्ठ २७ — चित्र सं० ५२ परिमाण — ५ + ५½
शीर्षक — अठे मधु रांमसरोवरथी घरां जावै छै ।

पृष्ठ २८ — चित्र सं० ५३ परिमाण — ५ + ५½
शीर्षक — अथ मालती दुतीनै कहै सरोवररो भाव छै ।

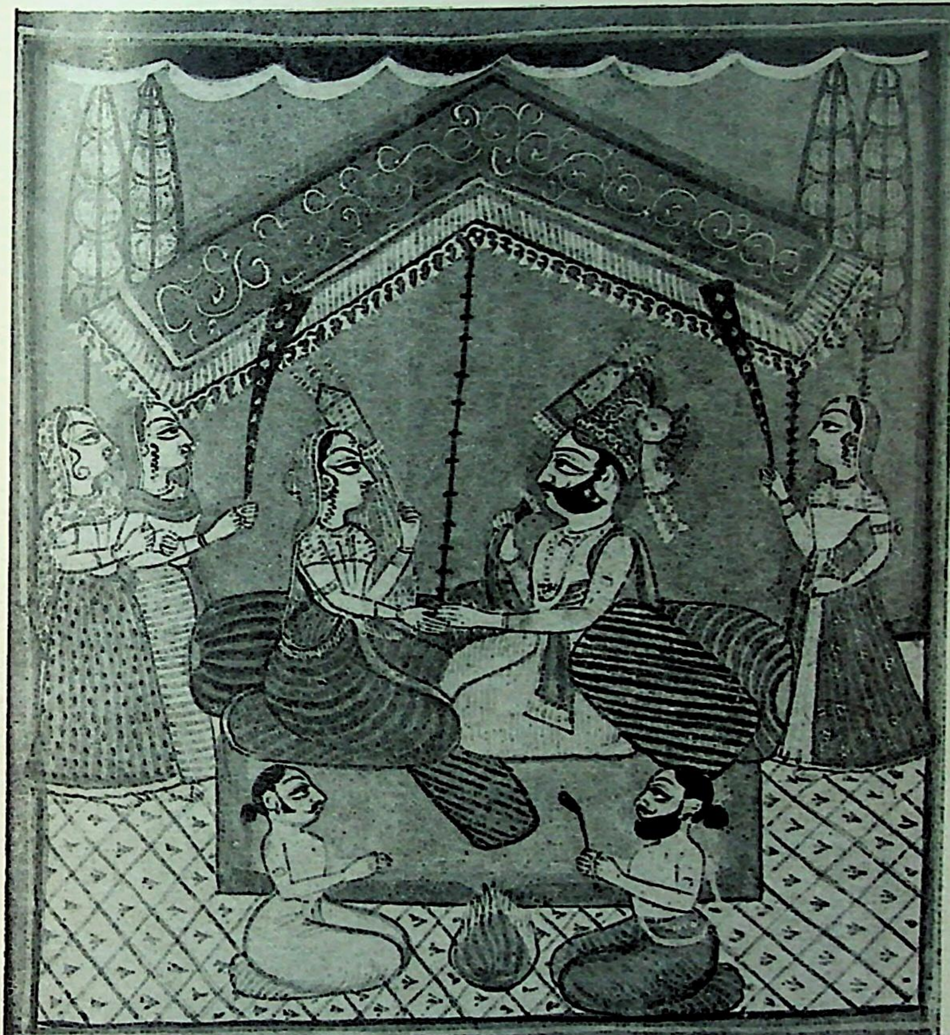
पृष्ठ २८ — चित्र सं० ५४ परिमाण — ५ + ५½
शीर्षक — अथ मालती दासीनै कहै प्रियविजोग ।

पृष्ठ २९ — चित्र सं० ५५ परिमाण — ४½'१ + ५'४ पो.
शीर्षक — अथ मालती बैठी सरोवर देष्यै छै पंछीयांनै कहै छै ।

पृष्ठ ३० — चित्र सं० ५६ परिमाण — ४½'४ + ५½
शीर्षक — अथ मालती चकवीनै कहै चकवा चकवी विजोग ।

पृष्ठ ३० — चित्र सं० ५७ परिमाण — ४½'४ + ५'४ पो.
शीर्षक — अथ चकवा चकवी मिलापनिको भाव छै ।

पृष्ठ ३१ — चित्र सं० ५८ परिमाण — ४½'३ + ५½
शीर्षक — मालती जैतमालती उभी वात करै छै ।



ाङ्क-१२२३०; चित्रसंख्या–४६; सूचीपत्राङ्क–२०२

परणावाको सम्यो चवरी-मंडप-चित्र ।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या ४९; सूचीपत्राङ्क–२०२
पदमावती ऊपरें चंनरेखा पिचकारी छोडी पदमावती चमकनै करन राजा ऊपर जाय पड़ी ।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–६०; सूचीपत्राङ्क–२०३

जेतमालसूं मालती पागें लागी तिणरो भाव ।

पृष्ठ ३२ – चित्र संख्या ५९ परिमाण – ५ + ५½
शीर्षक – जेतमाल नें मालती वात करे सो भाव ।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ६० परिमाण – ४½'२ + ५'३ पो.
शीर्षक – जेतमालसुं मालती पागें लागी तिणरो भाव ।

पृष्ठ ३४ – चित्र सं० ६१ परिमाण – ४½'२ + ५½
शीर्षक – जेतमालसुं मालती मिलै तिणरो भाव छै ।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ६२ परिमाण – ४½ + ५½
शीर्षक – रांमसरोवरमें जेतमाल मधू मालती वातां करे सो भाव ।

पृष्ठ ३५ – चित्र सं० ६३ परिमाण – ४'४ + ५½
शीर्षक – मधू मालती रांमसरोवरमे भवरारो प्रसंग कहे सो भाव ।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ६४ परिमाण – ४½'४ + ५'४ पो.
शीर्षक – सीव कांम वालै पारवती नषसुं भरै ।

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ६५ परिमाण – ४½'४ + ५½
शीर्षक – मालतीरो रूंष फूल्यो भमरानै देष्यो नही ॥

पृष्ठ ३७ – चित्र सं० ६६ परिमाण – ४½ + ५½
शीर्षक – मालतीरो रूंष लुगाई हुवै रातै भवरो मरद हुवै रातै ।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० ६७ परिमाण – ४½'२ + ५½
शीर्षक – सेवंती मालतीरा समाचार सव भवरानै कहै छै ।

पृष्ठ ३८ – चित्र सं० ६८ परिमाण – ४½'४ + ५½
शीर्षक – सेवंती भवरानै उलंभो देवै छै ।

पृष्ठ ३९ – चित्र सं० ६९ परिमाण – ३½ + ५'३ पो.
शीर्षक – मधु मालती वातां करै सुं भाव ।

पृष्ठ ४० – चित्र सं० ७० परिमाण – ३½'३ + ५'४ पो.
शीर्षक – अठे राजा चंद्रसेण प्रधानसुं वात करै ॥

पृष्ठ ४० – चित्र सं० ७१ परिमाण – ३'४ + ५'४ पो.
शीर्षक – मालतीरां रूंषनै भवरो उलंभो देवै छै ।

पृष्ठ ४१ – चित्र सं० ७२ परिमाण – ४½'२ + ५'४ पो.
शीर्षक – भमरो मालतीरा रूंषनै कहै छै ।

पृष्ठ ४२ – चित्र संख्या ७३ परिमाण – ४'२ + ५'३ पोइन्ट
शीर्षक – मधु मालती वातां करै सुं भाव।

पृष्ठ ४३ – चित्र सं० ७४ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – मधु मालतीरो रूप वर्णवै सुं भाव।

पृष्ठ ४५ – चित्र सं० ७५ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – मधु मालती जैतमालती वातां करै छै।

पृष्ठ ४५ – चित्र सं० ७६ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – मालती मधुसुं कहै छै।

पृष्ठ ४६ – चित्र सं० ७७ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – जेतमाल मालती उभी मधु वात कहै सुं भाव।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ७८ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – मधु मालती छांनें पांणीग्रहण कीधो तिणरो भाव।

पृष्ठ ४७ – चित्र सं० ७९ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – मधू मालती जेतमालती बेठा वात करे सो भाव।

पृष्ठ ४८ – चित्र सं० ८० परिमाण – ५ + ५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण बैठो छै दासी मेल नें पवर करावै छै तिणरो भाव।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ८१ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – मधू मालती वागांमे वात करे सो भाव।

पृष्ठ ५० – चित्र सं० ८२ परिमाण – ५ + ५
शीर्षक – चंदकवर रूपरेपा आसण रच्यो नाहर आयो तीर से मारयो।

पृष्ठ ५० – चित्र सं० ८३ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – सिव पारवती विराज्या मालती जप करै सुं भाव।

पृष्ठ ५१ – चित्र सं० ८४ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – मधु मालतीसुं पराक्रमरी वातां करै।

पृष्ठ ५१ – चित्र सं० ८५ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – अठे मधु मालतीनें पराक्रम देषावै छै।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–८६; सूचीपत्राङ्क–२०५

जेत मालती बैठी छै मधु राजारा सुभटांसु लड़े छै तिणरो भाव छै।

पृष्ठ ५२ – चित्र संख्या ८६ परिमाण – ५+५
शीर्षक – जैतमालती वैठी छै मधु राजारा सुभटांसु लडे छै तिणरो भाव छै।

पृष्ठ ५२ – चित्र सं० ८७ परिमाण – ५+५
शीर्षक – मालती वैठी छै मधु राजारी फोजसुं कजीयो करै छै तिणरो भाव।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० ८८ परिमाण – ५+५
शीर्षक – जेतमालती वेठी छै मधु भमर अनें त्रिशूल राजारी फोजसुं [लडे छै]

पृष्ठ ५४ – चित्र सं० ८९ परिमाण – ४½+५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण आगें घायल आंण पुकार घाले छै।

पृष्ठ ५४ – चित्र सं० ९० परिमाण – ४½+५
शीर्षक – मधू जेतमालती वेठी सो भाव।

पृष्ठ ५५ – चित्र सं० ९१ परिमाण – ५+५
शीर्षक – मधु मालती वैठा छै भमर राजारी फोजसु कजीयो करै छै।

पृष्ठ ५६ – चित्र सं० ९२ परिमाण – ५½+५
शीर्षक – अथ मालती वैठी छै मधु राजारी फोजसु जुध करै छै तिणरो भाव छै।

पृष्ठ ५६ – चित्र सं० ९३ परिमाण – ४½+५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण आगे दूत आय ने पुकारै छै तिणरो भाव छै।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० ९४ परिमाण – ५+५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण नगारो दे नें चढै छै तिणरो भाव छै।

पृष्ठ ५७ – चित्र सं० ९५ परिमाण – ४½+५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण अने प्रधान माहोमांहें सला विचारै छै।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० ९६ परिमाण – ५+५
शीर्षक – राजा दूत बुलायनै दूतां नै कहै छै।

पृष्ठ ५९ – चित्र संख्या ९७ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – चंद्रसेण राजा राड करण चढै सु भाव।

पृष्ठ ६० – चित्र सं० ९८ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – जैतमाल नें मालती बैठी मधु राडनें चढै सो भाव।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० ९९ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – राजारो वन हाथी काटै मधु लडे सो भाव।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० १०० परिमाण – ७ + ५
शीर्षक – राजारी फोजसुं मधु लडे छै।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० १०१ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – मधु भारंड अने नाहर आगें राजाजीरी फोज भागी तिणरो भाव छै।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० १०२ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण हाथी उपर बैठो मंत्रीश्वरनें पूछै तिणरो भाव।

पृष्ठ ६४ – चित्र सं० १०३ परिमाण – ४ + ५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण मंत्रीसुं वात करै सु भाव।

पृष्ठ ६५ – चित्र सं० १०४ परिमाण – ४'५ + ५'२ पो.
शीर्षक – राजा चंद्रसेण मत्रीसुं वात करै सु भाव।

पृष्ठ ६५ – चित्र सं० १०५ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण तारण मंत्रीनें समंचार बुजै सु भाव।

पृष्ठ ६६ – चित्र सं० १०६ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – तारणसाह मधु वात करे फोज चढी उभी सु भाव।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० १०७ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – राजा चंद्रसेणने माताजी मिलीया सो भाव।

पृष्ठ ६८ – चित्र सं० १०८ परिमाण – ४½ + ५
शीर्षक – तारणसाह ने माताजी दरसण दीयो सो भाव।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० १०९ परिमाण – ५ + ५
शीर्षक – उलगांनो घोडें चढीयो सहरमाहेसुं नीकले छै।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–६६; सूचीपत्राङ्क–२०६

राजारो वन हाथी काटै मधु लडै सो भाव ।

पृष्ठ ७० – चित्र संख्या ११० परिमाण – ४½+५
शीर्षक – उलगांणारे घोडारे सांप बंध्यो बंबीरा सापसु वात कहै।

पृष्ठ ७१ – चित्र सं० १११ परिमाण – ४½+५
शीर्षक – उलगांनारो बेटो सापनें दूध पावै छै।

पृष्ठ ७१ – चित्र सं० ११२ परिमाण –.४+५
शीर्षक – उलगांनो सांपसु वात करै छै।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० ११३ परिमाण – ४+५
शीर्षक – उरगानो सरपनै दुध पावै छै।

पृष्ठ ७२ – चित्र सं० ११४ परिमाण – ४½+५
शीर्षक – उरगांनारी लुगाई उरगानानै पूछै छै।

पृष्ठ ७३ – चित्र सं० ११५ परिमाण – ५+५
शीर्षक – उलगाणो बेटानें ले नें सापनें दूध पावणनें आयो सो भाव।

पृष्ठ ७४ – चित्र सं० ११६ परिमाण – ५+५
शीर्षक – अठे उलगांणांरा बैटानें सांप षाधो सु भाव।

पृष्ठ ७५ – चित्र सं० ११७ परिमाण – ५+५
शीर्षक – उलगांनो बेटांने साप कने लायो तिणरो भाव।

पृष्ठ ७५ – चित्र सं० ११८ परिमाण – ५+५
शीर्षक – उलगांनारा बेटानें सांप षाधारा समाचार लुगांईने कहै।

पृष्ठ ७६ – चित्र सं० ११९ परिमाण – ५+५
शीर्षक – चंद्रसेण (अमरसेन) राजा उलगांनानें वात पूछै छै।

पृष्ठ ७६ – चित्र सं० १२० परिमाण – ५+५
शीर्षक – चाकर सापरी बंबी षोधे छै तिणरो भाव छै।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० १२१ परिमाण – ५+५
शीर्षक – राजा चंद्रसेण(अमरसेन) सापरो धन मंगायो सो भाव।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० १२२ परिमाण – ४½+५
शीर्षक – मधू मालती लग्न देषावे सो भाव।

पृष्ठ ७८ – चित्र संख्या १२३ परिमाण – ४½+५
शीर्षक– राजा चंद्रसेण दासीनें वात कहै सु भावः।

पृष्ठ ७९ – चित्र सं० १२४ परिमाण – ५½+५
शीर्षक– अंजनी बेठी रांम लिछमण सिता हडूंमांन वात करे सो भाव।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० १२५ परिमाण – ५+५
शीर्षक– अंजनी हनुंमांनजीसुं वात कहै सुं भाव।

पृष्ठ ८१ – चित्र सं० १२६ परिमाण – ५+५
शीर्षक– राजा चंद्रसेण रांणीनें समंचार कहै छै।

पृष्ठ ८२ – चित्र सं० १२७ परिमाण – ५+५
शीर्षक– राजा चंद्रसैण मंत्रीनें बुजै सुं भावः ॥

पृष्ठ ८३ – चित्र सं० १२८ परिमाण – ५+५
शीर्षक– मधू मालतीरो वनोलो नीकले सो भावः।

पृष्ठ ८३ – चित्र सं० १२९ परिमाण – ५+५
शीर्षक– मधु राजा चंद्रसेणरी बेटी परण्यो सो भाव।

पृष्ठ ८४ – चित्र सं० १३० परिमाण – ४½+५
शीर्षक– मधु मालती नें परणीजनें नेरे (डेरे) आवै सु भाव।

पृष्ठ ८५ – चित्र सं० १३१ परिमाण – ४½+५
शीर्षक– मधु मालती जैतमाल सुष विलास करै सु भाव।

पृष्ठ ८६ – चित्र सं० १३२ परिमाण – ५+५
शीर्षक– राजा चंद्रसेण मधुसुं वात कहै सुं भाव।

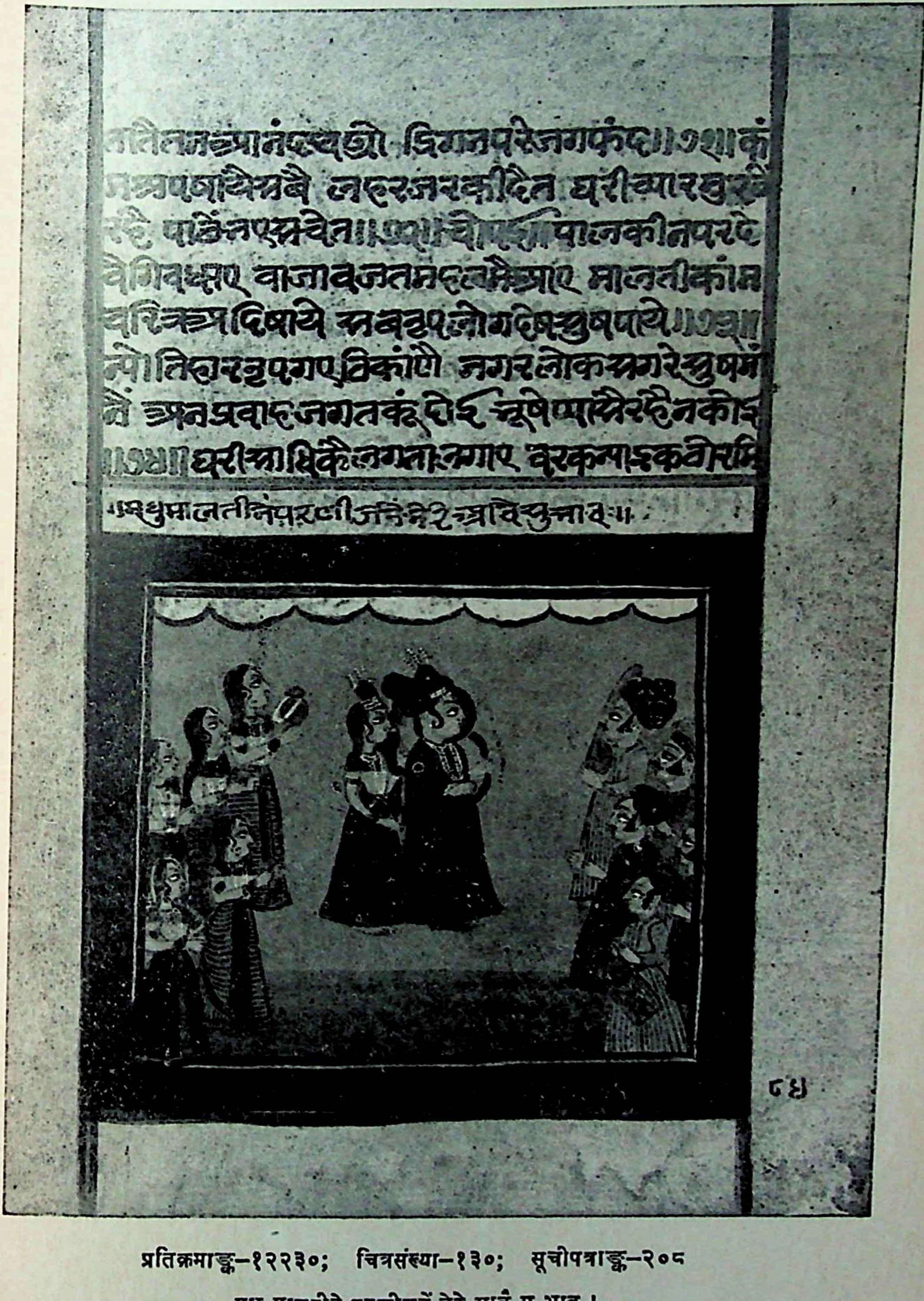
पृष्ठ ८६ – चित्र सं० १३३ परिमाण – ४½+५
शीर्षक– राजा चंद्रसेण मधुनें बुलाय नें कामरी परिष्या पुछै सु भाव।

पृष्ठ ८७ – चित्र सं० १३४ परिमाण – ४½+५
शीर्षक– राजा चन्द्रसेणनें मधु कलसमें चंद्रमा देषे सुं भाव।

पृष्ठ ८८ – चित्र सं० १३५ परिमाण – ४½+५
शीर्षक– माता सरसती वैठी कवि चतुर्भुज उभो हाथ जोडयां।

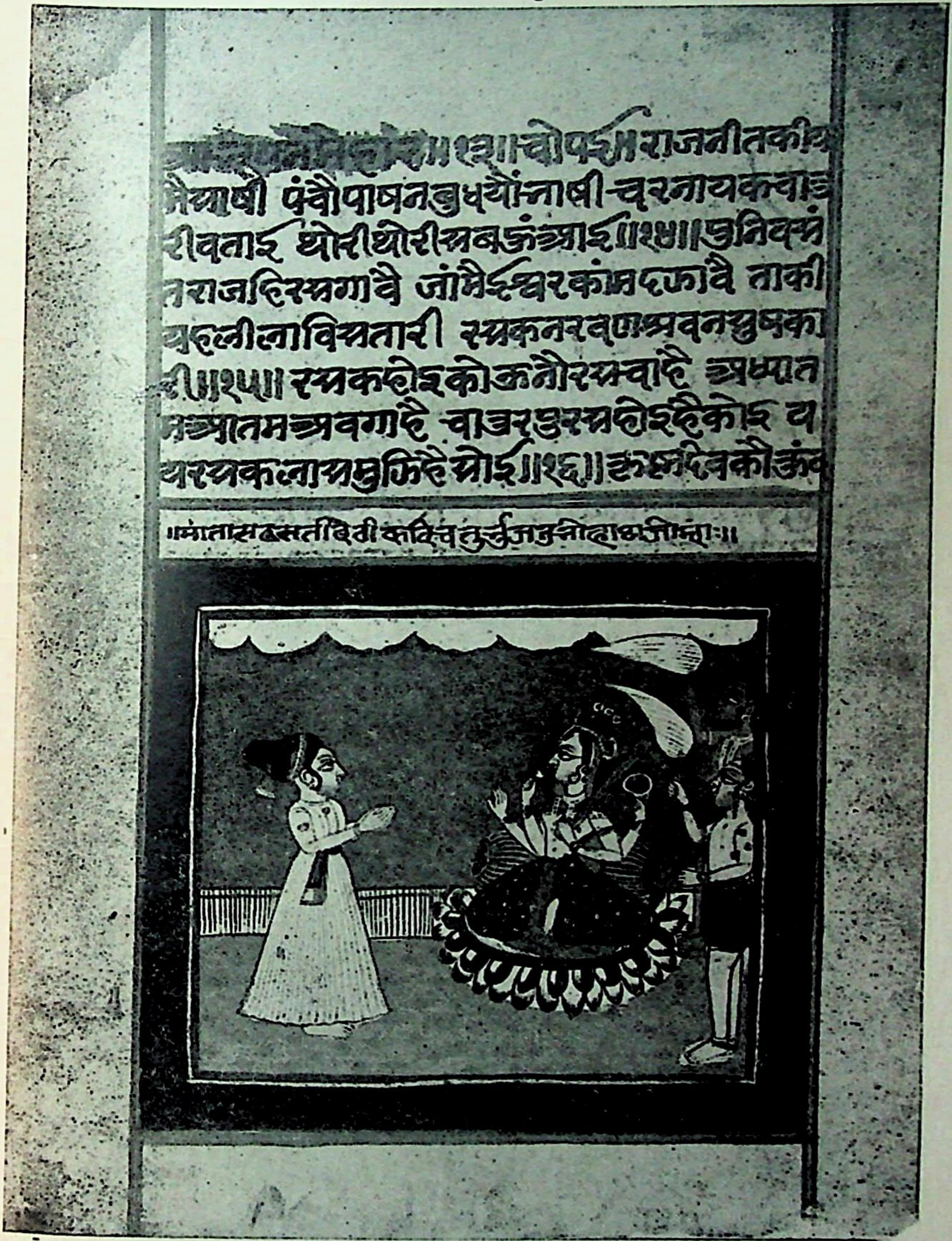


प्रतिक्रमाङ्क-१२२३०; चित्रसंख्या-१२९; सूचीपत्राङ्क-२०८
मधु राजा चंद्रसेणरी बेटी परण्यो सो भाव।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०;   चित्रसंख्या–१३०;   सूचीपत्राङ्क–२०८

मधु मालतीने परणीजनें डेरे आवै सु भाव ।



प्रतिक्रमाङ्क–१२२३०; चित्रसंख्या–१३५; सूचीपत्राङ्क–२०८

माता सरसती बेठी कवि चतुर्भुज उभो हाथ जोडयां।

प्रसङ्गसूची—

१ — राजलोकवर्णनप्रसङ्ग— पृष्ठ १ - ३
(१) मधु-मालती का परिचय (२) रामसरोवरशोभावर्णन।

२ — मधु-मालती का गुरुगृह में विद्याभ्यसन— पृष्ठ ४ - ७
(१) मालती का मधु के प्रति स्वप्रेमनिदर्शन (२) मधूक्त-शुकोदाहरण।

३ — मधुकथित मृग-सिंहिनी का प्रेमाख्यान— पृष्ठ ८ - १९
(१) काकोलूक-वार्ता (२) टिट्टिभ-टिट्टिभीसंवाद।

४ — मालतीकथित करण-पद्मावतीप्रसङ्ग— पृष्ठ २० - २६
(१) पद्मावती तथा उस की सखी चैनरेखा का संवाद, (२) मधु-मालती का गुरुगृह से स्वस्वगृहागमन।

५ — रामसरोवरप्रसङ्ग— पृष्ठ २७ - ३१
(१) मधु का वनोपवनभ्रमण (२) मालती का भृंगी-चकवी के साथ संवाद (३) चकवीकथित सिंहसुतहतगजोदाहरण।

६ — जैतमालप्रसङ्ग— पृष्ठ ३२ - ४८
(१) मालती-जैतमालती का संवाद (२) जैतमालती के सोलह श्रृंगारो का वर्णन (३) मधु-जैतमाल का संलाप (४) जैतकथित कामदहनप्रसङ्ग (भ्रमरमालव्युत्पत्ति) (५) मालती के वपुसौन्दर्य का वर्णन (६) मधु-मालती तथा जैतमालती का संवाद (७) मधु-मालती का गान्धर्व विवाह।

७ — मधुगदित चंद्रकुमार एवं रूपरेखा का प्रणयाख्यान— पृष्ठ ४८ - ५०
(१) भावी युद्ध से त्रस्त मालती को मधुप्रदत्त आश्वासन।

८ — युद्धप्रसङ्ग— पृष्ठ ५१ - ६३
(१) मधु का राजसेना से युद्ध (२) मधु-जैतकृत मालती वनविस्तार एवं भ्रमरोत्पादन (३) भ्रमर-सैनिकयुद्ध (४) युद्धोद्यत-सेनावर्णन (५) मधु-राजदूत का संवाद (६) मधु का सदलबल समागत राजा चन्द्रसेन से युद्ध (७) उन्निद्र मालती को जैतकथित यदुवंशकथा से आत्मबोध।

(८) मालतीकृत श्रीकृष्णस्तुति (९) प्रभुप्रेरित भारण्ड तथा सिंहादि द्वारा राजसेना का संहार ।

९ – युद्ध से पलायित राजा की स्वमंत्रियों से मंत्रणा– पृष्ठ ६४ – ६७

(१) राजा द्वारा मंत्रिप्रस्तावित मंत्री तारणसाह का आह्वान (२) तारण एवं राजा का संवाद (३) तारणकृत सिंहादि-स्तंभन (४) राजा चन्द्रसेन को श्रीगौरी माता द्वारा मधु-मालती के प्रकृतरूप का परिचयदान एवं सदुपदेश ।

१० – तारणकथित उरगाना - सर्प का आख्यान– पृष्ठ ६८ – ७६

(१) अश्वबद्ध सर्प एवं वनवम्बीस्थ सर्प का संवाद (२) बम्बीस्थसर्प - उरगानासंवाद (३) उरगाना का गृहकलह (४) सर्पदंश से उरगाना के पुत्र का मरण (५) राजा अमरसेन के सम्मुख उरगाना की स्त्री द्वारा अपने पति तथा सर्प का रहस्योद्घाटन (६) राजा द्वारा सर्पमारण तथा तद्‌वंबीस्थ-धनापहरण (७) मधु - मालती का ससम्मान स्वस्वगृहागमन।

११ – राजा चन्द्रसेन तथा रानी कनकमाल का संवाद– पृष्ठ ७७ – ७८

१२ – चन्द्रसेनकथित श्रीराम - अञ्जनी का आख्यान– पृष्ठ ७९ – ८२

(१) राजा एवं रानी का संवाद ।

१३ – मधु-मालती का विवाहप्रसङ्ग– पृष्ठ ८२ – ८६

मधुकुमार एवं राजा चन्द्रसेन का संवाद ।

१४ – मधुकथित कामनिवासप्रसङ्ग– पृष्ठ ८६ – ८७

१५ – कविकुलवर्णन एवं कथोपसंहार – पृष्ठ ८७ – ८८

★

१४. सचित्र मधु-मालती कथा । क्रमाङ्क–१२३०१

कर्त्ता – चतुर्भुजदास, लिपिसमय – १९ वीं शताब्दी (वि०)

आकार – गुटकाकार, माप (साइज) – ९" × ६½" २ पोइन्ट

पृष्ठसंख्या – ११६, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति – १५, प्रतिपङ्क्ति अक्षर – ३४ – ३६ ।

पुस्तकदशा – साधारणतः ठीक है किन्तु प्रान्त्य भाग त्रुटित हैं ।

पुस्तक का प्रारम्भ –

........म सरोवर जाइ । भ्रंगीजूंथ जनौं चोक भूलाइ ॥ १४ ॥

॥ दोहरा ॥ रामसरोवर तालकी, सौभा वरणी न जाइ ।
स्वेत अरून पंकज तीहां, मुंनिवर रहै लोभाइ ॥ १५ ॥

॥ चौपइ ॥ सौभा कौंन रांमसरौवर कहै । वहौतक तहां विहंगम रहे ॥
तरु फूलै कैवल महमहै । वहौतक तीहां विहंगम रुत करै ॥ १६ ॥

अवला कैतीयक पांनी भरइ । रीते कुंभ हाथतैं परइ ॥
चितवत वदन सीसतै गिरइ । भूली त्रिया विना मृत्यु मरइ ॥ १७ ॥

मालती एह वात सूंन पाइ । मधु देषनकूं मनछां धाइ ॥
जौ लो मधु अपने ग्रह रहै । किंतियक नारि ठिकांनौ ग्रहै ॥ १८ ॥

उनकै सजन बंधु कछू कहै । वहौतक भली बुरी सब सहै ॥
मनकी कछू कहि न सूंनावे । जैसैं चांत्रिक स्वांतिकुं धावै ॥ १९ ॥

भए वरस द्वादसके अंत । देषत त्रिया होय महमंत ॥
ऐसै भए दिवस दस बीस । सूनी तात जब कीनी रीस ॥ २० ॥

एह वात सूंनीहे नृप इसा तौं कहां कुंवर सरवरकी तीसा ॥
अव तुंम अंतकहुं जन जाऔ । मैवा लै लरकन संग षाऔ ॥ २१ ॥

कै बैठे पंडित ढिग पढौ । जौ बल हौय तौ घौडन चढौ ।
नहिं तौ तुम कछ्यू करौ विवहार । राज अंस तुम्ह नही लिगार ॥२२॥

॥ श्लोक ॥ किं कुलैन विसालैन विद्याहिनेन देहनां ।
हिने कुंलैपि विद्वांसौ देवता सहि पूंज्यतै ॥ २३ ॥

पुस्तक के अन्त में —

॥ दौहरा ॥ जैंतमाल मधु मालती, बंधि तिहुंकि आस ।
जौ रस सुंप संजौग एह, दिन दिन भौग विलास ॥ ६१ ॥

सुंष समाध दिन दिन वढै, मनवंछित जिहां भौग ।
मौटा मंदिर विलसियै, सुंप मांहि संजौग ॥ ६२ ॥

॥ चौ० ॥ दिन दिन प्रति अधिक तिहां दौइ । भौगे पुरुंस नारि तिहां दौइ ॥
कनकमाल रानि सुंप पावै । हरप हैत मधुकौ रस गावै ॥ ६३ ॥

षीर षांड घृत भोजन करहि । मनवंछित सवहि फल फलहि ॥
कुंवर मधु विलसै सुप घरहि । जैत माल तिअ रस भरहि ॥ ६४ ॥

॥ कविसर वा० दौ० ॥ कायथ निगमकुंल एह, नाथा सुंत अभीराम ।
तिन यैह चतुंरभूजदासकै, कथा प्रगासी तांम ॥ ६५ ॥

अलप बुंद्धि दिठौ सहि, कांम प्रवुद्धि प्रकास ।
कवियनसुं कर जौरकै, सौ हर्ष चतुरभूंजदास ॥ ६६ ॥

काम प्रवुद्धि प्रकास फुनि, मधुमालति-विलास ।
पदमनीकी लीला यहै, कहै चतुरभूंजदास ॥ ६७ ॥

वनासपतीमां अंव फल, रसमां इषु-रस ।
कथामध्य मधुमालती पट रितु मांझ वसंत ॥ ६८ ॥

लता मांहे पन्नगलता, सौंधानमैं घनसार ।
कथामध्य मधुमांलती, ज्युं आभूंपनमां हार ॥ ६९ ॥

कांम विलासकी ऐ कथा, चतुर सूंनै चित लाय ।
सुंगनां हौय गह गह कहै, निगुनांपै कहि न जाय ॥ ७० ॥

॥ चौ० ॥ राजा मंत्री कहै मै साषी । पंच ध्यान बुध यामैं भाषी ॥
चरनायक चातुरी वताइ । थौरी थोरी सव हि आइ ॥ ७१ ॥

पुनि वसंतराज रस गावै । ज्यामै इश्वर काम दजावैं ॥
ताकि ऐह लीला विसतारि । सुंनैं रसि[क]लागे बहु प्यारी ॥ ७२ ॥

रसक हौय अरुं रसकुं चाहै अध्यातम आतम हि गावै ॥
चातुर पुरुंस हौय जै कौइ । यैह रसकला विचारी हौइ ॥ ७३ ॥

कृष्णदेवको कुंअर कहावैं । प्रदुमन काम अंस मधु गावै ॥
पुत्र कलत्र सबै सुंप पावै । दुष दालिंद्र नैंरौ नां आवै ॥ ७४ ॥

॥ सिलौक ॥ कामार्थि लभतै कामं निर्धनो धन प्रापतै ।
अपुत्री लभतै पुत्र व्याधी पीडा नीवारतैं ॥ ७५ ॥

॥ दौ० ॥ राजा पढै तौ राजगत, मंत्री पढै तौ बुद्धि ।
कामी काम विलास रस, जौगिं पढै तौ सिद्ध ॥ ७६ ॥

संपूर्न मधु-मालती, कल[स] भयौं संपूर ।
सुंर्ता कविता सवनकौं, सुंषदायक दुर (ख) दूर ॥ १८७७ ॥

इति श्रीमधु-मालती-जैतप्रसंग संपूर्ण ॥ श्री ॥ ग्रंथ लिपतं पुजक्रिष श्री ५ श्री श्री दैवीचंदजी ततसिंष लिष क्रिष भागचंद लिष्यतं क्रिष मांणकचंद ॥

टिप्पणी — इस पुस्तक को देखने पर सहजतया यह अनुमान किया जा सकता है कि उक्त प्रति अवश्य ही जिल्द बंधने से पूर्व संरक्षक के पास अच्छी दशा में रही होगी। हो सकता है कि संरक्षकने इसकी कुछ जीर्णतापन्न दशा को देखकर सुरक्षा की दृष्टि से प्रति के प्रत्येक पत्र पर बटर पेपर लगाकर जिल्द बांधने के लिये किसी ऐसे जिल्द साज को दी हो जिसे मात्र कागज चपेकने के अतिरिक्त कुछ भी ज्ञान नहीं था। परिणामतः इस प्रति की दशा सुधरने के वजाय विगड गई है। क्यों कि जिल्दसाज द्वारा बिलकुल अवैज्ञानिक ढंग से बटर पेपर्स चपेके गये हैं। जिसके कारण पत्र मुड़ गये हैं, प्रान्त्यभाग पर लिखित प्रबन्धांश विलुप्त हो गया है, एवं जिल्द में पत्रों को उलट पुलट रूप में जोड़ दिये जानेके कारण इसका प्रबन्ध–पाठ भी असंगत हो गया है। अस्तु। अब हमने जिल्द उखाड़कर यथासाध्य पाठानुसन्धानपूर्वक इस प्रति के पत्रों को अनुक्रम से लगा दिया है और उन पर क्रमबद्ध संख्या भी नये रूप से अंकित कर दी है जिससे कि पाठक को असुविधा न हो।

क्रमाङ्क के आधार पर उक्त कथा की समाप्ति ११६ वें पृष्ठ पर होती है; किन्तु इस प्रति में १, २२, ३२, ५०, ५१, ५४, ५७, ६०, ६४, ६५, ६८, ७०, ७२, ७३, ७४, ७६, ८४, ८५, ८६, ९०, ९८ एवं १०९ संख्या वाले कुल पत्र २२ अप्राप्त होने से ९४ पत्र ही प्राप्त हैं। अतः ऊपर में द्वितीय पत्र पर उल्लिखित अंश ही उद्धृत किया गया है। पुस्तकगत प्रबन्ध के लेखन में काली स्याही एवं पद्याङ्क तथा शिरोलेख (दोहा, चौपई, श्लोक, प्रसङ्ग आदि) लिखने में लाल

स्याही का प्रयोग हुआ है। प्रबन्ध के चारों ओर वर्त्तनी रखी गई है और उसके दाईं-बांई ओर लाल स्याही की दो दो ऊर्द्ध रेखाएं खींची हुई हैं। पद्यों की प्रत्येक पादपूर्त्ति पर लालस्याही की एक खड़ी पाई तथा प्रत्येक पद्य की पूर्त्ति पर दो खड़ी पाइयाँ अङ्कित हैं। यह प्रति सुन्दर, सुवाच्य एवं स्थूलाक्षरों में लिखित है।

इस प्रति में प्राप्त ९४ पत्रों में ७८ सचित्र पत्र विद्यमान हैं। इन में १०४ चित्र अङ्कित हैं। जिन में ४० पूरे एवं ६४ अर्द्ध चित्र हैं। चित्रों के चित्रण में विविध देशी रंगों का उपयोग किया गया है। इन की वेषभूषा से ज्ञात होता है कि चित्रों की बनावट मध्यभारतीय शैली पर आधारित है। चित्रस्थली प्रायः किसी भी रंग से रंजित नहीं है; किन्तु उस के चारों ओर बोर्डर परिमाणतः पाव इञ्च के करीब कहीं काले तो कहीं पीले तो कहीं लाल आदि रंगों से अवश्य ही रंजित किया गया है। यद्यपि कला की दृष्टि से तो चित्र सुन्दर नहीं है फिर भी शैली के प्रभावसे चेहरों की बनावट कुछ सुन्दर अवश्य बन गई है। चित्रों को देखने से ऐसा भान होता है कि चित्रकार कुशल कलाकार न था और उसे मात्र चित्र बनाने के शोक के अतिरिक्त कलाभिज्ञता की ओर भी कुछ लगाव नहीं था। यही कारण है कि अङ्गमान एवं सामयिक वेषभूषा-सज्जा आदि का आकलन इन चित्रों में असंगत रूप से ही हुआ है। पृष्ठों के प्रान्त्य भाग पर अङ्कित चित्रों के शीर्षकों पर दूसरे कागजों के चपेकने के कारण उनके लुप्त होजाने के फलस्वरूप चित्रों का निम्नाङ्कित सपरिमाण परिचय ही दिया जा रहा है—

चित्रसूची –

पृष्ठ २ – चित्र संख्या १ परिमाण – ५"२ + ८

परिचय – **रामसरोवर ताल का एक दृश्य। पनिहारियां पानी भर रही हैं और तट के एक किनारे एक मुनि तपस्या रत हैं। पानीमें कमल खिल रहे हैं एवं मछलियाँ तैर रही हैं।**

पृष्ठ ३ – चित्र सं० २ परिमाण – ४½" + ७½' २ पोइन्ट

परिचय – **राजा चंद्रसेन अपने सामने मधु के साथ बैठे हुए मंत्री तारणसाह से मधु की शिक्षा के विषय में पूछ रहे हैं। मधु के पीछे राजकीय ३ व्यक्ति खड़े हैं।**

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ३ परिमाण – ५' + ५' ४ पोइन्ट
परिचय – राजा चंद्रसेन अपनी कुंवरी मालती को पढ़ने के विषय में कह रहे हैं। राजा बैठे हैं और मालती अपनी दासी के साथ हाथ जोड़े उनके सामने खड़ी है।

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ४ परिमाण – ४½' + ७½"
परिचय – गुरुजी के आजू-बाजू में बैठे मधु और मालती पढ़ रहे हैं।

पृष्ठ ५ – चित्र सं० ५ परिमाण – ४'४ + ७½
परिचय – गुरुजी के चले जाने पर मालती मधु पर फूल-गेंद फेंक रही है।

पृष्ठ ६ – चित्र सं० ६ परिमाण – ४'२ + ४'२ पो.
परिचय – तीन तोते सैंमल के वृक्ष पर मंडरा रहे हैं।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० ७ परिमाण – ४½' + ७½
परिचय – सिंहिनी अपने यूथ के साथ विचरते हुए मृग को रोक रही है।

पृष्ठ ७ – चित्र सं० ८ परिमाण – ५'२ + ५½' ४ पो.
परिचय – वनचर वानर को वृद्ध सिंह अपनी चिकनी चुपड़ी बातों में फांस कर अपना आहार बनाना चाहता है।

पृष्ठ ८ – चित्र सं० ९ परिमाण – ४½" + ५½"
परिचय – पक्षिसमाज उलूक को अपना राजा बनाने के लिए एकत्रित हुआ है।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० १० परिमाण – ४"२ + ६"
परिचय – काक उलूक का प्रतिवाद कर पक्षियों को टिट्टिभ-टिट्टिभी की वार्त्ता सुना कर यह सिद्ध कर रहा है कि पक्षियों का राजा गरुड़ है।

पृष्ठ ९ – चित्र सं० ११ परिमाण – ४½' + ६"
परिचय – सागर की पाल पर टिट्टिभयुग्म बैठा है।

पृष्ठ १० – चित्र सं० १२ परिमाण – ४½"३ + ४½" ३ पोइन्ट

परिचय – ब्राह्मणवेषधारी समुद्र टिट्टिभ के अंडो को उठा रहा है और टिट्टिभ-टिट्टिभी वृक्ष पर बैठे हुए इस दृश्य को देख कर सन्तप्त हो रहे हैं।

पृष्ठ १० – चित्र सं० १३ परिमाण – ५" + ७½"

परिचय – पक्षिसमाज को नारदमुनि काकहत सर्प का आख्यान सुना रहे हैं और उन्हें संगठित होने का उपदेश दे रहे हैं।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० १४ परिमाण – ४½" + ६"

परिचय – रानी नग्नमुद्रा में स्नानोद्यत खड़ी है और उसके गले के हार को एक कौवा अपनी चोंच में दबा कर उड़ता जा रहा है, जिसे देख कर वह अपनी दासी से कुछ कह रही है।

पृष्ठ ११ – चित्र सं० १५ परिमाण – ४½" + ८"

परिचय – कौवे ने हार को सर्प के निवासस्थान एक वृक्ष के कोटर में डाल दिया है। राजा के घुड़सवार एवं पैदल सिपाही कोटरस्थ सर्प को मार रहे हैं।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० १६ परिमाण – ४½" + ७½"

परिचय – गरुड़ सारे पक्षिसमाज को ले कर सागर के पास आया है। ब्राह्मणवेषधारी सागर उन्हें टिट्टिभ के अण्डों को वापस दे रहा है।

पृष्ठ १२ – चित्र सं० १७ परिमाण – ४" + ५½"

परिचय – तीन उलूकपक्षी वृक्षों पर सन्तप्त एवं उदासीन मुद्रा में बैठे हैं।

पृष्ठ १३ – चित्र सं० १८ परिमाण – ४" + ५"

परिचय – शशक (सूसा) ने अपने बुद्धिबल से सिंह को कूप में गिरा दिया है।

पृष्ठ १३ – चित्र संख्या १९ परिमाण – ५" + ५½' २ पोइन्ट

परिचय – उलूक रात्रि में वृक्षों पर बसेरा किये हुये कौओं को मार रहे हैं।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० २० परिमाण – ३½"२ + ५" २ पो.

परिचय – दो काक परस्पर मंत्रणा कर रहे हैं।

पृष्ठ १४ – चित्र सं० २१ परिमाण – ४"२ + ६" २ पो.

परिचय – पारधी ने जाल फेंक कर वृक्षस्थ हंसों को फंसा लिया है, किन्तु वह मृतकल्प नाटच करते हुए हंसों को देख कर दुःखी हो रहा है। इतने में जाल लेकर हंस उड़ जाते हैं। वधिक हाथ मलता रह जाता है।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० २२ परिमाण – ३"३ + ३½" ३ पो.

परिचय – काकराज मेघवरन उलूकराज अरिमर्दन के पास उसे अपने जालमें फांसने के लिए सेवक के रूप में आया है।

पृष्ठ १५ – चित्र सं० २३ परिमाण – ३½'१ + ४½"

परिचय – कौवे उलूक को जला रहे हैं।

पृष्ठ १६ – चित्र सं० २४ परिमाण – ४"३ + ७½"

परिचय – मृग को सिंहिनी यह विश्वास दिला रही है कि मैं यदि तुझसे घात करूंगी तो मेरा कुल लजेगा।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० २५ परिमाण – ३½"२ + ५"

परिचय – हरिण-सिंहनी का संभोगकालीन एक अश्लील चित्र है।

पृष्ठ १७ – चित्र सं० २६ परिमाण – ४" + ७½" २ पो.

परिचय – सिंहिनी सैल से समागत सिंहका स्वागत कर रही है और हरिण सिंहिनी के पीछे छुपा बैठा है।

पृष्ठ १८ – चित्र संख्या २७ परिमाण – ४" + ४½" ३ पोइन्ट

परिचय – मालती मधु को मृग के पीछे सिंहिनी के मरने का वृत्त सुना रही है। दोनों एक दूसरे के सामने बैठे हैं।

पृष्ठ १८ – चित्र सं० २८ परिमाण – ४½"३ + ७½

परिचय – सिंह मृग पर झपट पड़ा है और सिंहिनी मृग को बचाने के लिये उसके आडी आई है किन्तु मृग के सींगों में पड़ जाने के कारण उसका पेट चिर जाता है। इस प्रकार मृग एवं सिंहिनी की जीवनलीला-समाप्ति का भाव इस चित्र में बतलाया गया है।

पृष्ठ २० – चित्र सं० २९ परिमाण – ३½" + ४½" २ पोइन्ट

परिचय – मधुकुमार मालती को कृष्ण-चन्द्रावली का प्रसङ्ग सुना रहा है। दोनों एक दूसरे के सामने बैठे हैं।

पृष्ठ २० - चित्र सं० ३० परिमाण – ४½" + ७½"

परिचय – कृष्ण चतुर्भुजरूप धारणकर आसन पर विराजमान हैं उनके पीछे दो गौएं खड़ी हैं और सामने एक गोपी नमन मुद्रा में बैठी है और उसके पीछे दो गोपिकाएं हाथ जोड़े खड़ीं कृष्ण की ओर ताक रही हैं।

पृष्ठ २१ – चित्र सं० ३१ परिमाण – ४"३ + ७½"

परिचय – बैठे हुए दुर्वासा ऋषि के पास पांच गोपिकाएं प्रसाद लेकर आई हैं। उनमें से एक गोपिका ऋषि के पास बैठ कर उन से कुछ बातें कर रही है और ४ गोपिकाएं उस के पीछे खड़ीं यह सब देख-सुन रही हैं। ऋषि उन से कह रहे है कि जो तुम्हारे पास प्रसाद है, उसे तुम मेरे मुख में रख दो।

पृष्ठ २३ – चित्र सं० ३२ परिमाण – ६½" + ७½" ३ पोइन्ट

परिचय – नृपति के कुमार राजा करण के सामने ४ रानियां

बैठी हैं और राजा के पीछे खड़ा एक दास उस पर चंवर कर रहा है।

पृष्ठ २४ – चित्र संख्या ३३ परिमाण – ४½"२ + ७½" २ पोइन्ट

परिचय – सोरठ के राजा सूरसेन को दूतियां हाथ जोड़कर राजकुमारी पद्मावती का यह सन्देश सुना रही हैं कि वह अपना विवाह राजा करण के साथ करेगी। राजा इस बात को सुनकर चकित हो रहा है।

पृष्ठ २४ – चित्र सं० ३४ परिमाण – ४" + ७½" २ पो.

परिचय – राजा सूरसेन अपनी राजकुमारी को करण के साथ विवाह करने के निश्चय को बदलने के लिए समझा रहा है।

पृष्ठ २५ – चित्र सं० ३५ परिमाण – ५"२ + ७½" २ पो.

परिचय – मण्डप में करण-पद्मावती का विवाह हो रहा है, नारियां मंगल-गीत गा रही हैं एवं बाजे बज रहे हैं।

पृष्ठ २६ – चित्र सं० ३६ परिमाण – ४"२ + ६"२ पो.

परिचय – चित्र के एक तरफ सलज्जा पद्मावती घूंघट निकालकर बैठी है और दूसरे तरफ बैठे हुए राजा करण को दासी पद्मावती का यह सन्देश सुना रही है कि सोने के लिये आप पधारें।

पृष्ठ २७ – चित्र सं० ३७ परिमाण – ३½"२ + ६"२ पो.

परिचय – संयुक्त चित्र है—चित्र के ऊपरी भाग में छुछुंदरी को मुह में लिये हुए एक सर्प का दृश्य है और चित्र के नीचे भाग में जल में डूबते हुए आदमी के पास ही काष्ठ का टुकड़ा तैर रहा है किन्तु उस पर सर्प बैठा है। इस चित्र में मनुष्य के किंकर्त्तव्य विमूढता का भाव प्रदर्शित किया गया है।

पृष्ठ २७ – चित्र संख्या ३८ परिमाण – ५" + ७½"

परिचय – चैनरेषा द्वारा पीठ पर अचानक मारी हुई पिचकारी की धार से चौंकी हुई पद्मावती का उछल कर करण की गोद में जा बैठने का भाव तथा करण-पद्मावती के संभोग का अश्लील भाव इस चित्र में अलग २ दर्शाया गया हैं।

पृष्ठ २८ – चित्र सं० ३९ परिमाण – ३½" + ४"

परिचय – मधु जैतमाल के साथ बैठी हुई मालती को यह समझा रहा है कि मुझ से प्रीति करना अच्छा नहीं है; क्यों कि एक तो हम दोनों एक गुरु के शिष्य हैं और दूसरा कारण यह है कि तूं राजा की कन्या है।

पृष्ठ २९ – चित्र सं० ४० परिमाण – ४½" + ७½" २ पोइन्ट

परिचय – रामसरोवर बाग में स्थित ताल के ऊपर खड़ा हुआ मधु कुमार वृक्षों पर गिलोल चला कर अपना दिल बहला रहा है।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ४१ परिमाण – ४" + ४"

परिचय – मालती जैतमाल के साथ बैठी है और एक दूती आकर उन्हें यह समाचार सुना रही है कि मधु कुमार रामसरोवर बाग में अपना मन बहला रहा है।

पृष्ठ ३० – चित्र सं० ४२ परिमाण – ४½" + ६" ३ पो.

परिचय – दूती का समाचार सुन कर मधु से मिलने के लिए मालती दौड़ कर रामसरोवर पर आई है, जैतमाल उस का पीछे से हाथ खींच रही है किन्तु वह मधु की तलाश में आगे बढ़ रही है।

पृष्ठ ३३ – चित्र सं० ४३ परिमाण – ४" + ४½"

परिचय – मालती जैतमाल से अनुनय-विनय कर रही है कि हे सखी! मुझे अब मधु से चाहे जिस रूप

में हो, मिला देने का प्रयत्न कर, अन्यथा मैं मर जाऊंगी।

पृष्ठ ३४ – चित्र संख्या ४४ परिमाण – ४½"२ + ७½" २ पोइन्ट

परिचय – जैतमाल नग्न हो अपने बाएं हाथ पर रखे हुए जलपात्र से सिर पर जल डाल रही है और एक स्त्री उसके दाहिने हाथ को मसल रही है। खड़ी हुई एक स्त्री जैतमाल को दर्पण दिखला रही है और उसके पीछे मालती हाथ जोड़े खड़ी है।

पृष्ठ ३६ – चित्र सं० ४५ परिमाण – ५" + ७½"

परिचय – शिव और पार्वती के पीछे सिंह और बैल बैठे हैं तथा शिव के पीछे खड़ा उनका एक गण तूर्यत्र बजा रहा है।

पृष्ठ ४० – चित्र सं० ४६ परिमाण – ४½" + ७½"

परिचय – चतुर्भुजाधारी पवन देव के सामने हाथ जोड़ कर जैतमाल और मालती बैठी हैं। पवन उन्हें समझा रहा है।

पृष्ठ ४२ – चित्र सं० ४७ परिमाण – ४"२ + ५"३ पो.

परिचय – दयावान् एक ब्राह्मण दावानल से जलते हुए वृक्ष कोटर से हाथ डाल कर सर्प को निकाल रहा है।

पृष्ठ ४३ – चित्र सं० ४८ परिमाण – ४"२ + ६"

परिचय – करस्थित सर्प ब्राह्मण को कह रहा है कि मैं तुझे डसूंगा। ब्राह्मण चिंतित अवस्था में बैठा है।

पृष्ठ ४४ – चित्र सं० ४९ परिमाण – ४½" + ७½"

परिचय – निर्णयार्थ ब्राह्मण सर्प को गले में डाल कर गौ के पास गया है। गौ ने भी यह निर्णय दे दिया है कि सर्प तुझे डसेगा।

पृष्ठ ४४ – चित्र संख्या ५० परिमाण – ४"३ + ६"४ पोइन्ट

परिचय – चिन्तित ब्राह्मण सर्प को गले में डाल कर वनचर (वानर) के पास निर्णय के लिये गया है।

पृष्ठ ४५ – चित्र सं० ५१ परिमाग – ४½"४ + ७½"

परिचय – वनचर की बुद्धि के प्रभाव से ब्राह्मण पूर्ववत् वृक्ष-कोटर में जलते हुए सर्प को देख कर सन्तुष्ट हो रहा है। वानर उसे यह कह रहा है कि जो जैसा करता है वैसा ही उसे फल मिलता है।

पृष्ठ ४६ – चित्र सं० ५२ परिमाण – ४" + ५"

परिचय – मधु के पास सट कर मालती बैठी है। मधु उसके रूप-सौन्दर्य को देख रहा है।

पृष्ठ ४८ – चित्र सं० ५३ परिमाण – ४"२ + ७½"

परिचय – जैतमाल, मालती और उसकी एक दासी मधु के सामने बैठी हैं। मधु उन्हें मैना के सतीत्व का आख्यान सुना रहा है।

पृष्ठ ४९ – चित्र सं० ५४ परिमाण – ४"३ + ४½"

परिचय – लौंकर साह अपनी पत्नी मैना के पास बैठा है और उससे अपनी परदेश यात्रा के लिये विदा लेना चाह रहा है। यह सुन कर मैना भावी विरह की शङ्का से खिन्न हो रही है।

पृष्ठ ५२ – चित्र सं० ५५ परिमाण – ४" + ५"

परिचय – वरणापुरी का राजकुमार मैना को अपने वश में करने के लिए रतना मालिन नाम की दूती को आज्ञा दे रहा है।

पृष्ठ ५३ – चित्र सं० ५६ परिमाण – ४½" + ५"३ पो.

परिचय – अटारी में अकेली बैठी हुई विरहिणी मैना के सामने हाथ जोड़े खड़ी हुई रतना मालिन मैना को अपने जाल में फंसाने का उपक्रम कर रही है।

पृष्ठ ५५ – चित्र संख्या ५७ परिमाण – ४" + ५"

परिचय– रतना मालिन मैना को अपने सतीत्वधर्म से विचलित करने के लिए अनेक प्रकार की शृंगारिक बातें कर रही हैं।

पृष्ठ ५८ – चित्र सं० ५८ परिमाण – ४" + ६"२ पोइन्ट

परिचय– उज्जैनी नगरी का सौदागर अपनी पत्नी को यह कह रहा है कि प्रिये ! मुझे परदेश गमन की आज्ञा दो। महल के दरवाजे की फर्श पर दोनों परस्पर गले में बाहें डाले खड़े हैं।

पृष्ठ ५९ – चित्र सं० ५९ परिमाण – ४"४ + ५½"

परिचय– जाने के लिए उद्यत सौदागर अपनी पत्नी के सामने बैठा है और उससे यह कह रहा है कि मुझे शीघ्र जाने की आज्ञा दो। पत्नी पति के सामने हाथ जोड़े खिन्न खड़ी है। सुंदर चित्र है।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० ६० परिमाण – ४"४ + ५½"

परिचय– विदेश से समागत लौंरक (लालन) साह अपनी पत्नी के पास गले में हाथ डाले हुए बैठे हैं। पत्नी मैना रतना दूती के जाल का रहस्योद्घाटन कर रही है।

पृष्ठ ६१ – चित्र सं० ६१ परिमाण – ३½"२ + ७½"२ पो.

परिचय– देशवासी जन रतना मालिन को गधे पर चढा उसके शरीर को काला-पीला रंग लगा, एवं शिर के बाल मुंडा कर देश निकाला दे रहे हैं।

पृष्ठ ६२ – चित्र सं० ६२ परिमाण – ४" + ५½"३ पो.

परिचय– मधुकुमार जैतमाल एवं मालती को यह शिक्षा दे रहे हैं कि मैना के सतीत्व की तरह स्त्री को अपने मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए।

पृष्ठ ६३ – चित्र सं० ६३ परिमाण – ५"२ + ६"

परिचय– मालती एवं जैतमाल अपने सामने बैठे हुए

मधु को शुक-पिकी के प्रेम का निदर्शन दे कर यह समझा रही है कि शरणापन्न व्यक्ति की रक्षा करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है।

पृष्ठ ६३ – चित्र संख्या ६४ परिमाण – ३"३ + ४½"
परिचय – शुक के पास आकर कोयल प्रेम की याचना कर रही है।

पृष्ठ ६६ – चित्र सं० ६५ परिमाण – ३"१ + ४'३ पोइन्ट
परिचय – राजा के दो सैनिक दूत राजा चन्द्रसेन को मधु-मालती की प्रेमलीला का रहस्य बतला रहे हैं।

पृष्ठ ६६ – चित्र सं० ६६ परिमाण – ४" + ४"३ पो.
परिचय – कुपित राजा चन्द्रसेन रानी कनकमाल के पास बैठ कर उसे अपनी लाडली कुमारी मालती के चरित्र बतला रहे हैं और यह कह रहे हैं कि अभी सेना भेजकर मधु को मरवा डालूंगा।

पृष्ठ ६७ – चित्र सं० ६७ परिमाण – ३"३ + ५½"२ पो.
परिचय – मधुकुमार बाग में जैतमाल एवं मालती के साथ बैठे हैं और रानी कनकमाल द्वारा भेजी हुई एक दासी उन्हें यह सन्देश सुना रही है कि तुम अब यहाँ से शीघ्र ही कहीं अन्यत्र चले जावो, अन्यथा राजा द्वारा मारे जाओगे।

पृष्ठ ६९ – चित्र सं० ६८ परिमाण – ४½"३ + ७½"२ पो.
परिचय – मधु राजा चन्द्रसेन द्वारा प्रेषित घुड़सवार सैनिकों पर अपने गिलोलास्त्र के वार कर रहा है और जैतमालकृत मालतीवनविस्तार से प्रकट हुए भ्रमरसमूह के दंशों से आहत राजसैनिक भाग रहे हैं।

पृष्ठ ७१ – चित्र सं० ६९ परिमाण – ४" + ४½"२ पो.
परिचय – भ्रमरदंशाहत दो सैनिक मधु के पराक्रम एवं भ्रमरों द्वारा डसी गई सेना का वृत्तान्त राजा

चन्द्रसेन को सुना रहे हैं। राजा यह सुन आश्चर्य-चकित हो रहा है।

पृष्ठ ७५ – चित्र संख्या ७० परिमाण – ४"३ + ७३⁄४"

परिचय – जैतमाल और मालती के साथ बैठे हुए मधु को एक राजदूत खोटी-खरी सुना कर यह कह रहा है कि यदि जीवन प्यारा है तो तुरन्त यहां से चले जाएं। मधुकुमार यह सुनकर क्रुद्ध हो उसे डांट रहा है।

पृष्ठ ७७ – चित्र सं० ७१ परिमाण – ६३⁄४"३ + ७१⁄४" २ पोइन्ट

परिचय – राजसेना का एक दृश्य–अश्वारूढ़, गजारूढ तथा पैदल सैनिक भेरीनिनाद करते हुए मधु की ओर बढ़ रहे हैं। मधु उन के सामने गिलोल साधे खड़ा है। बाग के वृक्ष की टहनी में खड़ी जैतमाल इस दृश्य को देख रही है।

पृष्ठ ७९ – चित्र सं० ७२ परिमाण – ६१⁄२"२ + ७१⁄२"

परिचय – मालती की स्तुति से सन्तुष्ट श्रीकृष्ण भगवान् द्वारा मधु की सहायतार्थ प्रेषित भारण्ड आदि वन्य जन्तुओं का राजसेना से युद्ध हो रहा है। मधु अपने गिलोल के वार से सैनिकों का संहार करने में व्यस्त है और जैतमाल इस दृश्य को मालती को दिखला रही है।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० ७३ परिमाण – ६१⁄२"२ + ७१⁄२"२ पो.

परिचय – युद्धक्षेत्र से हार कर पलायमान सेना का दृश्य है।

पृष्ठ ८० – चित्र सं० ७४ परिमाण – ४१⁄४"२ + ६"२ पो.

परिचय – राजा चन्द्रसेन अपने एक मंत्री से मंत्रणा कर रहे हैं। मंत्री उन्हें भीम–हिडिम्बा का आख्यान सुना रहा है।

पृष्ठ ८१ – चित्र सं० ७५ परिमाण – ४" + ६"४ पो.

परिचय – कौरव भीम को छल से मारने का उपाय सोच रहे हैं।

पृष्ठ ८२ – चित्र संख्या ७६ परिमाण – ५"३ + ५½"३ पो.
शीर्षक – पांडव लापका मैहलमैं सूता छै ऐ०

पृष्ठ ८३ – चित्र सं० ७७ परिमाण – ४" + ७½"
परिचय – भीमसेन दोनों हाथों से गदा को शिर से ऊपर साधे हुए देवमन्दिर के आगे खड़ा है और उस के आगे राक्षस द्वारा बल्युपहारार्थ पकड़ कर लाए गये ४ वीर आभारप्रदर्शनकी मुद्रा में जा रहे हैं। देवमन्दिर में एक स्त्री बैठी है।

पृष्ठ ८७ – चित्र सं० ७८ परिमाण – ४½" + ५"
शीर्षक – कौर्व भीम वात करै ऐ वा०

पृष्ठ ८८ – चित्र सं० ७९ परिमाण – ४"४ + ४½" २ पोइन्ट
परिचय – भीमसेन कौरवों द्वारा खिलाए गये विषान्न से मूर्च्छित हो गङ्गाजी के जल-प्रवाह में बहे जा रहे हैं।

पृष्ठ ८८ – चित्र सं० ८० परिमाण – ४" + ६½"
परिचय – गङ्गाजी में स्नानार्थ आगत दो नागकन्याओं द्वारा अमृत पिला कर जीवित किया हुआ भीमसेन सर्पराज वासुकि की कन्या के पीठपार्श्व अपने दोनों हाथों से पकड़ उसके पीछे खड़ा है और उससे यह पूछ रहा है कि जिस अमृत से तुमने मुझे बचाया वह अमृतकुण्ड कहाँ है, मुझे दिखलाओ।

पृष्ठ ८९ – चित्र सं० ८१ परिमाण – ४"३ + ५"४ पो.
परिचय – वासुकि की कन्या अपने सम्मुख बैठे हुए भीमसेन को अमृतकुण्ड का भेद बतला रही है।

पृष्ठ ९१ – चित्र सं० ८२ परिमाण – ४"४ + ५"४ पो.
परिचय – राजा चंद्रसेन द्वारा समाहूत मंत्री तारण साह राजा के सम्मुख हाथ जोड़े खड़ा है। राजा उसे अपना पिछला वृत्त सुना कर यह पूछ रहा है कि युद्धशान्ति का अब कौन सा उपाय है?

पृष्ठ ९२ – चित्र संख्या ८३ परिमाण – ४"४ + ४½"४ पो.

परिचय – राजा चंद्रसेन श्रीदुर्गा माता के सामने हाथ जोड़े खड़े हैं। श्रीदुर्गाम्बा उसे मधु-मालती-जैतमाल के प्रकृत रूप का यह रहस्य समझा रही है कि ये तीनों नररूप में देव हैं। अतः तुम अपने साथ उन्हें मना कर ससम्मान घर ले जाओ।

पृष्ठ ९३ – चित्र सं० ८४ परिमाण – ३½" + ४"४ पोइन्ट

परिचय – मोची खाट पर सो रहा है और खाट के नीचे स्थित चमड़ा भिगोने के जलपात्र में शीत से पीड़ित एक सर्प बैठा है।

पृष्ठ ९४ – चित्र सं० ८५ परिमाण – ५"३ + ४½"३

परिचय – उरगाना पथिक घोड़े का नया कमरपट्टा बनाने के लिये मोची से कह रहा है। मोची पात्रस्थित सर्प को चमड़ा समझ कर उसे कमरपट्टे में जोड़ रहा है।

पृष्ठ ९४ – चित्र सं० ८६ परिमाण – ५"१ + ५½" २ पो.

परिचय – उरगाना घोड़े पर सवार हो जंगल की ओर जा रहा है। घोड़े की कमर में पट्टे के रूप में बंधे हुए सर्प को देख कर वनवृक्षस्थ सर्प कुछ कह रहा है।

पृष्ठ ९६ – चित्र सं० ८७ परिमाण – ४"४ + ४"४ पो.

परिचय – राजा चंद्रसेन को मंत्री तारण साह उरगाना-संवादगत मलयपुराधीश हरिदत्तराय के उदरस्थित सर्प एवं वनबंबीस्थ सर्प का संवाद सुना रहा है।

पृष्ठ ९७ – चित्र सं० ८८ परिमाण – ५"१ + ७"४ पो.

परिचय – राजा हरिदत्तराय जंगल में वृक्ष के नीचे पलङ्ग पर सोये हुए हैं। उन के सिरहाने की तरफ स्थित वृक्ष की बंबी से निकले हुए सर्प की फूत्कार सुन कर राजा के मुख से निकला हुआ सर्प बातें कर रहा है और उसे राजा के लिए आरोग्यप्रद औषधि भी बतला रहा है। राजा का मंत्री उनके

पैतानें की तरफ एक कोने में छिपा बैठा हुआ उन दोनों की बातें सुन रहा है। पैताने के पास ही एक काठी किया हुआ घोड़ा भी खड़ा है।

पृष्ठ ९९ – चित्र संख्या ८९ परिमाण – ४" + ५"

परिचय – उरगाना और उसकी लौड़ी पत्नी एक दूसरे के सम्मुख बैठी हैं। पत्नी उसे यह कह रही है कि आप जहाँ जिस सर्प को दूध पिलाने जाते हैं वहाँ साथ में अपने लड़के को भी ले जाएँ।

पृष्ठ १०० – चित्र सं० ९० परिमाण – ४"१ + ५"

परिचय – उरगाना का लड़का सर्प को लाठी से मार रहा है और सर्प उस के पाँव में डँस रहा है।

पृष्ठ १०१ – चित्र सं० ९१ परिमाण – ४" + ४½" २ पो.

परिचय – उरगाना अपनी पत्नी को उसके शिर के बाल खींच कर पीट रहा है और उसे अपने पास में मूर्च्छित पड़े हुए लड़के को दिखला कर यह कह रहा है कि हम गृह-कलह से अपने पुत्र को खो बैठे।

पृष्ठ १०१ – चित्र सं० ९२ परिमाण – ४½"२ + ५½"

परिचय – राजा अमरसेन के सम्मुख बैठी हुई उरगाना की पत्नी अपने पति एवं सर्प का रहस्योद्घाटन कर रही है और उरगाना अपनी पत्नी के पीछे खड़ा है।

पृष्ठ १०२ – चित्र सं० ९३ परिमाण – ३½"२ + ४"२ पो.

परिचय – राजा अमरसेन का एक घुड़सवार सिपाही मरे हुए सर्प को अपने कंधे पर रखे जा रहा है और उस के पीछे एक सिपाही सर्प को बंबी से खींच कर बाहर निकाल रहा है।

पृष्ठ १०२ – चित्र सं० ९४ परिमाण – ५"१ + ६" २ पो.

परिचय – बंबी के सर्प के सम्मुख एक ब्राह्मणवेषधारी

उरगाना सर्प को गंगा ले जाने के लिये खड़ा है और उसके पीछे एक घुड़सवार मनुष्य भी खड़ा है।

पृष्ठ १०३ – चित्र संख्या ९५ परिमाण – ४" + ६"

परिचय – राजा चन्द्रसेन रानी कनकमाल के साथ बैठे हुए हैं। राजा रानी को युद्ध का सारा वृत्तान्त एवं श्रीदुर्गाम्बा का उपदेश सुना रहा है।

पृष्ठ १०६ – चित्र सं० ९६ परिमाण – ४"३ + ४½"४ पोइन्ट

परिचय – रानी कनकमाल राजा चंद्रसेन को कर्मरेखा की अमिटता पर गौ और सिंह का उदाहरण दे कर यह समझा रही है कि मधु-मालती का सम्बन्ध विधि को मञ्जूर है, अतः इस में बाधा डालना स्वयं के लिये अहितकर है।

पृष्ठ १०८ – चित्र सं० ९७ परिमाण – ४½" + ७½"

परिचय – बैठे हुए सिंह के सामने गौ बैठी है और उन दोनों के बीच में बछड़ा बैठा हुआ है।

पृष्ठ १११ – चित्र सं० ९८ परिमाण – ४½"४ + ७½" २ पो.

परिचय – राजा चंद्रसेन अपनी रानी कनकमाल के साथ बैठे हैं। दोनों एक दूसरे के सम्मुख मुख किये हुए विवाह की तय्यारी की योजना बना रहे हैं। कनकमाल के पीछे एक दासी अपने हाथ में चंवर थामे खड़ी है।

पृष्ठ १११ – चित्र सं० ९९ परिमाण – ४½" + ७½" २ पो.

परिचय – मधु का बरनोला (छींकी) निकल रहा है। ढोल-वाद्य बज रहे हैं। नारियाँ मधु के रूप को देख कर उसके पीछे एवं सामने मंत्रमुग्ध सी खड़ी हैं।

पृष्ठ ११२ – चित्र सं० १०० परिमाण – ५"२ + ७½" २ पो.

परिचय – मधु-मालती की छींकी का एक दृश्य है। इन

दोनों के रूप-लावण्य को देख कर नर एवं नारियाँ अपनी सुधि भूल रही हैं।

पृष्ठ ११३ – चित्र संख्या १०१ परिमाण – ६"१ + ७½"

परिचय – अश्वारूढ़ मधुकुमार राजप्रासाद के द्वार पर तोरण मार रहे हैं। उस के पीछे स्त्रियां मंगल-गीत गा रही हैं।

पृष्ठ ११४ – चित्र सं० १०२ परिमाण – ७½" + ६½ २" पो.

परिचय – मंडप में मधु-मालती का विवाह हो रहा है। वादित्र वज रहे हैं और सुहागिन नारियाँ खड़ी मांगलिक गीत गा रही हैं।

पृष्ठ ११४ – चित्र सं० १०३ परिमाण – ७½" + ४½ ३" पो.

परिचय – मधु एवं राजा चन्द्रसेन बैठे हैं। उनके आसपास दो कर्मचारी खड़े हैं। राजा चंद्रसेन मधु से यह प्रार्थना कर रहे हैं कि मेरे राज्य का भार आप संभाल लें।

पृष्ठ ११६ – चित्र सं० १०४ परिमाण – ६½" + ७½" ३ पो.

परिचय – विलास का एक दृश्य है। मधुकुमार पलङ्ग पर मालती तथा जैतमाल के बीच में बैठे हैं। उनका वाम कर मालती के कुच पर स्थित है और उनके दक्षिण कर को जैतमाल ने पकड़ रखा है। मालती मधु का प्याला मधु के मुख की ओर आगे बढ़ा रही है। मालती एवं जैतमाल के करों में क्रमशः पंखा और चामर है। इन तीनों के अगल-बगल में दो दासियां मधु–घट लिये हुए पलङ्ग के नीचे खड़ी हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मालती एवं जैतमाल मधु को मधु पीने के लिए बाध्य कर रही हों।

प्रसङ्गसूचि –

१ – रामसरोवरवर्णन एवं मधु-मालती का गुरुगृह में विद्याभ्यसन – पृष्ठ २ – ४

२ – मधु के प्रति मालती की प्रणयासक्ति एवं संलाप – पृष्ठ ५ – ६

(१) मधुनिगदित इन्द्रायणफललुब्ध-शुकोदाहरण

३ – मृग एवं सिंहिनी की प्रणयकथा – पृष्ठ ६ – १९

(१) वानर-सिंहसंवाद (२) काकोलूकवार्त्ता (३) टिट्टिभ-टिट्टिभीसंवाद (४) काकद्वारा सर्पमारण (५) शशकद्वारा सिंह का कूपनिपातन (६) जालग्रस्त हंसों द्वारा वधिक-व्यामोहन।

४ – श्रीकृष्ण-चन्द्रावलीप्रसङ्ग – पृष्ठ २० – २१

५ – मधुजल्पित करण-पद्मावतीकथा – पृष्ठ २३ – २९

(१) मधु-मालती के प्रश्नोत्तर एवं उनका विद्याविसर्जन।

६ – रामसरोवरप्रसङ्ग – पृष्ठ ३० – ३५

(१) मधु का वनोपवनभ्रमण (२) मधु की खोज में मालती-जैतमाल का रामसरोवर-आगमन एवं उनका वार्त्तालाप (३) जैतमाल के सोलह श्रृंगारों के वर्णन।

७ – मधुकुमार तथा जैतमाल का वार्त्तालाप – पृष्ठ ३५ – ४७

(१) जैतमालवर्णित मधु-मालत्युद्भववृत्त (२) विप्रसर्पसंवाद (३) मालती का सौन्दर्यवर्णन।

८ – लोरकसाह की पत्नी मैना के सतीत्व का आख्यान – पृष्ठ ४८ – ६२

(१) वरणापुरी के राजकुमार द्वारा समायोजित दूती रतना मालिन एवं मैना का संवाद (२) दूती द्वारा उपक्रान्त बारह महीनों के श्रृङ्गाररसात्मक प्रश्नों का मैना द्वारा सयुक्तिक वैराग्यात्मक प्रतिवाद (३) मैनाकथित उज्जैन के सौदागर की पत्नी के सतीत्व का निदर्शन (४) परदेशागत लालनसाह द्वारा दूती रतना का देशनिर्वासन।

९ – जैतमालप्रस्तावित मधु-मालती का गान्धर्व विवाह – पृष्ठ ६२ – ६७

(१) दूत द्वारा राजा चन्द्रसेन के समक्ष गान्धर्व विवाह का रहस्योद्घाटन (२) क्रुद्ध राजा का मधु के मारणार्थ अपनी

सेना को आदेश (३) भावियुद्ध से त्रस्त मालती के धैर्यार्थ मधुनिगदित रूपरेखा एवं चन्दकुमार का आख्यान।

१० – राजा चन्द्रसेन की सेना के साथ मधुकुमार का युद्धप्रसंग – पृष्ठ ६९ – ८०
(१) भ्रमर-युद्ध (२) मधु-राजसैनिकसंवाद (३) जैतमाल-संप्रेरित मालतीकृत श्रीकृष्णस्मरण (४) मधुसंरक्षार्थ भगवत्प्रेषित भारण्डसिंहादि द्वारा राजसेना का संहार।

११ – युद्धपलायित राजा चंद्रसेन की अपने मंत्रियों से मंत्रणा– पृष्ठ ८० – ९१
(१) मन्त्रिश्रावित भीम-हिडिम्बाख्यान (२) भीम-वासुकि-सर्पयुद्ध (३) मंत्रियों का मंत्री तारणसाह को ससम्मान पुनः बुलाने का राजा को सुझाव।

१२ – राजा चंद्रसेन एवं मंत्री तारणसाह का मंत्रणालाप– पृष्ठ ९१ – ९३
(१) तारण द्वारा मान्त्रिकवल से सिंहादिस्तम्भन (२) सद्यः-प्रकट श्रीगौरी माता का राजा को उपदेश एवं मधु-मालती के प्रकृतरूप का संज्ञापन।

१३ – तारणकथित उरगाना एवं सर्प का आख्यान– पृष्ठ ९३ – १०३
(१) मलयपुरीश हरिदत्तराय के उदरस्थ सर्प एवं वनवंबीस्थ सर्प का संवाद (२) गृहकलहवश उरगाना की पुत्र की मृत्यु (३) राजा अमरसेन के समक्ष उरगाना की पत्नी द्वारा अपने पति एवं सर्प का रहस्योद्घाटन (४) राजा द्वारा सर्पमारण एवं तद्वम्बीस्थधनापहरण (५) युद्धविरामानन्तर मधु-मालती का ससम्मान स्वस्व-गृहावर्त्तन।

१४ – राजा चन्द्रसेन एवं रानी कनकमाल का मंत्रणालाप– पृष्ठ १०३ – ११०
(१) चन्द्रसेनवर्णित श्रीराम-अञ्जनीसंवाद (२) कनकमाल-कथित गौ-सिंहसंवाद (३) मालती तथा जैतमालका मधु के साथ विवाह करने की राजा से रानी की अभ्यर्थना।

१५ – मधु-मालती-जैतमाल विवाहप्रसंग – पृष्ठ ११० – ११६
(१) मधु-चन्द्रसेनसंलाप (२) मधुकथित कामनिवासवर्णन (३) कविकुलवर्णन एवं कथोपसंहार।

★

१५. सचित्र मधु-मालती कथा। **क्रमाङ्क – १७४६१**

कर्त्ता – चतुर्भुजदास, **लिपिसमय – १९१० विक्रम संवत्**

आकार – गुटकाकार **माप (साइज) – ११" × ७½**

पृष्ठसंख्या – १९२, प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति – ११, प्रतिपङ्क्ति अक्षर – २४।

पुस्तकदशा – साधारणतया अच्छी है किन्तु त्रुटक है।

पुस्तक का प्रारम्भ –

....जोजन पुर च्यार। चोंरासी चोहोटा चहुं दस बाजार ॥
अत ही वीचीत्र दीस नर नारी। मानु सकल भवन मैझारी ॥
करही सेवन कुल छतीसा। चढही सहस दल मावत सीसा ॥
सभा देव दुजे गंग प्रवेसा। दल तीड़ी सम भुमी प्रवेसा ॥

॥ सोरठा ॥ हय्येदल अंत न पार, कुंजर काली मेघ जुं।
कुल छतीस हजार, चढ दुवार त्रप चंदक ॥

॥ चोपई ॥ मंत्री बुध पराक्राम तांम। तारण साहा तासको नांम ॥
नीस दीन स्यांम धरमसुं काज। चोसट कला वोहोत मुख लाज ॥
गुंण अनेक छवे पार न अहूं। दीन दीन अनुंरुप गुण भे हूं ॥
असो वोर वीधनां नही घड़्यो। सत्रु देखे अंद्रजु पड़्यो ॥
गज कपोतै हर चंव प्रवाल। जांन मधुकर मीन मुराल ॥
जांही देखे चीत चल महेसा। देखत धरनीं डारत सेसा ॥
सुर सवल सव करत अंदेसा। मानुं छाहां सीस पर देसा ॥
राजलोकवरन कीत लेहूं। थोरी सी मंत्रीकी कहूं ॥
थोरी मांहे वोहोत रस होई। अती लालच झींण राचो कोई ॥
तारण साहा सुघड़ गुणसार। त्रीय्या एक मधु राजकुंवार ॥
ताको नांव मनोहर धार्यो। मानुं कांमदेव औंतार्यो ॥
कह मधु कवर खीलाव तात। वाढत कला चंद जुं जात ॥
वधं पुल कला होई कछ वोर। जुंव सललीताकी कोर ॥
वरस दवादस भीयो कीसोर। नैंन वैंन दीवस-नीस तोरे ॥
देखे त्रीय्या अती होई लुभांनी। तंन मंन धंन सव सुधे वीसरांनी॥

जहैं जहैं कव्रर करतहै सैलां । दोरे फीर त्रीग्या चहूं गेलां ॥
कव्रहूक रांमसरोवर पाल । अंगी भई मानुं मीन मुराल ॥

॥ दोहा ॥ रांमसरोवर तालकी, सोभा वरनी न जाई ।
सवेत्त वरण पंछी त्याहां, मुनीजंन..........॥

पुस्तक के अन्त में —

...............लती, खट रते रतां वसंत ॥ ४ ॥
लंता मांही पुनंग लता, सोधुम घंनसार ।
कथा मधु अर मालती, जुं आभूखंन हार ॥ ५ ॥
कांमवीलास कही कथा, चीतसुं चीत लगाइ ।
सुन सठ न एही गहै, नुगूणै कही न जाइ ॥ ६ ॥

॥ चोपई ॥ राजा मंत्री कहन साखी । पंचमकी बुधे ग्यामै भाखी ॥
चरनाईक चात्रुग वीसतार । थोरी थोरी सव्रही पार ॥ १ ॥
फुंनी वसंतराज रस गावै । मांतो सेव्र र कांम दझावै ॥
ताकी ए लीला वीसतारी । रसकं नर सु ए सुखकारी ॥
रसकुं होइ एह रस चावै । आख्यातुंम आतमां गावै ॥
चात्रुग पुरस होइ है कोई । ए रस कला स्हंसर मधे होई ॥
क्रासन देवको कवैर कुहावै । परदुमन ए नांम धरात्र ॥
पुत्र कलीत्र सव सुख पावै । दुख दालीद्र सव दुरे गुमावै ॥

॥ स्लोक ॥ कांमते लभते कांम नरधंनो धंन प्रापती ।
अपुत्री लभते पुत्र व्याध ते न स पीड़ते ॥

॥ दोहा ॥ राजा पढते राजगते, मंत्री पढते बुध ।
कांमी कांमवीलासरस, जोगी पढते सधे ॥
समीय्यो मधु अर मालती, संपुरण सव्र सुर ।
सुरता वीकता सवनकुं, होइ ईन दुख दुरे ॥
स्हंस्र (स्र) च्यार दुहे चोपई, अछर भतीसी जाणे ।
सुण सुगण जीवै राचही, नुगण सुणी न माणे ॥
कांमवीलास कही कथा, लीज्यो चतुर वीच्यार ।
पढ गुण चीत घर, लेव्र अंम्रत पार ॥

जतमाल मधु मालती, स्मीयो सुजस वखाणे ।
रस मदन म्हमंतकी, संपुरन सत्र जाणे ॥

इति श्रीमधु-मालती-जैतकी रसवीलासकथा संमसत दोहा चोपई सोरठा संपुरण सुभं रसतु ॥ लखी स्हा मंगलरांम चीरंजी संकर लछमण नंगर मड़ावरा म्धे वसाख वु. १३ सीं. १९१० ॥

टिप्पणी – यद्यपि इस प्रति में प्रस्तुत कथा का समापन १९२ वें पृष्ठ पर होता है, किन्तु इस में १, ३, ५, ८, १२, १३, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३६, ३८, ३९, ४१, ४२, ४४, ४५, ४६, ४९, ५१, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ५९, ६०, ६१, ६४, ६५, ७१, ७२, ७३, ७८, ८०, ८२, ८३, ८४, ९१, ९२, ९३, ९४, १०१, १०२, १०३, १०४, ११२, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १३०, १३३, १३५, १३७, १३८, १४०, १४१, १४२, १४४, १५१, १५६, १५७, १५९, १६०, १६२, १६३, १७१, १७५, १८८. तथा १९१ वें की संख्या वाले पत्र अप्राप्त होने के कारण १०२ पत्र ही प्राप्त हैं । प्रति का लेखन महाजनी (चारणी) लिपि के स्थूल किन्तु दुर्वाच्य एवं अशुद्ध अक्षरों द्वारा किया गया है । कथावस्तु के लिखने में काली स्याही एवं सन्दर्भ (चौपई, दूहा, प्रसङ्गादि) के लिखने में लाल स्याही उपयोग में लाई गई है । प्रतिगत सभी पृष्ठों के बांई ओर पृष्ठाङ्क लगे हुए हैं किन्तु पद्याङ्क कहीं पर भी दृष्टिगोचर नहीं होते हैं, और यत्र तत्र कथाके पद्यांश भी नहीं लिखे गये हैं । सारांशतः यह पुस्तक अशुद्ध एवं त्रुटित है ।

इस पुस्तक में उक्तकथा से सम्बन्धित ५ चित्र विद्यमान हैं जो कि ६७, १७९, १८४, १८५ एवं १८९ संख्या वाले पत्रों में अङ्कित हैं। चित्रों के निर्माण में चित्रकार ने हाडौती शैली को अपनाया है और सुन्दर हावभावादि की अभिव्यंजना के साथ वेष–भूषादि के आकलन में प्रसङ्गानुकूल यथावसर विविध देशी रंगों का उपयोग किया है । चित्रस्थली को कहीं सफेद, तो कहीं नीले, तो कहीं पीले रंग से अभिलिप्त कर उसे एक काली सूक्ष्मरेखा एवं तदुपरि लाल रंग की स्थूलरेखा से वेष्टित किया गया है। प्रत्येक चित्र के नीचे लाल स्याही से शीर्षक (विवरण) लिखे हैं । तदनुसार यहाँ पर चित्रों के परिमाण के साथ चित्रों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

चित्रसूची –

पृष्ठ ६७ – चित्र संख्या १ परिमाण – ३½' + ९'

शीर्षक – सेठ सेठांणी बधाई वांट, वाजा वज सत्र त्रीया मंगल गाव ।

पृष्ठ १७९ – चित्र सं० २ परिमाण – २'४ + ६½' १ पोइन्ट

शीर्षक – बांमम पनंग मुख काढ्या, लरको मुवो, पीता आयो ।

पृष्ठ १८४ – चित्र सं० ३ परिमाण – २½'३ + ९"

शीर्षक – श्रीरामचंद्र लछमण ज्यानकी हनुंमान अंजनी तप त्याहां आये ।

पृष्ठ १८५ – चित्र सं० ४ परिमाण – २½'३ + ५'१

शीर्षक – राजा रांणी म्हलमै वीयावकी वात कर ।

पृष्ठ १८९ – चित्र सं० ५ परिमाण – ३½' + ९'

शीर्षक – समीयो वीयावको । मधु मालती जैत फेरा लेव, राजा राणी वैठा, मंगल गव, वाजा वज ।

प्रसङ्गसूची –

१ – राजलोकवर्णनानन्तर मधु - मालती का गुरुगृह में विद्याभ्यसन एवं प्रणयासक्ति – पृष्ठ २ – ७

२ – मृग - सिंहिनी का प्रेमाख्यान – पृष्ठ ९ – ४०

(१) मधु - मालती संवाद (२) इन्द्रायणलुब्ध शुकदृष्टांत (३) मृग - सिंहनीसंवाद (४) वनचर - सिंहसंवाद – (५) काकोलूककथा (६) टिट्टिभ - टिट्टिभीसंवाद (७) मृग - सिंहिनो का अन्त (८) मधु - मालती का वार्तालाप ।

३ – करण - पद्मावती का आख्यान – पृष्ठ ४३ – ५०

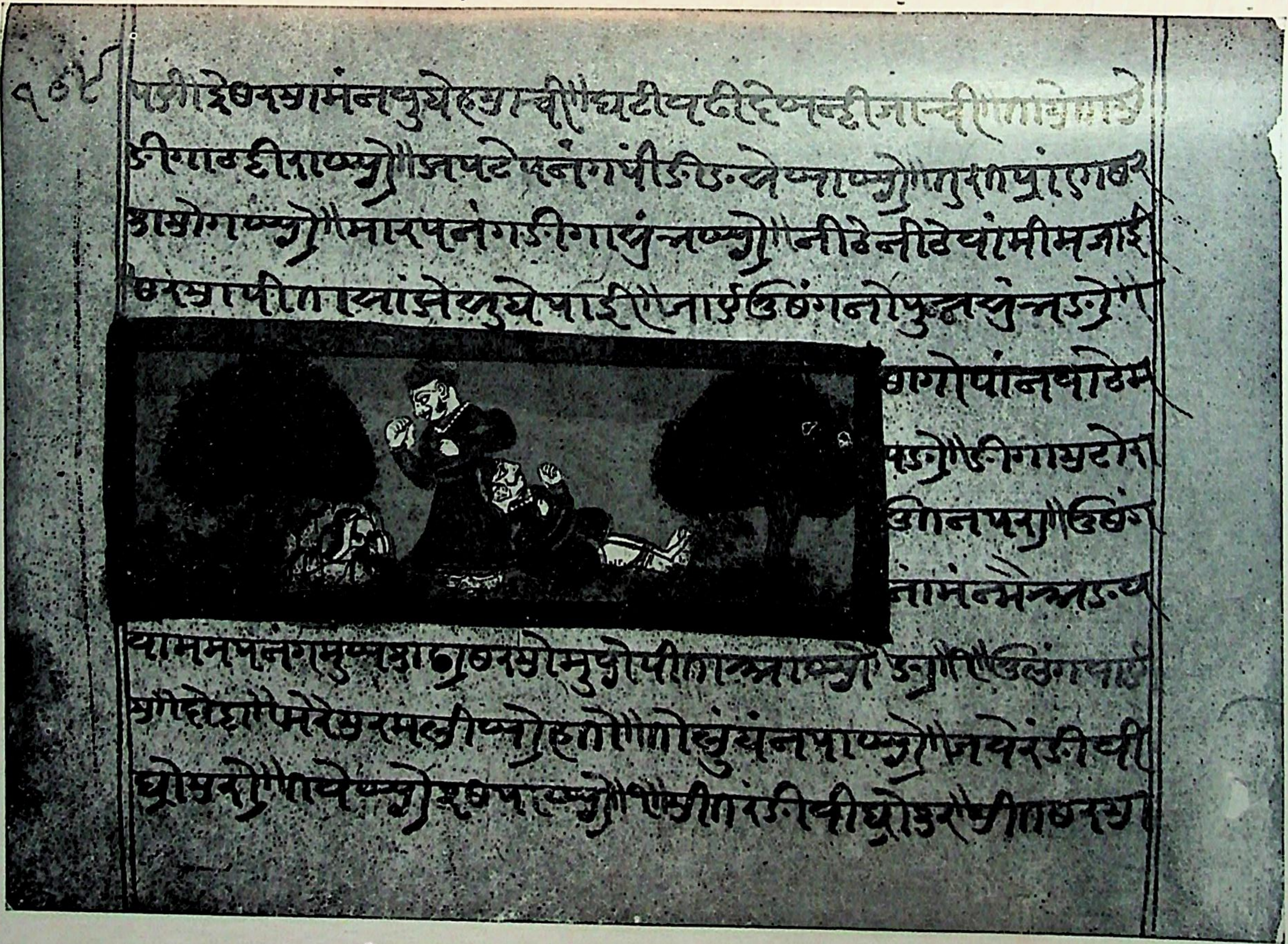
४ – सुदर्शनश्रेष्ठी के शीलव्रत का उपाख्यान – पृष्ठ ५० – ७०

(१) मधु-मालती के प्रश्नोत्तर एवं उनका स्वगृहावर्तन

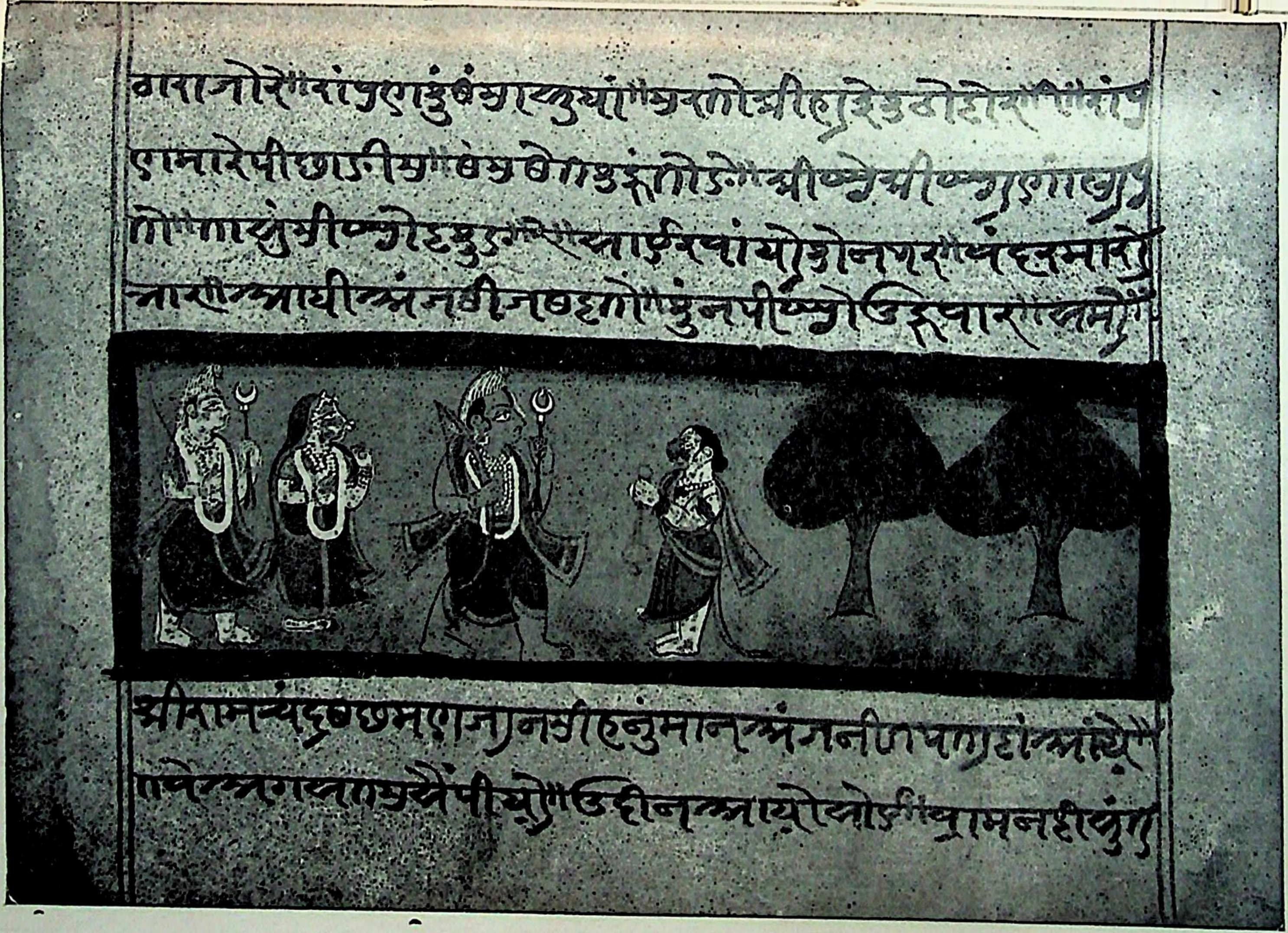


प्रतिक्रमाङ्क–१७४६१; चित्रसंख्या–१; सूचीपत्राङ्क–२३६

सेठ सेठांणी बधाई वांट (बांटे), बाजा वज (वजे), सब त्रीयां मंगल गाव (गावे)



प्रतिक्रमाङ्क-१७४६१; चित्रसंख्या-२; सूचीपत्राङ्क-२३६



प्रतिक्रमाङ्क–१७४६१; चित्रसंख्या–३; सूचीपत्राङ्क–२३६

श्रीरामचंद्र लछमरण ज्यानकी हनुंमान अंजनी तप (तपे) त्याहां आये।

५ – रामसरोवरप्रसङ्ग – पृष्ठ ७० – ७९

(१) मधु का वनभ्रमण (२) मालती - चकवीसंवाद (३) मालती - जैतमाल का वार्तालाप (४) जैतमाल के सोलह शृङ्गारों का वर्णन ।

६ – जैतमाल - मधु का वार्तालाप – पृष्ठ ८१ – ९९

(१) जैतमालनिगदित मधु - मालत्युद्भववृत्त (२) मालती के शरीर - सौन्दर्य का वर्णन (३) मधु - मालती - जैतमालसंवाद ।

७ – लोरकसाह की पत्नी मैना के सतीत्व का आख्यान – पृष्ठ ९९ – १२७

(१) दूती रतना एवं मैना के षड्ऋतुवर्णन पर शृङ्गार-वैराग्यात्मक प्रश्नोत्तर (२) मधु - मालती का गान्धर्व-विवाह एवं उसका राजा चन्द्रसेन के समक्ष दूती द्वारा रहस्योद्घाटन (३) मधु - मालती के मारणार्थ राजा चन्द्रसेन का अपने सैनिकों को आदेश ।

८ – मधुकथित चन्द्रकुमार - रूपरेखा का प्रणयाख्यान – पृष्ठ १२७ – १३१

९ – मधुकुमार एवं राजा चन्द्रसेन का युद्धप्रसङ्ग – पृष्ठ १३१ – १४७

(१) मधुद्वारा मालती को धैर्यबन्धन (२) राजसेना के साथ मधु का युद्ध (३) जैतमाल द्वारा मालती - वन-विस्तार (४) भ्रमर - सैनिकयुद्ध (५) भ्रमरदंशाहत सेना का पलायन (६) चन्द्रसेन की मधु पर चढ़ाई (७) उन्निद्र मालती को जैतमाल द्वारा धैर्यबन्धन ।

१० – जैतमालकथित वनस्थित मृग—कपोतकथा – पृष्ठ १४८ – १५५

(१) जैतमालप्रेरित मालती द्वारा हरिस्मरण (२) हरि-प्रेषित भारण्डादि पशु - पक्षियों द्वारा राजसेना का संहार ।

११ – भीमहिडिम्बोपाख्यान – पृष्ठ १५८ – १६६

(१) राजा चन्द्रसेन के समक्ष मन्त्रियों की ओर से तारणसाह मंत्री को पुनः पदारूढ करने का प्रस्ताव ।

१२ – राजा चन्द्रसेन - तारणमंत्रणा – पृष्ठ १६७ – १६९

तारणसाह की प्रार्थना से सद्यःप्रकट श्रीगौरी का राजा को उपदेश

१३ – उरगाना - सर्पकथा – पृष्ठ १७० – १८१

(१) मलयाधीश्वर के उदरस्थ एवं वनबंबीस्थ सर्प का संवाद (२) गृहकलह से उरगाना के पुत्र की मृत्यु (३) पत्नी द्वारा नृपति के समक्ष उरगाना - सर्प का रहस्यप्रकाश (४) राजा द्वारा सर्पमारण एवं तद्व-म्बीस्थ धनापहरण (५) मधु - मालती - जैतमाल का ससम्मान स्वस्वगृहप्रत्यावर्त्तन।

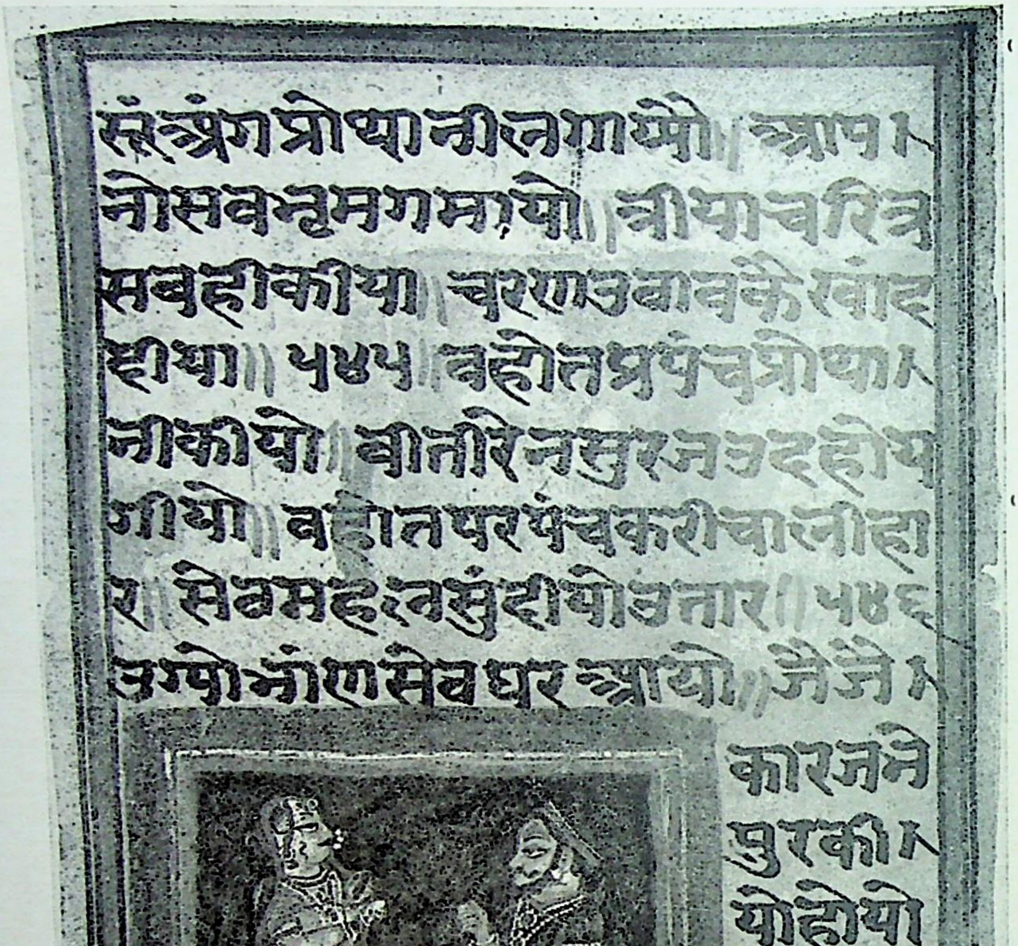
१४ – प्रसङ्ग श्रीरामचन्द्रको – पृष्ठ १८२ – १८४

१५ – मधु - मालती - जैतमाल - विवाहप्रसङ्ग – पृष्ठ १८५ – १९२

(१) राजा चन्द्रसेन एवं कनकमाल रानी का संवाद

(२) मधु–चन्द्रसेनसंवाद एवं कथोपसंहार ।

★


संग्रभोपानीलगायो ॥ आप
नोसवभूमगमायो ॥ नीपावरित्र
सबहीकीया ॥ चरणउवावके खोर
होया ॥ ५४५ बहोतप्रपंचग्रोपा
नीकीयो ॥ वोतीरेनसुरजउदहोय
गायो ॥ बहोतपरपंचकरीचानीहा
र सेठमहलसुंदीयोउतार ॥ ५४६
उपोमांणसेवधर आयो ॥ जैजे
कारजने
पुरकी
योहोयो
धरमधर
मतनीवा
र ॥ सुवाह
नीजोसागर उतारेपार ॥ दोहा ॥
करजोडां कामणकहहकहारतुम
रान ॥ आपमहरतुमकहारहे अब

प्रतिक्रमाङ्क–११५६४; चित्रसंख्या–२; सूचीपत्राङ्क–२३६

प्रोहित-पत्नी कपिला सुदर्शन सेठ को अपने जाल में फांसने का उपक्रम कर रही है।

१६. सचित्र मधु-मालती कथा। क्रमाङ्क – ११५९४

कर्त्ता – चतुर्भुजदास, लिपिसमय – १९ वीं शताब्दी (वि०)

आकार – पुस्तकाकार, माप (साइज) – ८′ × ५″

पृष्ठसंख्या – ४ (प्रकीर्ण) प्रतिपृष्ठ पङ्क्ति – १६–१७, प्रतिपङ्क्ति अक्षर – १२–१५

पुस्तकदशा – साधारणतः ठीक है किन्तु पत्रप्रान्त्य त्रुटित हैं।

टिप्पणी – उक्त कथा की प्रति के उक्त ४ पत्र प्रकीर्ण रूप में ही यहाँ उपलब्ध हैं। ये पत्र उक्तकथाङ्गभूत श्रेष्ठिसुदर्शनशीलोपाख्यान से सम्बन्ध रखते हैं। इन पर यद्यपि पृष्ठाङ्क तो अङ्कित नहीं हैं किन्तु पद्याङ्क अवश्य लगे हुए हैं। प्रथम पत्र में ५०७ वें पद्य से ५१५, द्वितीय पत्र में ५४५ से ५५१, तृतीय एवं चतुर्थ पत्रों में ५६२ से ५७७ (अपूर्ण) तक संख्यावाले पद्य उल्लिखित हैं। पत्रों पर लिखित कथांश के चारों ओर बोर्डर के रूप में तीन काली स्याही की रेखाएं खींची हुई हैं तथा कथांश के समीपवाली दो रेखाओं के बीच में पीला रंग भरा हुआ है। प्रकरण एवं पद्यांक चमकीली काली स्याही से स्थूल एवं सुन्दर अक्षरों में लिखे हुए हैं।

उक्त पत्रों पर पांच ५ चित्र आलेखित हैं। इन के स्थल धुंधले हरे रंग से रंजित हैं तथा उनके चारों ओर एक सफेद रेखा खींच कर दो इञ्च परिमाण वाले लालरंग के बोर्डर बनाये गये हैं। चित्रों के निर्माण करने में अनेक प्रकार के अच्छे रंग उपयोग में लाए गये हैं तथा चित्राकृतियों एवं वेषभूषादि की बनावट में संभवतः जयपुर-ब्रजशैली अपनाई गई है। चित्र सुन्दर एवं भावानुकूल बने हैं। इन का परिचयात्मक सपरिमाण विवरण निम्नाङ्कित है—

चित्रसूची –

पृष्ठ १ – चित्र संख्या १ परिमाण – २½″३ + ३″

परिचय – **मसनद के सहारे गद्दे पर बैठा हुआ मधुकुमार अपने सामने उपविष्ट मालतीको सुदर्शन सेठ के शीलव्रत का उपाख्यान सुना रहा है।**

पृष्ठ २ – चित्र सं० २ परिमाण – २½″३ + ३″

परिचय – **प्रोथानी (प्रोहितपत्नी कपिला) सेठ सुदर्शन को अपने जाल में फांसने का उपक्रम कर रही है। दोनों एक दूसरे के सामने खड़े हैं।**

पृष्ठ २ – चित्र सं० ३ परिमाण – २ १/३’३ + २ १/२’ ४ पोइन्ट

परिचय – सुदर्शन सेठ से उस की पत्नी रात में घर पर न आने का कारण पूछ रही है। पत्नी के शिर पर जल-घट रखा हुआ है।

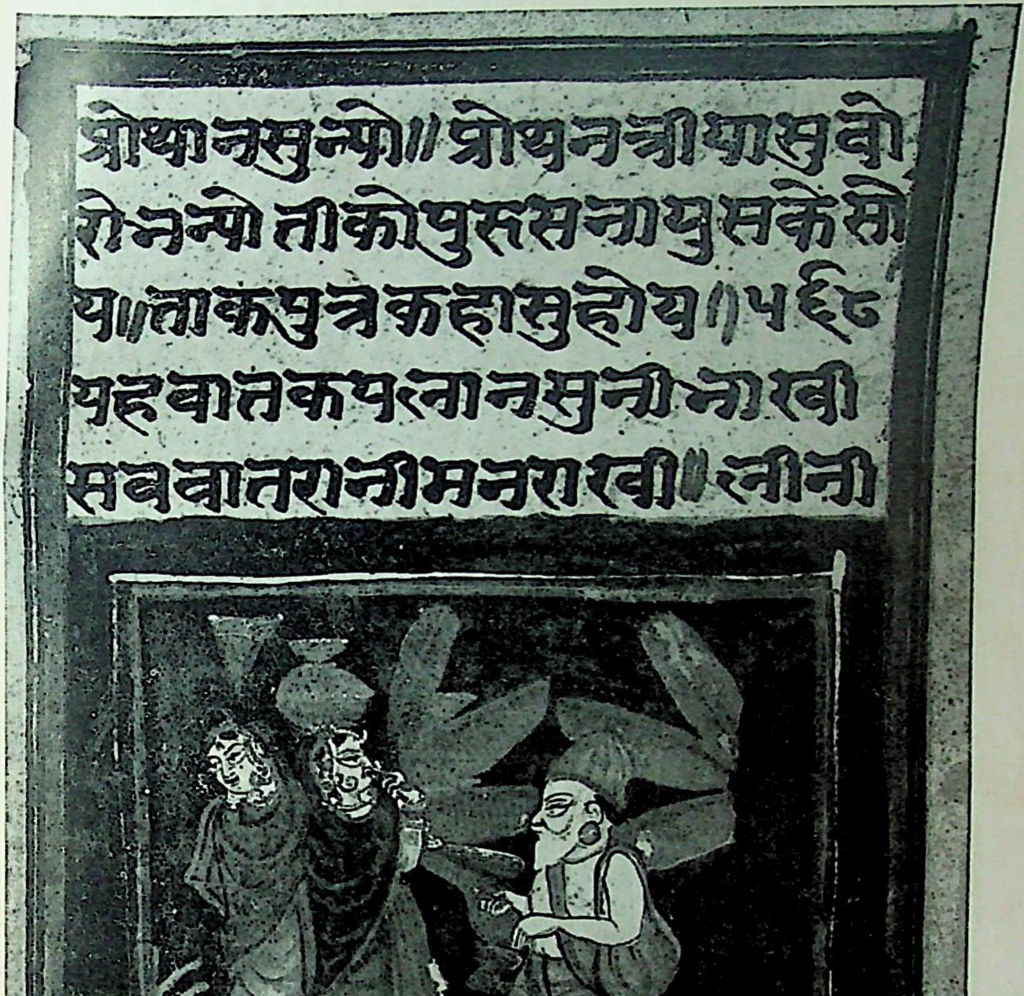
पृष्ठ ३ – चित्र सं० ४ परिमाण – ३ १/२”१ + ४

परिचय – पनघट का दृश्य है – शिर पर जलकुम्भ उठाई हुई एक स्त्री अपने सामने स्थित साधुवेषधारी मनुष्य से बातें कर आश्चर्यचकित हो मुंहमें अंगुली दबाये खड़ी है और उस के पीछे एक स्त्री मुख मोड़े लजीली मुद्रा में खड़ी है।

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ५ परिमाण – २ १/२”४ + ४”

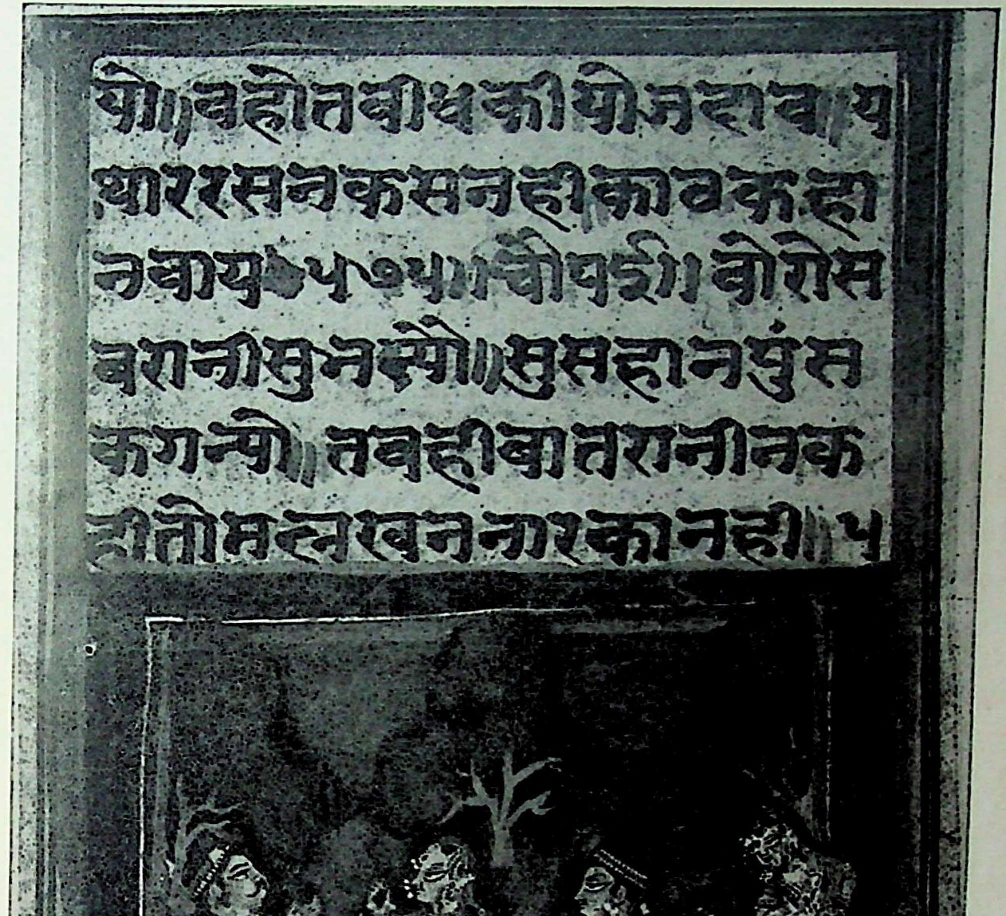
परिचय – रानी अपने दाहिनी ओर हाथ जोड़े बैठे हुए सुदर्शन सेठ से बातें कर रही है और रानी के पीछे एक राजकीय पुरुष बैठा है एवं उसके पीछे एक दासी गमनमुद्रा में खड़ी है।

★



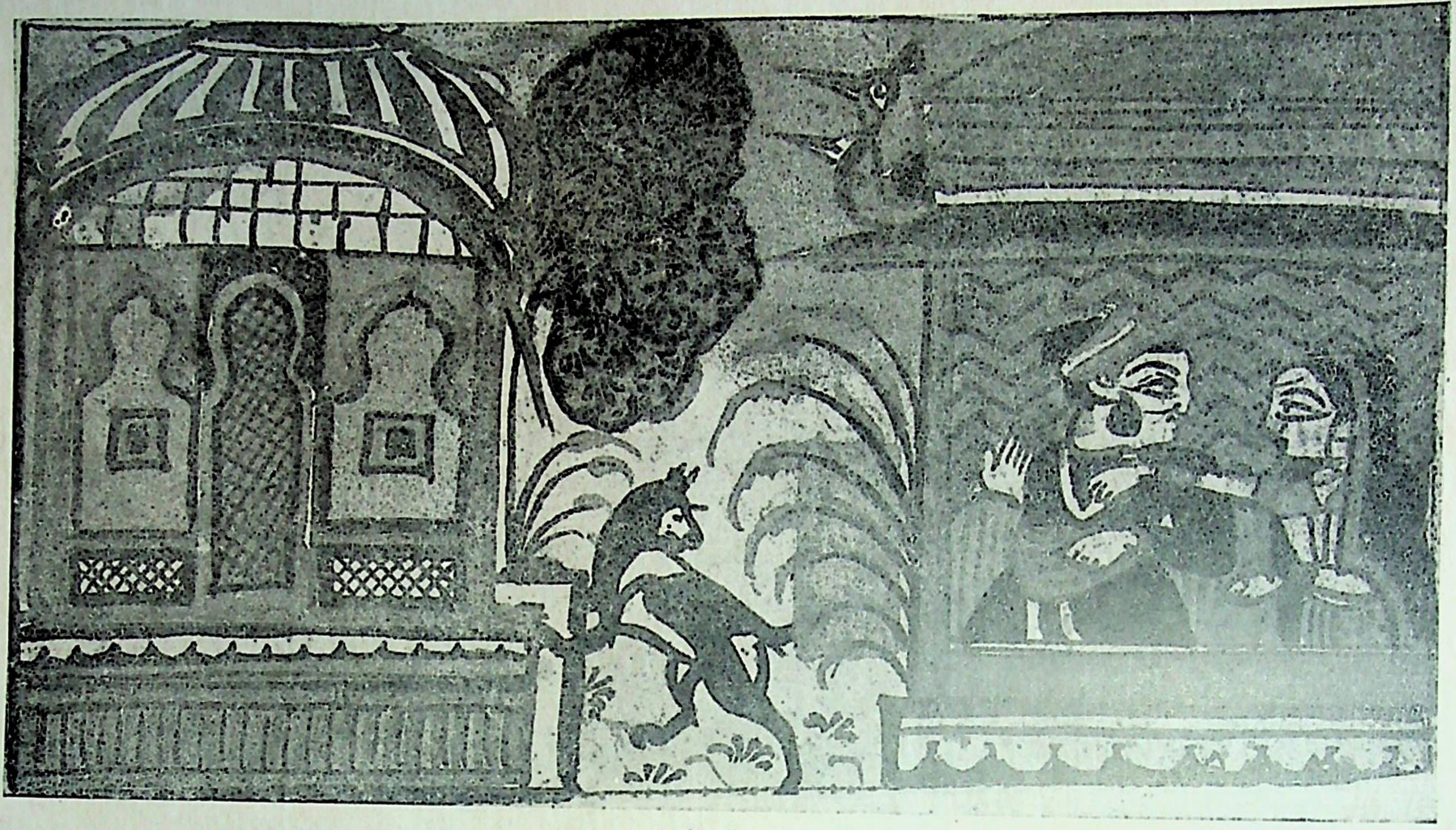
प्रतिक्रमाङ्क–११५६४; चित्रसंख्या–४; सूचीपत्राङ्क–२४०

दो स्त्रियाँ पनघट पर अपूर्ववेषधारी मनुष्य से बात कर आश्चर्यान्वित हो रही हैं।


पो॥ वहोतबोधकीपोजरावाय
थाररसनकसनहीकोवकहा
नवाय॥५७४॥चोपई॥ बोरोस
वरानीसुनसो॥ सुसहानसुंस
कयन्यो॥ तवहीबाततरानीनक
हीतोमदनखननारकोनहो॥ ५
रानीबायका॥ तुहनारीगननको
थ॥ तोपपुरुसवस्यनहीहोय॥ ५
हवचनराणीकहया॥ कामनासु

प्रतिक्रमाङ्क–११५९४;   चित्रसंख्या–५;   सूचीपत्राङ्क–२४०

रानी अपने सम्मुख उपविष्ट सुदर्शन सेठ के शीलभङ्गार्थं प्रयास कर रही है।



प्रतिक्रमाङ्क–११५६५; चित्रसंख्या–१; सूचीपत्राङ्क–२४१

मालती गुरुगृह से जाते हुए मधु को रोक रही है।

१७. सचित्र मधु-मालती कथा। क्रमाङ्क – ११५९५

कर्त्ता – चतुर्भुजदास, लिपिसमय – १९ वीं शताब्दी (वि०)

आकार – पुस्तकाकार, माप (साइज) – (१) ७'४ + ११"

पृष्ठसंख्या – ४ (प्रकीर्ण) (२) ८"३ + ९'१ पो. (३) ६" + ९"

पुस्तकदशा – त्रुटित एवं जीर्ण है। (४) ७½, + १०½ २ पो.

टिप्पणी – उल्लेखनीय है कि जिस प्रति के ये प्रकीर्ण पत्र उपलब्ध हुए हैं, वह प्रति लिपिकार द्वारा महाजनी (चारणी) लिपि में लिखी गई थी और तद्गत प्रत्येक चित्र पर उसका परिचयात्मक शीर्षक भी अंकित किया गया था। जैसा कि दूसरे पत्र पर लिखित मधु-मालती-कथांश के ८२८ एवं ८२९ संख्या वाले पद्यों से तथा पद्यों के नीचे अङ्कित चित्र के ऊपरी भाग में लिखित 'प्रधान, राजा, खवास, दूत' शब्द से स्पष्ट ज्ञात होता है। इस दूसरे पत्र को छोड़कर सभी सचित्र पत्र दूसरे सफेद बड़े कागज में चिपके हुए हैं। संभव है इन पत्रों के पिछले हिस्से में भी कथांश विलिखित होगा। अस्तु।

इन ४ पत्रों पर अंकित ५ चित्र उपलब्ध हैं। इनका निर्माण विविध देशी रंगों से किया गया है। चित्रों के आकार एवं वेषभूषादि से ऐसा जान पड़ता है कि उक्त चित्र किसी ग्रामीण कलाकार की कृति हैं और इनके निर्माण में कलाकारने संभवतः सिरोही अथवा उसके आसपास की शैली अपनाई है। चित्रों की भूमि लाल अथवा मलिन काले रंग के बोर्डर से आबद्ध की गई है। चित्र स्थूलाकार, भावानुकूल एवं सुन्दर बने हुए हैं। इनका परिचयात्मक विवरण निम्नरूप में प्रस्तुत है–

चित्रसूची –

पृष्ठ १ – चित्र संख्या १ परिमाण – ४½"२ + ९"२ पोइन्ट

परिचय – **मालती गुरुगृह से जाते हुए मधु को उसके गले में हाथ डाल कर रोक रही है। चित्र के बांई ओर एक पृथक् गृह बना हुआ है। उस के द्वार की पैड़ी में अपने दो पैर रखे हुए एक काला कुत्ता खड़ा है।**

पृष्ठ २ – चित्र संख्या २ परिमाण – ५½"३ + ९

शीर्षक – प्रधान, राजा, खवास, दूत ।

पृष्ठ २ – चित्र सं० ३ परिमाण – ८"३ + ९"१ पो.

परिचय – मधुकुमार, मालती एवं जैतमालती के साथ खड़ा है और सामने आती हुई राज सेना को देख रहा है।

पृष्ठ ३ – चित्र सं० ४ परिमाण – ५"२ + ६½"४ पो.

परिचय – गद्दे पर आसीन मधु एवं मालती प्रणयलीला में निमग्न हैं और जैतमाल उन पर पंखा झल रही है।

पृष्ठ ४ – चित्र सं० ५ परिमाण – ५½" + ९"३ पो.

परिचय – राजा चंद्रसेन राज्य भार संभालने का आग्रह मधु से कर रहे हैं। मधु उनके सामने हाथ जोड़े बैठा है।

★



प्रतिक्रमाङ्क–११५६५; चित्रसंख्या–२; सूचीपत्राङ्क–२४२

प्रधान, राजा, खवास, दूत ।